

UnEven Page Numbers Within The
Book Only

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_222621

UNIVERSAL
LIBRARY

सत्तर काबे एक दिल भीतर : इस कल्पना से उर्दू और फ़ारसी की शायरी भरी पड़ी है—

बुतखाना तोड़ डालिये, मस्जिद को ढाड़िये
दिल को न तोड़िये, यह खुदा का मुक़ाम है
तोड़कर बुतखाने को मस्जिद बिना की तुने शेष
बरहमन के दिल की भी कुछ फ़िक्र है तामीर को

—सौदा

दुक देख सनमखानए-इश्क आन के ए शेष
जुँ शमए-हरम रंग है झमकता बुताँ का

—सौदा

मय खुरा-ओ-मुस्दक़ बिसोज़-ओ-आतिश अंदर काब : ज़न
सा कि ने बुतखान : बाश - ओ - मर्दुमआज़ारी म कु न

[भाषार्थ : शराब पियो, क़ुरान को जला दो, काबे को आग लगा दो और बुतखाने में जाकर बैठ जाओ लेकिन किसी का दिल न दुखाओ अर्थात् किसी का दिल दुखाना इन सब से बड़ा पाप है ।]

अंतिम दो पंक्तियाँ—माटी एक समाना

हकीकत एक है हर रौ की, खाकी हो कि नूरी हो
लहू खुरशीद का टपके अगर ज़र्रे का दिल खीरें

—इक़बाल

कहैं कबीर मनमाना

हमको मालूम है ज़मत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखनेको बालिब यह ख्याल झन्झा है

१२० जुग मिलन : चौसर के खेल में जब एक खाने में दो गोठें जमा हो जाती हैं तो वे पिट नहीं सकतीं । इसको जुग मिलना कहते हैं । सौदा का शेर है—

अम्न दो दिल को हो यक़साँ ब-बिसाते-दौराँ

चोट खाती नहीं बह नर्द जो हो नर्द के साथ

(बिसाते दौराँ = ज़माने की बिसात; नर्द = गोठ)

चार रंगन : चार रंग; चौसर के खेल में गोठों के चार रंग और हिंदु धर्म के चार वर्ण—यहाँ दोनों अर्थ हैं ।

चौरासी : चौसर के खेल में गोठ को चौरासी घर चलने पड़ते हैं तब कहीं जाकर उसकी परिक्रमा पूरी होती है । हिंदु धर्म के अनुसार निर्वाण से पहले मनुष्य को चौरासी लाख जन्म लेने पड़ते हैं ।

पौ : जब गोठ आखिरी घर में पहुँच जाती है तो जीतने के लिए पौ फ़रसी है । यहाँ पौ से अभिप्राय मृत्यु और निर्वाण है । जो गोठ चौरासी घर चलते और पौ पड़ने के बाद अंदर पहुँच गयी वह फिर बाहर नहीं निकलती गोया उसका निर्वाण हो गया ।

१२१ सुरत = प्रेम, लेकिन यहाँ शायद यह 'सुरत' का बिगड़ा हुआ रूप है ।

“कहते हैं कि कुछ ब्राह्मण गंगा किनारे बैठे हुए गंगाजल का गुणगान कर रहे थे कि उससे सारे पाप धुल जाते हैं। उनमें से एकने पानी माँगा। कबीर उनकी बातें सुन रहे थे। उठकर गये और अपना प्याला पानी से भरकर ब्राह्मण के पास ले आये। चूँकि कबीर जुलाहे थे और ब्राह्मण उनके हाथ का हुआ हुआ खाते-पीते नहीं हैं, उस ब्राह्मण ने पानी नहीं पिया। कबीर ने कहा कि आप भ्रमी फ़रमाते थे कि गंगाजल से तन और मन का सारा मैल धुल जाता है। अगर यह पानी मेरे बर्तन को भी पवित्र नहीं कर सकता तो इस प्रशंसा के योग्य नहीं।” (कबीर साहब, लेखक पं० मनोहरलाल कुल्शी, प्रकाशक हिंदुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद, १९३०)

११३ नौ निध काया = नौ निधियों से सम्पन्न शरीर। धन के देवता कुबेर की नौ निधियाँ (खज़ाने) हैं और हर निधि की रक्षक एक आत्मा है जिनकी उपासना तांत्रिक सम्प्रदाय में की जाती है। उन सबके अलग-अलग नाम हैं।

इति = सीमांत, अनंत

उद्धारना = परदा हटाना

व्यंद् = बिंदु। शालिब ने कहा है—

सुखन यकेस्त बले दर नज़र ज़ि सुरअते-सैर

कुनद चो शोलए-जम्बाल : नुक्रता परकारी

[भावार्थ : बात एक ही हैं लेकिन अपनी तेज़ रफ़्तार की वजह से एक बिंदु जो परमात्मा हैं, नाचते हुए शोले की तरह निगाहों पर ज़ाहिर होता है।]

शालिब की यह उपमा बौद्धिक और वैचारिक है। कबीर की उपमा ऐंद्रिक और पार्थिव है।

शोव्यंद् = गोविंद, कृष्ण का नाम। कृष्ण विष्णु का अवतार हैं इसलिए भगवान अर्थात् सृष्टि के रचयिता हैं।

ग्यारहवीं और बारहवीं पंक्तियों में जो चित्र कबीर ने प्रस्तुत किया है वह बड़ा ही सुंदर और विचित्र है। साँस हवा का खंभा है जिसके चारों ओर शरीर मिट्टी की बनी हुई तस्वीर है।

पधन बाति = हवा की बत्ती। यहाँ साँस दीपक की लौ है।

११६ अंगिया शरीर है और दुल्हन आत्मा।

चित्त अंजन = चित्त का काजल। अभिप्राय है मन की आँख में ज्ञान का काजल।

११७ छाप = छापना = एक प्रकार का तिलक। हिंदुओं में अलग-अलग सम्प्रदाय अलग-अलग तरह के तिलक लगाते हैं।

११८ रोजा = रोज़ा

निबाज = नमाज़

बिहिस्त = स्वर्ग

माल मसीन = धन-दौलत

दोज़ग = दोज़ख = नरक।

१०९. तिरगुण कौशल = त्रिगुण का कंदा। प्राचीन हिंदू विचारधारा के अनुसार पदार्थ प्रथवा प्रकृति के तीन गुण हैं: (१) तमस अर्थात् जड़ता, निश्चलता, सांति; (२) रजस अर्थात् गति, क्रियाशीलता; (३) सत्व अर्थात् तनाव या सामंजस्य और संतुलन। ये तीनों गुण मिलकर किसी पदार्थ का वास्तविक रूप बन जाते हैं। बड़ी हुई स्त्सी की तरह ये तीनों गुण एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं। पहले गुण की प्रधानता मनुष्य को शिथिल, आलसी और कुत्सावान बना देती है। दूसरे गुण की प्रधानता अहंकार और वीरता उत्पन्न करती है और तीसरे गुण की प्रधानता संतुलित स्वभाव और समकदारी को जन्म देती है। क्रमशः इनका रंग काला, लाल और सफेद है।

केसो = केशव = सुंदर बालोंवाला, विष्णु का एक और नाम (वैसे यह नाम कृष्णजी के लिए भी इस्तेमाल होता है क्योंकि वह विष्णु का अवतार हैं।)

भवानी = शिव की पत्नी पार्वती या दुर्गा का एक और नाम। भवानी ठगों की रखवाली करती हैं और चेचक की भी देवी मानी जाती हैं।

कमला = लक्ष्मी का एक नाम, सर्वगुणसंपन्न स्त्री।

अह्मानी = ब्रह्मा की स्त्री; कबीर की अपनी कल्पना मालूम होती है।

१११ मालूम नहीं कृष्ण करोड़ और अष्टलाखी हज़ार की संख्याओं का क्या महत्त्व है, लेकिन संकेत यदुवर्धियों के हूबने की ओर है। एक चंद्रवंशी राजा ययाति का बेटा यदु था। उसके वंशज यादव कहलाये, जिस वंश में कृष्ण ने जन्म लिया। कृष्णजी के जन्म के समय वे लोग ग्वाले थे लेकिन बाद में द्वारका (गुजरात) में उनका राज्य स्थापित हो गया। कृष्णजी के बाद जब द्वारका नगर समुद्र की तूफानी लहरों में डूब गया तो वे लोग भी डूब गये। विष्णु पुराण में इनकी संख्या लाखों और करोड़ों बतायी गयी है।

इस पद में जिस विचार को व्यक्त किया गया है उसकी पुष्टि में दो घटनाएँ भी वर्णन की जा सकती है :

कबीर की बेटी कमाली के बारे में मशहूर है कि वह एक दिन ऊँच पर पानी भर रही थी। एक प्यासे ब्राह्मण ने उससे पानी माँगा। पानी पीकर जब उसे यह मालूम हुआ कि कमाली जुलाहे की बेटी है तो वह बहुत क्रुद्ध हुआ और कहने लगा कि तूने मुझे वे धर्म कर दिया। दोनों कबीर के पास आये। कबीर ने ब्राह्मण देवता को बताया कि आखिर समझो तो पवित्र और अपवित्र क्या चीज़ हैं। सैकड़ों लाखों और मनो पतियों पानी में सझा करती हैं। करोड़ों आदमी ज़मीन में दफ़न हैं और उसी मिट्टी से वे बर्तन बनाये जाते हैं जिनमें तुम पानी पीते और खाना खाते हो। खाना खाते समय तुम कपड़े उतार डालते हो; सिर्फ़ एक धोती बांधे रहते हो, मगर वह धोती जुलाहे की बुनी हुई होती है। मस्जिदों गंदगी और लारों पर बैठती हैं और वहाँ से उबरकर तुम्हारे खाने पर बैठती है। क्या तुम उनको रोक सकते हो ?

इसी तरह की एक और घटना का 'दबिस्ताने मज़ाहिब' में उल्लेख है :

१०३ हाकिम शीराजी ने भी संसार (माया) को एक ऐसी स्त्री से उपमा दी है जिसके हजारों पति हैं—“कि ई अजबज उरुसे हजार दामाद अस्त ।”

कबीर के पद की अंतिम पंक्ति इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि इसमें माया को अनवरत कहा गया है। इस विचार का कम रामानुज के विशिष्टाद्वैत से जा मिलता है। (देखिये भूमिका, कबीर की माया के बारे में धारणा पर टिप्पणी)

१०५ अहीरा = अहेड़ = आखेट = शिकार।

नियरा = निकट।

मौनी = चुप रहनेवाले साधु।

बीर = शैव भक्तों का एक सम्प्रदाय।

दिगंबर = जैन साधु जो नंगे रहते हैं और दिशाओं (दिक्) को अपना वस्त्र मानते हैं।

सिंगी = शृंगी, एक ऋषि जो जंगल में तपस्या करते थे और एक स्त्री पर आसक्त हो गये थे।

ब्रह्मा का सर फोड़ना = मस्तिष्क ब्रह्मा का स्थान है इसलिए इसका अर्थ है बुद्धि का हनन।

मछंदर नाथ = सिद्ध योगी थे जो लंका की स्त्रियों पर आसक्त हो गये थे।

साकट = शक्ति को माननेवाला। दंभ और बल से काम लेनेवाला।

१०६ इस पद का अर्थ स्पष्ट नहीं है। बांगड़ देश और मालवे का क्या महत्व है, पता नहीं चलता। बांगड़ उस प्रदेश का पुराना नाम है जिसे हरियाना कहते हैं। मालवा प्रदेश मध्य भारत में है जहाँ की रातें बड़ी सुहानी होती हैं। इस प्रदेश को कबीर ने “गहिर गंभीर” कहा है अर्थात् विस्तृत, असीम, अथाह। इस दृष्टि से बांगड़ देश का अर्थ होगा ऊँचे ऊँचे शुष्क पठारों का प्रदेश। कबीर बूँकि गृहस्थ थे और कपड़ा बुनकर अपनी रोज़ी कमाते थे इसलिए यह विचार उत्पन्न होता है कि बांगड़ देश से उनका अभिप्राय संसार को त्याग देना और “गहिर गंभीर” मालवा प्रदेश से अभिप्राय संसार को भोगना है। पद ८ के अंत में कबीर ने दुनिया को एतबारी कहा है—

यह तबहुदुम का कारखाना है

याँ वही है जो एतबार किया

—मीर तकी ‘मीर’

(तबहुदुम = भ्रम, वहम)

१०७

सुबहुदम तायराने-खुश झलहान

पढ़ते हैं कुल्लो-मन अलैहा फ़ान

जाए-इबरत सराय फ़ानी है

मूरिदे - मर्गे - नागहानी है

[भाषार्थ : प्रातः काल-सुखी पक्षी कुरान की यह आयत पढ़ते हैं कि मौत सब के लिए है। यह आनी-जानी दुनिया इबरत की जगह और अचानक मौत लानेवाली है।]

—शौक

एक और दोहा :

नैनों की कर कोठरी, पुतरी पलंग बिछाय
पलकन की चिक डार के पिया को लिया रिक्ताय

९६ वालिब ने कहा है :

किसी को दे के दिल कोई नवा संजे-फुयों क्यों हो
न हो जब दिल ही सीने में तो फिर सुह में जुबा क्यों हो

[नवासंजे फुगा होना = रोना, फुरियाद करना]

९९ अंतिम दो पंक्तियों में पुनर्जन्म की ओर संकेत है। उमर खैयाम की एक रुबाई में मौत सगुण को छोड़कर निर्गुण बन जाने का नाम है, जिसे उसने 'ऐने-हयात' अर्थात् शुद्ध जीवन कहा है :

मा ज़ाते-निहादः दर सिक्रतेम हमः

ऐने-खिरद-ओ-सुरखए-ए-ज़ातेम हमः

ता दर सिक्रतेम दर ममातेम हमः

चूँ रफ़त सिक्रत, ऐने-हयातेम हमः

[भावार्थ : मैं वह निर्गुण हूँ जो सगुण में घिरा हुआ है। मैं सम्पूर्ण हूँ लेकिन चूँकि सगुण में लिपटा हुआ हूँ इसलिए निर्गुण के सामने मसखरा मालूम होता हूँ। जब तक सगुण में घिरा हूँ तब तक मृत्यु में जकड़ा हुआ हूँ। जब सगुण नष्ट हो जायेगा तो मैं सम्पूर्ण जीवन बन जाऊँगा।

१०१ सुमेर = सोने का एक कल्पित पहाड़; पहाड़ों का सिरमौर।

१०२ अपने आपको धर्मग्रंथों से मुक्त कर लेने का भाव भक्ति के दूसरे सम्प्रदायों में भी मिलेगा, जैसे के० एम० सेन ने अपनी अंग्रेजी किताब "हिंदुइज़्म" में बंगाल के बाउल सम्प्रदाय के एक भक्त की एक घटना लिखी है :

“जब मैं ने एक बाउल से पूछा कि वे लोग धर्मग्रंथों को क्यों नहीं मानते तो उसने कुछ कुछ होकर जवाब दिया कि क्या हम कुत्ते हैं जो दूसरों का जूठा चाटते फिरें। वीर केवल अपने सृजन और कृतित्व पर गर्व करते हैं। जो अपने बाप-दादा के कारनामों पर गर्व करते रहते हैं वे कायर और अशक्त हैं। उनमें स्वयं कोई क्षमता बाक़ी नहीं रह गयी।”

कबीर ने भी एक दोहे में कहा है :

साखी लाये जतन करि, इत-उत अछुकर काट

कह कबीर कब लग जिये जूटी पसल चाट

सहज = जो साथ पैदा हुआ हो, स्वाभाविक, अनायास, निःसंकोच।

शून्य = सभाटा, निर्गुण परमात्मा

खलास = समास, खलास।

मेरा = ऐ अमीर, ऐ पंच

[भावार्थ: इसलिए ज्ञानियों का कहना है कि ये संगीतमय स्वर ब्राकाश में नाचते हुए ज्योति-विंदों से आते हैं और यह गीत जो लोग तंबूर से पैदा करते हैं और गले से निकालते हैं ब्राकाश की परिक्रमा का गीत है।]

इस आधार पर सूफ़ियों ने संगीत को उचित ठहराया है जब कि इस्लाम में संगीत हुराम है। इसलिए मौलाना रूमी फ़रमाते हैं कि सम्राट (संगीत) दरअसल “सौते-बला” (ईश्वर के अस्तित्व की हामी भरना) सुनने का नाम है और ईसान बे खुद होकर विसाले-यार तक पहुँच जाता है। (मसनवी का अंग्रेज़ी अनुवाद, निकल्सन, खंड ८)

कबीर ने एक पद (३९) में मानव शरीर को तंबूरे का ठाठ कहा है जिससे हुज़ूरी का संगीत निकलता है।

९० इस पद की अंतीम पंक्ति का अर्थ कुछ अस्पष्ट है। हिंदी और उर्दू के अनुवाद दो अलग-अलग समय पर किये गये थे इसलिए उनमें बहुत बड़ा अंतर आ गया है। और वह शाल्ती से इसी तरह छप गये। उर्दू का अनुवाद टैगोर के किये हुए अंग्रेज़ी अनुवाद से अधिक निकट है।

९१ भारत को आधुनिक भाषाओं जैसे हिंदी, उर्दू, मराठी, बंगाली, पंजाबी आदि के विकास में सूफ़ियों और संतों का बहुत बड़ा हिस्सा है। उन्होंने संस्कृत और फ़ारसी को छोड़कर जो मौलवियों, शासकों और पंडितों की भाषाएँ थीं और जन-साधारण की पहुँच से बहुत दूर थीं, जन-साधारण की बोलियों में लिखना शुरू किया। हिंदी में कबीर, मलिक मुहम्मद जायसी, तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई इसकी सबसे शानदार मिसालें हैं।

इस पद में कबीर ने संस्कृत को घमंड और दंभ की भाषा ठहराया है। एक और जगह लिखा है कि संस्कृत तो कुँए का पानी है और भाषा बहती हुई नदी है (“संस्कृत है कूप-जल, भाषा बहता नीर”)। पंडित सुंदरलाल ने अपनी किताब “कबीर और ईसानियत” में लिखा है कि “काशी के पंडितों में उन दिनों संस्कृत का जोर था।” ज़ाहिर है कि कबीर ऐसी भाषा का प्रयोग करना चाहते थे जो आसानी से लोगों के दिलों में घर कर सके।

९३ शालिब की कल्पना हुस्न और इश्क के पूर्ण मिलन के लिए तरसती रही :

मैं नामुराद दिल की तसल्ली को क्या करूँ
माना कि तेरे रुख से निगाह कामयाब है
वा कर दिये हैं शौक़ ने बंदे-नकाबे-हुस्न
घैर अज़ निगाह अब कोई हायल नहीं रहा

[अर्थात् मेरी उत्कंठा ने रूप की नकाब के बंद खोल दिये हैं। अब निगाह के अलावा कोई बाधा नहीं रही।]

लेकिन कबीर ने निगाहों की इस दूरी को खत्म कर दिया है और उनके यहाँ मिलन ही मिलन है। एक दोहे में इस विचार ने यह रूप धारण किया है :

नैना अंतर आव तूँ, ज्यों हूँ नैन भोपेऊँ
ना हूँ देखौँ और कूँ, ना तुझ देखन देऊँ

दिल से पूछा यह मैं कि इश्क की राह
किस तरफ़ मेहबान पड़ती है
कहा उन ने कि मैं यह हिंदुस्तान
मैं सूए - इस्क़्क़ान पड़ती है
यह दोराहा जो इफ़्फ़-ओ-दीन का है
दोनों के दरमियान पड़ती है

—सौदा

७५ देखिये ४४।

८० पेड़, शाख और जड़ की उपमा जामी के यहाँ भी है :

दिला मनशीं दर ई वीरान : मैं खुद
सूए मुयनि - कुदसी आशियाँ बर
खुवद गेती दरस्ते सर-बसर शाख
बले जुम्ल : सूए यक अस्ल रहबर
ज़हर शाखे सूए औं अस्ल रह जू
मैं औं रा याफ़्ती अज़ शाख दुज़र
न बाशद शीबए - मुयनि - ज़ीरक
नशिस्तन हर ज़मीं बर शाखे दीगर

[भावार्थ : ऐ दिन, वीराने में उल्लू की तरह न बैठ। उड़कर उन पक्षियों के पास पहुँच जा जिनका आशियाना सबसे ऊँचे आकाश पर है। ज़मीन एक ऐसा पेड़ है जिसमें शाखें ही शाखें हैं लेकिन वे तमाम शाखें एक असलियत यानी जड़ की तरफ़ ले जा रही हैं। हर शाख से अस्ल की तरफ़ जाने की राह तलाश कर। जब वह मिल जाये तो शाख को छोड़ दे। नयी नयी शाखों पर बैठते रहना समझदार पक्षियों का काम नहीं।]

८९ पद १७ का पहला छंद भी देखिये।

गगन राग : वास्तव में सितारों का गीत है। कबीर ने अपने कई दूसरे पदों में इस को बार-बार दोहराया है। मुस्लिम दार्शनिकों और सूफ़ी कवियों के यहाँ यह कल्पना मौजूद है। इसका सूत्रपात यूनानी विचारक पाइथागोरस (Pythagorus) के इस सिद्धांत से हुआ है कि ग्रहों की दूरी और उनकी गति का संतुलन संगीत के सिद्धांतों की बुनियाद पर कायम है। मुस्लिम दार्शनिकों ने इससे यह निष्कर्ष निकाला कि ग्रहों और नक्षत्रों से गीत उत्पन्न होता है जो खुदा की बंदना और स्तुति के लिए है। और इस गीत को आत्माएँ सुन सकती हैं। आदि नियम के चारों ओर घूमते हुए नक्षत्रों की परिक्रमा प्रेम का परिणाम है। यही गीत आसमान से उतरकर ज़मीन पर आया है। मौलाना रूमी कहते हैं—

पस हकीमां गुप्तंद ई लहनहा
अज़ दवारे चर्ख बिगिरिप्रतेम मा
बांगे-गर्दिशहाए-चर्ख अस्त इन कि खल्क
मी सरायेदश ब-त-बुर ओ ब-हल्क

फिर न कुछ देखा बजुज यक सोलए पुर पेच-ओ-ताब

शमश तक तो हमने देखा था कि पर्वान : गया

५६ अद्वैत की तरह शेष पर ईमान रखना भी इस्लाम की बुनियाद है। इस पद की पहली पंक्ति इस विचार के निकट है। कबीर की कविता में दूसरी जगहों पर शेष का शब्द बार-बार आया है।

५७ देखिये १०।

६० मीर तकी 'मीर' कहते हैं—

सरापा आरजू होने ने बंदा कर दिया हमको

वगनां हम खुदा थे गर दिले-बे-मुद्दा होते

[दिले-बे-मुद्दा = निष्काम हृदय]

६६ “जिसने अपने आपको पापों से मुक्त नहीं किया, जिनने संयम और सच्चाई को छोड़ दिया और गुरु वस्त्र धारण करने की इच्छा की वह गुरु वस्त्र धारण करने योग्य नहीं है।” (धम्मपद—मैक्स मूलर के अंग्रेजी अनुवाद से अनूदित)

भारत के राष्ट्र-ध्वज के रंगों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए डा० राधाकृष्णन ने कहा है, जोगिया या गुरुआ रंग वास्तव में ब्राह्म का रंग है और ब्राह्म उस शक्ति का प्रतीक है जिसमें हर गंदी चीज़ जलकर साफ हो जाती है।

इसलिए गुरुआ वस्त्र ससार को त्याग देनेवाले योगियों का वस्त्र ठहराया गया और बौद्ध भिक्षुओं ने भी पहना। लेकिन यह वस्त्र स्वयं एक प्रकार की धार्मिक वर्दी बन गया। इसलिए सूत्रियों और सत्तों ने तमाम धर्म प्रवर्तकों के इस प्रकार के वस्त्रों की तरह गुरु वस्त्रों का भी विरोध आरंभ कर दिया और इसकी अपेक्षा मन के रंग अर्थात् हृदय की शुद्धता पर जोर दिया।

कबीर की तरह बंगाल के बाउल भक्तों का यह कहना है कि “अगर रंग मन में न हो तो बाहर क्या दिखायी देगा। कच्चे फल के छिलके को रंग देने से कुछ फल पक नहीं जाता।” वह तो कच्चा ही रहता है।

फ्रांसी और उई शायगी में शेख और मुल्जा के अमामे और मज़हबी लिबास का खूब मज़ाक उड़ाया गया है। अक्सर मयखाने के लौंडे शेख का अमामा उतार ले जाते हैं :

जो पाक रखते हैं तन का जामा, रखे हैं नापाक दामने-दिल
खुदा के नज़दीक, ए मुसल्ली, नहीं हैं ज़िन्दार वह नमाज़ी

[मुसल्ली = नमाज़ी; ज़िन्दार = हरगिज़]

—मुहम्मद रफ़ी 'सौदा'

४६ प्रसिद्ध प्राचीन फ़ारसी शायर अबू सईद अबुल खैर ने एक रुबाई में कहा है :

पुरसीद यके मंज़िले आँ मेह-गुसिल
गुप्तम कि दिजे मन अस्त ऊरा मंज़िल
गुप्ता कि दिलत कुजास्त, गुप्तम बर ऊ
पुरसीद कि ऊ कुजास्त, गुप्तम दर दिजे

[भावार्थ: किसी ने पूछा कि उस मेह-गुसिल (सूरज को पिबता देनेवाला) की मंज़िल कहाँ है। मैंने कहा मेरे दिल में। पूछा तेरा दिल कहाँ है। मैंने कहा उसके पास। पूछा वह कहाँ है। मैंने कहा मेरे दिल में।]

एक और फ़ारसी शेर है

खुद कूज़: ओ खुद कूज़: गर ओ खुद गिले-कूज़: खुद दिजे-सुबूकश
खुद बर सरे आँ कूज़: खरीदार बर आ मद बिशकस्त ओ रबों शुद

[भावार्थ: वह खुद ही कूज़: (मिष्टी का प्याला) है, खुद ही उसका बनानेवाला और खुद ही वह मिष्टी है जिससे प्याला बनता है और खुद ही उस प्याले में शराब पीनेवाला। फिर वह खुद उस प्याले का खरीदार बनकर ज़ाहिर हो जाता है और प्याले को तोड़कर चल देता है।]

—रूमी

४७ यहाँ पेड़ से अभिप्राय संसार है लेकिन उसे बिना जड़ का इसलिए कहा गया है कि वह माया का उत्पन्न किया हुआ है, केवल एक कल्पना का जाल। मगर चेत (आत्मा, जीव) के साथ गुरु (ब्रह्म, परमात्मा) भी मौजूद है। जीव तो रस चखने अर्थात् संसार को भोगने में लीन है और भगवान अर्थात् परमात्मा निरंतर खेल में अर्थात् अपनी लीला दिखाने में व्यस्त है और प्रसन्न हो रहा है। इस पद के आरम्भ में जो अलग-अलग मालूम होते हैं वे अंत में एक हो जाते हैं। निराकार (गुरु, परमात्मा) प्रत्येक साकार (जीव, व्यक्ति) के अंदर मौजूद है। इसलिए सांसारिक रूपों पर ही न्योझावर हो जाने को जी चाहता है। शेख सादी के शब्दों में “आशिक़ बर हम: आलम की हम: आत्म अज़ूस्त” अर्थात् मैं सारी दुनिया पर आशिक़ हूँ क्योंकि सारी दुनिया उसी से है। सूफ़ियों की भाषा में वह उसे “सिरे-तौहीद” (एकपन का भेद) कहते हैं। यथार्थ का बाह्य रूप मनुष्य है और वह यथार्थ के आंतरिक रूप ईश्वर के साथ एक है। सूफ़ी अपनी खुदो (अहं) के भ्रमजाल से निकलकर परमात्मा में लीन हो जाता है, फिर उसको हर आकृति में ईश्वरीयता का रूप दिखायी देने लगता है। मौलाना रूमी ने इसे “हकीकत दर हकीकत बर्क:” कहा है अर्थात् हकीकत हकीकत में ढूँढ गयी।

५१ सूफ़ी भी यही मानते हैं कि मृत्यु प्रेमी से मिलन (विसाले-महबूब) है। इस विचार का अधिक परिष्कृत रूप प्रकृति से एकाकार होना है जिसने उर्दू के क्लासिकी शायरों के यहाँ बड़ा सुंदर रूप धारण किया है। मीर कहते हैं—

रंगे-गुल-ओ-बूए-गुन होते हैं रबों दोनों
क्या काफ़िला जाता है तू भी जो चला चाहे

जापानी जैन सम्प्रदाय की एक घटना इससे भी रोचक है। किसी सभा में बहुत से जैन सम्प्रदायवाले जमा हुए। वक्ता प्रवचन के लिए खड़ा हुआ। इतने में एक चिड़िया आयी और खिड़की पर बैठकर गाने लगी। वक्ता ने अपना प्रवचन शुरू नहीं किया और चिड़िया का गीत सुनता रहा। जब चिड़िया गीत पूरा करके उड़ गयी तो वक्ता ने घोषणा की कि सभा समाप्त हो गयी और सब श्रोता चले गये।

शालिब के शब्दों में इसका निचोड़ यह है कि—

हे रंगे-लाल :- ओ-गुल-ओ-नसरी जुदा-जुदा
हर रंग में बहार का इस्वात चाहिये
सर पाये-खुम पे चाहिये हंगामे-खुबेदी
रू सूए-किब्ज़: वक्ते मुनाजात चाहिये
यानी ब - हल्बे - गर्दिशे - पैमानए - सिफ़ात
आरिफ़ हमेशा मस्ते-मये-ज़ात चाहिये

[अर्थात् लाल, गुलाब और सेवती आदि सभी फूलों के रंग भ्रमण-भ्रमण होते हैं, लेकिन बहार को हर रंग में स्वीकार करना चाहिये। मस्ती के समय सर मधुघट के पैरों पर और प्रार्थना के समय झुँह कावे की ओर होना चाहिये। यानी सगुण की मदिरा का दौर के अनुसार हमेशा ज्ञानी को निर्गुण की मदिरा में लीन होना चाहिये।]

और सहज के अनायास भाव को इकबाल ने इन शब्दों में व्यक्त किया है :

न पैवस्तम दर इन खुस्तों सरा दिल
ज़ि बंदे ईन-ओ-आं आज़ाद: रफ़्तम
जो बादे-सुब्ह गर्दीदम दमे - चंद
गुताँ रा आब-ओ-रंगे दाद: रफ़्तम

[भावार्थ : मैंने इस रंग-ओ-बू से भरी हुई दुनिया से दिल नहीं लगाया। मैं ऐसे-वैसे बंधनों से सदा मुक्त रहा। सुबह की हवा की तरह मैं इस चमन में भाया और फूलों को रंग और रूप देकर चला गया।]

४२ सूफ़ियों और संतों ने ज्ञान और बोध की अपेक्षा प्रेम को प्रधानता दी है। उनके यहाँ अंतर्ज्ञान ही वास्तविक उपासना है और बोध प्रत्यक्ष उपासना है और उसके रीति-रस्मों और बंधनों को बेकार कर देता है। इसका सामाजिक पक्ष यह है कि मौलवी, पुरोहित और धर्म के प्रत्यक्ष रूप ने ज्ञान और बोध पर अधिकार कर रखा था। अंतर्ज्ञान उनके इस एकाधिकार को तोड़ देता है और ईश्वर को सर्वसाधारण तक पहुँचा देता है।

४४ पद १७ के पहले तीन छंदों में भी कबीर ने चाँद, सूरज और सितारों की प्रभा को इस परम-ज्योति का प्रतीक माना है, जिससे सारी सृष्टि भरी हुई है। इस संत कवि ने बार-बार ईश्वर को एक प्रकाश अथवा ज्योति का रूप दिया है। यह विचार कबीर का इस्लामी उत्तराधिकार है जिसमें कहा गया है कि अल्लाह आत्मानों और ज़मीन का नूर है।

४१ सहज का अर्थ है जो साथ उत्पन्न हो, अर्थात् स्वभाविक। और बन्धन ने इसी अर्थ में सहज समाधि का प्रयोग किया है (देखिये ऊपरो, पद ५)।

बंगाल के बाउल (बाउल = उन्मत्त) भक्तों में जो “सभी परम्परागत बंधनों से मुक्त हवा की तरह मारे-मारे फिरते हैं” (क० एम० सेन) और जिन्होंने अपनी इमारत बौध्द मत, तांत्रिक और वैष्णव मत खंडहरों पर खड़ी की है, सहज साधना की बहुत सुंदर कल्पना मिलती है :

“मैं इसलिए बाबला हो गया हूँ, मेरे भाई,
 “कि किसी रीति, किसी रिवाज, किसी माजिक का पाबंद नहीं हूँ
 “मनुष्य के बनावे हुए भेद-भाव मेरे लिए व्यर्थ हैं
 “मैं अपने मन से पैदा होनेवाले प्रेम के सरोवर में डूबा हुआ हूँ
 “प्रेम में विरह और वियोग नहीं, मिलन ही मिलन है
 “दिल से दिल मिले रहते हैं
 “मैं इस क्षुशी में नाचता-गाता रहता हूँ
 “मैं इसलिए बाबला हो गया हूँ, मेरे भाई।”

उर्दू के कवि मीर तक़ी ‘मीर’ ने बेहद मस्ती की इस अवस्था को गज़ल के दो मिसरों में समेट लिया है :

उसका बड़े हुस्न सरासर औजे-मीज-ओ-तलालुम है
 शौक की अपने निगाह ज़दां तक जावे बोस-ओ-कनार है ब्राज

अर्थात् उसके रूप-सागर में ऊँची-ऊँची लहरों की उठान और तूफ़ान के सिवा कुछ नहीं है, इसलिए अपने शौक (उत्कंठा) की निगाह ब्राज जहाँ तक भी जाये उसे चुंबन और आलिंगन ही मिलेगा।

सहज पर बाउल भक्तों का आग्रह इतना ज़्यादा है कि वे अपने आंदोलन का इतिहास भी लिखने को तैयार नहीं हैं। ए० के० सेन ने अपनी अंग्रेज़ी किताब “हिंदुइज़्म” में एक बहुत ही रोचक घटना का वर्णन किया है। जय उन्होंने पूर्वी बंगाल में नदी के किनारे बैठे हुए एक बाउल से पूछा कि “आप आनेवाली पीढ़ियों के लिए अपना ऐतिहासिक वृत्तांत क्यों नहीं रखते” तो उसने जबाब दिया की “इस तो सहज को मानते हैं और इसलिए अपने पीछे कोई पद-चिन्ह छोड़ना जरूरी नहीं समझते।” उस समय नदी का पानी उतरा हुआ था और कुछ माँसी अपनी नाव को कीचड़ में खींच रहे थे जिसकी वजह से कीचड़ में निशान पड़ गये थे। बाउल ने उधर इशारा करके कहा, “क्या भरे पानी में तैरती हुई नाव कोई निशान छोड़ती है; केवल वही माँसी जो अपनी मजबूरी की वजह से कीचड़ में नाव चलाते हैं निशान छोड़ जाते हैं। यह तो सहज नहीं है। असली कोशिश यह होनी चाहिये कि भक्ति का उस धारा पर तैरते रहे जो भक्तों के अपने जीवन से पैदा होती है और फिर एक धारा को दूसरी धारा से मिला दें। बाउल केवल बाउल हैं और कुछ भी नहीं। वे किसी भी वर्ग, किसी भी जाति से आये उनका कोई और कारनामा नहीं है। सब धाराएँ गंगा में मिलकर गंगा बन जाते हैं।”

३३ इकबाल ने कहा है :

बह हर्ज़े-राज़ कि मुम्नको सिखा गया है जु
खुदा मुझे नज़्से-ज़िज़ील दे तो कहीं

[भावार्थ : मेरा उन्माद मुझे वह मंत्र सिखा गया है कि खुदा मुझे जिज़ील (खुदा का पैशाम लानेवाला प्रतिश्ठा) की सज़ा दे तो बताऊँ।

४० तांत्रिक साधकों ने योग और भोग को एक ही माना है। योग की साधना पारलौकिक चेतना का वह जुबा है जो संसार के अनुभव से प्राप्त की गयी सामान्य मानव चेतना की गर्दन पर रख दिया जाता है और भोग सांसारिक सुख दुख को पूरी तरह बग़तने का नाम है। तांत्रिक सिद्धांतों के अनुसार भोग को योग का साधन बनाया जा सकता है। इसलिये इस मत में रूप-उपासना, काम भोग के अज्ञात मांस मङ्गली, भुने हुए अनाज और मदिरा का सेवन भी शामिल है। (फ़ारसी और उर्दू शायरी में पाप के प्रचार और पाप की महानता का दर्शन जिसकी वजह से यह शायरी बेहद रंगीन रोचक हो गयी है, इन तांत्रिक विचारों से बहुत निकट है :

बंदानबाज़ियों पे खुदाए-करीम था
करता न मैं गुनाह तो गुनाहे-अज़ीम था

—अमीर मीनाई

और उमर खैयाम ने तो हृदय कर दी, गुनाह को रहमत (कृपा) की आराइश (सज़ा : ट) ठहरा दिया :

आबाद खाताबत ज़िम्मे खुर्दने मा
खूने दो हज़ार तोब : बर गर्दने मा
गर मन न कुनम गुनाह रहमत चे कुनद
आराइशे-रहमत ज़ि गुनह कर्दने मा

अर्थात् यह दुनिया मेरी शाबनोशी से आबाद है। मेरी गर्दन पर दो हज़ार तोबाओं का खून है। अगर मैं पाप न करूँ तो वह बेचारी कृपा क्या करेगी। मेरे पाप ही तो उसकी सज़ाबट हैं। इसी दार्शनिक विचारधारा के अनुसार शराब, जो इस्लाम में हाराम थी, ईश्वर से संन्यत जोड़नेवाली शराब बन गयी और ऐसे शेर कहे गये जैसे :

ज़ि मय सम्बाद : रंगी कुन, गरत पीरे-मुषाँ गोयद
कि सात्तिक बे-खबर न बुबद ज़ि राह-मो-रस्मे मंज़िलहा

—हाफ़िज़

अर्थात् अगर पीरे मुषाँ (मदिरालय का बूढ़ा प्रबंधक) कहे तो जाननाज़ (नमाज़ पढ़ने की दरी या चटाई) को शराब से रंगीन कर लो क्योंकि आत्मा को मार्ग दिखानेवाला मंज़िल की राह-औ-रस्मे से बे-खबर नहीं होता। कबीर के यहाँ कहीं-कहीं तांत्रिक प्रभाव मिलते हैं जैसे इस पद में योग और भोग के संन्यत में उनका दृष्टिकोण, लेकिन कबीर के यहाँ भोग केवल घरेलू जीवन और सामाजिक दायित्व तक सीमित है। इसमें काम-भोग और मदिरा सेवन आदि शामिल नहीं है।

[भावार्थ : मेरी और मेरे माशूक की मुहब्बत की कहानी कभी खत्म नहीं हो सकती । जिस चीज़ का आरंभ नहीं है उसका अंत कैसे हो सकता है । “अर्थात् मेरा प्रेम आदिकाल से चला आ रहा है और अंतकाल तक चलता रहेगा । वह जब से है जबसे परमात्मा है और परमात्मा का कोई आरंभ नहीं है ।]

और हमी ने कहा है :

मा खा जि ने - खज़ाने - दिलदार बूद : एम
 मा सालहा मुसाहिबे - दिलदार बूद : एम
 मा दर फज़ाए - आलमे - असरार सालहा
 बा - तायराने - कुदस दर अतबार बूद : एम
 मा रखते खुद ज़े आलमे हस्ती करीद :
 बर कूए - यार बे - यमे - अययार बूद : एम
 आदम हनोज़ दर अदम - आबाद बुद किमा
 मस्त - खराबे - नरगिसे - भाँ यार बूद : एम
 पेशअज़ जुहुरे - अंजुम-ओ - अफ़लाक-ओ - दायरात
 दायर ब - गिर्दे - नुज़ता चो परकार बूद : एम
 दर गुलशने - विसाल ब - चंदी हज़ार साल
 पेश अज़ दो कौन तायरे - तय्यार बूद : एम
 यैर अज़ येके न बूद-ओ न - बारोम - ओ - नीस्तम
 दर कसरते - जुनी पये - इज़हार बूद : एम

(कुलियाते - शम्स तबरेज़ी)

[भावार्थ : मैं महबूब के खज़ाने का रखवाला हूँ, मैं बग़सों उसका मुसाहिब रह चुका हूँ । मैं अज्ञानलोक के पक्षियों (फ़रिशतों) के साथ बरसों उड़ चुका हूँ । इहलोक से मैं विरक्त हो गया और यार की गलियों में रक्तीब (प्रतिद्वंदी) के बयैर अकेला रह गया हूँ । जब आदम की सृष्टि भी नहीं हुई थी जब मैं अपने यार की आँखों में मस्त व खराब था । आसमानों और सितारों के अस्तित्व से पहले मैं परमात्मा के केंद्र-बिंदु के चारों ओर घूम रहा था । दोनों लोक के अस्तित्व से भी पहले मैं ही प्रगय-उद्यान में उड़ रहा था । एक के सिवा न तो कुछ था, न हो सकता है, और न है । केवल अपने आपको व्यक्त करने के लिए उसने यह अनेकता का रूप धारण किया है ।]

३० पक्षेक यहाँ जीवात्मा (हंस) का प्रतीक है और तरुवर शरीर का ।

३१ गगन किवाड़-गुन्य का द्वार, साधना, समाधि ।

३२ सारी सृष्टि आदि सिद्धांत के चारों ओर नाच रही है । इस पद में ईश्वर की महिमा का गुणगान किया गया है । (वेखिचे पद ८९)

तार से दी हैं। जिस तरह तार से राग पैदा होता है, उसी तरह बैराग से प्रेम पैदा होता है।

पद (९) अगम = अगम्य = निश्चल, शांत, जिसका बोध न हो सके, जिसे प्राप्त न किया जा सके, जिसमें दूसरे का प्रवेश असंभव हो, गहरा, अथाह, असीम, अनंत। विगड़े हुए रूप 'आगम' में इसका अर्थ है भविष्य या परलोक।

२० देखने में बहुत ही सीधा-सादा यह पद अत्यंत गूढ़ दार्शनिक विचारों से भरा हुआ है, जिस पर शून्यवाद और विज्ञानवाद (योगाचार) के दर्शन का प्रतिबिंब पड़ रहा है। इनके अनुसार एक बाह्य सृजनात्मक शक्ति जिसे "परिकल्प्य" कहते हैं, प्रत्यक्ष रूपों के अस्तित्व का कारण है। यह चामत्कारिक सृजनात्मक विचार है जो "ब्रालय विज्ञान" के चिरकालीन और अक्षय भंडार से हर कल्पना और हर चित्र के लाक्षणिक गुण प्राप्त कर सकता है। यह भंडार स्वतः भाव मात्र है, वह विचार जो अपने अस्तित्व के लिए किसी वस्तु पर आश्रित नहीं (शुद्ध भाव), अर्थात् ऐसा भाव जो केवल शून्य, निस्तब्धता और पूरा सम्मोह है।

२३ आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है कि संध्याकाल का अंधकार कविता में बुढ़ापे का प्रतीक है परंतु इस पद में वह प्रगय का प्रतीक है। शंख, घंटे और शहनाइयाँ प्रगय का उत्सव मनाने के लिए हैं। श्रुति संध्या का अंधकार पश्चिम की ओर से बढ़ता आता है इसलिए पश्चिम की खिड़की खोलना उजाले का प्रतीक है, जिसमें पश्चिम का अभिप्राय मनुष्य की पीठ है जहां रीढ़ की हड्डी के बीच से आत्मा तक पहुँचने का वह मार्ग गुजरता है जिसे सुषुम्ना मार्ग कहते हैं।

२५ हरि = विष्णु के लिए प्रयोग किया जाता है। कबीर ने बहुधा भगवान के अर्थ में लिया है।

२६ झोंकार = भगवान का राग-रूपी या शब्द-रूपी अंग, परमात्मा, सृष्टि का रचयिता।

२७ अतस्मिन्हार = अपरिचित

२८ बाजे सोहं तूरा—(देखिये पद १२) जब गुरु शिष्य के पैर छूता है तो द्रुत अर्द्धत में परिवर्तित हो जाती है। इसे तसव्वुफ़ में "सिरें-तौहीद" (एकपन का भेद) कहते हैं (देखिये पद ४७)।

२९ बह्चिन्ना—एकता का अनेकता में परिवर्तित होना।

ब्रह्मा-विष्णु-शिव = (देखिये पद १५)

इस पद में यह भाव है कि आत्मा का अस्तित्व स्वयं ब्रह्मा, विष्णु और शिव से पहले से था। आत्मा ब्रह्म में लीन थी। फ़ारसी के प्रसिद्ध कवि हाफ़िज़ शीराज़ी ने इस विचार को इस प्रकार व्यक्त किया है :

भाजराए-मन-ओ माझ्जे-मरा पायाँ नीस्त

हरजे आयाज़ नदारद न पिज़ीरद अंजाम

२-द बंडर दैट बाज़ इन्डिया, अंग्रेजी, बाशम ३-इन्डोडकशन टु द स्टडी आफ इन्डियन हिस्ट्री, अंग्रेजी, दामोदर धर्मानंद कोसांबी से उद्धृत)।

सरस्वती—विद्या, कला और कविता की देवी, वेदों में एक नदी और एक देवी दोनों रूपों में उल्लेख है। सरस्वती नदी बहुत पवित्र थी और आर्य आरंभ में भारत में आकर जिस प्रदेश में बसे, जिसे ब्रह्मावर्त कहते हैं, उसकी एक सीमा पर यह नदी बहती थी। नदी की देवी के रूप में सरस्वती उर्वरता और पवित्रता की शक्ति है। वाक की देवी के रूप में वेदों में उल्लेख नहीं मिलता लेकिन ब्राह्मणों और महाभारत में वह वाक की देवी है। हिंदु प्रतिमा-विद्या के अनुसार सरस्वती ब्रह्मा की पत्नी हैं और संस्कृत भाषा और देवनागरी अक्षरों की प्रणेता मानी जाती हैं। इनका रंग गोरा और शरीर सुडौल, माथे पर उदीयमान चंद्रमा है और वह कमल के फूल पर बैठी या खड़ी हुई दिखायी देती हैं। (हिंदु प्रतिमा-कोष, अंग्रेजी जान डाउसन)।

इन्द्र—आकाश के देवता। वेदों ने इनकी गणना प्रथम कोटि के देवताओं में की है लेकिन वह सृजनोपरि नहीं हैं, माँ और बाप का उल्लेख है। उनका रंग सुनहरा है और हाथ लंबे-लंबे हैं। लेकिन वह अपने रूप बदल सकते हैं। उनका दो घोड़ों का रथ सुनहरा है, अश्व वज्र है जो दाहिने हाथ में है। सोमरस उन्हें बहुत प्रिय है जिसे वह शराबियों की तरह पीते हैं और उससे मस्त हो जाने के बाद शत्रुओं से युद्ध करने निकलते हैं। वायु के देवता के रूप में वह ऋतुओं पर शासन करते हैं और वर्षा का जल बाँटते हैं। वेदों में अग्नि के सिवा सबसे ज्यादा जिस देवता को तारीफ है वह इंद्र हैं। वह बहुत उदार और दानी देवता हैं जिनका नाम वर्षा, उर्वरता, बिजली और तूफान से जुड़ा हुआ है और वह अकाल और अना-वृष्टि के रूप में वह असुरों के विरुद्ध निरंतर लड़ते रहते हैं। दासों और असुरों के “पत्थर के बने हुए शहरों” को नष्ट करने का श्रेय उन्हीं को है। उनकी प्रत्यक्ष रूप से उपासना नहीं की जाती लेकिन कुछ त्योहारों का संबंध उनके नाम के साथ जुड़ा हुआ है। ब्रज की चरागाहों में गवाले उनकी पूजा करते थे लेकिन कृष्ण ने उनका मन मोह लिया और इंद्र की पूजा बंद हो गयी। इस पर इंद्र को बहुत क्रोध आया जो ब्रजवासियों पर वर्षा का प्रकोप बनकर उतरा। लेकिन कृष्ण ने जो विष्णु का अवतार थे गोवर्धन पर्वत को अपनी एक उँगली पर उठा लिया और उसे सात दिन तक छतरी की तरह इस्तेमाल किया। अंत में इंद्र की पराजय हुई और उन्होंने कृष्ण के प्रभुत्व को स्वीकार कर लिया।

चौरासी लक्ष जीव = चौरासी लाख योनियाँ। जैन और हिंदु मत के अनुसार हर प्राणी भुक्ति पाने से पहले चौरासी लाख बार जीवन धारण करता है।

१७ पद (१) **ग्रह** = तारा, **तपन** = सूरज (देखिये पद ८९)

पद (२) **सुरत** और **निरत** साधना के दो पक्ष हैं। एक निरत जिसका अर्थ है संसार से विरक्त हो जाना और दूसरा ‘सुरत’ जिसका अर्थ है भगवान से लौ लगाना। इसलिए इस पद में और भागे के पदों में सुरत का अनुवाद प्रेम और निरत का अर्थ वैराग लगाया गया है। कबीर ने सुरत (प्रेम) की उपमा राग से और निरत (वैराग) की बीणा के

कभी-कभी लिंग के साथ योनि की भी उपासना होती है जो उनकी शक्ति (नारी-शक्ति) की प्रतीक है। शिव-शक्ति के प्राचीन मत के अनुसार इस नारी-शक्ति के बिना शिव केवल शिव अर्थात् निष्प्राण देह है और जब उसमें शक्ति मिल जाती है तो वह शिव बनकर जाग उठता है। (भारतीय सभ्यता के इतिहासकारों और विद्वानों का मत है कि लिंग-पूजा प्राचीन आर्यों के ज्ञान से पहले भारत में प्रचलित थी, जिसका प्रमाण हड़प्पा के खंडहरों से निकलनेवाले लिंग हैं। हिंदू धर्म में लिंग-पूजा का समावेश कदाचित् ईसा की पहली शताब्दी के आस-पास हुआ।) महाकाल और महादेव के अतिरिक्त इनका तीसरा रूप एक ध्यानमग्न महायोगी का है जो अपनी तपस्या से अपार शक्ति प्राप्त कर लेता है, चमत्कार करता है, और सृष्टि की विशाल आत्मा में विलीन हो जाता है। इस भूमिका में वह एक नंगा योगी है जिसे दिग्बर कहते हैं (दिक् = दिशाएँ = शून्य जिसका अंबर या वस्त्र है)। वह घूर्णति है जिनके बाल उलझे हुए हैं और शरीर पर भभूत मली हुई है। अपनी पहनी भूमिका अर्थात् विनाशक शक्ति की दृष्टि से वह भैरव हैं जो विनाश से आनंद प्राप्त करते हैं। साथ ही साथ वह भूतेश्वर भी हैं और भूत-प्रेतों पर शासन करते हैं। वह अपनी जटाओं में साँप लपेटकर और गले में नारंगों की माला पहनकर भूत-प्रेतों, पिशाचों और ढाकिनियों के साथ शमशानों में घूमते-फिरते हैं और उन्मत्त होकर महानाश का वह नृत्य करते हैं जिसे तांडव कहते हैं।

शिव शांति और शून्य के भी देवता हैं और नृत्य के देवता भी (नटराज)। तमिलनाडु में नटराज की उपासना होती है और बनारस में विश्वेश्वर की। उत्तर में उनका निवासस्थान कैलाश पर्वत और दक्षिण में चिदंबरम् का मंदिर है, जहाँ उनको नाचता हुआ देवता माना जाता है। शिव १०८ प्रकार के नृत्यों के प्रवर्त्तक हैं, जिनमें से कुछ बहुत ही रसमय और सुंदर हैं और कुछ बहुत ही बीभत्स और भयानक। इनमें सबसे प्रसिद्ध तांडव है। इस नृत्य से सृष्टि नष्ट हो जाती है और काल का एक चक्र पूरा हो जाता है।

शिव के भी हजारों से अधिक नाम हैं जो उनके विभिन्न गुणों को व्यक्त करते हैं। शिव के पाँच सर (पंचानन) और चार हाथ हैं। चित्रों में बहुधा उन्हें बैठा हुआ दिखाया जाता है, ध्यानमग्न। माथे पर तीसरी आँख है जो इतनी प्रलयकरी है कि उससे कामदेव भस्म हो गये थे। उस तीसरी आँख के ऊपर माथे पर उदीयमान चन्द्रमा सुशोभित है। उलझी हुई जटाओं की गाँठ सर पर साँग की तरह दिखायी देती है जिस पर गंगा नदी का प्रतीक है जिसकी आकाश से गिरती हुई धार को शिव ने अपने सर पर रोक लिया था। गले में मुंड माला है और साँप लिपटे हुए हैं (नाग कुंडल) और संसार को नष्ट कर देनेवाला विष पी लेने की वजह से गर्दन नीली है (नीलकण्ठ)। हाथों में त्रिशूल डमरू, गदा और रस्सी है शरीर पर चोर हिरन या हाथी की खाल का वस्त्र है। आम तौर से उनका वाहन नंदी बैल पास ही दिखायी देता है। प्रोफेसर कोसांबी के अनुसार लिंग पुराण के प्रमाण के आधारपर यह कहना गलत न होगा कि नंदी बैल शिव का गण चिन्ह (Totem) है और पाषाण युग की सभ्यता के अन्तिम चरण (Neolithic) से लगभग दो हजार वर्ष पहले जंगली जातियों में नंदी बैल की उपासना का प्रमाण मिलता है। इस प्रकार शिव का पात्र आर्य और अनार्य कबीलों की एकता का प्रतीक बन जाता है। (१-डिक्शनरी आफ हिंदु माइथालोजी, अंग्रेजी, डाउसन

रामायण में दिये गये वृत्तांत के अनुसार पहले केवल पानी था, जिससे पृथ्वी की रचना हुई। उसी पानी से ब्रह्मा प्रकट हुए जिन्होंने सुअर (वाराह) का रूप धारण करके पृथ्वी को ऊपर उठाया और अपने बेटों, ऋषियों और मुनियों के साथ सारे संसारकी सृष्टि की। महाभारत के वृत्तांत के अनुसार ब्रह्मा विष्णु की नामी से उत्पन्न हुए जहाँ से एक कसल का फूल बाहर निकला (देखिये 'सहस्र कैवल', पद ४)। इसलिए उनका नाम नाभिज और सरोजिन् भी है। वह अपनी कृपादृष्टि देवताओं और उनके शत्रुओं दोनों ही पर रखते हैं। शैव मत में ब्रह्मा का जनक महादेव या रुद्र (शिव) को माना जाता है, इसलिए ब्रह्मा शिवलिंग की पूजा करते हुए माने जाते हैं।

जब ब्रह्मा संसार की रचना करते हैं तो वह केवल एक दिन तक रहती है और ब्रह्मा का एक दिन दो अरब सोलह करोड़ दिन के बराबर होता है। इस लंबे दिन का अंत होने पर संसार अग्नि के प्रकोप से नष्ट हो जाता है, लेकिन ऋषि-मुनि, देवता और तत्त्व बाकी बच जाते हैं। फिर ब्रह्मा दुबारा संसार की सृष्टि करते हैं और प्रलय और नवसृजन का यह क्रम ब्रह्मा के जीवन के सौ वर्ष तक चलना रहता है (क्योंकि ब्रह्मा का एक दिन दो अरब सोलह करोड़ साल के बराबर होता है इसलिए पहले इसे तीन सौ पैसठ से और फिर जो गुणनफल आये उसे सौ से गुणा कीजिये तो ब्रह्मा के जीवन के सौ वर्ष का अनुमान होगा)। सौ वर्ष बाद ब्रह्मा का भी अंत हो जाता है, सारे देवताओं, ऋषियों और मुनियों का भी अंत हो जाता है और सृष्टि अपने तत्त्वों के रूप में क्षिप्त-भिन्न हो जाती है (हिंदू प्रतिमा कोप, अंग्रेजी, जान डाउसन)।

यह काल-चक्र हिंदू कल्पना है जो इस्लामी काल-चक्र की कल्पना से भिन्न है। लेकिन अमोखा संयोग है कि इससे मिलती-जुलती कल्पना बालिब के यहाँ मौजूद है। अपनी फ्रांसीसी रचना "मेहे-नीमरोज़" (मध्याह्न का सूर्य) में उन्होंने लिखा है कि गुण ही अस्तित्व हैं और वे सूर्य के प्रतिबिंब से भिन्न नहीं। प्रलय के बाद नया मानव जन्म लेगा और एक मानव के बाद दूसरा मानव अवतार लेगा (देखिये दीवान-ए-बालिब की भूमिका, हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट, बंबई)।

महेश = (शिव = विनाशक = अर्थात् संसार को नष्ट करनेवाले) त्रिमूर्ति के तीसरे देवता का नाम।

शिव का नाम वेदों में नहीं मिलता लेकिन उनके दूसरे नाम रुद्र का प्रयोग ऋग्वेद में अग्नि के लिए किया गया है। वेदों के रुद्र ने उद्यति करके कुछ समय बाद शक्तिशाली शिव का रूप धारण कर लिया। यद्यपि शिव विनाश के देवता हैं परंतु उनकी शक्तियाँ और गुण कहीं ज्यादा हैं। रुद्र के रूप में वह महाकाल है जो हास, विनाश और मृत्यु लाता है। लेकिन हिंदू मत में विनाश स्वयं सृजन का सूचक है। इसलिए शिव और शंकर के रूप में यह पवित्र देवता निर्माण और नवसृजन की शक्ति धनकर प्रकट होते हैं, जिनके कारण ही मृत्यु के बाद जीवन, हर प्रलय के बाद सृजन का निरंतर क्रम चलता रहता है। इसलिए वह ईश्वर और महादेव हैं। उनकी नवजीवन के निर्माण की शक्ति को शिवलिंग के प्रतीक से व्यक्त किया जाता है और इसलिए शिव की पूजा या तो केवल लिंग के रूप में की जाती है या

विष्णु-त्रिमूर्ति के दूसरे देवता। ऋग्वेद में विष्णु की गणना प्रथम कोटि के दूसरे देव-
ताओं में नहीं होती। वह सौर-शक्ति (Solar Energy) का रूप है। सारी सृष्टि उनके
तीन पग के नीचे है और उनकी ज्योति से भरी हुई है। तीन पगों का अर्थ है ज्योति
अर्थात् अग्नि, बिजली और सूरज। यह भी कहा जाता है की इसका अर्ध सूर्योदय, मध्याह्न
पर पहुँचना और सूर्यास्त है। विष्णु का काम संसार रक्षा और रखावाली करना है।

ब्राह्मणों के लिखे हुए उन ग्रंथों में जिनमें वैदिक रीतियों का उल्लेख किया गया है
और “ब्राह्मण” कहलाते हैं, विष्णु को नयी विशेषताएँ प्रदान कर दी गयी हैं और उनका
स्थान बहुत ऊँचा हो गया है। महाभारत और पुराणों में वह हिंदू त्रिमूर्ति के दूसरे देवता
हैं और सत्-गुण का अवतार हैं और इसलिए संसार क रक्षक हैं। यह वह आत्मा है जो सारी
सृष्टि में व्याप्त है। इसलिए उनको ब्राह्म अर्थात् जल-विस्तार से संबंधित कर दिया गया है।
इस रूप में विष्णु का नाम नारायण है, अर्थात् जल में कीड़ा करनेवाला। चित्रों में उन्हें
शेषनाग पर लेटा हुआ दिखाया जाता है जो इस ब्राह्म-अर्थात् जल-विस्तार (मूल सिद्धांत) में
तैर रहा है। यह उस समय का दृश्य है जब सृष्टि अपने जीवन का एक चक्कर पूरा करके नष्ट
हो जाती है और अपने जीवन का नया चक्कर आरंभ करनेवाली होती है।

विष्णु के उपासक उनको सबसे बड़ा देवता मानते हैं जिनसे सभी वस्तुएँ जन्म लेती
हैं। महाभारत और पुराणों में वह प्रजापति हैं और उनका अवतरण तीन अवस्थाओं में
होता है। १—सृष्टि के रचयिता जो ब्राह्म और अर्थात् जल-विस्तार पर तैरते हुए स्वप्नस्थ
विष्णु की नाभी से निकलने वाले कमल के फूल से पैदा होते हैं। २—स्वयं विष्णु जो अपने
अवतारों का जैसे गम और कृष्ण का रूप धारण करते हैं और इस तरह संसार की रक्षा
करते हैं। ३—शिव या रुद्र या महेश जो विनाश की शक्ति हैं।

विष्णु के केवल दस अवतार हैं, लेकिन भागवत पुराण में बाइस अवतारों का उल्लेख
किया गया है। और फिर अनगिनत अवतारों का भी उल्लेख किया गया है। सब से लोक-
प्रिय सातवें अवतार राम और आठवें अवतार कृष्ण हैं और इन दोनों में भी कृष्ण को विष्णु
का पूर्ण अवतार समझा जाता है।

कहा जाता है कि पवित्र गंगा विष्णु के चरणों से निकली है।

विष्णु संसार के रक्षक के रूप में सबसे अधिक लोकप्रिय देवता हैं और उनकी पूजा
उल्लास की भावना के साथ की जाती है। उनके हज़ार नाम हैं और इन नामों का जपना
शुभ समझा जाता है। उनका वाहन गरुड़ है। उनका रंग गहरा नीला है और चार हाथ
हैं—एक में शंख, दूसरे में चक्र, तीसरे में गदा और चौथे में कमल का फूल (पद्म) है। उनके
पास एक धनुष और तलवार भी है। उनकी पत्नी लक्ष्मी (धन की देवी) हैं, जिनके साथ वह
कमल के फूल पर बैठे या कमल के पत्ते पर तैरते हुए दिखायी देते हैं। (डिक्शनरी आफ हिंदू
माइथालॉजी, अंग्रेजी, जान डौसन)

ब्रह्मा—त्रिमूर्ति के पहले देवता का नाम जिन्हें जगदीश्वर, उत्पादक, प्रजापति और
विधाता के नामों से भी याद किया जाता है।

कृष्ण-जन्म की कहानी विवरण की कुछ भिन्नता के साथ यहूदियों, ईसाइयों और मुसलमानों के एक महान पैगंबर हज़रत मूसा के जन्म की कहानी से बहुत मिलती-जुलती है।

कृष्णजी की माँ देवकी राजा कंस की भतीजी थी और नारद मुनि ने यह भविष्यवाणी की थी कि देवकी का बेटा कंस के अत्याचारी का अंत कर देगा। इस संकट से बचने के लिए कंस ने देवकी को अपने राजमहल में कैद कर लिया और उनकी कोख से जन्म लेनेवाले छः बेटों की हत्या करवा दी। जब वह सातवीं बार गर्भवती हुई तो वह विष्णु का अवतार था और वह देवकी के पेटसे उनकी सौत, बासुदेव की दूसरी पत्नी रोहिणी के गर्भ में चले गये। इस बच्चे का नाम बलराम था जो विष्णु के सफ़ेद बाल से पैदा हुए थे। देवकी के आठवें बेटे कृष्ण थे। उनका रंग इसलिए काला था कि वह विष्णु के काले बाल से पैदा हुए थे। आधी रात को जब कृष्णजी ने जन्म लिया तो महत्त्व के सिपाहियों को नींद आ गयी और सारे द्वार खुल गये। कृष्ण के पिता बासुदेव बच्चे की जान बचाने के लिए उसे गोद में उठा कर मथुरा से बाहर चले गये और जमुना के पार एक अहीर नंद के घर पहुँचे जिसकी पत्नी यशोदा के यहाँ लड़की पैदा हुई थी। उन्होंने अपने बेटे को उसकी बेटी से बदल लिया। इस तरह कृष्णजी का पालन-पोषण यशोदा की गोद और नंद के घर में हुआ। और इसलिए वह नंदलाल कहलाते हैं। कंस ने अपनी घबराहट में यह भाषा दे दी कि जिस लड़के में शक्ति के लक्षण दिखायी दें उसका वध कर दिया जाये। नंद को जब यह खबर मिली तो वह कृष्ण और यशोदा, बलराम और रोहिणी को अपने साथ लेकर गोकुल चले गये। वहीं कृष्णजी अपने भाई बलराम के साथ हरे-भरे मैदानों में पले-बढ़े। बचपन में वह बहुत भोली शराबें करते थे और मक्खन, चुराकर खा लेते थे। जवानी में बाँसुरी बजाते फिरते थे। और गोपियों को छेड़ते थे। उनकी सब से प्रिय गोपी और पत्नी राधा थीं और इन्हीं दोनों के आधापर सारी प्रेम कथाओं कविताओं और चित्रों की रचना हुई है। महाभारत युद्ध में कृष्णजी पांडवों के साथ थे और अर्जुन के सारथी के रूप में युद्ध में हिम्सा ले रहे थे। उस रणक्षेत्र में पांडवों और कौरवों की सेनाओं के बीच खड़े होकर कृष्णजी ने अर्जुन को “भगवद्गीता” का उपदेश दिया था।

हज़रत मूसा के क्रिस्ते में कंस की जगह मिर्खा का बादशाह फ़िरऔन है जिसने अपनी जान और सल्तनत बचाने के लिए यहूदियों के पैदा होनेवाले बेटों के क़त्ल का हुक्म दे दिया था। जब मूसा पैदा हुए तो उनकी माँ ने उन्हें एक बक्स में नंद करके नील नदी में डाल दिया और फ़िरऔन की बेटी ने उस बक्स को निकाल लिया और हज़रत मूसा का पालन-पोषण फ़िरऔन के महल में हुआ। हज़रत मूसा की ज़िंदगी में भी एक युद्ध है जिसका अंत इस तरह होता है कि वह अपनी क्रौम को लेकर नील नदी पर आते हैं। नदी का पानी दोनों तरफ़ हट जाता है और बीच में रास्ता बन जाता है जिससे हज़रत मूसा अपनी क्रौम को लेकर गुज़र जाते हैं। लेकिन जब फ़िरऔन अपने लश्कर के साथ उस रास्ते से गुज़रने की कोशिश करता है तो दोनों तरफ़ से पानी के धारे आकर मिल जाते हैं और फ़िरऔन अपने लश्कर समेत नील नदी में डूब जाता है।

अस्ले-शुद्ध-ओ-शाहिद-ओ-मशहूद एक है
 हैरां हूँ फिर मुशाहिदा है किस हिसाब में
 है मुश्तमिल लुम्बे-सुवर पर डुज्दे-बहर
 यों क्या धरा है क़तर-ओ-मौज-ओ-हबाब में

भावार्थ: हष्य, दर्शक और दर्शनीय का मूल एक ही है। मैं हैरान हूँ कि कि दर्शन किस गिनती में है। समुद्र का अस्तित्व विभिन्न रूपों के प्रकट होने पर निर्भर है। बूंद, लहर और मुलकुले में क्या रखा है।]

—यालिव

१५ सत्त लोक का वर्णन है अर्थात् जो कुछ भी ब्रह्मांड में है वही पिंड में है। मनुष्य स्वयं ही अपने घट (अस्तित्व) के अंदर यह सब कुछ देख सकता है।

कृष्ण- हिंदुस्तानी देवमाला के सबसे लोकप्रिय हीरो और हिंदुओं के सबसे प्रिय देवता हैं और विष्णु का आठवाँ अवतार समझे जाते हैं। उनकी लोकप्रियता इतनी अधिक है कि दिल्ली और उत्तर प्रदेश के मुसलमान घरानों में जब बच्चा पैदा होता है तो गीत कृष्णजी के गाये जाते हैं। जैसे “अलबेली जच्चा मान करे नंदलाल से, सुहागन जच्चा मान करे नंदलाल से” या “अलबेले ने मुझे दर्द दिया, साँवलिया ने मुझे दर्द दिया”। नंदलाल और साँवलिया दोनों से अभिप्राय कृष्ण ही है। (प्रमाण के लिए देखिए “रसूमे देहली”, मौलाना सयद अहमद देहली)। भारत के बँटवारे के बाद यह गीत पाकिस्तान भी पहुँच गये हैं। कृष्ण-भक्ति के गीत और कविताएँ उर्दू के बहुत से कवियों के यहाँ मिलती हैं जिनमें सबसे महत्त्वपूर्ण नाम नज़ीर अकबराबादी (१८ वीं शताब्दी) और मौलाना हसरत मोहानी (२०वीं शताब्दी) के हैं।

कृष्ण का नाम सबसे पहले ऋग्वेद में आता है। लेकिन वह कृष्ण जिनके चारों ओर भक्ति-रस की कविता और भक्ति-दर्शन का ज्योति-मंडल है, सबसे पहले क्वांदोग्य उपनिषद् में प्रकट हुए हैं और वहाँ वह देवकी के बेटे हैं। फिर उनका संदेश भगवद्गीता में है जो अपने काव्य, दर्शन और आध्यात्मिकता की दृष्टि से अद्वितीय है। यह गीत कई शताब्दियों से भारत में लोकप्रिय है और योरप और अमरीका के विचारक और कवि भी उससे प्रभावित हुए हैं। विद्वानों का मत है कि “भगवद्गीता” महाभारत के बाद की रचना है लेकिन अब वह महाभारत का एक अंग है। पुराणों में और खास तौर पर भागवत पुराण में कृष्णजी के जीवन का जो वृत्तान्त है वही अब जन साधारण के लिए एक कहानी बन गया है। जिसके आधारपर शताब्दियों से हज़ारों और लाखों गीत और चित्र बनाये जा रहे हैं, जिनकी गिनती भारतीय कला की श्रेष्ठतम कृतियों में होती है। भागवत पुराण की कहानियाँ हिंदी में “प्रेम-सागर” के नाम से अद्वित होकर लोकप्रिय हो चुकी हैं। हिंदी के दो बहुत बड़े कवियों मीरा-बाई और सूरदास की महानता का सारा आधार कृष्ण-भक्ति की कविता पर है।

कृष्णजी यादव बंश के थे और इस जाति के लोग जमुना के किनारे वृंदावन और गोकुल में पशु चराते थे। इस समय मथुरा और वृंदावन में कंस का शासन था।

होकर भ्रमण कर सकता है। इसलिए हंस उस ईश्वरीय गुण (Essence) का प्रतीक है जो प्राणी-अस्तित्व के बंधनों में जकड़ा रहकर भी उनसे स्वच्छंद रहता है। सीमित और असीम, नश्वर और विनाशहीन, पार्थिव और पारलौकिक, जड़ और चेतन सब के साथ और किसी के साथ नहीं।

यह आत्मा सृष्टि (Cosmos) और ब्रह्मांड (Universe) के पिंड के अंदर एक गीत की तरह तैरती है। हर संत और योगी अपनी साँस के उतार-चढ़ाव में यही गीत सुनता है और मस्त हो जाता है। हर अंदर जाती हुई साँस 'हं' है और हर बाहर आती हुई साँस 'स - सा' है। और होनेवाला योगी निरंतर "ह - सा", "हं - सा" सुनता रहता है और अपने अस्तित्व की पारलौकिक वास्तविकता को पहचानने लगता है।

इस आंतरिक हंस के गीत में एक रहस्य और भी है। वह "हं - सा" "हं - सा" के साथ-साथ यह भी सुनता है - "सा - हं" "सा - हं" (सा = वह, हं = मैं) और इसका मतलब है "वह मैं हूँ। जो वह है वही मैं हूँ।" अर्थात् मैं आत्मा हूँ, परमात्मा हूँ-(अनलहक)

सोहम् वाम = अनलहक की खुराबू। ब्रह्म के साथ जीव की अभिन्नता। पूर्ण में अंश का विलय। इसलिए मुस्लिम सूफ़ी मंसूर के प्रसंग से, जिन्हें अनलहक कहने पर सूली चढ़ा दिया गया था, मैं ने सोह का अनुवाद अनलहक किया है। दूसरी जगह कबीर ने इसी को "सोहंग" लिखा है। गीत के प्रसंग में "बाजै सोहंग तूरा" अर्थात् अनलहक का साज़ बज रहा है।

१३ अनदेखे एकमात्र ईश्वर की कल्पना बहुत पुरानी है। अगर एक तर्क जहाँ उपनिषदों में जिनका क्रम ईसा से कई शताब्दी पहले आरंभ होता है, यह कल्पना मौजूद है तो दूसरी तरफ़ यहूदियों के पैगंबरों ने इसका प्रचार किया है। इस कल्पना ने प्राचीन काल में मानव-समूहों को क़बायली देवताओं की कल्पना से मुक्त करके अधिक व्यापक मानवी एकता की नींव डाली। इस्लाम की सारी बुनियाद एक खुदा उपासना पर क़ायम है जो ला-इलाहा-इल-अल्लाह के चार शब्दों में निहित है।

इक़बाल ने अपनी मशहूर नज़म "शिकवा" में एक बंद कहा है जो कबीर के पद के विचार के बहुत निकट आ जाता है।

हम से पहले था अजब तेरे जहाँ का मंज़र
कहीं माबूद थे पत्थर, कहीं मसजुद राजर
खूगरे-पैकरे-महसूस थी ईसा की नज़र
मानता फिर कोई धनदोखे खुदा को क्यों करें
तुम को मालूम है लेता था कोई नाम तेरा
उम्मत-अहमदे-मुर्सल ने किया काम तेरा

(माबूद = जिसकी पूजा की जाये; मसजुद = जिसके आगे सिज्दा किया जाये;
राजर = पेड़; खूगरे-पैकरे-महसूस = दिखायी देनेवाली प्रतिमाओं से परिचित; उम्मत-अहमदे-
मुर्सल = रसूल की उम्मत यानी मुसलमान)

भौलिया हैं वे अल्लाह की दुल्हन हैं। दुल्हनों को सिर्फ़ महरम (आत्मीयजन) ही देख सकते हैं। मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने अपनी मसनवी में यह उपमा इस्तेमाल की है। हिन्दुस्तान में फ़कीरों और दरवेशों का एक सम्प्रदाय “सदा सुहागिन” के नाम से मशहूर है। कबीर ने एक पद में ईश्वर को “अबिनासी दुल्हा” कहकर सम्बोधित किया है।

यह कहना सुरिक्त है कि भक्ति और सूफ़ी विचारधारा में ये प्रतीक कहाँ से आये और कब से प्रचलित हैं। कृष्ण केवल विष्णु का अवतार ही नहीं हैं बल्कि परमात्मा हैं, जिनमें जाकर मिल जाने के लिए सभी अलग अलग जीवात्माएँ बेचैन हैं। और ये बेचैन आत्माएँ प्रेम की भाषा में गोपियाँ हैं जिनकी संख्या करोड़ों बतायी जाती है। ज़ाहिर है कि वृंदावन में करोड़ों गोपियाँ नहीं हो सकती। इसलिए ये करोड़ों आत्माएँ अपनी मुक्ति और निर्वाण के लिए अपने पति और संतान को छोड़कर (अर्थात् संसार के बंधनों को तोड़कर) बाँसुरी की धुन (अनाहत नाद) पर कृष्ण से जा मिलती हैं। वह प्रेम की भाषा है और इसका आशय आत्मा से संबंध रखता है। उस कृष्ण-लीला का तात्पर्य भी आत्मा से संबंध रखता है जिस में कृष्ण ने जमुना में नहाती हुई गोपियों के कपड़े चुरा लिये या छुपा लिये हैं। प्रेमी या प्रेमिका के सामने लज्जा और संकोच निरर्थक है। वहाँ तो “मैं” (अहं-भाव) बाक़ी ही नहीं रहता। इसलिए सूफ़ियों ने कहा है कि अल्लाह की दुल्हनों को सिर्फ़ महरम (मित्र = दोस्त = भेद जाननेवाला) देख सकता है और कबीर भी यही कहते हैं—

जो सुख चाहै तो लज्जा त्यागै, पियासे हित-मिल लागै
छूट खोल अंग भर भेटे, नैनन भारती साजै

१२ हंस—पवित्रता, चेतना और जीवन के वास्तविक लक्षण का प्रतीक है। कबीर ने आत्मा के अर्थ में भी इस शब्द का प्रयोग किया है। पूरबी भाषाओं में ‘वा’ और ‘आ’ की ध्वनि किसी को पुकारने या प्रम प्रकट करने के लिए भी जोड़ दी जाती है। इसलिए कबीर ने ‘हंसा’ कहा है।

हिंदू प्रतिमा-विद्या (Iconography) में जंगली हंस ब्रह्मा से संबंधित है। इन्द्र का वाहन हाथी है, शिव का वाहन नंदी बैल। उसी तरह ब्रह्मा का वाहन हंस है। हाइनिश ज़िगर की व्याख्या के अनुसार प्रत्येक वाहन देवात्मा का प्रकट रूप होता है। यह निष्कलंक आत्म-बल के माध्यम से प्राप्त की हुई स्वतंत्रता का प्रतीक है। इसलिए हिन्दू योगी या संत जब आवागमन के बंधन से मुक्त हो जाता है तो हंस का पद प्राप्त कर लेता है। उसे परमहंस कहते हैं।

हर प्राणी के स्वभाव में दो परस्पर-विरोधी लक्षण होते हैं और हंस का जीवन इन दोनों लक्षणों को अभिव्यक्त करता है। वह पानी पर तैरने के बावजूद पानी के लक्षणों में जकड़ा हुआ नहीं है। पानी के धरातल को छोड़कर वह स्वच्छ निर्मल आकाश में उड़ सकता है और आकाश में मौसमों के एतबार से वह उत्तर और दक्षिण जिधर चाहे जा सकता है। वह सारे संसार में घूमने वाला है, खानाबदोश और यायावर, जो पृथ्वी की अंधकारमय नीचाइयों से लेकर आकाश की ज्योतिर्मय ऊँचाइयों तक हर जगह समान सुगमता के साथ और निर्विघ्न

हुए आत्मा ने तरह-तरह के रंग-रूप धारण करना शुरू किया और संसार में भाकर मानस और माया बन गयी। यद्यपि वह क्षीण हो चुकी है पर उसने अभी तक इष्ट और प्रेम के संदेश को स्वीकार करने की क्षमता पूरी तरह नहीं खोयी है। इसलिये वह ब्रह्म की गुरु के मार्ग-दर्शन में दुबारा अभ्रसर हो सकती है। इस तरह वह ऊँचाई की ओर यात्रा आरंभ करती है। उसको अपनी खोयी हुई शक्ति दुबारा मिलती जाती है। इस यात्रा में उसे वही ध्वनि जिसे शब्द कहते हैं फिर सुनायी देती है और इस संगीत पर वह बढ़ती चली जाती है गति के तेज़ी के साथ-साथ इस संगीत का स्वर भी ऊँचा होता जाता है। यह स्वयं आत्मा का संगीत है जिसे योगी “अनाहत नाद” कहते हैं और सूफ़ी सौते सरमदी के नाम से याद करते हैं। (“मीराबाई”, बाँके बिहारी, भारतीय विद्याभवन बंबई से उद्धृत) “जो आवाज़ बाहरी कानों से सुनी जाती है वह दो चीज़ों के टकराव से पैदा होती है। परंतु ब्रह्म की ध्वनि अनाहत नाद है, अर्थात् वह ध्वनि या शब्द जो दो चीज़ों के टकराव के बिना पैदा हो। यह ओम्-ध्वनी है। (हाइनरिश ज़िमर) मीराबाई ने शब्द को नाद भी कहा है और कबीर के यहाँ भी, जो अनाहत नाद को अनहद कह देते हैं, नाम का शब्द कभी कभी इस अर्थ में इस्तेमाल होता है। कबीर के “अनहद” में एक विशेषता यह भी है कि अगर ‘हृद’ का अर्थ ‘सीमा’ लगाया जाये तो इसका अर्थ ‘सीमा-रहित’ यानी अनन्त हो जायगा। (“हृद हृद सब कहैं, अनहद कहे न कोय, अनहद के मैदान में सुख से कबीरा सोय।”)

फ़ारसी के महान सूफ़ी शायर मौलाना जलालुद्दीन रूमी (सन १२०७-१२७६ ई.) की मसनवी के शुरू में भी जहाँ बाँसुरी को आत्मा का द्योतक माना गया है, इस कल्पना की झलक मिलती है—

बिश्नौ अज़ नय चूँ हिकायत भी कुन्द
 भज़ जुदाईहा शिकायत भी कुन्द
 कज़ नयस्तौं ता मरा बिबुरीदा भन्द
 अज़ नफ़ीरम मर्द-भो-ज़न नालीदा भन्द
 सीना ख़्वाहम शरहः-शरहः भज़ फ़िराक
 ता बिगूयम शरहे-ददैं-इशति याक
 हर कसे कू दूर मुन्द; भज़ भस्ले ख़ेश
 बाज़ जूयद रोज़गारे-बस्ले ख़ेश

भावार्थ :- बाँसुरी से सुनो, वह कैसी (करुण) कहानी सुना रही है और (किस ढंग से) अपनी विरह की शिकायत कर रही है। (वह कह रही है) जब से मुझे बाँस के जंगल से काट कर झलक किया गया है, मेरी आवाज़ सुनकर सभी नर-नारी रोने लगते हैं। मैं चाहती हूँ कि सीना फ़ट्सुमी हो जाय ताकि मैं विरह-पीड़ा का हाल जी खोलकर कह सकूँ। ज़ाहिर है कि जो कोई अपने मूल से दूर जाता है वह फिर मिलन के दिनों की खोज करने लगता है।
 बाँसुरी = आत्मा, बाँस का जंगल = ब्रह्म

११ संत और भक्त कवियों ने भक्ति के उत्साह में अपनी कल्पना दुल्हन के रूप में और परमात्मा की दुल्हे के रूप में की है। यह उपमा सूफ़ियों के यहाँ भी इसी रूप में मिलती है जो

मूकचे हुस्नत न गंजद दर ज़मीन-ओ आसमाँ
 दर हरीमे-सीना हेरानम कि चूँ जा करदर्ई
 मी कुनी 'जामी' गुम अंदर इश्क़, इस्म-ओ-रस्मे खेश
 आफ़री बाद़ा बरी रस्मे कि पैदा करदर्ई

[भावार्थ : तुने अपने रूप को माशूकों के चेहरे में व्यक्त किया है, इसलिए आशिकों की आंख से उसका तमाशा देखता है। अपनी रूप-छटा का अक्स तुने पानी और मिट्टी में प्रकट किया और उसे गुत और खार (कूल ओर कटि) शमा और ऊँचाई पर रहनेवाले चांद सुंदर मुखड़े-में बदल दिया। अपने पेम के प्याले (जामे इश्क़) से एक घूंट ज़मीन पर उँडेल दिया और हज़ारों कलाएँ जाननेवाली बुद्धि को दीवाना बना दिया। हालाँकि तू माशूक़ अर्थात् रूप ही रूप है लेकिन तुने आशिकी का लिबास पहन रखा है और उसके बाद अपनी सुंदरता को छुद ही देखने की तमन्ना कर रहा है। तुने मुश्क़ (कस्तूरी) की तरह महकती हुई काली जुल्फ़ें अपने चेहरे पर बांध ली हैं और अब एक दुनिया को दीवानगी की इन जंजीरों में जकड़ लिया है। तेरे हुस्न का लश्कर ज़मीन और आसमान के व्यापक विस्तार में भी नहीं समा सकता, फिर भी मैं हेरान हूँ कि तुने सीने के अन्दर कैसे जगह बना ली। ऐ जामी, तुने इस इश्क़ में अपना नाम और अपना काम सब कुछ गुम कर दिया। उस रस्मे-आशिकी (प्रीत की रीत) का क्या कहना जो तुने पैदा की है।]

सत्रहवीं और अठारवीं शताब्दी के उर्दू शायर वली दकनी ने इसी विचार को एक शेर में थोँ कदा है—

हुस्न था परदए-तजरीद में सब तूँ आज़ाद
 तालिबे - इश्क़ हुआ सुरते - ईसान में आ
 [परदए-तजरीद = अमूर्तता का परदा]

८

काफ़िर की यह पहचान कि आफ़ाक़ में गुम है
 मोमिन की यह पहचान कि गुम उसमें हैं आफ़ाक़
 [आफ़ाक़ = मृष्टि] —इक़बाल

यहां काफ़िर और मोमिन हिंदू और मुसलमान के अर्थ में नहीं इस्तेमाल किये गये हैं। मोमिन ज्ञानी (संत) है और काफ़िर अनास्था और शंका (अ-विद्या) का शिकार।

१० सन्धन मार जगाये — शब्दों की मार या संगीत की चोट से जगाता है। अनाहत नाद से निद्रा भंग करता है। भक्ति में एक चीज़ है शब्द-साधना (देखिये पद ५७)। मृष्टि के आदिकाल में आत्मा ब्रह्म में लुप्त थी, जो महासुख महा-भ्रान्त है। वह पूर्ण शांति की अवस्था थी (शून्य) परंतु जब आत्मा ब्रह्म से ब्रज्य होकर संसार में नीचे उतरने लगी तो इस यात्रा में उसकी शक्ति क्षीण होती गयी, जिसके कारण एक ध्वनि पैदा हुई और उस ध्वनि को वेदांत और योग में शब्द (लप्रज्ञ = नाम = कजमा = Logos) कहते हैं। नीचे उतरते

संसार के सभी धर्मों में इस विचार के आधारभूत साम्य की ओर डा. राधाकृष्णन ने इन शब्दों में संकेत किया है :—

“जब हिन्दू अन्तरात्मा की बात करते हैं और बौद्ध धर्म वाले स्वयं बुद्ध की ऊँचाई तक पहुँचने की संभावना को स्वीकार करते हैं और यहूदी यह मानते हैं कि मनुष्य की आत्मा ईश्वर वा दीपक है, और जब ईसाई यह घोषणा करते हैं कि ईश्वर का राज्य तुम्हारे अस्तित्व के अन्दर ही है, क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि ईश्वर का उपासनायुद्ध और ईश्वरीय आत्मा तुम्हारे सीने में है, और जब इस्लाम के पैगम्बर यह फ़रमाते हैं कि खुदा हमारी रगे-जां से भी ज्यादा करीब है, तो यह सब अलग-अलग तरीकों से एक ही बात कहते हैं और वह यही कि ईश्वर कोई बाहरी अत्याचारी शक्ति नहीं है, खुदा कोई सुल्तान नहीं है, बल्कि वह आत्मिक और आंतरिक सिद्धांत है जो अहं में निहित है, यही अंतर्ज्योति है। हम सब इसी ईश्वरीय शक्ति की चिंगारियाँ हैं और ईश्वर के साथ-साथ ईश्वर की भाँति सृजन की क्रिया में व्यस्त हैं और हमारा कर्तव्य है कि हम परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करें ताकि पाप और असमानता को नष्ट करके मानव-जीवन के स्तर को ऊँचा उठा सकें।”

५ अधो = अवधूत = शाब्दिक अर्थ में वह जिसके वधू न हो, अर्थात् सांसारिक बंधनों से मुक्त। लेकिन कबीर ने यह शब्द नाथपंथी योगियों के लिए इस्तेमाल किया है, जिनका कबीर की विचारधारा में काफ़ी सम्मान है। सहज अवस्था प्राप्त करने पर साधक अवधूत बन जाता है। “ए मेरे चित्त, वहाँ चलकर विश्राम कर जहाँ सूरज और चाँद की भी गति नहीं है, जहाँ न प्रादि है न अन्त और मध्य भी नहीं, जन्म भी नहीं मरण भी नहीं, अपना भी नहीं पराया भी नहीं, जो महासुख है, जो सहज अवस्था है। (देखिये पद १४)

६ घट-व्यापक अर्थ में इस्तेमाल होता है। मिट्टी का बरतन = शरीर = हृदय = मन = आत्मा = चित्तन आदि। कबीर का प्रिय शब्द है। (देखिये पद ८)

७ जामी, ईरान के अंतिम बड़े शायर हैं जो लगभग कबीर के समकालीन कहे जा सकते हैं। उनकी शायरी सुक्रियाना है। अगर इस पद के साथ उनकी एक बज़न पढ़ी जाये तो इसका आनंद अधिक हो जाता है :

हुस्ने-खेश अज़ रूप-खूवां आशकारा कर दर्ह
बस ब-चरमे-आशिकाँ औं रा तमाशा कर दर्ह
ज़ाद-ओ - गित अक्से-जमाल-खेदातन बिन मूदर्ह
शमए - गुल - रुस्तार - ओ-मह सर्वो - बा ज़ा कर दर्ह
जुरए - अज़ जामे-इश्ते-खुद ब - खाक अन्नशुदर्ह
ज़ू फ़ुत्ने - अकल रा मजनुल-ओ-सौदा कर दर्ह
गरचे मायुक्की लिबासे - आशिकी पोशीदर्ह
उगह अज़ खुद जलबए-बरखुद तमन्ना कर दर्ह
बर रुख अज़, जुल्मे-सियह मिर्की सतासिल बस्तर्ह
आलमे रा बस्तए - ज़ंजिर - सौदा कर दर्ह

(कबीर के दोहे का अर्थ यहीं तक सीमित है। लेकिन यह बात भी दिलचस्पी से खाली नहीं है कि ब्रह्मा के कमल को पृथ्वी का प्रारंभिक रूप भी माना जाता है बल्कि वह खुद इस पृथ्वी की देवी धरतीमाता है। हिंदू प्रतिमा-विद्या (Iconography) और पौराणिक प्रतीकों (Mythological Symbols) के अनुसार इस कमल की पंखड़ियों के उपरी धरातल पर वे लोक हैं जहाँ तक पहुँचना संभव नहीं है। पंखड़ियों के नीचे वाले धरातल पर साँपों और यक्षों की बस्तियाँ हैं और इस फूल के मध्य (मर्म) में वह महाद्वीप है जिसका एक भाग भारतवर्ष है।

(एक और प्रतीक—ब्रह्मांड के अनंत शून्य (Cosmic Abyss) में भरे हुए अंधकारमय जल पर पृथ्वी इस तरह तैरती है जैसे अचेतन के अंधकारमय समुद्र में चेतन का जगमगाता हुमा कमल तैर रहा हो। यह कमल सृष्टि का द्वार, सृष्टि की कोख है, सृष्टि-विधान की प्रथम उत्पत्ति है। उसके मर्म से ब्रह्मा उत्पन्न होता है। कभी पानी औरत है और कमल प्रजनक अंग और कभी खुद कमल धरतीमाता और आर्द्रता की देवी है।

(वेदों की प्रारंभिक परम्पराओं में कमल की देवी का उल्लेख नहीं है। आर्यों ने बाद में उसे प्राचीन भारतवर्ष के अनार्य निवासियों की लोक-सम्भ्यता और लोक-परम्पराओं से ग्रहण किया और उसे श्री और लक्ष्मी के नाम दिये। लक्ष्मी जो धन की देवी है, उसका प्रतीक कमल है, इसीलिए उसको कमल की बेटी “पद्मसंभवा” कहा गया है। प्रागैतिहासिक काल के प्राचीन अनार्य भारत में वह चावल और धान की देवी है। अब वह भारतीय देव-माला की सबसे प्रिय, सबसे अधिक ग्राह्य और स्वीकार्य देवी है जो चित्रों में कमल के फूल पर खड़ी हुई दिखाई देती है। कभी-कभी उसकी भुजा में कमल का फूल और उसका डटल आभूषण की तरह लिपटा होता है। बौद्ध कला में कमल पर बैठे हुए भगवान बुद्ध या अपने हाथ में कमल का फूल लिए बोधिसत्व-पद्मपाणि-प्रागैतिहासिक काल के प्राचीनतम भारत की परम्पराओं से अपना आध्यात्मिक संबंध जोड़ रहे हैं।)

कबीर के इस पद में जो विचार है वह फारसी और उर्दू के कवियों के यहाँ भी प्रचलित है और सूफ़ी परम्पराओं से आया है जिन पर भक्ति और वेदांत का अच्छा खासा असर है—

ऐ तमाशागाहे—आलम रूप-नुस्त

तू कुजा बहरे तमाशा भी रबी

[भावार्थ—सारी दुनिया तेरे बेहरे का तमाशा देखती है। तू खुद कहां तमाशा देखने जा रहा है?]

—सादी

सितमस्त अगर हबसत कशद कि द-सैरे सर्व-ओ-समन दरा

तु जे गुंचा कम न दमीदई, दरे दिङकुशा ब-चमन दरा

[भावार्थ—कैसे सितम की बात है कि वासना तुझे बायों की सैर के लिए खींचे लिये जा रही है। तू तो खुद एक खिलता हुआ फूल है। दिल के दरवाजे को खोलकर अपने बाप में दाखिल हो जा।]

—बेदिल

करना अच्छा कर्म है और इसके विपरीत बुरा कर्म है और इन दोनों से क्रिया-प्रतिक्रिया का कम आरंभ होता है जिसका कोई अंत नहीं है। लेकिन हर कर्म चाहे वह अच्छा हो या बुरा हो, एक तरह का उलझावा है, मनुष्य की गरदन में पड़ी हुई रस्ती है जो उसे क्रिया-प्रतिक्रिया के इस अनंत कम में खींचे लिये जा रही है। इसको कबीर ने “कर्म की फांस” (फाँसी) कहा है। इसलिए बौद्धमत में ज्ञान के उच्चतर स्तरों पर अपने आपको अच्छे और बुरे दोनों तरह के कर्म के फंदों से मुक्त कर लेना शामिल है। यहाँ से निर्वाण की मंजिलें शुरू होती हैं। मुक्ति भ्रांदोलन पर और संत कवियों के यहाँ बौद्ध धर्म के इस नैतिक विचार की झुंझक अक्सर मिल जाती है। इस विचार को कबीर ने पद ६ में इस तरह व्यक्त किया है कि कर्म केवल ज्ञान प्राप्त करने के लिए है ज्ञान प्राप्त हो जाने के बाद कर्म उसी तरह बेकार और अनावश्यक हो जाता है जिस प्रकार फल आ जाने के बाद फूल की ज़रूरत नहीं रहती।

इस पद का एक पहलू और भी है जो किसी हद तक सीमित है। इसमें शेख सादी और इक़बाल का कबीर से मतैक्य है :—

तू कारे-जमीं रा निको सास्ती

कि बा-आस्माँ नीज़ परदास्ती

[भावार्थ :— क्या तूने ज़मीन का काम संवार लिया है जो आस्मान की तरफ उड़ान भर रहा है ?]

—सादी

भगर न सहल हों तुम पर ज़मीं के हंगामे

बुरी है मस्तिह-अंदेशाहाए-अफ़लाकी

[मस्तिह-अंदेशाहाए-अफ़लाकी = आसमान की चिंता में लीन]

—इक़बाल

४ सहस्र कैवल (सहस्र कमल) हज़ार पंखड़ियों वाला कमल। हाइनरिश जिमर ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की है कि सृष्टि, विनाश और नवसृष्टि का अनादि-अनंत कम चल रहा है। वह महापुरुष, वह स्वयंभू, वह परम आत्मा जिसे विष्णु कहते हैं और जो ब्रह्माण्ड (Cosmos) के आद्य-सिद्धांत, आद्य-जल विस्तार के अन्धकारमय धरातल पर तैर रहा है, जब अग्नी कृपा से अपने आपको प्रसन्न करने के लिए सृष्टि (Universe) को फिर से रचना चाहता है तो नाभि से एक अकेला कमल बाहर निकलता है जिसमें शुद्ध सोने की एक हज़ार पंखड़ियाँ सूरज जैसी चमक से जगमगाती हैं और सृष्टिकर्ता कमल के साथ साथ ब्रह्मा को भी जन्म देता है, जो कमल के बीचोबीच बैठा हुआ सृजन की शक्तियों की ज्योति से जगमगा रहा है।

यह ब्रह्मा एक ऐसा योगी है जिसे अपने ऊपर और सृष्टि और ब्रह्मांड की शक्तियों पर पूरा कानू है। जब कोई मनुष्य अपनी तपस्या में उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त कर लेता है तो विष्णु उसे मान्यता देते हैं और वह मनुष्य भी प्रतिष्ठित योगी हो जाता है और सृष्टि और ब्रह्माण्ड के उस सुनहरे सिंहासन, सुनहरे कमल पर बैठकर अपार रूप का दर्शन कर सकता है।

क्योंकि व्यापार, खेती, पशुपालन और महाजनी वैश्य के हाथ में थी और सारे शिल्प शूद्र के हाथ में। अफि आंदोलन के साथ-साथ कविता और दर्शन भी, जिन पर ब्राह्मणों का एकाधिकार था, शिल्पकारों तक पहुँच गये। उसका आखिरी और बड़ा कवि और चिंतक वकीर है।

सुपुच्छ कृष्णि—कबीरपंथी ग्रंथों में यह बताया गया है कि कलियुग के आरंभ में जब कबीर साहबने जन्म लिया तो काशी के सुदर्शन नामक महात्मा ने कबीर से दीक्षा ली। वह जाति के भंगी थे। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपनी पुस्तक कबीर में लिखा है कि महा-भारत की लड़ाई जीत लेने के बाद युधिष्ठिर ने अपने भाइयों और सगे संबंधियों का वध करने के पाप का प्रायश्चित्त करने के लिए एक बहुत बड़ा यज्ञ किया। भगवान श्रीकृष्ण ने इस यज्ञ में एक घंटा बाँध दिया और कहा कि जब घंटा सात बार बजे तो समझना चाहिये कि पाप से मुक्ति मिल गयी। हजाराँ साधु और ब्राह्मण भोजन कर चुके मगर घंटा नहीं बजा। तब कृष्णजी के आदेश पर भीम काशी को सुदर्शन भंगी को बुलाने गये। भीम के अहंकार के कारण सुदर्शन ने आने से इंकार कर दिया। तब युधिष्ठिर खुद उन्हें बुला लाये और भोजन कराया। उनके भोजन करने पर घंटा बजा। फिर सब लोग कृष्णजी के कहने पर प्रयाग गये। वहाँ संगम के पानी में सबने अपनी परछाईं देखी। सिर्फ सुदर्शन भंगी की परछाईं मनुष्य की थी, बाकी सबकी परछाईयाँ कुत्ते और दूसरे जानवरों से मिलती थी।

सन्तों की कोई जाति नहीं होती इस विचार को सूफ़ी चिंतन में इस प्रकार व्यक्त किया गया है—

बंदए-इश्क़ गुदी तर्कें-नसब कुन 'जामी'

कि दरिन राह फुलाँ-इन्ने फुलाँ चीज़े-नीस्त

—जामी

[भावार्थ:—ऐ जामी, अब इश्क़ की गुज़ामी की है तो ग़ाप-दादा का नाम भूल जाओ, क्योंकि इस रास्ते में यह बात कि अमुक आदमी अमुक का बेटा है कोई अर्थ नहीं रखती]

बाज़ मी गोयमो अज़ गुफ़्तए-ख़ुद दिलशादम

बंदए इश्क़म-ओ-अज़ हर दो जहाँ आज़ादम

[भावार्थ:— मैं यह बात फिर दोहरा रहा हूँ और इस बात से खुश हूँ कि मैं इश्क़ का गुलाम हूँ और दोनों ज़हान की पाबंदियों से आज़ाद हूँ]

—हफ़िज़ शीराज़ी

३ कर्म की फाँस—सभी धर्मों में यह धारणा प्रचलित है कि नैतिक नियम ईश्वर या देवताओं के बनाये हुए हैं और इनका पालन करना मनुष्य का कर्तव्य है। नैतिकता की इस कल्पना में पहला बुनियादी परिवर्तन गौतम बुद्ध (५०० ई. पू.) ने किया, जिनकी शिक्षा में नैतिक नियम स्वयं मनुष्य बनाता है और उनको अपने ऊपर लागू करता है। किसी के प्राण न लेना, वासनाओं से बचना, भूट और नशे से दूर रहना, ये सब अपनी इच्छा से स्वीकार किये जाने वाले कर्तव्य हैं जिनका कोई पुण्य फल नहीं मिलता बल्कि ये चेतना को निखारते हैं या वे परदे उठ जाते हैं जो चेतना पर पड़े हुए हैं। इन वर्तव्यों का पालन

इस कल्पना का आरंभ उपनिषद् और वेदांत से होता है और यह कविता और दर्शन की धर्म निरूपण कल्पना की ओर मनुष्य का पहला कदम है जिसमें धर्म-ग्रंथों और उपासना ग्रंथों को छोड़ कर मनुष्य ने मनुष्य की आत्मा के अंदर कने की और उसके व्यक्तित्व में दिलचस्पी लेने की कोशिश की है।

२. सन्त रैदास्—असली नाम रविदास है। कबीर के गुरु स्वामी रामानंद के बारह चेलों में रैदास भी एक हैं जो जाति के चमार थे। वह भी शायद काशी के रहनेवाले थे। इनकी कोई पूरी किताब या संग्रह नहीं मिलता, लेकिन कुछ कविताएँ (लगभग ४० पद) सिखों के धर्मग्रंथ 'गुरु ग्रंथ साहब' में शामिल हैं।

यह अजीब और दिलचस्प बात है कि मध्ययुग का वह मानव-धर्मो आंदोलन जिसने पहली बार पूरी मानवता को एक बिरादरी समझा और धर्म को प्रेम बना दिया और जो योरप में 'मिस्टीसिज़्म' (mysticism), इरान और इस्लामी दुनिया में तसव्वुफ़ और हिंदुस्तान के हिंदुओं में भक्ति और चीन में ची-एन और जापान में ज़ेन (ध्यान का अपभ्रंश) के नाम से मशहूर हुआ और स्वीकार किया गया, एक ऐसा आंदोलन था जिसके प्रकट रूप पर इन प्रदेशों के धर्मों का रंग चढ़ा हुआ था लेकिन जो आंतरिक रूप से अर्थात् अपने सार और उद्देश्य की दृष्टि से एक था। यह आंदोलन शुरू से आखिर तक इस युग के शिल्पकारों के हाथों में रहा। ईसाई सन्त पाल खेमादोज़ (तंबू सिलनेवाला) थे, मंसूर हल्लाज बड़ई और खुद कबीर जुलाहे थे।

एक ईसाई पादरी ने हज़रत ईसा को भी शिल्पकारों की श्रेणी में शामिल कर दिया है। "वे हाथ जो दैवी कृपा बनकर लोगों की रक्षा करते थे, जो अंधों की आँखों को रोशनी देते थे और कोढ़ियों को अच्छा कर देते थे, जिनकी हथेलियाँ सलीब पर ज़रूरी हो गयी थीं, वे हाथ मेहनत से चूर और पसीने से तर-बतर हों चुके थे। वे कोले ठोंकना जानते थे। वे एक साधारण श्रमिक के हाथ थे। हज़रत ईसा ने आत्मा को सुधारने और निखारने से पहले पदार्थ (matter) को अपने हाथों से संवारा था। (Giovanni Papini "Life of Christ")

डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने अपनी अंग्रेजी किताब "हिंदू सिलिलिज़ेशन" (भारतीय विद्या भवन, बंबई, खण्ड १, पृष्ठ १०५) में भारत की अलग अलग जातियों और वर्गों के कर्तव्य बताये हैं। "ब्राह्मण—शिक्षा देना, यज्ञ और पूजा-पाठ कराना, दान लेना; क्षत्रिय—रक्षा और शासन करना; वैश्य—व्यापार और खेती करना, पशु पालना, महाजनी करना, शूद्र—सच्चाई, सफ़ाई, विनम्रता, आचमन-मंत्र के बरौर स्नान, लाशें उठाना और जलाना, अपनी ही जाति में विवाह करना, ऊँची जातिवालों की सेवा करना और शिल्पकृति अर्थात् दस्तकारी करना, नाई धोबी, चित्रकार, बड़ई, लोहार आदि का काम करना।"

ऐसी सूरत में ज़ाहिर है कि समाज की प्रगति, सामंती व्यवस्था के पतन और व्यापार और प्रारंभिक पूँजीवाद के उत्थान के साथ-साथ वैश्य और शूद्र का पद ऊँचा हो गया।

≡ टिप्पणियाँ ≡

१ इस्लाम में खुदा को रगे-जों (प्राण-धमनी) से भी ज्यादा करीब माना गया है। तसब्बुह की परंपरा में और उर्दू और फ़ारसी शायरी में इसकी बेशुमार मिसालें मिलेंगी।

दिल के भाईने में है तस्वीर-यार
इक ज़रा गर्दन झुकायी देख ली

(भक्तात)

जिन्हें मैं हूँठता था भासमानों में ज़मीनों में
वो निकले मेरे जुल्मतखानए-दिल के मकीनों में

(इक़बाल)

[जुल्मतखानए-दिल = दिल का अँधेरा घर; मकीन = रहलेवाला]

न तू अंदर हरम गंजी, न दर बुतखाना मी आई
व लेकिन सूए-सुरताक़ों के सुरताक़ाना मी आई
क़दम बीबाक़तर नेह दर-हरीमे-जाने सुरताक़ों
तू साहिब खानई आखिर चिरा दुज़दाना मी आई

(इक़बाल)

भावार्थ :- तू काबे में समाता है और न बुतखाने में, लेकिन अपने चाहनेवालों के पास कितना खुश होकर आता है। ज़रा चाहनेवालों के दिल (हरीम खाना : खिल्वतखाना, रूह) में निबर होकर क़दम रख। आखिर तू इस घर का मालिक है, फिर चोरों की तरह आने की क्या जरूरत है ?)

बंगाल के बाउल भक्तों के यहाँ भी यह धारणा प्रचलित है :

“ए दिल, मैं मक्के और मदीने क्यों जाऊँ

“ मेरा महबूब (मनेर मानुष) तो मेरे पहलू में है

“ उससे अनजान होकर, उससे दूर रहकर मैं दीवाना हो जाता हूँ,

“ मंदिर और मस्जिद में पूजा कहाँ

“ हर क़दम पर मक्का है हर क़दम पर काशी

“ मेरे जीवन का एक-एक पल धन्य है। ”

[ए. के. सेन की अंग्रेजी पुस्तक “ हिंदूइज़्म से अनूदित]

ہم کو معلوم ہے جنت کی حقیقت لیکن
دل کے خوش رکھنے کو غالب یہ خیال اچھا ہے

(غالب)

(۱۲۰) **جُجگ ملن** = چوسر کے کھیل میں جب ایک خانے میں دو
گوٹیں جمع ہو جاتی ہیں تو وہ پٹ نہیں سکیں۔ اس کو **جُجگ ملن** کہتے
ہیں۔ سودا کا شعر ہے :

امن دو دل کو ہو یکساں بہ بساطِ دوراں
چوٹ کھاتی نہیں وہ نرد جو ہو نرد کے ساتھ

بساطِ دوراں = زمانے کی بساط۔ نرد = گوٹ۔

چار برن = چار رنگ، چوسر کے کھیل میں گوٹوں کے چار
رنگ اور ہندو دھرم میں ذاتوں کے چار رنگ یہاں دونوں مفہوم ہیں۔

چوراسی = چوسر کے کھیل میں گوٹ کو چوراسی گھر چلنے
پڑنے ہیں تب کہیں جاکر اُس کی گردش ختم ہوتی ہے۔ ہندو عقیدہ ہے
کہ نروان سے پہلے انسان کو چوراسی لاکھ جنم لینے پڑتے ہیں۔

پو = جب گوٹ آخری گھر میں پہنچ جاتی ہے تو جیتنے
کے لئے پو ضروری ہے، یہاں پو سے مراد موت اور نروان ہے، جو
گوٹ چوراسی گھر چلنے اور پو پڑنے کے بعد اندر پہنچ گئی وہ پھر
باہر نہیں نکلتی گویا اس کا نروان ہو گیا۔

(۱۲۱) **سُرت** = محبت، لیکن یہاں غالباً یہ صورت کی بگڑی ہوئی
شکل ہے،



نواج = نماز .

بہست = بہشت .

مال متین = مال متاع .

دو جگ = دوزخ .

ستر کعبے اک دل بہتر = اس تصور سے اردو اور فارسی

شاعری بھری پڑی ہے :

بت خانہ توڑ ڈالے مسجد کو ڈھائے

دل کو نہ توڑیے یہ خدا کا مقام ہے

توڑ کے بت خانے کو مسجد بنا کی تو نے شیخ
برہمن کے دل کی بھی کچھ فکر ہے تعمیر کا

سودا

ٹک دیکھ صنم خانہ عشق آن کے اے شیخ
جون شمع حرم رنگ جھمکتا ہے بتاں کا

سودا

مے خور و مصحف بسوز و آتش اندر کعبہ زن

ساکنِ بت خانہ باش و مردم آزاری مکن

(ترجمہ : شراب پیو ، قرآن کو جلا دو ، کعبے کو آگ لگا دو اور

بت خانے میں جا کر بیٹھ جاؤ لیکن مردم آزاری مت کرو . یعنی مردم

آزاری سب سے بڑا گناہ ہے)

آخری دو مصرعے . مائٹی ایک سمانا :

حقیقت ایک ہے ہر شے کی خاکی ہو کہ نوری ہو

لہو خورشید کا ٹپکے اگر ذرے کا دل چیریں

(اقبال)

کہیں کبیر من مانا :

آت = بے حد
 واساً = رہنے کی جگہ
 اُبارنا = بے نقاب کرنا

وینسند = (ہندو) نقطہ۔ غالب نے کہا ہے :
 سخن یکے ست ولے در نظر ز سرعت سیر
 کند چو شعلہ جو الہ نقطہ پرکاری

(ترجمہ : بات ایک ہی ہے لیکن اپنی تیز رفتاری کی وجہ سے ایک نقطہ جو وجودِ مطلق ہے ناچتے ہوئے شعلے کی طرح نگاہوں پر ظاہر ہوتا ہے)

غالب کی تشبیہ ذہنی اور فکری ہے۔ کبیر کی تشبیہ حسّی اور زمینی۔
 گگوینسند = (گووند) کرشن کا نام، کرشن وشنو کا
 اوتار ہیں اس لئے بھگوان یعنی خالقِ کائنات۔

گیارہویں اور بارہویں مصرعے میں جو تصویر کبیر نے پیش کی ہے وہ بڑی خوبصورت اور عجیب و غریب ہے۔ سانس ہوا کا کھمبا ہے جس کے چاروں طرف جسم مٹی کی بنی ہوئی تصویر ہے۔

پون بات = (پون باتی)۔ ہوا کی بتی۔ یہاں سانس چراغ کی لو ہے (شمعِ عرفان کا اجالا)
 (۱۱۶) انگیا جسم ہے اور دولہن روح۔

چت انجن = لفظی معنی دل کا کاجل، مراد ہے دل کی آنکھ۔
 میں گیان کا کاجل۔

(۱۱۷) تیرتھ برن بھر لانا = اس ٹکڑے کا ترجمہ نہیں کیا ہے
 کیونکہ مفہوم صاف نہیں ہے۔

چھاپ = چھاپا۔ تلک کی ایک قسم۔ ہندوؤں میں مختلف فرقوں کے تلک الگ الگ ہیں۔
 (۱۱۸) روجا = روزہ۔

کبیر کی بیٹی کمالی کے متعلق مشہور ہے کہ وہ ایک دن کنوئیں پر پانی بھر رہی تھی، ایک پیاسے براہمن نے اُس سے پانی مانگا۔ پانی پی کر جب اُسے یہ معلوم ہوا کہ کمالی جو لاپسے کی بیٹی ہے تو وہ بہت خفا ہوا اور کہنے لگا کہ تو نے مجھے بے دھرم کر دیا۔ دونوں کبیر کے پاس آئے، کبیر نے براہمن دیوتا کو بتایا کہ آخر سمجھو تو پاک اور ناپاک کیا چیز ہے۔ سیکڑوں لاشیں اور منوں پتیاں پانی میں سڑا کرتی ہیں، کروڑوں آدمی زمین میں دفن ہیں اور اس مٹی سے وہ برتن بنائے جاتے ہیں جن میں تم پانی پیتے اور کھانا کھاتے ہو۔ کھانا کھاتے وقت تم کپڑے اتار ڈالتے ہو، صرف ایک دھوتی باندھے رہتے ہو مگر وہ دھوتی جلاہے کی بُنی ہوئی ہوتی ہے۔ مکھیاں غلیظ اور مُردار پر بیٹھی ہیں اور وہاں سے اڑکر تمہارے کھانے پر بیٹھی ہیں کیا تم اُن کو روک سکتے ہو۔ اسی طرح کا ایک اور واقعہ (دبستان مذاہب) میں درج ہے۔

”کہتے ہیں کچھ براہمن گنگا کنارے بیٹھے ہوئے گنگا جل کی تعریف کر رہے تھے کہ اس سے سارے گناہ دھو جاتے ہیں۔ اُن میں سے ایک نے پانی مانگا۔ کبیر اُن کی باتیں سن رہا تھا۔ اُٹھ کر گیا اور اپنا پیالہ پانی سے بھر کر براہمن کے پاس لے آیا۔ چونکہ کبیر جولہا تھا اور براہمن ان لوگوں کے ہاتھ کا چھوا ہوا کھاتے پیتے نہیں ہیں، اس براہمن نے پانی نہیں پیا۔ کبیر نے کہا کہ آپ ابھی فرماتے تھے کہ گنگا جل سے گندگی سے بدن اور روح دھو جاتے ہیں۔ اگر یہ پانی میرے برتن کو بھی پاک نہیں کر سکتا تو اس تعریف کے قابل نہیں۔“ (کبیر صاحب - مولفہ پنڈت منوہر لال زتشی - مطبوعہ ہندستانی اکیڈمی - الہ آباد ۱۹۳۰ء)۔

(۱۱۳) باد بیادِم = (واد وِواد) بحث مباحثہ۔

نوِندھہ کا یا = نوِندھیوں سے معمور جسم، ہندھہ خزانے کو کہتے نوِندھہ دولت کے دیوتا کو کَویر کے نو خزانے ہیں۔ اور ہر خزانے کی محافظ ایک ایک روح ہے جن کی پرستش تاترک دھرم میں کی جاتی ہے، اُن سب کے الگ الگ نام ہیں۔

[۱۰۹] ترُگن پھانس = (ترگن کا پھندا) قدیم ہندو فکر کے مطابق مادے یا پراکرتی کی تین صفات (رُگن) ہیں . ۱ - تَمَس یعنی جمود ، سکون ، بے حرکتی ۲ - رَجَس یعنی حرکت ، عمل ۳ - سَتَو یعنی تناؤ یا آہنگ اور تناسب ، یہ تینوں صفات مل کر مادے کی اصل حقیقت بن جاتی ہیں . بٹی ہرئی رسی کی طرح یہ تینوں صفات (رُگن) ایک دوسرے کے ساتھ پیوست ہیں . پہلے گن کی زیادتی انسان کو سست ، کاہل ، اور کینہ پرور بنا دیتی ہے . دوسرے گن کی زیادتی غرور اور شجاعت پیدا کرتی ہے اور تیسرے گن کی زیادتی متوازن طبیعت اور سمجھداری کی ذمہ دار ہے ، بالترتیب ان کا رنگ سیاہ ، سرخ اور سفید ہے .

کیمسو : کیشو = خوبصورت بالوں والا ، وشنو کا ایک اور نام . (ویسے یہ نام کرشن جی کے لئے بھی استعمال ہوتا ہے . کیونکہ وہ وشنو کا اوتار ہیں) .

بھوانی : شیو کی بیوی ہارتوی یا مُدِگا کا ایک اور نام ، بھوانی دیوی ٹھگوں کی رکھوالی ہے اور چیچک کی بھی دیوی سمجھی جاتی ہے .
کملا : لکشمی دیوی کا ایک اور نام ، مکمل عورت .

برہمانی : برہما کی مونث ، کبیر کی ایجاد معلوم ہوتی ہے .

[۱۱۱] معلوم نہیں چھپن کروڑ اور اٹھاسی ہزار کی تعداد کی کیا اہمیت ہے . لیکن اشارہ یادو قبیلے کے ڈوبنے کی طرف ہے ، ایک چندر ونشی راجہ ییاتی کا بیٹا یڈو تھا . اس کی نسل یادو کہلاتی جس میں کرشن پیدا ہوئے . کرشن جی کی پیدائش کے وقت وہ لوگ گوالے تھے ، لیکن آخر میں دُوارکا (گجرات) میں اُن کی سلطنت قائم ہوئی کرشن جی کے بعد جب دُوارکا شہر سمندر کی طوفانی لہروں میں ڈوب گیا تو یہ لوگ بھی غرق ہو گئے . وشنو پُران میں ان کی تعداد لاکھوں اور کروڑوں بتائی گئی ہے .

اس نظم میں جس خیال کا اظہار کیا گیا ہے اس کی تائید میں دو واقعات بھی بیان کئے جاتے ہیں .

سنگی = ایک رشی کا نام جو جنگل میں تپسیا کرتے تھے
اور ایک عورت پر عاشق ہو گئے تھے۔

برہما کا سر پھوڑنا = دماغ یا عقل برہما کا مقام ہے۔
اس لئے اس کا مطلب ہوا عقل کا قتل۔

چھندرناتھ = سدھ یوگی تھے جو لنکا کی عورتوں پر
عاشق ہو گئے تھے۔

ساکٹ = شکتی کو ماننے والا۔ غرور اور طاقت سے کام
لینے والا۔

(۱۰۶) اس نظم کا مفہوم واضح نہیں ہے۔ بانگڑ دیش اور مالوے کی
کیا اہمیت ہے پتہ نہیں چلتا۔ بانگڑ اس علاقے کا قدیم نام ہے جسے
ہریانہ کہتے۔ مالوے کا علاقہ وسط ہندستان میں ہے جہاں کی راتیں
بڑی سہانی ہوتی ہیں۔ اس علاقے کو کبیر نے »گہر گنبھیر« کہا ہے
یعنی وسیع، یکراں، اتہاء۔ اس اعتبار سے بانگڑ دیش کا مطلب ہوگا
اونچا یا بلند خشک پٹھاروں کا علاقہ۔ کبیر چونکہ گریستی تھے
اور کپڑا بن کر اپنی روزی کمانے تھے اس لئے یہ خیال پیدا ہوتا ہے کہ
بانگڑ دیش سے مراد ترک دنیا ہے اور گہر گنبھیر مالوے سے
مراد دنیا کو رتتا ہے۔ نظم کے آخر میں کبیر نے دنیا کو
اعتباری کہا ہے :

یہ تو ہم کا کارخانہ ہے
یاں وہیں ہے جو اعتبار کیا

(میر تقی میر)

(۱۰۷) صبح دم طائرانِ خوش الحان
پڑھتے ہیں کل* من علیہا فان
جائے عبرت سرائے فانی ہے
موردِ مرگ ناگہانی ہے

(شوق)

(ترجمہ: ادھر ادھر سے حرف جمع کر کے نصیحت نامہ تیار کیا گیا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح جھوٹے پتل چاٹ کر کب تک زندہ رہو گے)

سہج = جو ساتھ پیدا ہوا ہو۔ فطری، یساختہ، بے تکلف۔

شوینہ = خلا، سناٹا، بے صفات ذاتِ مطلق۔

کھلاس = خلاص۔

میرا = اے امیر اے پنچ۔

(۱۰۳) حافظ شیرازی نے بھی دنیا (سنسار = مایا) کو ایک ایسی عورت سے تشبیہ دی ہے جس کے ہزاروں شوہر ہیں۔ «کہ این عجوز عروس ہزار داماد است»

کبیر کی نظم کا آخری مصرعہ اس اعتبار سے اہم ہے کہ اس میں مایا کو لافانی کہا گیا ہے۔ اس خیال کا سلسلہ زاما بُنج کے وحشتِ آدویت سے جا ملتا ہے۔ (دیکھیے دیباچہ کبیر کے مایا کے تصور پر نوٹ)۔

(۱۰۴) رت = میں نے اس کا ترجمہ مصرع کے پورے مفہوم کے اعتبار سے لو لگا کر کیا ہے۔ رت جنسی جذبے کو بھی کہتے ہیں اور یہ عشق کے دیوتا کامدیو کی بیوی کا بھی نام ہے۔

(۱۰۵) اپیرا = اپیڑ = شکار۔

نیرا = قریب۔

موننی = خاموش رہنے والے سادھو۔

بیر = شیو بھگتوں کی ایک قسم۔

دگمبر = جینی فقیر جو ننگے رہتے ہیں اور تمام درشاؤں (سمتوں) کو اپنا لباس سمجھتے ہیں۔

(۹۹) آخری دو مصرعوں میں دوبارہ پیدا ہونے کی طرف اشارہ ہے ، عمر خیام کی ایک رباعی میں موت صفات کو ترک کر کے عین ذات بن جانے کا نام ہے جسے اس نے عین حیات کہا ہے :

ما ذاتِ نہادہ در صفاتیم ہمہ
عینِ خرد و سخرہ ذاتیم ہمہ
تا در صفتیم در ممانیم ہمہ
چوں رفت صفت ، عینِ حیاتیم ہمہ

(ترجمہ : میں وہ ذات ہوں جو صفات میں گھری ہوئی ہے ۔ (سرُگن کے اندر نرگن) میں عین خرد ہوں لیکن چونکہ صفات میں لپٹا ہوا ہوں اس لئے عین ذات کے سامنے مسخرہ معلوم ہوتا ہوں ۔ جب تک صفات میں مبتلا ہوں تب تک موت میں مبتلا ہوں ۔ جب صفات زائل ہو جائیں گی تو میں عین حیات بن جاؤں گا)

(۱۰۱) مُسمیر = سونے کا ایک فرضی پہاڑ ۔ پہاڑوں کا سر تاج ۔

(۱۰۲) اپنے آپ کو مذہبی کتابوں سے آزاد کر لینے کا جذبہ بھگتی کے دوسرے مدرسوں میں بھی ملے گا مثلاً کے ایم ۔ سین نے اپنی انگریزی کتاب » ہندوازم « میں بنگال کی باؤل تحریک کے ایک بھگت کا واقع لکھا ہے :

» جب میں نے ایک باؤل سے پوچھا کہ وہ لوگ مذہبی کتابوں کو کیوں نہیں مانتے تو اس نے ذرا خفا ہو کر جواب دیا کہ کیا ہم کہتے ہیں جو دوسروں کا جھوٹا چاٹتے پھریں ۔ بہادر صرف اپنی تخلیق اور اپنے کارنامے پر فخر کرتے ہیں ۔ جو اپنے باپ دادا کے کارناموں پر ناز کرتے رہتے ہیں وہ بزدل اور کمزور ہیں ۔ اُن میں خود کوئی صلاحیت باقی نہیں رہ گئی ۔ «

کبیر نے بھی ایک دوہے میں کہا ہے :

ساکھی لائے جتن کر ، ات اُت اچھر کاٹ
کہ کبیر کب لگ جیسے ، جھوٹی پٹل چاٹ

اس نظم میں کبیر نے سنسکرت کو غرور اور تکبر کی زبان قرار دیا ہے۔ ایک اور جگہ لکھا ہے کہ سنسکرت تو کنوئیں کا پانی ہے اور بہاشا بہتی ہوئی ندی ہے۔ (» سنسکرت ہے کوپ جل، بہاشا بہتا نیر«) پنڈت سُندر لال نے اپنی کتاب »کبیر اور انسانیت« میں لکھا ہے کہ »کاشی کے ہندوؤں میں ان دنوں سنسکرت کا زور تھا« ظاہر ہے کہ کبیر ایسی زبان استعمال کرنا چاہتے تھے جو آسانی سے لوگوں کے دلوں میں گھر کر سکے۔

(۹۳) غالب کا تخیل حسن اور عشق کے مکمل وصال کے لئے ترستا رہا:

میں نا مراد دل کی تسلیٰ کو کیا کروں
مانا کہ تیرے رخ سے نگہ کامیاب ہے

وا کردئے ہیں شوق نے بندِ نقاب حسن
غیر از نگاہ اب کوئی حائل نہیں رہا
لیکن کبیر نے نگاہوں کے اس فاصلے کو ختم کر دیا ہے اور وصل ہی وصل ہے۔ ایک دوہے میں اس خیال نے یہ شکل اختیار کی ہے:

نینا انتہر آو توں، جیوں ہوں نین جھپٹیوں
نا ہوں دیکھوں اور کوں، نا تجھ دیکھن دیوں
(پلک چھپکاتے ہی تو آنکھوں میں سما جاتا ہے۔ میں آنکھیں بند کر لیتا ہوں، نہ خود کسی کو دیکھتا ہوں نہ تجھے دیکھنے دیتا ہوں)
ایک اور دوہا:

نینوں کی کر کوٹھری، پُتری پلنگ بچھائے
پلکوں کی چمک ڈار کے، پیا کو لیا رجھائے
(ترجمہ: آنکھوں کی کوٹھری بنائی اور پتلی کا پلنگ بچھایا اور پلکوں کی چلمن ڈال کر پیا کو رجھا لیا)
(۹۶) غالب نے کہا ہے:

کسی کو دے کے دل کوئی نوا سنجِ فغاں کیوں ہو
نہ ہو جب دل ہی سینے میں تو منہ میں زباں کیوں ہو

روحیں سن سکتی ہیں۔ اصولِ اول کے گرد گھومتے ہوئے ستاروں کی گردشِ عشق کا نتیجہ ہے۔ یہی نغمہ آسمان سے اتر کر زمین پر آیا ہے۔ مولانا رومی فرماتے ہیں :

پس حکیمانِ گفتہ اند این لحنها
از دوارِ چرخ بگرفتیم ما
بانگِ گردشِ ہائے چرخ است این کہ خلق
می سرایندش بطنبور و بخلق

(ترجمہ : پس فلسفیوں کا کہنا ہے کہ یہ مترنم آوازیں آسمان میں ناچتے ہوئے نورانی اجسام سے آتی ہیں۔ اور یہ نغمہ جو لوگ طنبور سے پیدا کرتے ہیں اور گلے سے نکالتے ہیں گردشِ چرخ کا نغمہ ہے)

اس بنیاد پر صوفیوں نے سماع کو جائز قرار دیا ہے جبکہ اسلام میں موسیقی حرام ہے۔ چنانچہ مولانا رومی فرماتے ہیں کہ سماع دراصل »صوتِ بلی« سننے کا نام ہے اور انسان بے خود ہو کر وصال یار تک پہنچ جاتا ہے۔ (مشوی کا انگریزی ترجمہ، از نکلسن، جلد نمبر ۸) کبیر نے ایک نظم (نمبر ۳۹) میں انسانی جسم کو طنبور سے کاٹھاٹھا کہا ہے جس سے حضوری کا نغمہ نکلتا ہے۔

(۹۰) اس نظم کا آخری مصرعہ مبہم ہے۔ ہندی اور اردو کے ترجمے دو مختلف اوقات میں کیے گئے تھے اس لیے ان میں بہت بڑا فرق پیدا ہو گیا ہے۔ اور وہ غلطی سے اسی طرح چھپ گئے۔ اردو کا ترجمہ ٹیگور کے کئے ہوئے انگریزی ترجمے سے زیادہ قریب ہے۔ (اردو میں مجروح کا لفظ محبوب پڑھا جائے)

(۹۱) ہندوستان کی جدید زبانوں مثلاً ہندی، اردو، مراٹھی، بنگالی، پنجابی وغیرہ کی ترقی میں صوفیوں اور سنتوں کا بہت بڑا حصہ ہے۔ انہوں نے سنسکرت اور فارسی کو چھوڑ کر جو مولویوں، حکمرانوں اور پنڈتوں کی زبانیں تھیں اور عوام کی دسترس سے بہت دور تھیں، عوام کی بولیوں یعنی بھاشاؤں میں لکھنا شروع کیا، ہندی میں کبیر، ملک محمد جائسی، تلسی داس، سور داس، میرا بائی اس کی سب سے زیادہ شاندار مثالیں ہیں۔

یہ دورا ہا جو کفر و دین کا ہے
دونوں کے درمیان پڑتی ہے

(سودا)

(۷۵) دیکھیے ۴۴

(۸۰) درخت، شاخ اور جڑ کا استعارہ عبدالرحمن جامی کے یہاں
بھی ہے :

دلا منشیں در این ویرانہ چوں ٹپند
سوئے مرغانِ مقدسی آشیانِ بر
بود گیتی درختے سر بسر شاخ
ولے جملہ سوئے یک اصل رہبر
زہر شاخے سوئے آن اصل رہ جوی
چوں آن را یافتی از شاخ بگزر
نہ باشد شیوہ مرغانِ زیرک
نشستن بر زماں برشاخِ دیگر

(ترجمہ: اے دل ویرانے میں الو کی طرح نہ بیٹھ۔ اڑ کر اُن طائروں
کے پاس پہنچ جا جن کا نشیمن عرشِ معلیٰ پر ہے۔ زمین ایک ایسا
درخت ہے جس میں شاخیں ہی شاخیں ہیں لیکن وہ تمام شاخیں ایک
اصلیت یعنی جڑ کی طرف رہنمائی کر رہی ہیں۔ ہر شاخ سے اصل کی
طرف جانے کی راہ تلاش کر۔ جب وہ مل جائے تو شاخ کو چھوڑ دے
تو تئی شاخوں پر بیٹھے رہنا عقلمند طائروں کا شیوہ نہیں)

(۸۹) (نظم ۱۷ کا پہلا بند بھی دیکھیے)

کگن راگ: در اصل ستاروں کا نغمہ ہے۔ کبیر نے اپنی
کئی اور نظموں میں اس کو بار بار دہرایا ہے۔ مسلم فلسفیوں اور صوفی
شاعروں کے یہاں یہ تصور موجود ہے۔ اس کی ابتدا یونانی مفکر
فیثاغورس (Pythagorus) کے اس نظریے سے ہوتی ہے کہ سیاروں کے
فاصلوں اور گردشوں کا توازن موسیقی کے اصولوں کی بنیادوں پر قائم ہے۔
مسلم فلسفیوں نے اس سے یہ نظریہ بنایا کہ سیاروں اور ستاروں سے نغمہ
پیدا ہوتا ہے جو خدا کی حمد و ثنا کے لئے ہے۔ اور اس نغمے کو پاک

(۶۶) « جس نے اپنے آپ کو گناہوں سے پاک نہیں کیا، جس نے اعتدال اور سچائی کو چھوڑ دیا اور گھروے کپڑے پہننے کی خواہش کی وہ گھروے کپڑوں کے قابل نہیں ہے۔ » (دھم پد، میکس ملر کے انگریزی ترجمے سے ترجمہ)

ہندوستان کے قومی جھنڈے کے رنگوں پر اظہار خیال کرتے ہوئے راشٹری ڈاکٹر رادھا کرشنن نے فرمایا ہے جو گیا یا گھروا رنگ دراصل آگ کا رنگ ہے اور آگ وہ استعارہ ہے جس میں ہر کثافت جل کر راکھ ہو جاتی ہے۔

اس لئے گھروا لباس تارکھ الدنیا جوگیوں کا لباس قرار پایا اور 'بدھ'، 'بکھشو' نے بھی پہنا۔ لیکن یہ لباس خود ایک قسم کی مذہبی وردی بن گیا۔ اس لئے صوفیوں اور سنتوں نے تمام مذہبی رہنماؤں کے اس قسم کے لباس کی طرح گھروے کپڑوں کی بھی مخالفت شروع کر دی اور اس کے مقابلے میں من کے رنگ یعنی دل کی صفائی اور پاکیزگی پر زور دیا۔

کبیر کی طرح بنگال کے باؤل بھگتوں کا یہ کہنا ہے کہ « اگر رنگ دل میں نہ ہو تو باہر کیا دکھائی دے گا۔ کچے پھل کے چھلکے کو رنگ دینے سے کچھ پھل نہیں پک جاتا » وہ تو کچا ہی رہتا ہے۔

فارسی اور اردو شاعری میں شیخ اور ملا کے عمامے اور مذہبی کپڑوں کا خوب مذاق اڑایا گیا ہے۔ اکثر میخانے کے لونڈے شیخ کا عمامہ اتار لے جاتے ہیں:

جو پاک رکھتے ہیں تن کا جامہ، رکھے ہیں، ناپاک دامنِ دل
خدا کے نزدیک اے 'مصلیٰ'، نہیں ہیں زہار وہ نمازی
(محمد رفیع سودا)

(۶۷) دل سے پوچھا یہ میں کہ عشق کی راہ
کس طرف مہربان پڑتی ہے
کہا اُن نے کہ نے یہ ہندستان
نے سوئے اصفہان پڑتی ہے

بگھوان یا وجود مطلق نرتز کھیل میں یعنی اپنی لیلہ دکھا رہا ہے اور خوش ہو رہا ہے۔ اس نظم کی ابتدا میں جو الگ الگ معلوم ہوتے ہیں وہ آخر میں ایک ہو جاتے ہیں۔ بے شکل (گرو = ذاتِ مطلق) ہر شکل (جیو = فرد) کے اندر موجود ہے۔ اس لئے دنیاوی شکلوں ہی پر قربان ہو جانے کو جی چاہتا ہے۔ شیخ سعدی کے الفاظ میں «عاشقم برہمہ عالم کے عالم ازوست» یعنی میں ساری دنیا پر عاشق ہوں کیونکہ ساری دنیا اُسی سے ہے۔ صوفیوں کی زبان میں اس کو «سر توحید» (ایک پن کا بھید) کہتے ہیں۔ حقیقت کی خارجی شکل انسان ہے اور وہ حقیقت کی داخلی شکل خدا کے ساتھ ایک ہے۔ صوفی اپنی خودی کے فریب سے نکل کر ذاتِ مطلق میں غرق یا فنا ہو جاتا ہے۔ پھر اس کو ہر شکل میں الوہیت کی تصویر دکھائی دینے لگتی ہے۔ مولانا رومی نے اس کو «حقیقت در حقیقت غرقہ» یعنی حقیقت حقیقت میں ڈوب گئی کہا ہے۔

(۵۱) صوفیوں کے نزدیک بھی موت وصال محبوب ہے۔ اس کی زیادہ ترقی یافتہ شکل فطرت سے ہم آہنگی ہے جس نے اردو کے کلاسیکی شعراء کے یہاں بڑی خوبصورت شکل اختیار کی ہے۔ میر کہتے ہیں:

رنگِ گل و بوئے گل، ہوتے ہیں رواں دونوں
کیا قافلہ جاتا ہے، جو تو بھی چلا چاہے

پھر نہ کچھ دیکھا بجز یک شعلہ پر پیچ و تاب
شمع تک تو ہم نے دیکھا تھا کہ پروانہ گیا

(۵۶) توحید کی طرح ایمان بالغیب بھی اسلام کی بنیاد ہے۔ اس نظم کا پہلا مصرع اس خیال سے قریب ہے۔ کبیر کی شاعری میں دوسرے مقامات پر غیب کا لفظ بار بار آیا ہے۔

(۵۷) دیکھیے ۱۰

(۶۰) میر تقی میر کہتے ہیں:

سراپا آرزو ہونے نے بندہ کر دیا ہم کو
و گر نہ ہم خدا تھے گر دلِ بے مدعا ہوتے

(۴۴) نظم ۱۷ کے پہلے تین بندوں میں بھی کبیر نے چاند ، سورج اور ستاروں کے جلال و جمال کو اس نور مطلق کی نشانی سمجھا ہے جس سے ساری کائنات بھری ہوئی ہے ۔ اس سنت شاعر نے بار بار خدا کو نور سے تعبیر کیا ہے ۔ یہ خیال کبیر کا اسلامی ورثہ ہے ۔
 اللہ نُورُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ (قرآن حکیم) یعنی اللہ آسمانوں کا اور زمین کا نور ہے ۔

(۴۶) مشہور قدیم فارسی شاعر ابو سعید ابوالخیر نے ایک رباعی میں کہا ہے :

پُرسید یکے منزلِ آن مہر گسل
 گفتم کہ دلِ من است اورا منزل
 گفتا کہ دلت کجا ست گفتم براو
 پُرسید کہ او کجا ست گفتم در دل

(ترجمہ : کسی نے پوچھا کہ اُس مہر گسل کی منزل کہاں ہے ۔ میں نے کہا میرے دل میں ۔ پوچھا تیرا دل کہاں ہے ۔ میں نے کہا اس کے پاس ۔ پوچھا وہ کہاں ہے ۔ میں نے کہا میرے دل میں)
 ایک اور فارسی شعر ہے :

خود کوزہ و خود کوزہ گرو خود گل کوزہ
 خود رند سبوکش
 خود بر سرِ آن کوزہ خریدار بر آمد
 بشکست و روانہ شد

(ترجمہ : وہ خود ہی کوزہ ہے خود ہی کوزہ بنانے والا اور خود ہی وہ مٹی جس سے کوزہ بنتا ہے اور خود ہی اس کوزے میں شراب پینے والا ۔ پھر وہ خود اس کوزے کا خریدار بن کر ظاہر ہو جاتا ہے اور کوزے کو توڑ کر چل دیتا ہے) رومی

(۴۷) یہاں درخت سے مراد دنیا ہے لیکن اُسے بغیر جڑ کا وجود اس لئے کہا ہے کہ وہ مایا کی تخلیق ہے محض دام خیال ۔ مگر چیلے (آمن ، جیو) کے سانہ گرو (برہمن ، وجود مطلق) بھی موجود ہے ۔ جیو تو رس چکھنے یعنی دنیا کو برتنے اور بھوگنے میں مصروف ہے اور

جاپانی ژن مت کا ایک واقعہ اس سے بھی زیادہ دلچسپ ہے۔ ایک محفل میں بہت سے ژن جمع ہوئے۔ مقرر تقریر کرنے کے لئے کھڑا ہوا۔ اتنے میں ایک چڑیا آئی اور کھڑکی پر بیٹھ کر گانے لگی۔ مقرر نے اپنی تقریر شروع نہیں کی اور چڑیا کا گیت سنتا رہا۔ جب چڑیا گیت ختم کر کے اڑ گئی تو مقرر نے اعلان کیا کہ محفل ختم ہو گئی۔ اور جمع برخاست ہو گیا۔

غالب کے الفاظ میں اس کا نچوڑ یہ ہے کہ :

ہے رنگِ لالہ و گل و نسریں جدا جدا
ہر رنگ میں بہار کا اثبات چاہیے
سر پائے خم پہ چاہیے پنگام بے خودی
رو سوئے قبلہ وقت مناجات چاہیے
یعنی بہ حسبِ گردشِ پیمانہ صفات
عارف ہمیشہ مست مے ذات چاہیے

اور سہج کے یساختہ پن کو اقبال نے اس طرح ادا کیا :

نہ پیو ستم در این بستان سرا دل
ز بند این و آن آزادہ رفتم
چو بادِ صبح گردیدم دمے چند
گلان را آب و رنگے دادہ رفتم

(ترجمہ : میں نے اس رنگ اور بو سے بھری ہوئی دنیا سے دل نہیں لگایا۔ میں ایسے ویسے بندھنوں سے ہمیشہ آزاد رہا۔ صبح کی ہوا کی طرح میں اس چمن میں آیا اور پھولوں کو رنگ اور حسن دے کر چلا گیا)۔

(۴۲) صوفیوں اور سنتوں نے علم اور عقل پر عشق کو ترجیح دی ہے۔ اُن کے یہاں باطنی عرفان (انتر گیان) اصل عبادت ہے اور عرفان ظاہری عبادت اور اس کے رسوم و قیود کو بیکار کر دیتا ہے۔ اس کا سماجی پہلو یہ ہے کہ مولوی، پروہت اور ظاہری مذہب نے علم اور عقل پر قبضہ کر رکھا تھا۔ انتر گیان اور باطنی عرفان اس اجارہ داری کو توڑ دیتے ہیں اور خدا اور بھگوان کو عام انسانوں تک پہنچا دیتے ہیں۔

» میں اس لئے دیوانہ ہو گیا ہوں ، میرے بھائی
 » کہ میں کسی رسم ، کسی رواج ، کسی مالک کا پابند نہیں ہوں
 » انسانوں کے پیدا کئے ہوئے تفرقے میرے لئے بے معنی ہیں
 » میں اپنے دل سے پیدا ہونے والی محبت کے سرور میں ڈوبا ہوا ہوں
 » محبت میں ہجر ہے اور فراق نہیں ، وصال ہی وصال ہے
 » دل سے دل ملے رہتے ہیں

» میں اس خوشی میں ناچتا گانا رہتا ہوں
 » میں اس لئے دیوانہ ہو گیا ہوں میرے بھائی
 اردو کے شاعر میر تقی میر نے انتہائی سرشاری کے اس عالم کو غزل کے
 دو مصرعوں میں سمیٹ لیا ہے :

اس کا بحر حسن سراسر اوجِ موج و تلاطم ہے
 شوق کی اپنے نگاہ جہاں تک جاوے بوس و کنار ہے آج
 سہج پر باول بھگتوں کا اصرار اتنا زیادہ ہے کہ وہ اپنی تحریک
 کی تاریخ بھی قلمبند کرنا گوارا نہیں کرتے . اے . کے . سین نے اپنی
 انگریزی کتاب » ہندوازم « میں ایک دلچسپ واقعہ بیان کیا ہے . جب
 انہوں نے مشرقی بنگال میں دریا کے کنارے بیٹھے ہوئے ایک باؤل سے پوچھا
 کہ » آپ آنے والی نسلوں کے لئے اپنا تاریخی ریکارڈ کیوں نہیں رکھتے «
 تو اس نے جواب دیا کہ » ہم تو سہج کے قائل ہیں اور اس لئے اپنے
 پیچھے کوئی نقشِ قدم چھوڑنا ضروری نہیں سمجھتے « . اُس وقت دریا
 کا پانی اترا ہوا تھا اور کچھ مانجھی اپنی کشتی کو کیچڑ میں کھینچ
 رہے تھے جس کی وجہ سے کیچڑ میں نشان پڑ گئے تھے . باؤل نے
 ادھر اشارہ کر کے کہا کہ » کیا بھرے پانی میں تیرتی ہوئی ناؤ کوئی
 نشان چھوڑتی ہے ؛ صرف وہ مانجھی جو اپنی مجبوری کی وجہ سے کیچڑ
 میں ناؤ چلاتے ہیں نشان چھوڑ جاتے ہیں . یہ تو سہج نہیں ہے . اصلی
 کوشش یہ ہونی چاہیے کہ بھگتی کے اس دھارے پر تیرتے رہیں جو
 بھگتوں کی اپنی زندگی سے پیدا ہونا ہے اور پھر ایک دھارے کو دوسرے
 دھارے سے ملا دیں . باؤل باؤل ہیں اور کچھ بھی نہیں . وہ کسی طبقے ،
 کسی ذات سے بھی آپس ان کا کوئی اور کارنامہ نہیں ہے . سب دھارے
 گنگا میں مل کر گنگا بن جاتے ہیں « .

شامل ہے۔ (فارسی اور اردو شاعری میں ترغیبِ گناہ اور عظمتِ گناہ کا فلسفہ جس کی وجہ سے یہ شاعری بے حد رنگین اور دلکش ہو گئی ہے ان تانتک اصولوں سے قریب ہے۔

» بندہ نوازیوں پہ خدائے کریم تھا
کرتا نہ میں گنہ تو گناہِ عظیم تھا«

(امیر مینائی)

اور عمر خیام نے توحیدِ کردی، گناہ کو رحمت کی آرائش قرار دیدیا:
آباد خرابات زمے خوردنِ ما خونِ دو ہزار توبہ برگردنِ ما
گرمن نہ کم گناہ رحمت چہ کند آرائشِ رحمت زگنہ کردنِ ما

یعنی یہ دنیا میری شراب نوشی سے آباد ہے، میری گردن پر دو ہزار توبہ کا خون ہے۔ اگر میں گناہ نہ کروں تو بیچاری رحمت کیا کرے گی۔ میرے گناہوں ہی سے تو اس کی آرائش ہوتی ہے۔ اسی فلسفے کے تحت شراب جو اسلام میں حرام تھی صوفیانہ شاعری میں شراب معرفت بن گئی اور ایسے اشعار کہے گئے جیسے:

» ز مے سجادہ رنگین کن، گرت پیر مغاں گوید
کہ سالک بے خبر نبود ز راہ و رسمِ منزلہا«

(حافظ)

یعنی اگر پیر مغاں کہے تو جانماز کو شراب سے رنگین کرلو۔ کیونکہ روحانی رہنما منزل کی راہ و رسم سے بے خبر نہیں ہوتا) کبیر کے یہاں کہیں کہیں تانتک اثرات ملتے ہیں جیسے اس نظم میں یوگ اور بھوگ کے متعلق اُن کا نظریہ، لیکن کبیر کے یہاں بھوگ صرف گھریلو زندگی اور عام سماجی ذمہ داریوں تک محدود ہے۔ اس میں جنسی ہم آغوشی اور شراب خوری وغیرہ شامل نہیں ہے۔

(۴۱) سہج کے معنی ہیں فطری، بے ساختہ، اور بے تکلف۔ اور کبیر نے انہیں معنوں میں سہج سمدھی کا استعمال کیا ہے۔ (دیکھیے اودھو ۵) بنگال کے باؤل (باؤلا = دیوانہ) بھگتوں میں جو »تمام روائتی بندشوں سے آزاد، ہوا کی طرح مارے مارے پھرتے ہیں« (کے۔ ایم۔ سین) اور جنہوں نے اپنی عمارتِ بُدھ مت، تانتک اور وشنومت کے کھنڈروں پر کھڑی کی ہے، سہج سادھنا کا بہت حسین تصور ملتا ہے:

غیر از یکے نہ بود و نباشیم و نیستیم
در کثرتِ چنین پئے اظہارِ بودہ ایم
(کلیاتِ شمس تبریزی)

(ترجمہ: میں محبوب کے خزانے کا محافظ رہا ہوں، میں برسوں اس کا مصاحب رہ چکا ہوں۔ میں عالمِ اسرار کی فضا میں طائرانِ قدس کے ساتھ برسوں اڑ چکا ہوں۔ عالمِ ہستی سے میں نے دامنِ کھینچ لیا اور کوچہٴ یار میں رقیب کے بغیر تنہا رہا ہوں۔ ابھی آدم کی تخلیق بھی نہیں ہوئی تھی جب میں اپنے یار کی آنکھوں کا مست و خراب تھا۔ آسمانوں اور ستاروں کے وجود سے پہلے میں وجودِ مطلق کے نقطے کے گرد گھوم رہا تھا۔ دونوں جہان کے وجود سے بھی پہلے میں ہی گلشنِ وصال میں اڑ رہا تھا۔ ایک کے سوا نہ تو کچھ تھا، نہ ہو سکتا ہے اور نہ ہے۔ صرف اپنے اظہار کے لئے یہ کثرت کی شکل اختیار کی ہے)۔
(۳۰) پکھرو یہاں جیو آتما (ہنس) کا استعارہ ہے اور ترور (درخت) جسم کا۔

(۳۱) گگن کواڑ = شونہ کا دروازہ، سادھنا، سادھی۔

(۳۲) ساری کائناتِ اصول اول کے گرد ناچ رہی ہے۔ نغمہ حمد و ثنا کا ہے۔ (دیکھیے نمبر ۸۹)۔

(۳۳) اقبال نے کہا ہے:

وہ حرفِ راز کہ مجھ کو سکھا گیا ہے جنوں
خدا مجھے نفسِ جبرئیل دے تو کموں

(۴۰) تانترک سادھکوں نے یوگ اور بھوگ کو ایک ہی سمجھا ہے، یوگ کی سادھنا (ریاض) ماورائی ادراک کا وہ مجوا ہے جو تجرباتِ دنیا سے حاصل کیے ہوئے عام انسانی شعور کی گردن پر رکھ دیا جاتا ہے اور بھوگ دنیاوی لذتوں، غموں اور مسرتوں کو پوری طرح برتنے کا نام ہے۔ تانترک اصولوں کے مطابق بھوگ کو یوگ کا ذریعہ بنایا جا سکتا ہے، چنانچہ اس اصول میں حسنِ پرستی، جنسی اور جسمانی ہم آغوشی کے علاوہ گوشت، پھلی، بھنے ہوئے اناج اور شراب کا استعمال

ساز بجا رہی ہیں جب گرو چیلے کے پیر چھوٹا ہے تو دوئی وحدت میں تبدیل ہوجاتی ہے ۔ اس کو ”سر توحید“ (ایک پن کا بھید) کہتے ہیں ۔ (دیکھیے ۴۷)

(۲۹) بٹی چترا = وحدت کا کثرت بن جانا ۔

برہما - وشنو - شیو = (دیکھیے ۱۵)

اس نظم میں یہ جذبہ ہے کے آتما خود برہما ، وشنو اور شیو سے پہلے موجود تھی ۔ آتمن برہمن میں محو تھی ۔ حافظ شیرازی نے اسے اس طرح ادا کیا ہے :

ماجرائے من و معشوق مرا پایان نیست
ہرچہ آغاز نہ دارد نہ پذیرد انجام

(ترجمہ : » میری اور میرے محبوب کی محبت کی کہانی کبھی ختم نہیں ہوسکتی ۔ جس چیز کی ابتدا نہیں ہے اس کی انتہا کیسے ہوسکتی ہے «
یعنی میرا عشق ازلی اور ابدی ہے ۔ وہ جب سے ہے جب سے وجود مطلق ہے ۔ اور وجود مطلق کی کوئی ابتدا نہیں ہے)

اور رومی نے کہا ہے :

ما خازنِ خزائنِ دلدار بودہ ایم
ما سالہا مصاحبِ دلدار بودہ ایم
ما در فضائے عالمِ اسرار سالہا
باطائرانِ قدس در اطوار بودہ ایم
ما رختِ خود زعالمِ ہستی کشیدہ ایم
برکوئے یار بے غمِ اغیار بودہ ایم
آدمِ ہنوز در عدمِ آباد بود کہ ما
مست و خراب نرگسِ آن یار بودہ ایم
پیش از ظہورِ انجم و افلاک و دائرات
دائرِ بگردِ نقطہ چو پرکار بودہ ایم
در گلشنِ وصال بچندین ہزار سال
پیش از دوکون طائرِ طیار بودہ ایم

بیکراں . آگم کی بگڑی ہوئی شکل میں اس کے معنی ہیں مستقبل یا دوسری دنیا .

(۲۰) یہ بظاہر سیدھی سادی نظم انتہائی پیچیدہ فلسفیانہ خیالات سے بھری ہوئی ہے جس پر شونہ واد اور وگیان واد (یوگا چار) کے فلسفے کا عکس پڑ رہا ہے . ان کے مطابق ایک داخلی تخلیقی قوت جسے »پری کلپ« کہتے ہیں مظاہر کے وجود کی ذمہ دار ہے . یہ ایک سحر کارانہ تخلیقی خیال ہے جو »آلے وگیان« کے ازلی اور ابدی مخزن سے ہر تصویر اور ہر تصویر کا جوہر حاصل کر سکتا ہے . یہ مخزن بجائے خود خالص خیال ہے ، وہ خیال جو اپنے وجود کے لئے کسی شے کا محتاج نہیں (خیال مطاق) یعنی ایسا خیال جو محض خلا ، خاموشی اور مکمل سناٹا (شونہ) ہے .

(۲۳) پنڈت ہزاری پرساد دوئی ویدی نے لکھا ہے کہ شام کا اندھیرا سنتوں کی شاعری میں بڑھاپے کی علامت ہے لیکن اس نظم میں وصال یار کی علامت ہے ، شکھ ، گھنٹے اور شہنائیاں وصال کا جشن منانے کے لئے ہیں . چونکہ شام کا اندھیرا پچھم کی طرف سے بڑھتا آتا ہے اس لئے پچھم کی کھڑکی کھولنا اجیالے کی علامت ہے . جس میں پچھم سے مراد انسان کی پشت ہے جہاں ریڑھ کی ہڈی کے درمیان سے وہ روحانی شاہراہ گزرتی ہے جسے سوشمنا مارگ کہتے ہیں .

(۲۵) ہری = وشنو کے لئے استعمال ہوتا ہے ، کبیر نے عام طور سے بھگوان کے معنوں میں لیا ہے

(۲۶) اونکار = اومکار = اوم = بھگوان کا راگ روپی یا شبد روپی انگ ، وجود مطلق ، خالق کائنات .

(۲۷) ان چنہار = غیر متعارف (دوسرے مصرعے میں غلطی سے ان چنہار چھپ گیا ہے)

(۲۸) باجے سوہنگ تورا = انالحق کا ساز بیج رہا ہے . (دیکھیے ۱۲) اس کی تفسیر یہ ہے کہ ذات کے سامنے ناچتی ہوئی صفات انالحق کا

زیادہ جس دیوتا کی تعریف ہے وہ اندر ہیں۔ وہ بہت سخی اور فیاض دیوتا ہیں جن کا نام بارش، زرخیزی، بجلی اور طوفان سے وابستہ ہے اور وہ قحط اور خشک سالی کے اشور کے خلاف مسلسل لڑتے رہتے ہیں۔ داسو اور اشوروں کے »پتھر کے بنے ہوئے شہروں« کو تباہ کرنے کا سہرا ان کے سر ہے۔ ان کی براہ راست پرستش نہیں کی جاتی لیکن کچھ تہوار ان کے نام سے مخصوص ہیں۔ برج کی چراگاہوں میں گوالے ان کی پرستش کرتے تھے لیکن کرشن نے ان کے دل جیت لیے اور اندر کی پوجا بند ہو گئی۔ اس پر اندر کو بہت غصہ آیا اور انہوں نے برج باسیوں پر بارش کا طوفان نازل کیا۔ لیکن کرشن نے جو وشنو کے اوتار تھے گوردھن پہاڑ کو اپنی ایک انگلی پر اٹھا لیا اور اسے سات دن تک چھتری کی طرح استعمال کیا۔ آخر اندر کو شکست ہو گئی اور انہوں نے کرشن کے اقتدار کو تسلیم کر لیا۔

(۱۶) عالم ناسوت کا بیان ہے۔

چوراسی لچھہ جیو = چوراسی لاکھ۔ فرد۔ جینیوں اور ہندوؤں کے عقیدے کے مطابق ایک ذی حیات مکتی یا نجات پانے سے پہلے چوراسی لاکھ بار زندگی کا قالب اختیار کرتا ہے۔ ایک زندگی کو یونی کہتے ہیں۔

(۱۷) بند (۱) گرہ = تارا۔ تپن = سورج۔ (دیکھیے نمبر ۸۹)

بند (۲) سُرت اور نرت - سادھنا یعنی بھگتوں کے روحانی ریاض کے دو پہلو ہیں۔ ایک نرت جس کا مطلب ہے دنیا سے بے تعلق ہوجانا اور دوسرا سُرت جس کا مطلب ہے بھگوان سے لو لگانا۔ اس لئے اس نظم میں اور آئندہ نظموں میں سُرت کا ترجمہ پریم اور نرت کا ترجمہ پیراگ کیا گیا ہے۔ کبیر نے سُرت (پریم) کو راگ اور نرت (پیراگ) کو وینا کے تار سے تشبیہ دی ہے۔ جس طرح تار سے راگ پیدا ہوتا ہے اسی طرح پیراگ اور دنیا سے بے تعلق سے پریم پیدا ہوتا ہے۔

بند (۶) اگم = غیر متحرک، ساکن، ناقابلِ فہم، ناقابلِ حصول، جس میں دوسرے کی سمائی نہ ہوسکے، گہرا، اتہاہ، لاجدود،

ہی نظر آتا ہے۔ پروفیسر کوسمی کے بیان کے مطابق لنگ پُران کی شہادت پر یہ کہنا غلط نہ ہوگا کہ ندی ییل شیوکا باطنی نشان (Totem) ہے اور پتھر کی تہذیب کے آخری دور (Neolithic) سے تقریباً دو ہزار سال پہلے وحشی قبائل میں ندی ییل کی پرستش کا ثبوت ملتا ہے۔ اس طرح شیو کا کردار آریائی اور غیر آریائی قبائل کے اتحاد کی علامت بن جاتا ہے۔ (ماخوذ از ۱۔ ڈکشنری آف ہندو مائی تھولوجی، انگریزی، ڈاؤسن، ۲۔ دی ونڈر دیٹ واز انڈیا، انگریزی، ہاشم۔ ۳۔ انٹروڈکشن ٹو دی اسٹڈی آف انڈین ہسٹری، انگریزی، دامودر دھرمائنند کوسمی)۔

سرسوتی = علم اور فن، شعر اور شاعری کی دیوی، ویدوں میں ایک ندی اور ایک دیوی دونوں صورتوں میں ذکر ہے۔ سرسوتی ندی بہت مقدس تھی اور آریوں کے ابتدائی ہندستانی وطن برہما ورت کی ایک سرحد پر بہتی تھی۔ ندی کی دیوی کی حیثیت سرسوتی زرخیزی اور پاکیزگی کی طاقت ہے۔ نطق اور بیان (واچ) کی دیوی کی حیثیت سے ویدوں میں ذکر نہیں ملتا لیکن براہمنوں اور مہا بھارت میں وہ نطق اور بیان کی دیوی ہے۔ ہندو صنمیات میں سرسوتی برہما کی بیوی ہے اور سنسکرت زبان اور دیوناگری حروف کی خالق مانی جاتی ہے، رنگ سفید ہے اور اعضا متناسب، ماتھے پر نیا چاند ہے اور وہ کنول کے پھول پر بیٹھی یا کھڑی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔ (ہندو صنمیات کی لغت، انگریزی، جان ڈاؤسن)۔

اندر = آکاش کا دیوتا۔ ویدوں نے ان کا شمار اول درجے کے دیوتاؤں میں کیا ہے لیکن وہ غیر مخلوق نہیں ہیں۔ ماں اور باپ کا ذکر ہے۔ ان کا رنگ سنہرا ہے اور ہاتھ لمبے لمبے ہیں۔ لیکن وہ اپنی شکلیں بدل سکتے ہیں اور بے شمار روپ اختیار کر سکتے ہیں۔ ان کا دو گھوڑوں کا رتھ سنہری ہے، ہتھیار بجلی ہے جو داہنے ہاتھ میں ہے۔ سوم رس انہیں بہت مرغوب ہے جسے وہ بلا نوش رندوں کی طرح پیتے ہیں اور اس سے مست ہو جانے کے بعد دشمنوں سے جنگ کرنے نکلتے ہیں۔ فضا کے دیوتا کی حیثیت سے وہ موسموں پر حکومت کرتے ہیں اور بارش کا پانی تقسیم کرتے ہیں، ویدوں میں آگنی کے سوا سب سے

ہے۔ اس کردار میں وہ ایک ننگا یوگی ہے جسے دگمبر کہتے ہیں اور جس کا لباس عناصر کے سوا کچھ نہیں۔ وہ ڈھرجی ہیں جن کے بال الجھے ہوئے ہیں اور جسم پر بھہوت ملا ہوا ہے۔ اپنے پہلے کردار یعنی تخریبی طاقت کے اعتبار سے وہ بھیرؤ ہیں جو تخریب اور تباہی سے لذت حاصل کرتے ہیں۔ ساتھ ہی ساتھ وہ بھوتیشور بھی ہیں اور بھوت پریت پر حکومت کرتے ہیں۔ وہ اپنے سر کے گرد سانپ لپیٹ کر اور گردن میں انسانی کھوپڑیوں کی مالا پہن کر اپنے بھوت پریت کے لشکروں کے ساتھ شمسانون کی سیر کرتے ہیں اور مستی کے عالم میں وہ تخریبی رقص کرتے ہیں جسے تانڈو کہتے ہیں۔

شیو سکون اور مکمل خاموشی (شونہ) کے بھی دیوتا ہیں اور رقص کے دیوتا بھی (نٹ راج)۔ نامل نادیدمیں نٹ راج کی پرستش ہوتی ہے اور بنارس میں وشیشور کی، اُن کا مقام شمال میں کیلاش پریت اور جنوب میں چدم برم کا مندر ہے جہاں اُن کو ناچنا ہوا دیوتا مانا جاتا ہے۔ شیو کی ایجاد ایک سو آٹھ قسم کے رقص ہیں، بعض لطیف اور خوبصورت اور بعض انتہائی حشر انگیز اور خوفناک۔ ان میں تانڈو سب سے زیادہ مشہور ہے۔ اس رقص سے دنیا تباہ ہو جاتی ہے اور وقت کا ایک چکر پورا ہو جاتا ہے۔

شیو کے بھی ہزار سے زیادہ نام ہیں جو اُن کی مختلف صفات کو ظاہر کرتے ہیں۔ شیو کا رنگ سفید ہے اور ان کے پانچ سر (پنج آنن) اور چار ہاتھ ہیں، تصویروں میں عام طور سے اُنہیں بیٹھا ہوا دکھایا جاتا ہے، دھیان میں کھوئے ہوئے، ماتھے پر تیسری آنکھ ہے جو اتنی تباہ کار ہے کہ اس سے کامدیو بھسم ہو گئے تھے۔ اس تیسری آنکھ کے اوپر پیشانی تے چاند سے سجی ہوئی ہے، الجھے ہوئے بالوں کی گانٹھ سر پر سینک کی طرح دکھائی دیتی ہے جس پر دریائے گنگا کی علامت ہے جس کی آسمان سے گرتی ہوئی دھار کو شیو نے اپنے سر پر روک لیا تھا۔ گردن میں کھوپڑیوں کا ہار (منڈمالا) ہے اور گلے میں سانپ لپٹے ہوئے ہیں (ناگ کنڈل) اور دنیا تباہ کر دینے والے زہر کو پی لینے کی وجہ سے گردن نیلی ہے (نیل کنٹھ) ہاتھوں میں ترشول، ڈمرو، گرز اور رسی ہے۔ جسم پر شیر، ہرن یا ہاتھی کی کھال کا لباس ہے، عام طور سے اُن کا واہن (سواری) تندی بیل پاس

یہاں موجود ہے۔ اپنی فارسی تصنیف «مہر نیم روز» میں لکھا ہے کہ صفات عین ذات ہیں اور پرتو آفتاب سے جدا نہیں۔ قیامت کے بعد نیا آدم پیدا ہوگا اور ایک آدم کے بعد دوسرا آدم ظہور کرے گا (دیکھئے دیباچہ دیوان غالب۔ مطبوعہ ہندوستانی بک ٹرسٹ، بمبئی)

مہیش = (شیو = وناشک، یعنی دنیا کو تباہ کرنے والا) ہندو تثلیث (تری مورتی) کے تیسرے دیوتا کا نام۔

شیو کا نام ویدوں میں نہیں ملتا۔ لیکن ان کا دوسرا نام رُڈر رگ وید میں اگنی کے لئے استعمال ہوا ہے۔ ویدوں کے رُڈر نے ترقی کر کے ایک عرصے میں طاقتور شیو کی شکل اختیار کر لی۔ حالانکہ شیو تباہی اور بربادی کے دیوتا ہیں لیکن ان کی طاقتیں اور صفات کہیں زیادہ ہیں۔ رُڈر کی حیثیت سے وہ مہاکال (وقت) ہیں جو انحطاط، تباہی اور موت لاتا ہے۔ لیکن ہندو عقیدے میں تخریب خود تعمیر کا پیش خیمہ ہے اس لئے شیو اور شکر کی حیثیت سے یہ مقدس دیوتا تعمیر اور تخلیق نو کی طاقت بن کر ظاہر ہوتے ہیں جن کی بدولت ہر موت کے بعد زندگی، ہر تخریب کے بعد تعمیر کا مسلسل عمل جاری رہتا ہے۔ اس لئے وہ ایشور اور مہادیو ہیں۔ ان کی تجدید حیات کی طاقت کا اظہار لنگ کی علامت سے کیا جاتا ہے اور اس لئے شیو کی پوجا یا تو تنہا لنگ کی شکل میں کی جاتی ہے یا کبھی کبھی لنگ کے ساتھ۔ یونی کمی بھی پرستش ہوتی ہے جو ان کی شکتی یا نسوانی طاقت کی علامت ہے۔ شیو شکتی کے قدیم فلسفے کے اعتبار سے نسوانی طاقت کے بغیر شیو صرف شو (شِو) یعنی مردہ جسم ہے اور جب اس میں شکتی شامل ہوتی ہے تو وہ شیو (شِو) بن کر جاگ اٹھتا ہے۔ (ہندوستانی تہذیب کے مورخوں اور عالموں کا خیال ہے کہ لنگ پوجا قدیم آریوں کی آمد سے پہلے ہندوستان میں موجود تھی جس پر ہڑپا کے کھنڈروں سے نکلنے والے لنگ کے نمونے شاید ہیں۔ ہندو دھرم میں لنگ پوجا غالباً پہلی صدی عیسوی کے آس پاس شامل کی گئی۔) مہاکال اور مہادیو کے علاوہ ان کی تیسری شکل ایک دھیان میں کھوئے ہوئے مہایوگی کی ہے جو اپنی تپسیا سے بے پناہ طاقت حاصل کر لیتا ہے، معجزے دکھاتا ہے اور عظیم روح کائنات سے مل کر ایک ہو جاتا

بھی ہے۔ ان کی بیوی لکشمی (دولت کی دیوی) ہیں جن کے ساتھ وہ کنول کے پھول پر بیٹھے یا کنول کے پتے پر تیرتے ہوئے دکھائی دیتے ہیں۔ (لکشمی آف ہندو مائی تھالوجی، انگریزی، جان ڈاؤسن)۔

برہما = ہندو تثلیث (تری مورتی) کے پہلے دیوتا کا نام جنہیں جگدیشور، اُت پادک (پیدا کرنے والا) پر جاپتی اور ودھانا کے ناموں سے بھی یاد کیا جاتا ہے۔

رامائن کے بیان کے مطابق پہلے صرف پانی تھا جس سے زمین کی تشکیل ہوئی۔ اس پانی سے برہما ظاہر ہوئے جنہوں نے سور کا حیوانی قالب اختیار کر کے زمین کو اوپر اٹھایا اور اپنے بیٹوں، رشیوں اور منیوں کے ساتھ ساری دنیا کی تخلیق کی۔ مہابھارت کے بیان کے مطابق برہما وشنو کی ناف سے پیدا ہوئے جہاں سے ایک کنول کا پھول باہر نکلا۔ (دیکھیے سہس کنول نمبر ۴) اس لئے ان کا نام ناہی جا اور سروجن بھی ہے۔ وہ اپنی برکتوں سے دیوتاؤں اور ان کے دشمنوں دونوں کو نوازتے ہیں۔ شیو دھرم میں برہما کا خائن مہادیو یا رُڈر (شیو) کو مانا جاتا ہے اس لئے برہما شیو لنگ کی پوجا کرتے ہوئے مانے جاتے ہیں۔

جب برہما دنیا کی تخلیق کرتے ہیں تو وہ صرف ایک دن زندہ رہتی ہے اور برہما کا ایک دن دو ارب سولہ کروڑ سال کے برابر ہوتا ہے۔ اس طول طویل دن کے خاتمے پر دنیا آگ سے تباہ ہو جاتی ہے لیکن رشی، مُنی، دیوتا اور عناصر باقی بچ جاتے ہیں۔ پھر برہما دوبارہ دنیا کی تخلیق کرتے ہیں اور تباہی اور تخلیق نو کا یہ عمل برہما کی عمر کے سو سال تک جاری رہتا ہے (چونکہ برہما کا ایک دن دو ارب سولہ کروڑ سال کے برابر ہوتا ہے اس لئے اس کو پہلے تین سو پینسٹھ سے ضرب دے کر پھر حاصل شدہ عدد کو سو سے ضرب دیجئے تو برہما کی عمر کے سو سال کی مدت کا اندازہ ہوگا) سو سال کے بعد برہما بھی ختم ہو جاتے ہیں، سارے دیوتا، رشی، مُنی، ہی ختم ہو جاتے ہیں اور کائنات اپنے عناصر کی شکل میں منتشر ہو جاتی ہے۔ (ہندو صنمیات کی لغت، انگریزی، جان ڈاؤسن)۔

وقت کا یہ چکر ہندو تصور ہے جو اسلامی تصور وقت سے مختلف ہے۔ لیکن عجب اتفاق ہے کہ اس سے ملتا جلتا تصور غالب کے

کو نئی صفات سے متصف کر دیا گیا ہے اور ان کا درجہ بہت بلند ہو گیا ہے۔ مہا بھارت اور پُرانوں میں وہ ہندو تثلیث کے دوسرے دیوتا ہیں اور ستو مگن یعنی رحم اور کرم کا مظہر ہیں اور اس لئے دنیا کے رکھشک ہیں، یہ وہ روح ہے جو کائنات میں جاری اور ساری ہے۔ اس لئے اُن کو ازلی اور ابدی پانی کے عنصر سے منسوب کر دیا گیا ہے۔ اس شکل میں وشنو کا نام نارائن ہے یعنی پانی میں حرکت کرنے والا تصویروں میں اُنہیں شیش ناگ پر لٹا ہوا دکھایا جاتا ہے جو ازلی اور ابدی پانی (اصول اول) میں تیر رہا ہے۔ یہ اس وقت کا منظر ہے جب کائنات اپنی زندگی کا ایک چمکڑ پورا کر کے غارت ہو جاتی ہے اور زندگی کا نیا چمکڑ شروع کرنے والی ہوتی ہے۔

وشنو کے پجاری اُن کو سب سے بڑا دیوتا مانتے ہیں جن سے تمام اشیا ظاہر ہوتی ہیں۔ مہا بھارت اور پُرانوں میں وہ پرجا پتی (خالق کائنات) ہیں اور اُن کا ظہور تین حالتوں (اوستھاؤں) میں ہوتا ہے۔ ۱۔ برہما = خالق کائنات جو ازلی اور ابدی پانی پر تیرتے ہوئے محو خواب وشنو کی ناف سے نکلے والے کنول کے پھول سے پیدا ہوئے ہیں۔ ۲۔ وشنو خود جو اپنے اوتاروں مثلاً رام اور کرشن کی شکل اختیار کرتے ہیں اور اس طرح دنیا کی حفاظت اور رکھشا کرتے ہیں۔ ۳۔ شیو یا رُدر یا ہمیش جو تباہی اور بربادی کی طاقت ہیں۔

وشنو کے اوتاروں کی تعداد صرف دس ہے۔ لیکن بھاگوت پُران میں بائیس بیان کی گئی ہے اور پھر ان گنت اوتاروں کا بھی ذکر آیا ہے۔ سب سے زیادہ مقبول ساتویں اوتار رام اور آٹھویں اوتار کرشن ہیں اور ان دونوں میں بھی کرشن کو وشنو کا مکمل ترین مظہر سمجھا جاتا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ مقدس گنگا وشنو کے قدموں (چرنوں) سے نکلی ہے۔

وشنو دنیا کے رکھوالے کی حیثیت سے بہت مقبول دیوتا ہیں اور اُن کی پوجا مسرت کے جذبے کے ساتھ کی جاتی ہے، اُن کے ہزار نام ہیں اور ان ناموں کا چنا مبارک سمجھا جاتا ہے۔ ان کی سواری (واہن) عقاب ہے۔ ان کا رنگ گہرا نیلا ہے اور چار ہاتھ ہیں۔ ایک میں شنکھ، دوسرے میں چمکڑ (پتھار) تیسرے میں گدا (گرز) اور چوتھے میں کنول کا پھول ہے۔ اُن کے پاس ایک کمان اور ایک تلوار

بجاتے پھرتے تھے اور گویوں کو چھیڑتے تھے۔ اُن کی سب سے زیادہ محبوب گویا اور بیوی رادھا تھیں اور انہیں دونوں کے گرد تمام رومانی افسانوں، شاعری اور تصویروں کی تخلیق ہوئی ہے۔ مہا بھارت کی جنگ میں کرشن جی پانڈو کے ساتھ تھے اور ارجن کے رتھ بان کی حیثیت سے جنگ میں شریک تھے۔ اس میدان میں پانڈو اور کورو کے لشکروں کے درمیان کھڑے ہو کر کرشن جی نے ارجن کو اپنا الوہی نغمہ » بھگود گیتا « سنایا۔

حضرت موسیٰ کے افسانے میں کنس کی جگہ مصر کا بادشاہ فرعون ہے جس نے اپنی جان اور سلطنت بچانے کے لئے یہودیوں کے پیدا ہونے والے بیٹوں کے قتل کا حکم دے دیا تھا۔ جب موسیٰ پیدا ہوئے تو اُن کی ماں نے انہیں ایک بکس میں بند کر کے دریائے نیل میں ڈال دیا اور فرعون کی بیٹی نے اس بکس کو نکال لیا اور حضرت موسیٰ کی پرورش فرعون کے محل میں ہوئی۔ حضرت موسیٰ کی زندگی میں بھی ایک جنگ ہے جس کا خاتمہ اس طرح ہوتا ہے کہ وہ اپنی قوم کو لے کر دریائے نیل پر آتے ہیں، دریا کا پانی دونوں طرف ہٹ جاتا ہے اور درمیان میں راستہ بن جاتا ہے جس سے حضرت موسیٰ اپنی قوم کو لے کر گزر جاتے ہیں۔ لیکن جب فرعون اپنے لشکر کے ساتھ اس راستے سے گزرنے کی کوشش کرتا ہے تو دونوں طرف سے پانی کے دھارے آکر مل جاتے ہیں اور فرعون اپنے لشکر سمیت دریائے نیل میں غرق ہو جاتا ہے۔

وشنو = ہندو تثلیث (تری مورتی) کے دوسرے دیوتا کا نام رگ وید میں وشنو کا شمار اول درجے کے دیوتاؤں میں نہیں ہوتا۔ وہ شمسی طاقت (Solar Energy) کا مظہر ہیں۔ کائنات اُن کے تین قدموں کے نیچے ہے اور اُن کے نور کے غبار سے بھری ہوئی ہے۔ تین قدموں سے مراد ہے روشنی یعنی آگ، بجلی اور سورج۔ یہ بھی کہا جاتا ہے کہ اس سے مراد سورج کا طلوع ہونا، نصف النہار پر پہنچنا اور غروب ہونا ہے۔ وشنو کی خصوصیت دنیا کی حفاظت اور رکھوالی ہے۔

براہمنوں کی لکھی ہوئی اُن تحریروں میں جن میں ویدک رسوم بیان کئے گئے ہیں اور جو »براہمن« کے نام سے مشہور ہیں، وشنو

مقبول ہو چکی ہیں، ہندی کے دو بہت بڑے شاعروں، میرا بائی اور سور داس کی عظمت کا دارو مدار کرشن بھگتی کی شاعری پر ہے۔
کرشن جی یادو نسل سے تھے اور یہ قبیلہ جمنا کے کنارے بندرا بن اور گوکل میں گلے بانی کرتا تھا۔ اس زمانے میں متھرا اور بندرا بن میں کس کی حکومت تھی۔

کرشن جی کی پیدائش کا افسانہ اپنی تفصیلات کے بعض اختلافات کے ساتھ یہودیوں، عیسائیوں اور مسلمانوں کے ایک عظیم پیغمبر حضرت موسیٰ کی پیدائش کے افسانے سے بہت ملتا جلتا ہے۔

کرشن جی کی ماں دیوکی راجہ کنس کی بھتیجی تھیں۔ اور ناردمنی نے یہ پیشین گوئی کی تھی کہ دیوکی کا بیٹا کنس کی ظالم حکومت کا خاتمہ کر دے گا۔ اس خطرے سے بچنے کے لئے کنس نے دیوکی کو اپنے محل میں قید کر لیا اور ان کی کوکھ سے پیدا ہونے والے چھ بیٹوں کو قتل کر دیا۔ جب ساتویں بار حمل قرار پایا تو وہ وشنو کا اوتار تھا اور وہ دیوکی کے پیٹ سے اُن کی سوت، واسو دیوکی دوسری بیوی، روہنی کے پیٹ میں منتقل ہو گیا۔ اس بچے کا نام ہلرام تھا جو وشنو کے سفید بال سے پیدا ہوئے تھے۔ دیوکی کے اٹھویں بیٹے کرشن تھے۔ اُن کا رنگ اس لئے کالا تھا کہ وہ وشنو کے سیاہ بال سے پیدا ہوئے تھے۔ آدھی رات کو جب کرشن جی نے جنم لیا تو محل کے سپاہیوں پر نیند غالب آگئی اور تمام دروازے کھل گئے۔ کرشن کے پتاجی واسو دیو بچے کی جان بچانے کے لئے اُسے گود میں اٹھا کر متھرا سے باہر چلے گئے۔ اور جمنا کے پار ایک اپیر نند کے گھر پہنچے جس کی بیوی یشودا کے یہاں لڑکی پیدا ہوئی تھی، انہوں نے اپنے بیٹے کو اس کی بیٹی سے بدل لیا۔ اس طرح کرشن جی کی پرورش یشودا کی گود اور نند کے گھر میں ہوئی اور اس لئے وہ نند لال کہلاتے ہیں۔ کنس نے اپنی گھبراہٹ میں یہ حکم دے دیا کہ جس لڑکے میں طاقت اور شکی کی علامتیں نظر آئیں اُسے قتل کر دیا جائے۔ نند کو جب یہ خبر ملی تو وہ کرشن اور یشودا کو اور روہنی اور ہلرام کو اپنے ساتھ لے کر گوکل چلے گئے۔ وہیں کرشن جی اپنے بھائی ہلرام کے ساتھ سبزہ زاروں میں بڑھے اور پلے۔ بچپن میں وہ نہایت معصوم شرارتیں کرتے تھے اور مکھن چرا کر کھالتے تھے۔ جوانی میں بانسری

(۱۵) ست لوک (عالم لاپروت) کا یسان ہے یعنی جو کچھ برہمانڈ (کائنات) میں ہے وہی پنڈ (جسم) میں ہے آدمی خود ہی اپنے گھٹ (وجود) کے اندر یہ سب کچھ دیکھ سکتا ہے۔

کرشن - ہندوستانی دیو مالا کے سب سے مقبول ہیرو اور ہندوؤں کے سب سے زیادہ محبوب دیوتا ہیں اور وشنو کا آٹھواں اوتار سمجھے جاتے ہیں۔ اُن کی پردلعزیزی کا یہ عالم ہے کہ دہلی اور اتر پردیش کے مسلمان گھرانوں میں جب بچہ پیدا ہوتا ہے تو گیت کرشن جی کے گائے جاتے ہیں۔ مثلاً البیلی جچا (زچہ) مان کرے تند لال سے، سہاگن جچا مان کرے تند لال سے» یا «البیلے نے مجھے درد دیا سانولیائے مجھے درد دیا۔» تند لال اور سانولیا دونوں سے مراد کرشن جی ہیں۔ (سند کے لئے دیکھیے «رسوم دہلی» از مولوی سید احمد دہلوی) تقسیم ہند کے بعد یہ گیت پاکستان بھی پہنچ گئے ہیں۔ کرشن بھگتی کے گیت اور نظمیں اردو کے بہت سے شاعروں کے یہاں ملتے ہیں جن میں اہم ترین نام نظیر اکبر آبادی (اٹھارویں صدی) اور مولانا حسرت موہانی (یسویں صدی) کے ہیں۔

کرشن کا نام سب سے پہلے رگ وید میں آتا ہے ہے۔ لیکن وہ کرشن جن کے گرد بھگتی کی شاعری اور فلسفہ کا ہالہ ہے سب سے پہلے چھاند یوگ اپنی شد میں ظاہر ہوئے ہیں اور وہاں وہ دیوکی کے بیٹے ہیں پھر اُن کا ذکر مہا بھارت میں آتا ہے اور اُن کا الو ہی نغمہ «بھگود گیتا» ہے جو اپنی شاعری، فلسفے اور روحانیت کے اعتبار سے اپنا جواب نہیں رکھتا۔ یہ نغمہ صدیوں سے ہندوستان میں مقبول ہے اور یورپ اور امریکہ کے دانشوروں اور شاعروں نے بھی اس سے اثر قبول کیا ہے۔ عالموں کا خیال یہ ہے کہ «بھگود گیتا» مہا بھارت سے بعد کی تخلیق ہے لیکن اب وہ مہا بھارت کا حصہ ہے۔ پرانوں میں اور خاص طور سے بھگوت پُران میں کرشن جی کی زندگی کی جو تفصیلات ہیں وہی اب عوام کے ذہن میں افسانہ بن گئی ہیں جن کی بنیاد پر صدیوں سے ہزاروں اور لاکھوں گیت اور تصویریں بنائی جا رہی ہیں جن کا شمار ہندوستانی آرٹ کے شاہکاروں میں ہوتا ہے۔ بھگوت پُران کی کہانیاں ہندی میں «پریم ساگر» کے نام سے ترجمہ ہو کر

سوہم باس = انا الحق کی خوشبو ، سوہم = سواہم = ساہم ن = جو
 وہ ہے وہ میں ہوں ، برہم کے ساتھ جیو کی ابھینتا . کل کے ساتھ
 جزو کا مکمل اتحاد ، اس لئے میں نے منصور کی روایت سے سوہم کا
 ترجمہ انا الحق کیا ہے . دوسری جگہ کبیر نے اسی کو « سوہنگ »
 لکھا ہے . نغمے کی مناسبت سے « باجے سوہنگ تورا » یعنی انا الحق کا
 ساز بجا رہا ہے .

مدن = کامدیو = عشق کا دیوتا .

(۱۳) ایک ان دیکھے خدائے واحد کا تصور بہت قدیم ہے . اگر ایک
 طرف اپنی شد کی تعلیمات میں ، جو کئی صدی قبل مسیح سے شروع
 ہو جاتی ہیں ، یہ تصور موجود ہے تو دوسری طرف عبرانی پیغمبروں نے
 اس کی تبلیغ کی ہے . اس تصور نے زمانہ قدیم میں انسانی گروہوں
 کو قبائلی دیوتاؤں کے تصور سے آزاد کر کے وسیع تر انسانی وحدت کی
 بنیاد ڈالی . اسلام کی ساری بنیاد ایک خدائے واحد کی عبادت پر قائم
 ہے جو لا الہ الا اللہ کے چار لفظوں میں سما گئی ہے (قلندر جز دو
 حرف لا الہ کچھ بھی نہیں کہتا ، فقیہ شہر قارون ہے لغت ہائے حجازی کا .
 اقبال) . اقبال نے اپنی مشہور نظم « شکوہ » میں ایک بند کہا ہے جو کبیر
 کی نظم کے خیال سے بہت قریب آ جاتا ہے :

ہم سے پہلے تھا عجب تیرے جہاں کا منظر
 کہیں معبود تھے پتھر ، کہیں مسجود شجر
 خو گر پیکر محسوس تھی انسان کی نظر
 مانتا پھر کوئی ان دیکھے خدا کو کیونکر
 تجھ کو معلوم ہے لیتا تھا کوئی نام ترا
 امت احمد مرسل نے کیا کام ترا

(۱۴) اصل شہود و شاہد و مشہود ایک ہے

حیراں ہوں پھر مشاہدہ ہے کس حساب میں
 ہے مشتمل نمودِ صور پر وجودِ بحر
 یاں کیا دھرا ہے قطرہ و موج و حباب میں

زمر کی تشریح کے مطابق ہر واہن الوہی ہستی کی حیوانی ہیئت (ظہور) ہے۔ یہ بے داغ روحانیت کے ذریعے سے حاصل کی ہوئی مکمل ترین آزادی کا نشان (Symbol) ہے۔ اسی لئے ہندو جوگی یا سنت جب بار بار پیدا ہونے کے چکر سے آزاد ہو جاتا ہے تو ہنس کا درجہ حاصل کر لیتا ہے۔ اُسے »ہرم ہنس« کہتے ہیں۔

ہر وجود میں مزاج کی دو متضاد کیفیتیں ہوتی ہیں اور ہنس کی زندگی ان دونوں کیفیتوں کی ترجمان ہے۔ وہ پانی پر تیرنے کے باوجود پانی کی فطرت میں اسیر نہیں ہے۔ پانی کی سطح کو چھوڑ کر وہ صاف و شفاف فضا میں بلند ہو سکتا ہے اور فضا میں موسموں کے اعتبار سے وہ شمال اور جنوب جدھر چاہے جاسکتا ہے۔ وہ جہانیاں جہاں گشت ہے۔ خانہ بدوش آوارہ گرد، جو زمین کی تاریک پستیوں سے لے کر فضا کی نورانی بلندیوں تک ہر جگہ یکساں اطمینان اور بے پروائی سے گزر سکتا ہے۔ اس لئے ہنس اس الوہی جوہر (Essence) کی علامت ہے جو ہستی کے شکنجوں میں اسیر ہو کر بھی ان سے آزاد رہتا ہے۔ محدود اور لامحدود، فانی اور لافانی، خاکی اور نوری، تغیر اور غیر تغیر پذیر، سب کے ساتھ اور کسی کے ساتھ نہیں،

یہ الوہی خودی (آتمن) کائنات (Cosmos) اور آفاق (Universe) کے جسم کے اندر ایک نغمے کی طرح تیرتی ہے، ہر سنت اور جوگی اپنے سانس کے زیر و بم میں یہی نغمہ سنتا ہے اور مست ہو جاتا ہے۔ ہر اندر جاتی ہوئی سانس »ہم ن« ہے (م = ن) اور ہر باہر آتی ہوئی سانس »س = سا« ہے۔ اور ہر ہونے والا جوگی متواتر اور مسلسل »ہم ن — سا« »ہم ن — سا« (ہنسا، ہنسا) سنتا رہتا ہے اور اپنے وجود کی الوہی اصلیت کو پہچانتے لگتا ہے۔

اس اندرونی ہنس کے گیت میں ایک راز اور بھی ہے۔ وہ »ہم ن — سا« »ہم ن — سا« (ہنسا، ہنسا) کے ساتھ ساتھ یہ بھی سنتا ہے۔ »سا — ہم ن« »سا — ہم ن« (سا = وہ ہم ن = میں) اور اس کا مطلب ہے »وہ میں ہوں۔ جو وہ ہے وہی میں ہوں« یعنی میں آتمن (الوہی خودی) ہوں، میں وجود مطلق ہوں۔ انا الحق۔

اپنی ایک نظم میں خدا کو »ابناسی دولہا« (لا فانی دولہا) کہہ کر مخاطب کیا ہے۔

یہ کہنا مشکل ہے کہ بھگتی اور صوفی فکر میں یہ استعارہ کہاں سے آیا اور کب سے رائج ہے۔ لیکن میرا خیال ہے کہ اس کے ڈانڈے کرشن بھگتی سے جاملتے ہیں۔ کرشن صرف وشنو کا اوتار ہی نہیں ہیں بلکہ پرَم اُتمن ہیں جن میں جا کر مل جانے کے لئے تمام انفرادی روہیں، جیو یا اُتمن بیکار ہیں۔ اور یہ بیکار روہیں عشق کی زبان میں گویاں ہیں جن کی تعداد کروڑوں بتائی جاتی ہے۔ ظاہر ہے کہ بندرا بن میں کروڑوں گویاں نہیں ہوسکتی تھیں۔ اس لئے یہ روہیں (اُتمن) ہیں جو اپنی نجات اور آزادی کے لئے اپنے شوہروں اور بچوں کو چھوڑ کر (یعنی دنیاوی تعلقات کو توڑ کر) بانسری کی آواز (اناپت ناد = صوت سرمدی) پر کرشن سے جاملتی ہیں۔ یہ عشق کی زبان ہے اور اس کا مفہوم روحانی ہے۔ اس کہانی کا مفہوم بھی روحانی ہے جس میں کرشن نے جمنہ میں نہائی ہوئی گویوں کے کپڑے چرا لیے یا چھپا لئے ہیں۔ عاشق یا محبوب کے سامنے شرم و حجاب بے معنی ہیں۔ وہاں تو »میں« (اپنکار) باقی ہی نہیں رہتا۔ اسی لئے صوفیوں نے یہ کہا ہے کہ اللہ کے دولہنوں کو صرف محرم (متر = دوست = بھید جانتے والا) دیکھ سکتا ہے اور کبیر بھی یہی کہتے ہیں:

جو سُکھ چہے تو لجتا تباگے، پیا سے پل مل لاگے
کھونگھٹ کھول انگ بھر بھیتے، نین آرتی ساجے

(۱۲) ہنس = پاکیزگی، شعور اور زندگی کے اصلی جوہر کا استعارہ ہے۔ کبیر نے روح (اُتمن) کے معنوں میں بھی استعمال کیا ہے۔ سنسکرت اور ہندی کا آخری حرف ساکن نہیں بلکہ متحرک ہوتا ہے اس لئے ہنس = ہنس (ہنسا) لیکن پوری زبان میں »وا« اور »آ« کا اضافہ آواز دینے کے لئے یا پیار ظاہر کرنے کے لئے بھی کیا جانا ہے۔ اس لئے کبیر نے »ہنسا« کہا ہے۔

ہندو صنمیات (Iconography) میں عام طور سے جنگلی ہنس برہمنا سے وابستہ ہے۔ اندر کی سواری (واہن) ہانہی ہے۔ شیو کی سواری تشدی ییل۔ اسی طرح برہمنا کی سواری ہنس ہے۔ ہائی نش

لکھا جائے تو اس کے معنی لا محدود اور بیکراں ہوجائیں گے۔ (» حد حد
سب کہیں، ان حد کہے نہ کوئے۔ ان حد کے میدان میں سکھ، نسے
کبیرا سوئے«)

فارسی کے عظیم صوفی شاعر مولانا جلال الدین رومی (سنہ ۱۲۰۷ء
تا سنہ ۱۲۷۳ء) کی مثنوی کی ابتدا میں بھی جہاں بانسری کو روح کے
استعارے کی طرح استعمال کیا گیا ہے اس تصور کی جھلک ملتی ہے۔

بشنو از نے چو حکایت می کند
از جدائی ہا شکایت می کند
کز نیستان تا مرا پیریدہ اند
از نفیرم مرد و زن نالیدہ اند
سینہ خواہم شرح شرح از فراق
تا بگویم شرح دردِ اشتیاق
ہر کسے کو دور ماند از اصل خویش
باز جوید روزگارِ وصلِ خویش

(ترجمہ: بانسری سے سنو وہ کیسی (دردناک) کہانی سنا رہی ہے۔ اور
(کس انداز سے) اپنے ہجر و فراق کی شکایت کر رہی ہے۔ (وہ کہہ رہی
ہے) جب سے مجھے نیستان سے کاٹ کر الگ کیا گیا ہے میری آواز
سن کر مرد و زن رونے لگے ہیں۔ میں چاہتی ہوں کہ سینہ زخمی
ہوجائے تاکہ میں دردِ اشتیاق کا حال جی کھول کر سنا سکوں۔ ظاہر ہے
کہ جو کوئی اپنی اصل سے دور ہوجاتا ہے وہ پھر وصل کی تلاش کرنے
لگتا ہے) بانسری = آتمن (خودی) نیستان = برہمن (وجود مطلق)

(۱۱) سنت اور بھگت کویوں نے بھگتی کے جوش میں اپنے آپ کو
دولہن اور ذاتِ مطلق کو دولہا کی تشبیہ سے یاد کیا ہے۔ یہ تشبیہ
صوفیوں کے یہاں بھی مشترک ہے۔ «الاولیاءُ عرائسُ اللہِ وَلَا یَرِی
المرائسَ إِلَّا الْمُتَحَارِمُ» یعنی جو اولیا ہیں وہ اللہ کی دولہنیں ہیں اور
دولہنوں کو صرف محرم ہی دیکھ سکتے ہیں۔ مولانا جلال الدین رومی نے
اپنی مثنوی میں یہ تشبیہ استعمال کی ہے۔ ہندوستان میں قدیموں اور
درویشوں کی ایک قسم «سدا سہاگن» کے نام سے مشہور ہے۔ کبیر نے

یہاں کافر اور مومن ہندو اور مسلمان کے معنوں میں نہیں استعمال کئے گئے ہیں۔ مومن صاحب عرفان (سنت) ہے اور کافر بے یقین اور مشکک (اودیا کا شکار)

(۱۰) سبدن مار جگائے = شبدوں (لفظوں) کی مار یا سنگیت کی چوٹ سے جگاتا ہے، صوت سرمدی سے بیدار کرتا ہے، بھگتی میں ایگ چیز ہے شبد سادھنا (دیکھئے نظم ۵۷) ازل میں آتمن (خودی) برہمن (وجود مطلق) میں کھوئی ہوئی تھی جو مہا سکھ مہا آند ہے۔ وہ مکمل سکوت کا عالم تھا (شونہ) لیکن جب آتمن برہمن سے الگ ہو کر سنسار میں نیچے اترنے لگی تو اس سفر میں اس کی شکتی یا طاقت کم ہوتی گئی جس کی وجہ سے ایک آواز پیدا ہوئی اور اس آواز کو ویدانت اور یوگ میں شبد (لفظ = نام = کلمہ = Logos) کہتے ہیں۔ نیچے اترتے ہوئے آتمن (خودی) بے طرح طرح کے رنگ اور شکلیں اختیار کرنا شروع کیں اور سنسار میں آکر مائنس (ذہن) اور مایا (مادہ) بن گئی۔ باوجود اس کے کہ وہ کثیف ہو چکی ہے اس نے ابھی تک عشق اور پریم کے پیغام کو قبول کرنے کی صلاحیت پوری طرح نہیں کھوئی ہے۔ اس لئے وہ برہمن کی طرف گرو کی رہنمائی میں دوبارہ رجوع کر سکتی ہے۔ اس طرح وہ بلندی کی طرف سفر شروع کرتی ہے۔ اس کو اپنی کھوئی ہوئی طاقت اور شکتی دوبارہ ملتی جاتی ہے۔ اس یا ترا میں اُسے وہی آواز جسے شبد کہتے ہیں پھر سنائی دیتی ہے اور اس نغمے پر وہ بڑھتی چلی جاتی ہے۔ رفتار کی تیزی کے ساتھ ساتھ نغمہ بھی بلند ہوتا جاتا ہے۔ یہ خود روح کا نغمہ ہے جسے یوگی «اناہت ناد» کہتے ہیں اور صوفی صوتِ سرمدی کے نام سے یاد کرتے ہیں۔ (ماخوذ از بانکے بہاری۔ «میرا بائی» مطبوعہ بھارتی ودیا بھون۔ بمبئی) «جو آواز بیرونی کانوں سے سنی جاتی ہے وہ دو چیزوں کے ٹکراؤ سے پیدا ہوتی ہے۔ لیکن برہمن کی آواز اناہت شبد ہے یعنی وہ آواز یا شبد جو دو چیزوں کے ٹکراؤ کے بغیر پیدا ہو۔ یہ آواز «اوم» ہے (ہائن رش زمر) میرا بائی نے شبد کو نام بھی کہا ہے اور کبیر کے یہاں بھی جو اناہت ناد کو انہد کہہ دیتے ہیں نام کا لفظ کبھی کبھی ان معنوں میں استعمال ہوتا ہے۔ کبیر کے «انہد» میں ایک لطف یہ بھی ہے کہ اگر اس کو «انحد»

گرچہ معشوقی لباسِ عاشقی پوشیدہ ہی
 انگہ از خود جلوۂ بر خود تمنا کردہ ہی
 بر رخ از زلف سیہ مشکین سلاسل بستہ ہی
 عالمے رابطۂ زنجیر سودا کردہ ہی
 موکب حسنت نہ گنجد در زمین و آسمان
 در حریم سینہ حیرانم کہ چوں جا کردہ ہی
 میکنی جامی گم اندر عشق، اسم و رسم خویش
 آفریں بادہ بریں رسمے کہ پیدا کردہ ہی

(ترجمہ: تو نے اپنے حسن کو معشوقوں کے چہروں سے آشکار کیا ہے
 اس لئے عاشقوں کی آنکھ سے اس کا تماشا دیکھتا ہے۔ اپنے جمال کا
 عکس تو نے پانی اور مٹی میں ظاہر کیا اور اُسے گل رخسار شمع اور
 بلند قامت چاند — حسین صورت — میں تبدیل کر دیا، اپنے جام عشق
 سے ایک جرعه ایک گھونٹ زمین پر انڈیل دیا اور ہزاروں فن جانتے
 والی عقل کو دیوانہ بنا دیا۔ حالانکہ تو معشوق یعنی حسن ہی حسن ہے
 لیکن تو نے عاشقی کا لباس پہن رکھا ہے اور اس کے بعد اپنے حسن
 کو خود ہی دیکھنے کی تمنا کر رہا ہے، تو نے مشک کی طرح مہکی
 ہوئی کالی زلفوں کی زنجیریں اپنے چہرے پر باندھ لی ہیں اور اب ایک
 دنیا کو دیوانگی کی ان زنجیروں میں جکڑ لیا ہے تیرے حسن کا لشکر
 زمین و آسمان کی وسعتوں میں بھی نہیں سما سکتا پھر بھی میں حیران
 ہوں کہ تو نے سینے کے اندر کیسے جگہ بنا لی۔ اس جامی تو نے
 اس عشق میں اپنا نام اور اپنا کام سب کچھ گم کر دیا ہے۔ اس رسم
 عاشقی کا کیا کہنا جو تو نے پیدا کی ہے۔

سترہویں اور اٹھارویں صدی کے اردو شاعر ولی دکنی نے اس خیال
 کو ایک شعر میں یوں کہا ہے:

حسن تھا پردۂ تجرید میں سب سوں آزاد
 طالبِ عشق ہوا صورتِ انسان میں آ

(۸) کافر کی یہ پہچان کہ آفاق میں گم ہے

مومن کی یہ پہچان کہ گم اس میں ہیں آفاق

(اقبال)

ہی بات کہتے ہیں اور وہ یہ کہ الوہیت کوئی بیرونی جابرانہ طاقت نہیں ہے، خدا کوئی سلطان نہیں ہے، بلکہ وہ روحانی اور اندرونی اصول ہے جو خودی میں پیوست ہے۔ یہ اندرونی روشنی اتر جیوتی ہے۔ ہم سب الوہیت کی چنگاریاں ہیں اور خدا کے ساتھ خدا کی طرح تخلیق کے عمل میں مصروف ہیں اور ہمارا فرض ہے کہ ہم حالات کے مقابلے میں جد و جد کریں تاکہ بدی اور نا انصافی اور نابرابری کو ختم کر کے انسانی زندگی کے معیار کو بلند کریں۔»

(۵) اودھو = اودھوت = لفظی معنی ہیں وہ جس کی بیوی نہ ہو۔ یعنی علائق دنیا سے آزاد۔ کبیر نے یہ لفظ ناتھ پنتھی جوگیوں کے لئے استعمال کیا ہے جن کی کبیر کے نظام فکر میں اچھی خاصی مان داں ہے۔ سہج اوستھا (فطری انداز) پراپت (حاصل) کرنے پر سادھک سادھنا کرنے والا اودھوت بن جاتا ہے۔ «اے میرے چت وہاں چل کر وشرام کر جہاں سورج اور چاند کی بھی رفتار نہیں ہے، جہاں ابتدا بھی نہیں اور انتہا بھی نہیں اور وسط بھی نہیں، جنم بھی نہیں، مرن بھی نہیں، اپنا بھی نہیں، پرایا بھی نہیں، جو مہا سکھ ہے، جو سہج اوستھا ہے» (دیکھیے نظم ۴۱)

(۶) گھٹ = وسیع معنوں میں استعمال ہوتا ہے۔ مٹی کا برتن = جسم = دل = دماغ = روح فکر وغیرہ، کبیر کا محبوب لفظ ہے۔ (دیکھیے نظم ۸)

(۷) جامی ایران کے آخری بڑے شاعر ہیں جو قریب قریب کبیر کے ہم عصر کہے جاسکتے ہیں، ان کی شاعری صوفیانہ ہے، اگر اس نظم - تھ ان کی ایک غزل پڑھی جائے تو لطف بڑھ جائے گا:

حسنِ خویش از روئے خوبان آشکارا کردہ یی
بس بہ چشم عاشقان آن را تماشا کردہ یی
ز آب و گل عکسِ جمالِ خویشتن بنمودہ یی
شمعِ گل رخسارہ و ماہِ سروِ بالا کردہ یی
جرعہ یی از جامِ عشقِ خود بخاک افشانده یی
ذوفنونِ عقل را بجنون و شیدا کردہ یی

رکھتی ہے اس لئے اس کو کنول کی بیٹی — » پدم سنبھوا« — کہا گیا ہے۔ زمانہ ما قبل تاریخ کے قدیم غیر آریائی ہندوستان میں وہ چاول اور دھان کی دیوی ہے۔ اب وہ ہندوستانی دیومالا کی سب سے زیادہ محبوب، مقبول، پیاری اور ہر دل عزیز دیوی ہے۔ جو تصویروں میں کنول کے پھول پر کھڑی ہوئی نظر آتی ہے۔ کبھی کبھی اس کے بازو سے کنول کا پھول اور اس کا ڈنٹھل زیور کی طرح لٹا ہوتا ہے، بُدھ آرٹ میں کنول پر بیٹھے ہوئے بھگوان بُدھ یا اپنے ہاتھوں میں کنول کا پھول لیے ہوئے بودھی ستو — پدم پانی — زمانہ ما قبل تاریخ کے قدیم ترین ہندوستان کی روایات سے اپنا روحانی رشتہ جوڑ رہے ہیں)۔

کبیر کے اس شعر میں جو خیال ہے وہ فارسی اور اردو کے شعرا کے یہاں بھی عام ہے اور صوفی روایات سے آیا ہے جن پر بھگتی اور ویدانت کا اچھا خاصا اثر ہے :

اے تماشا گاہِ عالم روئے مُست

تو کجسا بھر تماشا می روی

(ترجمہ : ساری دنیا تیرے چہرے کا تماشا دیکھتی ہے۔ تو خود کہاں تماشا دیکھنے جا رہا ہے) سعدی

ستم است اگر ہوست کشد کہ بسیر سرو و سمن درآ

تو ز غنچہ کم نہ دمیدہ، در دل کشا، بچمن درآ

(ترجمہ : کیسے ستم کی بات ہے کہ ہوس تجھے باغوں کی سیر کے لیے کھینچے لے جا رہی ہے۔ تو تو خود ایک کھلتا ہوا پھول ہے، دل کے دروازے کو کھول کے اپنے باغ میں داخل ہو جا۔) بیدل

دنیا کے تمام مذاہب میں اس خیال کی بنیادی وحدت کی طرف ڈاکٹر رادھا کرشنن نے ان الفاظ میں اشارہ کیا ہے :

»جب ہندو اترا آتما کی بات کرتے ہیں اور بُدھ دھرم والے خود بُدھ کی بلدی تک پہنچنے کے امکان کو تسلیم کرتے ہیں اور یہودی یہ اقرار کرتے ہیں کہ انسانی روح خدا کا چراغ ہے اور جب عیسائی یہ اعلان کرتے ہیں کہ خدا کی بادشاہت تمہارے وجود کے اندر ہی ہے، کیا تمہیں یہ نہیں معلوم کہ معبد خداوندی اور روح خداوندی تمہارے سینے میں ہے، اور جب پیغمبر اسلام یہ فرماتے ہیں کہ خدا ہماری رگِ جان سے بھی زیادہ قریب ہے، تو یہ سب مختلف طریقوں سے ایک

تیر رہا ہے ، جب اپنے لطف و کرم سے ، اپنی خوشنودی کی خاطر آفاق (Universe) کو پھر سے تخلیق کرنا چاہتا ہے تو اس کی ناف سے ایک تنہا کنول باہر نکلتا ہے جس میں خالص سونے کی ہزار پنکھڑیاں سورج کی آب و تاب سے جگمگاتی ہیں اور یہ خالق آفاق کنول کے ساتھ ساتھ برہما کو بھی باہر نکالتا ہے جو کنول کے بیچوں بیچ بیٹھا ہوا تخلیقی طاقتوں کے نور سے جگمگا رہا ہے ۔

یہ برہما ایک ایسا یوگی ہے جسے اپنے اوپر اور کائنات اور آفاق کی طاقتوں پر پورا پورا قابو ہے ۔ جب کوئی انسان اپنی نفسیہ سے روحانی طور پر اعلیٰ مقام حاصل کر لیتا ہے تو وشو اس کا اعتراف کرنا ہے اور وہ شخص بھی جلیل القدر یوگی ہو جاتا ہے اور تخلیق کائنات و آفاق کے اس سنہرے سنگھاسن ، سہس کنول ، پر بیٹھ کر لا محدود حسن (روپ اپار) کا جلوہ دیکھ سکتا ہے ۔

(کبیر کے دوہے کی معنویت یہیں تک ہے ، لیکن یہ بات دلچسپی سے خالی نہیں ہے کہ برہما کے کنول کو زمین کا ہیولی بھی مانا جاتا ہے بلکہ وہ خود زمین کی دیوی دھرتی مانا ہے ۔ ہندو و صنیات (Iconography) اور اسطوری نشانات (Mythological symbols) کے اعتبار سے اس کنول کی پنکھڑیوں کی اوپری سطح پر وہ سر زمینیں آباد ہیں جن تک رسائی ممکن نہیں ۔ پنکھڑیوں کی نچلی پشت پر سانپوں اور جنوں (یکش) کی بستیاں ہیں اور اس پھول کے دل (وسط) میں وہ براعظم ہے جس کا ایک حصہ بھارت ورش ہے ۔

(ایک اور علامت = کائناتی گہرائیوں (Cosmic Alys) میں بھرے ہوئے تاریک پانیوں پر زمین اس طرح تیرتی ہے جیسے لا شعور کے تاریک سمندر میں شعور کا جگمگاتا ہوا کنول تیر رہا ہو ۔ یہ کنول تخلیق کا دروازہ کائنات کی کوکھ ہے ۔ یہ تخلیقی اصول کی پہلی پیدائش ہے اس کے دل سے برہما پیدا ہوتا ہے کبھی پانی عورت ہے اور کنول تخلیقی عضو اور کبھی خود کنول دھرتی مانا اور نمی کی دیوی ہے ۔

(ویدوں کی ابتدائی روایات میں کنول کی دیوی کا ذکر نہیں ہے ۔ آریوں نے بعد میں اسے قدیم ہندوستان کے غیر آریائی باشندوں کی عوامی تہذیب اور عوامی روایات سے اخذ کیا اور اسے شری اور لکشمی کے ناموں سے یاد کیا ، لکشمی جو دولت کی دیوی ہے کنول کی علامت

مقابلے پر برا کرم ہے اور دونوں سے عمل اور رد عمل کا سلسلہ شروع ہوتا ہے جو لامتناہی ہے۔ لیکن ہر کرم چاہے وہ اچھا ہو یا برا ہو ایک طرح کا الجھاوا ہے، انسان کی گردن میں پڑی ہوئی رستی ہے جو اسے عمل اور رد عمل کے لامتناہی سلسلے میں کھینچے لے جا رہی ہے، اسی کو کبیر نے »کرم کی پھانسی« (پھانسی) کہا ہے۔ اس لئے بدھ گیان کی اعلیٰ منزلوں میں اپنے آپ کو اچھے اور برے دونوں طرح کے کرم کے پھندوں سے آزاد کر لینا شامل ہے۔ یہاں سے نروان کی منزلیں شروع ہوتی ہیں بھگتی تحریک پر اور سنت کوہوں کے یہاں بدھ دھرم کے اس اخلاقی نظریے کی پر چھائیں اکثر مل جاتی ہے۔ اس خیال کو کبیر نے نظم ۶ میں اس طرح پیش کیا ہے کہ عمل صرف گیان حاصل کرنے کے لئے ہے۔ گیان حاصل ہو جانے کے بعد عمل اسی طرح بیکار اور غیر ضروری ہو جاتا ہے جس طرح پھل آجانے کے بعد پھول کی ضرورت نہیں رہتی۔

اس نظم کا ایک پہلو اور بھی ہے جو کسی حد تک محدود ہے۔
اس میں شیخ سعدی اور اقبال، کبیر کے ہم خیال ہیں:

تو کارِ زمین را نکو ساختی
کہ با آسمان نیز پرداختی

سعدی

(ترجمہ: کیا تو نے زمین کا کام سنوار لیا ہے جو آسمان کی طرف پرواز کر رہا ہے؟)

اگر نہ سہل ہوں تجھ پر زمین کے ہنگامے
مُبری ہے مسقِ اندیشہ ہائے افلا کی

(اقبال)

(۴) سپس کنول (سپسر = ہزار) ہزار پنکھڑیوں کا کنول۔ ہائن ریش زمر (Heinrich Zimmer) نے اس کی تشریح اس طرح کی ہے کہ تخلیق، تخریب اور تخلیق نو کا ازلی اور ابدی عمل جاری ہے وہ مہا پرش، وہ سویم بھو، وہ ذات مطلق جسے وشنو کہتے ہیں اور جو کائنات (Cosmos) کے اصولِ اول، بنیادی پانی کی تاریک سطح پر

تب کرشن جی کی ہدایت پر بہیم کاشی کے سُدرشن بھنگی کو بلانے گئے۔ بہیم کے غرور کی وجہ سے سُدرشن نے آنے سے انکار کر دیا۔ تب یدھشٹر خود جا کر انہیں بلا لائے اور بھوجن کرایا۔ ان کے بھوجن کرنے پر گھنٹا بجا۔ پھر سب لوگ کرشن جی کے کہنے پر پریاگ (الہ آباد) گئے۔ وہاں سنگم کے پانی میں سب نے اپنا اپنا عکس دیکھا۔ صرف سُدرشن بھنگی کا عکس انسان کا تھا باقی سب کے عکس کبے اور دوسرے جانوروں سے ملتے تھے۔

سنتوں کی کوئی ذات نہیں ہوتی اس خیال کو صوفیانہ فکر نے اس طرح ادا کیا ہے :

بندۂ عشق شدی، ترکِ نسب کن جامی

کہ دریں راہ فلان ابنِ فلان چیزے نیست

(ترجمہ : اے جامی اب عشق کی غلامی اختیار کی ہے تو باپ دادا کا نام بھول جاؤ کیونکہ اس راستے میں یہ بات کہ فلان فلان کا بیٹا ہے بے معنی ہے۔)

باز می گویم و از گفتۂ خود دل شادم

بندۂ عشقم و از ہر دو جہان آزادم

(ترجمہ : میں یہ بات پھر دہرا رہا ہوں اور اس بات سے خوش ہوں کہ میں عشق کا غلام ہوں اور دونوں جہان کی پابندیوں سے آزاد ہوں) حافظ شیرازی۔

(۳) کرم کی پھانسی = تمام مذاہب میں یہ عقیدہ، عام ہے کہ اخلاقی قوانین خدا یا دیوتاؤں کے بنائے ہوئے ہیں اور ان پر عمل کرنا انسان کا فرض ہے۔ اخلاقیات کے اس تصور میں پہلی بنیادی تبدیلی گوتم بُدھ (پانچ سو قبل مسیح) نے کی جن کی تعلیم میں اخلاقی قوانین خود انسان بناتا ہے اور اُن کو اپنے اوپر عائد کرتا ہے۔ جان نہ لینا خواہش سے بچنا، جھوٹ اور نشے سے پرہیز کرنا، یہ سب خود اختیاری فرائض ہیں جن سے کوئی ثواب نہیں ملتا بلکہ شعور اور چیتا پر جلا ہوتی ہے یا وہ پردے اُٹھ جاتے ہیں جو شعور اور چیتا پڑے ہوئے ہیں ان فرائض کو ادا کرنا یا ان پر عمل کرنا اچھا کرم ہے اور اس کے

وہ کیلیں ٹھوکتا جاتے تھے۔ وہ ایک سادہ محنت کش کے ہاتھ تھے۔
حضرت عیسیٰ نے انسانی روح کو سدھارنے اور نکھارنے سے پہلے مادے کو
اپنے ہاتھوں سے سنوارا تھا»

(Giovanni Papini "Life of Christ")

ڈاکٹر رادھا مکدمکرجی نے اپنی انگریزی کتاب «ہندو سوبلیزیشن»
(مطبوعہ بھارتی ودیا بھون، بمبئی، جلد ۱ صفحہ ۱۵۵) میں ہندوستان
کی مختلف جاتیوں اور ورنوں کے فرائض بیان کیے ہیں «براہمن = تعالیم
دینا، قربانی اور مذہبی رسوم ادا کرنا، دان یا خیرات وصول کرنا،
چھتری (کشتری) = حفاظت اور حکومت کرنا، ویش = تجارت اور کھیتی
کرنا، جانور پالنا، سینکنگ۔ شودر = سچائی، صفائی، انکسار، آچمن
منتر کے بغیر اشنان، لاشیں اٹھانا اور جلانا، اپنی ہی جاتی میں شادی کرنا،
اونچی جاتیوں کی خدمت کرنا اور شلپ ورتی یعنی دستکاری کرنا، نائی،
دھوبی، مصور، بڑھن، لوہار کا پیشہ اختیار کرنا»۔

ایسی صورت میں ظاہر ہے کہ سماج کی ترقی، جاگیرداری کے
زوال اور تجارت اور ابتدائی سرمایہ داری کی نشو و نما کے ساتھ ساتھ
ویش اور شودر کا درجہ بڑھ گیا کیونکہ تجارت، کھیتی، جانور پالنا اور
سینکنگ ویش کے ہاتھوں میں تھی اور تمام دستکاریاں شودر کے ہاتھ
میں، بھگتی کی تحریک کے ساتھ ساتھ شاعری اور فلسفے بھی جو برہمنوں
کی میراث تھے، دستکاروں تک پہنچ گئے۔ اس کا آخری اور بڑا شاعر
اور مفکر کبیر ہے۔

سپیچ رشی = کبیر ہنتھی گرتھوں میں یہ بتایا گیا ہے کہ
کلجنگ کی ابتدا میں جب کبیر صاحب کا ظہور ہوا تو کاشی (بنارس) کے
سُدرشن نامی مہاتما نے کبیر سے دیکشا (شاگردی) لی۔ وہ ذات کے بھنگی
تھے۔ پنڈت ہزاری پرشاد دوئی ویدی نے اپنی ہندی کتاب «کبیر» میں
لکھا ہے کہ مہا بھارت کی لڑائی جیت لینے کے بعد یدھشٹر نے بھائیوں
اور عزیزوں کا خون کرنے کے گناہ سے نجات پانے کے لئے ایک بہت
بڑا یگیہ کیا۔ سری کرشن نے اس یگیہ میں ایک گھنٹا باندھ دیا اور
کہا کہ جب گھنٹا سات بار بجے تو سمجھنا چاہیے کہ گناہ سے نجات مل
گئی۔ ہزاروں سادھو اور براہمن بھوجن کرچکے مگر گھنٹا نہیں بجا۔

” پر قدم پر مکہ ہے ، پر قدم پر کاشی
 ” میری زندگی کا ایک ایک پل مبارک ہے “

(۱۔ اے۔ کے۔ سین کی انگریزی کتاب ”ہندوازم“ سے ترجمہ)
 اس تصور کی ابتدا اپنی شد اور ویدانت سے ہوئی ہے اور یہ شاعری
 اور فلسفے کے غیر مذہبی (Secular) تصور کی طرف انسان کا پہلا قدم
 ہے جس میں مذہبی کتابوں اور عبادت خانوں کو چھوڑ کر انسان نے انسان
 کی روح کے اندر جھانکنے کی اور اس کی ذات میں دلچسپی لینے کی
 کوشش کی ہے ۔

(۲) سنت ریداس :- اصلی نام روی داس ہے۔ کبیر کے گرو سوامی
 رامانند کے بارہ چیلوں میں ریداس بھی ایک ہیں جو ذات کے چمار
 تھے ، وہ بھی غالباً کاشی کے رہنے والے تھے ، کوئی مکمل کتاب یا مجموعہ
 نہیں ملتا۔ لیکن کچھ نظمیں (غالباً چالیس پد) سکھوں کی مقدس کتاب
 گرو گرتھ صاحب میں شامل ہیں۔

یہ عجیب اور دلچسپ بات ہے کہ قرون وسطیٰ کی وہ انسان دوست
 تحریک جس نے پہلی بار انسانی برادری کو ایک سمجھا اور مذہب کو
 عشق بنادیا اور جو یورپ میں مسیحی-زم، ایران اور اسلامی دنیا میں تصوف
 اور ہندوستان کے ہندوؤں میں بھگتی اور چین میں چی این اور جاپان
 میں ژن (دھیان کی بگڑی ہوئی شکل) کے نام سے مشہور اور مقبول
 ہوئی ایک ایسی تحریک تھی جس کی ظاہری شکلوں پر ان علاقوں کے
 مذہب کا رنگ چڑھا ہوا تھا لیکن اندرونی طور سے یعنی اپنے معنی
 اور مقصد کے اعتبار سے ایک تھی، شروع سے آخر تک اس عہد کے
 دستکاروں کے ہاتھوں میں رہی، عیسائی مسٹک پال :: خیمہ دوز تھے،
 منصور حلاج بڑھئی اور خود کبیر جولاہے تھے۔

ایک عیسائی پادری نے حضرت عیسیٰ کو بھی دستکاروں کے ضمیرے
 میں شامل کر دیا ہے ”وہ ہاتھ جو رحمت خدا وندی بن کر لوگوں کے سروں
 پر سایہ افکن ہوتے تھے، جو نائینا آنکھوں کو بینائی عطا کرتے تھے
 اور جذامیوں کو اچھا کر دیتے تھے، جن کی ہتھیلیاں صلیب پر زخمی
 ہو گئی تھیں، وہ ہاتھ محنت سے چور اور پسینے سے تر ہو چکے تھے،

» حواشی «

(۱) اسلامی عقیدے میں خدا رگِ جان سے بھی زیادہ قریب ہے ،
تصوف کی روایات میں اور اردو فارسی شاعری میں اس کی بے شمار
مثالیں ملیں گی :

دل کے آئینے میں ہے تصویرِ یار
اک ذرا گردن جھکائی دیکھ لی

(نامعلوم)

جنہیں میں ڈھونڈتا تھا آسمانوں میں زمینوں میں
وہ نکلے میرے ظلمت خانہ دل کے مکینوں میں

(اقبال)

نہ تو اندر حرم گنجی ، نہ در بُت خانہ می آئی
و لیکن سوئے مشتاقان چہ مشتاقانہ می آئی
قدم ییباک تر نہ در حریمِ جان مشتاقان
تو صاحب خانہ آخر چرا دزدانہ می آئی

(ترجمہ : تو کعبے میں سماتا ہے اور نہ بت خانے میں . لیکن اپنے
چاہنے والوں کے پاس کتنا خوش ہو کر آتا ہے ، ذرا چاہنے والوں کے دل
[حریمِ جان = خلوت خانہ روح] میں نڈر ہو کر قدم رکھ . آخر تو اس
گھر کا مالک ہے پھر چوروں کی طرح آنے کی کیا ضرورت ہے) (اقبال)
بنگال کے باؤل بھگتوں کے یہاں بھی یہ تصور عام ہے :

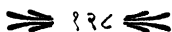
» اے دل میں مکے اور مدینے کیوں جاؤں

» مرا محبوب (مونیہ مانس) تو میرے پہلو میں ہے

» اس سے انجان ہو کر ، اس سے دور رہ کر میں دیوانہ ہو جاتا ہوں

» مندر اور مسجد میں عبادت کہاں

रखती है और स्नान करती है। इसी चक्कर में चलते चलते पांव धक जाते हैं। आखिर यह दुख कहां समायेगा। काया भी झूठी है, माया भी झूठी है। तू व्यर्थ ही झूठन खाता फिरता है। बांझ गाय जब दूध ही नहीं देगी तो तुझे मक्खन कहां से मिलेगा? सच्चे के साथ सच्चा ही बसता है। झूठे को मार कर भगा दो। कबीर कहते हैं कि जहां सत्य का वास है वहां दीदार और जलवा बड़ा बेतकल्लुफ़ होता है।



यह जग अंधा में केहि समुझावो।

इक-दुई हों उन्हें समुझावों सब ही भुलाना। पेटके अंधा।

पानीके घोड़ा पवन असवरवा टगकि परै। जस ओसके बुंदा।

गहरी नदिया अगम बहै धरवा खेवनहार पड़िगा फंदा ॥

घरकी वस्तु निकट नहि आवत दियना। वारिके दूँदत अंधा ॥

लागी आग सकल बन जरिगा। बिन गुरुनान भटकिया बंदा।

कहै कबीर सुनो भई साधो। इक दिन जाय लंगोटी मार बंदा ॥

यह सारी दुनिया अंधी है। मैं किसको समझाऊँ। एक दो हों तो मैं उन्हें समझाने की कोशिश भी करूँ। यहां तो सब ही पेट के धन्दे में भटकते फिर रहे हैं। पानी के घोड़े पर हवा का सवार ऐसे टपक जाता है जैसे ओस की बूंद। सत्य की अथाह नदी बह रही है और उसकी धारा के बीच में खेवनहार फंस गया है। अंधा घर की वस्तु के निकट नहीं जाता मगर चिराय जला कर इधर-उधर दूँदता फिरता है। आग लगी और सब कुछ जल गया। गुरु के ज्ञान के बिना बन्दा भटक रहा है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यह बन्दा एक दिन लंगोटी फाड़कर रवाना हो जायेगा।

ہے ، برت رکھتی ہے اور اشنان کرتی ہے ۔ اس چکر میں چاتے چاتے پانوں تھک جاتے ہیں ۔ آخر یہ دکھ کہاں سمائے گا ۔ کایا بھی جھوٹی ہے ، مایا بھی جھوٹی ہے ، ناحق تو جھوٹن کھانا پھرتا ہے ۔ بانجھ گائے جب دودھ ہی نہیں دیگی تو تجھے مکھن کہاں سے ملے گا ۔ سچے کے ساتھ سچا ہی ہوتا ہے ۔ جھوٹے کو مار کے بھگادو ۔ کبیر کہتے ہیں کہ جہاں صداقت بسق ہے وہاں دیدار اور جلوہ بڑا بے تکلف ہوتا ہے ۔

» ۱۲۸ «

یہ جگ اندھا میں کیہ سمجھاؤں

اک دُئی ہوں انہیں سمجھاؤں سب ہی بھلانا پیٹ کے دھندا
پانی کے گھوڑا ہوں اسوروا ڈھرک پرے جس اوس کے بُندا
گہری ندیا اگم ہے دھروا کھیون ہارا پڑگا بھندا
گھر کی وستُ تکٹ نہہ آوت دینا بار کے ڈھونڈت اندھا
لاگی آگ سکل بن جرگا بن مگر گیان بھٹکیا بندھا
کہے کبیر سو بھائی سادھو اک دن جائے لنگوٹی حہار بندھا

یہ ساری دنیا اندھی ہے ۔ میں کس کو سمجھاؤں ۔ ایک دو ہوں تو میں انہیں سمجھانے کی کوشش بھی کروں ۔ یہاں تو سب ہی پیٹ کے دھندے میں بھٹکتے پھر رہے ہیں ۔ پانی کے گھوڑے پر ہوا کا سوار ایسے ٹپک جاتا ہے جیسے اوس کی بوند ۔ (حقیقت کی) اتہاہ ندی بہ رہی ہے اور اس کی دھار کے بیچ میں کھیون ہار پھنس گیا ہے ۔ گھر کی چیز کے قریب نہیں جانا لیکن اندھا چراغ جلا کر ادھر ادھر ڈھونڈتا پھرتا ہے ۔ آگ لگی اور سب کچھ جل گیا ۔ گرو کے گیان (عرفان حق) کے بغیر بندہ بھٹک رہا ہے ۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ بندہ ایک دن لنگوٹی جھاڑ کے رخصت ہو جائے گا ۔

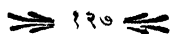
वेद कितेब पढ़े वे कुतुबा, वे मोलना वे पोंडे ।

बेगरि बेगरि नाम धराये, एक मटियाके भौंडे ॥

कहहि कबीर वे दूनों भूले, रामहि किन्ह न पाया ।

वे खस्ती वे गाय कटावैं, बाढहि जन्म गँवाया ॥

दो जगदीश कहीं से आये । तुझे इस भ्रम में किसने डाल दिया । अल्लाह, राम, रहीम अलग अलग कैसे हो सकते हैं । एक ही सोने से सब जेवर बनाये गये हैं उनमें दो भाव कैसे हो सकते हैं । एक नमाज, एक पूजा यह सब कहने सुनने की बातें हैं । इनको अपने वजूद से दूर करदे । वही महादेव है और वही महम्मद । जो ब्रह्मा है उसी को आदम कहना चाहिये । कोई हिन्दू कहलाता है और कोई मुसलमान लेकिन रहने सब एक ही जमीन पर हैं । एक वेद पढ़ता है और दूसरा खुतबा । एक मौलाना कहलाता है और एक पण्डित । नाम अलग अलग रख लिये हैं, वैसे बरतन सब एक ही मिट्टी के हैं । कबीर कहते हैं कि वे दोनों भटक गये हैं । राम (खुदा) को किसी ने नहीं पाया । एक बक़रा काटता है और दूसरा गाय जिब्रह करता है और दोनों इसी भगड़े में अपना जीवन व्यर्थ गंवाते हैं ।



मन, तुम नाहक दुंद मचाये ।

करि असमान छुवो नहि काहू, पाती फूल चढ़ाये ।

मूर्तिसे दुनिया फल माँगै, अपने हाथ बनाये ।

यह जग पूने देव-देहा, तीर्थ-वर्ष-अन्हाये ।

चलत-फिरतमें पाँव थकित भे, यह दृख कहीं समाये ।

भूठी काया भूठी माया, भूठे भूठे भूदल खाये ।

बौझिन गाय दूध नहि देहै, माखन कहँसे पाये ।

साँचेके सँग साँच बसत है, झूठे मारि हटाये ।

कहै कबीर जहँ साँच वस्तु है, सहजै दासन पाये ॥

मन तू व्यर्थ ही दुंद मचा रहा है । फूल-पत्ती चढ़ा कर भी कोई आकाश को हाथों से नहीं छू सकता । दुनिया अपने हाथ की बनाई हुई मूर्ति से फल मांगती है, और देवी देवताओं की चौखट पूजती है । तीर्थयात्रा पर जाती है, ब्रत

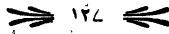
وید کتیب پڑھے وے کُتبا، وے مولانا وے پانڈے

بیگر بیگر نام دھرائے، ایک مٹیا کے بہانڈے

کہیں کبیر وے دونوں بھولے، رام نہ کنہوں نہ پایا

وے کھستی وے گائے کٹاویں، باد نہ جنم گنوا یا

دو جگدیش (دنیا کے مالک) کہاں سے آئے۔ تجھے اس بہرم میں
کس نے مبتلا کر دیا ہے۔ اللہ، رام، رحیم الگ الگ کیسے ہو سکتے
ہیں۔ ایک سونے سے سب زیور بنائے گئے ہیں ان میں دوسری قدر و
قیمت نہیں ہے۔ یہ سب، ایک نماز، ایک پوجا، کہنے سننے کی باتیں
ہیں، ان کو اپنے وجود سے دور کر دے۔ وہی مہادیو ہے وہی محمد،
جو برہما ہے اس کو آدم کہنا چاہئے۔ کوئی ہندو کہلاتا ہے اور کوئی
مسلمان لیکن رہتے ایک زمین پر ہیں۔ ایک وید کی کتابیں پڑھتا ہے
اور ایک خطبہ، ایک مولانا کہلاتا ہے اور ایک پنڈت۔ الگ الگ نام
رکھ لیے ہیں، ویسے برتن سب ایک ہی مٹی کے ہیں۔ کبیر کہتے ہیں
کہ وہ دونوں گمراہ ہیں، رام (خدا) کو کسی نے نہیں پایا۔ ایک بکرا
کاٹتا ہے دوسرا گائے ذبح کرتا ہے اور دونوں اس جھگڑے میں اپنی
زندگی گنوائے ہیں۔



من ہم نابک دُند پچائے

کر اسمان چھو و تہم کاہو، ہاتی پھول چڑھائے

مورت سے دنیا پھل مانگے، اپنے ہاتھ بنائے

یہ جگ پوچھے دیو دیہرا، تیرتھ ورت اسٹائے

چلت پھرت میں پاؤں تھکت بھے، یہ دُکھ کہاں سمائے

جھوٹوں کا یا جھوٹوں مایا، جھوٹے جھوٹے جھوٹل کھائے

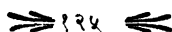
نانجھن گائے دودھ نہہ۔ دیوے، ماکھن کہاں سے پائے

سانچے کے سنگ سانچ بست ہے، جھوٹے مار پٹائے

کہے کبیر جنہیں سانچ وست ہے سہجے درس پائے

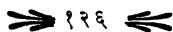
اے من تو ناحق دُند چاربا ہے۔ پھول پتی چڑھا کے بھی کوئی آسمان
کو ہاتھوں سے نہیں چھو سکتا۔ دنیا اپنے ہاتھ کی بنائی ہوئی مورتی سے
پھل مانگتی ہے، اور دیوتاؤں کی چوکھٹ پوجتی ہے اور تیرتھ پر جاتی

जो वस्तु प्राप्त नहीं हुई उसे क्या त्यागना । जो प्राप्त हो चुका है उसे त्यागने वाला ही त्यागी है । असील घोड़े को क्या फेरना । जो अड़ियल घोड़े को फेरे वही बारी है । दुनिया के अनुभव के गीत क्या गाता है । असली रागी वह है जो अपने अनुभव के गीत गाता है । कबीर कहते हैं कि बैरागी वह है जो घर और जंगल दोनों की इच्छा को त्याग दे ।



तोको पीव मिलेंगे घूँघटके पट खोल रे ।
घट घटमें वही साईं रमता, कटुक बचन मत बोल रे ।
धन जोवनको गरब न कीजै, झूठा पंचरंग चोल रे ।
सुन्न महलमें दियना बार ले, आसासों मत डोल रे ।
जोग जुगत सो रंग महलमें, पिय पाई अनमोल रे ।
कहै कबीर आनंद भयो है, बाजत अनहद ढोल रे ।

तुम्हको प्रीतम मिलेंगे, अपने घूँघट के पट खोल दे । हर शरीर में वही एक मालिक आवाद है । किसी के लिए कड़वा बोल क्यों बोलता है । धन और यौवन पर अभिमान मत कर क्योंकि यह पांच रंग का चोला झूठा है । शून्य के महल में चिंगरा जला और उम्मीद का दामन हाथ से मत छोड़ । अपने योग के जतन से तुझे रंगमहल में अनमोल प्रीतम मिलेगा । कबीर कहते हैं कि अनहद का साज बज रहा है और चारों ओर आनन्द ही आनन्द है ।



दुई जगदीस कहाँते आया, कहु कवने भरमाया ।
अलुह-राम-करीमा केसो, हजस्त नाम घगया ॥
गहना एक कनकर्ते गढ़ना, इनि महुँ भाव न दूजा ।
कहन-सुननको दुर करि पापिन, इक निमाज इक पूजा ॥
वही महादेव वही महंमद, ब्रह्मा-आदम कहिये ।
को हिन्दूको तुरुक कहावै, एक जियोपर रहिये ॥

جو چیز حاصل نہیں ہوئی اسے کیا ترک کرتا ہے ، جو حاصل ہو چکا ہے اسے ترک کرنے والا تیاگی ہے ۔ اصل گھوڑے کو کیا پھیرنا ، جو اڑیل گھوڑے کو پھیرے وہ بگدھری جانتا ہے ۔ دنیا کے تجربے کا کیا گانا ہے ، اصلی راگ جانتے والا وہ ہے جو اپنے تجربے کا گیت گانا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ بیراگی وہ ہے جو گھر اور جنگل دونوں کی خواہش کو ترک کر دے ۔

» ۱۲۵ «

توکو پیو ملیں گے ، گھونگھٹ کے پٹ کھول دے
گھٹ گھٹ میں وہی سائیں رمنا ، کنٹک بچن مت بول دے
دھن جوہن کو گرب نہ کیجے ، جھوٹا پنچ رنگ چول دے
سُن محل میں دینا بارلے ، آسا سوں مت ڈول دے
جوگ جُگت سورنگ محل میں ، پیہ پائی انمول دے
کہے کبیر آنند بھیو ہے ، باجت انہد ڈھول دے

تجھ کو پریم ملیں گے ، اپنے گھونگھٹ کے پٹ کھول دے ۔ ہر جسم میں وہی ایک مالک آباد ہے ، کسی کے لئے کڑوا بول کیوں بولتا ہے ۔ دولت اور جوانی کا غرور مت کر کیونکہ یہ پانچ رنگ کا چولا جھوٹا ہے ۔ شونیہ کے محل میں چراغ جلالے اور امید کا دامن ہاتھ سے مت چھوڑ ۔ اپنے یوگ کے حربے سے رنگ محل میں تجھے انمول پریم ملے گا ۔ کبیر کہتے ہیں کہ صوتِ سرمدی کا ساز بج رہا ہے اور مسرت ہی مسرت ہے ۔

» ۱۲۶ «

دُئی جگدیس کہاں تے آیا ، کہن کو تے بھرمایا
الہ ، رام ، کریم ، کیسو ، ہجرت نام دھرایا
گہنا ایک کنک تیں گڑھنا ، ان منہ بھاؤ نہ دوجا
کہن سُن کو دُرکیر پاپن ، اک نماج اک پوجا
وہی مہادیو وہی محمد ، برہما ، آدم کہنے
کو ہندو کو ترک کہاوے ، ایک جمیں پر رہنے

निशाना आकाश की ओर है । दाहिनी ओर सुरज है और बायीं ओर चांद और निशाना बीच में झुपा हुआ है । तन का धनुष और प्रेम की डोरी और शब्द का तीर तान लिया है और इस तीर ने तन को छेद डाला है, लेकिन घाव दिखाई नहीं देता । जिन्होंने घाव खाया है वही जानते हैं । भाई साधु सुनो कबीर कहते हैं कि जो जान गये हैं वह इस बात को मानते हैं ।

➤ १२३ ➤

सोच-समुझ अभिमानी, चादर भई है पुरानी ।
 टुकड़े टुकड़े जोड़ि जगत-सों, सीके अँग लिपटानी ।
 कर डारी मैली पापन-सों, लोभ-मोहमें सानी ।
 ना यहि लग्यो ज्ञानकै साबुन, ना धोई भल पानी ।
 सारी उभिर ओढ़ते बीती, भलि बुरी नहिं जानी ।
 संका मान जान जिय अपने, यह है चीज बिगानी ।

कहत कबीर धरि राखु जतनसे, फेर हाथ नहिं आनी ॥

अब अभिमानी धरा सोच कि तेरी चादर पुरानी हो चुकी है । बड़े जतन से टुकड़े जमा करके सी लिये हैं और फिर अपने शरीर से लपेट लिया है । तुने इस चादर को पापों से मैला कर दिया है और लालच से गन्दा । न इसमें तूने ज्ञान का साबुन लगाया और न उसे पानी से अच्छी तरह धोया । सारी उम्र इसे ओढ़ते बीत गई और तूने भले बुरे को नहीं पहचाना । अरे मन में शंका रखनेवाले यह समझ ले कि यह दूसरों की चीज है । कबीर कहते हैं कि इसे जतन से रखना । यह फिर हाथ नहीं आयेगी । (चादर का शब्द अविन्दगी के लिये प्रयुक्त है ।)

➤ १२४ ➤

अनप्राप्त वस्तुको कहा तजे, प्राप्तको तजे सो त्यागी है ।
 सु असील तुरंग कहा फेरे, अफतर फेरे सो बागी है ।
 जगभवका गावना क्या गावै, अनुभव गावै सो रागी है ।
 वन गेहकी वासना नास करै, कबीर सोई बैरागी है ॥

نشان آسمان کی اوٹ ہے . داہنی طرف سورج ہے بائیں طرف چاند اور نشان بیچ میں چھپا ہوا ہے . تن کی کمان اور عشق کی ڈوری اور شبد (لفظ = نام = صوت سرمدی) کا تیر تان لیا ہے ، اور اس تیر نے تن کو چھید ڈالا ہے لیکن زخم دکھائی نہیں دیتا . جنہوں نے زخم کھایا ہے وہی جانتے ہیں . بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں جو جان گئے ہیں وہ اس بات کو مانتے ہیں .

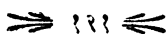
» ۱۲۳ «

سوچ سمجھ ابھمانی ، چادر بھنی ہے پرانی
 ٹکڑے ٹکڑے جوڑ جگت سوں ، سی کے انگ لپٹانی
 کر ڈاری میلی پاپن سوں لوبہ مون میں سانی
 نا یہ لگیو گیان کے صابن ، نا دھوئی بھل پانی
 ساری عمری اوڑھتے بیٹی ، بھلی بُری نہیں جانی
 سنکا مان جان جیہ اپنے ، یہ ہے چیچ برانی
 کت کبیر دھر راکھ جتن سے پھر ہاتھ نہیں آئی
 اے مغرور ذرا یہ سوچ کہ تری چادر پرانی ہو چکی ہے . بڑے جتن سے ٹکڑے جمع کر کے سی لیے ہیں اور پھر انہیں جسم سے لپٹ لیا ہے . تو نے گناہوں سے یہ چادر میلی کر دی ہے اور لالچ سے اسے گندہ کر دیا ہے . نہ اس میں تو نے گیان کا صابن لگایا نہ اسے اچھی طرح پانی سے دھویا . ساری عمر اوڑھتے بیت گئی اور تو نے بھلے برے کی تعیز نہیں کی . اور شک اور شبہ میں مبتلا یہ سمجھ لے کہ یہ دوسرے کی چیز ہے . کبیر کہتے ہیں کہ اسے جتن سے رکھنا . یہ پھر ہاتھ نہیں آئے گی . (چادر سے مراد زندگی ہے)

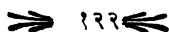
» ۱۲۴ «

ان پر اپت وست کو کہا تجے ، پر اپت کو تجے سو تیاگی ہے
 سُن اِصیل مُترنگ کہا پھیرے ، اپہتر پھیرے سو باگی ہے
 جگ بھوگا گاونا کیا گاوے ، اُنہو گاوے سو راگی ہے
 بن گیہ کی باسنا ناس کرے ، کبیر سوئی بیراگی ہے

आस है। गोठ अकेली रह जाए तो उसके बचने की आशा नहीं रहती। रंग चार हैं लेकिन अन्तिम घर एक है। भांति भांति के लोग हैं तो क्या, मन, वचन और कर्म तीनों से अपना प्रेम निबाहो। सब चौरासी लाख जनम के चक्कर में भटक रहे हैं। और बात पौ पर अटकी हुई है। अगर अबकी बार पौ न पड़ी तो फिर चौरासी लाख जन्म लेने पड़ेंगे। कबीर धर्मदास से कहते हैं कि जीती बाजी मत हारना। जो अबकी बार प्रेम को दांव पर लगादे वही औरत सुहागन है।



कैसे दिन कटिहै जतन बताये जइयो,
एहि पार गंगा ओहि पार जमुना,
त्रिचवाँ मड़इया हमकाँ छवाये जइयो।
अँचरा फारिके कागज बनाइन,
अपनी सुरतिया हियरे लिवाये जइयो।
कहत कबीर सुनो भाई साधो
बहियँ पकरिके रहिया बताये जइयो।
यह बताते जाओ कि विगह के दिन कैसे कटेंगे। इस पार गंगा है और उस पार जमुना। बीच में हमारी झोपड़ी बनवाते जाओ। आंचल फाड़ कर काराण बनाया है। दिल पर अपनी सूत का नक्श छोड़ते जाओ (अपना प्यार दिल पर लिखते जाओ)। कबीर कहते हैं कि बांह पकड़कर रास्ता बताते जाओ।



गगनकी ओट निसाना है।
दहिने सूर चंद्रमा बायें, तिनके बीच छिपाना है।
तनकी कमान सुरतका रोदा, सद्-बान ले ताना है।
मारत बान बेधा तन ही तन, सतगुरुका परवाना है।
मारयौ बान घाव नहिं तनमें, जिन लाग़ा तिन जाना है।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, जिन जाना तिन माना है॥

کھیل میں مُجگ ملن کی آس ہے گوٹ اکیلی رہ جائے تو اس کے
 بچنے کی امید نہیں رہتی۔ رنگ چار ہیں لیکن آخری گھر ایک ہے،
 بھانت بھانت کے لوگ ہیں تو کیا۔ خیال، بات اور عمل تینوں سے اپنی
 محبت نبھاؤ۔ سب چوراسی لاکھ جنم کے چکر میں بھٹک رہے ہیں
 اور بات پو پر الکی ہوئی ہے۔ اگر اب کے پونہ پڑی تو پھر چوراسی
 لاکھ جنم لینے پڑیں گے۔ کبیر دھرم داس سے کہتے ہیں کہ جیتی بازی
 مت ہارنا۔ جو اب کے محبت کو داؤں پہ لگا دے وہی عورت
 سہاگن ہے۔

» ۱۲۱ «

کیسے دن کٹھیں جتن بتائے جٹیو
 ایہ پار گنگا اوہ پار مُجمنّا
 بچواں مٹریسا ہم کان چھوائے جٹیو
 انچرا پھار کے کالج بنائیں
 اپنی مُرتیا ہیرے لکھائے جٹیو
 کہت کبیر سنو بھائی سادھو
 بھیاں پکڑ کیں رہیا بتائے جٹیو

یہ بتانے جاؤ کے ہجر کے دن کیسے کٹیں گے۔ اس پار گنگا ہے اور
 اُس پار جمنّا۔ بیچ میں ہماری جھونپڑی بنواتے جاؤ۔ آنچل پہاڑ کاغذ
 بنایا ہے۔ دل پر اپنی صورت کا نقش چھوڑتے جاؤ (اپنا پیار دل پر لکھتے
 جاؤ) کبیر کہتے ہیں کہ بانہ پکڑ کر راستہ بتائے جاؤ۔

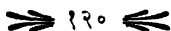
» ۱۲۲ «

کگن کی اوٹ نسانا ہے
 دہنے سور چندرما بائیں، تنکے بیچ چھپانا ہے
 تن کی کمان مُرت کا رودا، سبد بان لے تانا ہے
 مارت بان میدھا تن ہی تن، ست مُگرو کا پروانا ہے
 ماریو بان گھاؤ نہیں تن میں، جن لاکا تن جانا ہے
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، جن جانا تن مانا ہے

कै हम प्रान तजति हैं प्यारे, कै अपनी कग लेव ।

दास कबीर विरहा अति बाड़ेव, हमको दरसन देव ।

मेरे अमर दूल्हा, कब मिलोगे ? तुम तो भक्तों के रखवाले हो। पानी में पैदा हुई और पानी ही से प्रेम है, फिर भी मैं प्यास प्यास चिल्लाती हूँ । मैं विरह की मारी खड़ी हुई तुम्हारी राह देख रही हूँ । मेरे प्रीतम बस तुम्हारी ही आस है। तुम्हारे प्रेम में घर छूट गया और मैं तुम्हारे चरणों में आगयी । घर के अन्दर मैं उसी तरह तड़पती हूँ जैसे मछली बिना पानी के । दिन को भूख नहीं लगती रात को नींद नहीं आती और घर का आंगन सुहाना नहीं लगता । अब तो मेरी सेज मेरी दुश्मन होगई है । सारी रात आँखों में कट जाती है (जाग-जाग कर रात को सुबह कर देती हूँ) । साजन मैं तो तुम्हारी दासी हूँ । तुम मेरे मालिक हो । अय दीनदयालु अब दया करो और आजाओ । तुम सर्वशक्तिमान और सृजनहार हो । या तो मुझे अपना बना लो नहीं तो मैं जान दे दूँगी । दास कबीर के लिए विरह हृद से गुजर गया है अब तो दर्शन दे दो ।



तन-मन-धन बाजी लागी हो ।

चौपड़ खेलें पीवसे रे- तन-मन बाजी लगाया ।

हारी तो पियकी भई रे, जीती तो पिय मोग हो ।

चौसरियाके खेलमें रे, जुग मिलनकी आस ।

नई अकेली रह गई रे, नहि जीवनकी आस हो ।

चार बरन घर एक है रे, भौति भौतिके लोग ।

मनसा-बाचा-कर्मना कोइ, प्रीति निवाहो ओर हो ।

लख चौरासी भरमत भरमत, पौपै अटकी आय ।

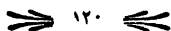
जो अबके पौ ना पड़ी रे, फिर चौरासी जाय हो ।

कहैं कबीर धर्मदाससे रे, जीती बाजी मत हार ।

अबके सुरत चढ़ाय दे रे, सोई सुहागिन नार हो ।

तन मन धन की बाजी लगी हुई है। मैं अपने प्रीतम के साथ चौपड़ खेल रही हूँ, और तन मन की बाजी लगा दी है । अगर हारी तो प्रीतम की हो जाऊँगी और जीती तो प्रीतम मेरे हो जायेंगे । चौसर के इस खेल में जुग मिलन की

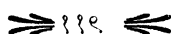
کے ہم پرانِ نعت ہیں پیارے ، کے اپنی کرلیو
 داس کبیر برہا اتہ باڑھیو ہم کو درس دیو
 میرے لازوال دولہا کب ملو گے . تم تو بھگتوں کے رکھوالے ہو . پانی
 میں پیدا ہوئی اور پانی ہی سے محبت ہے ، پھر بھی میں پیاس پیاس
 چلاتی ہوں ، میں برہ کی ماری کھڑی ہوئی تمہاری راہ دیکھ رہی
 ہوں ، میرے پریشم بس تمہاری ہی آس ہے . تمہاری محبت میں گھر چھوٹ
 گیا اور میں تمہاری قدموں میں آگئی . گھر کے اندر میں ماہی بے آب
 کی طرح تڑپتی ہوں . دن کو بھوک نہیں لگتی ، رات کو نیند نہیں آتی ،
 اور گھر کا آنگن سہانا نہیں لگتا . اب تو میری سیج میری دشمن ہو گئی
 ہے . ساری رات آنکھوں میں کٹ جاتی ہے (جاگ جاگ کر رات کو
 صبح کر دیتی ہوں) ساجن میں تو تمہاری کنیز ہوں ، تم میرے مالک ہو .
 اے غریب نواز اب رحم کرو اور آجاؤ تم قادرِ مطلق اور خالق ہو . یا
 تو مجھے اپنا بنا لو نہیں تو میں جان دے دوں گی . داس کبیر کے لئے
 جدائی حد سے زیادہ بڑھ گئی ہے . اب مجھے اپنا جلوہ دکھا دو .



تن من دھن باجی لاکی ہو
 چوہڑ کھیلوں پیو سے رے تن من باجی لگایا
 ہاری تو پیہ کی بھٹی رے ، جیتی تو پیہ مور ہو
 چوسر یا کے کھیل میں رے مُجگ مان کی آس
 نرد اکیلی رہ گئی رے نہیں حیون کی آس ہو
 چار برن گھر ایک ہے رے ، بھانت بھانت کے لوگ
 منسا باچا کر منسا کوئی ، پریت نہا ہو اور ہو
 لکھ چوراسی بھر مت بھر مت ہو پے اٹکی آنے
 جو ابکے ہونا پڑی رے ، پھر چوراسی جائے ہو
 کہیں کبیر دھرم داس سے رے ، جیتی باجی مت ہار
 اب کے مُسرت چڑائے دے رے ، سوئی مُسہاگن نار ہو
 تن من دھن کی بازی لگی ہوئی ہے . میں اپنے پریشم کے ساتھ چوہڑ
 کھیل رہی ہوں اور تن من کی بازی لگا دی ہے . اگر ہاری تو پریشم
 کی ہوجاؤں گی اور جیتی تو پریشم میرے ہوجائیں گے . چوسر کے اس

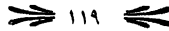
अलह अवलि दीनका साहिब, जोर नहीं फुमाया ।
 मुरिसद-पीर तुम्हारे है को, कहाँ कहाँ आया ॥
 रोजा करै निवाज गुजारै कलमै भिसत न होई ।
 सत्तरि काबे इक दिल भीतरि जे करि जानै कोई ।
 खसम पिछौनि तरस करि जियमें, माल मर्ती करि फीकी ।
 आया जौनि सौँईकूँ जौनै, तब है भिस्त सरीकी ।
 माटी एक भेष धरि नौनों सबमें ब्रह्म समानौ ।
 कहै कबीर भिस्त छिटकाई दोजग ही मनमानौ ॥

भियों, तुमसे कहने के लिए कोई बात नहीं बनती । हम तो सीधे सादे भगवान
 के भक्त हैं, तुम्हारे जो जी में आये वह समझो । अल्लाह धर्म का पहला सिद्धान्त
 है और उसने जबरदस्ती का आदेश नहीं दिया । तुम्हारे पीर और मुर्शिद कौन हैं
 और कहाँसे आये हैं । रोखे रखने, नमाज गुजारने और कलमा पढ़ने से जन्नत
 नहीं मिलती । काश ! कोई यह बात जाने कि एक दिल में सत्तर काबे हैं । अपने
 प्रीतम को पहचानो और दिल में दया उत्पन्न करो और माया को तुच्छ जानो ।
 जन्नत तो तब मिलती है जब साईं (प्रीतम) को अपने पास अनुभव करें । एक
 मिट्टी हैं और तरह तरह के रूप हैं और सब में ब्रह्म वर्तमान है । कबीर कहते
 हैं कि जन्नत और दोषख (स्वर्ग और नर्क) की धारणा मनमानी है ।



अविनासी दुलहा कब मिलिदौ, भक्तनके रखपाल ।
 जल उपजी जल ही सों नेहा, रटत पियास पियास ।
 में ठाढ़ी बिग्रहन मग जोऊँ, प्रियतम तुमरी आस ।
 छोड़े गेह नेह लागि तुम-सो, भई चरन लवलीन ।
 ताला-बेलि हाति घर भीतर, जैसे जल बिन मीन ।
 दिवस न भूख रैन नहिं निद्रा, घर अंगना न सुहाय ।
 संजगिया बैगिन भइ हमको, जागत रैन बिहाय ।
 हम तो तुमरी दासी सजना, तुम हमरे भगता ।
 दान-दयाल दया करि आओ, समथ सिगजनहार ।

اللہ اول دین کا صاحب جور نہیں پھر مایا
 مرسد پیر تمہارے ہے کو، کہو کہاں تھیں آیا
 روجا کریں نواج گجاریں کلمے بہست نہ ہوئی
 ستر کعبے اک دل بھیتر جے کر جائے کوئی
 کہسم پہچان ترس کر جی میں مال متیں کر بھیکی
 آیا جان سائیں کو حایں، تب ہوئے بہست سریکی
 مائی ایک، ہمیش دھر ناہاں، سب میں برہم سماناں
 کہے کبیر بہست چھٹکانی دو جگ ہی من مانا
 میاں تم سے کہنے کے لئے کوئی بات نہیں بنتی۔ ہم تو مسکین خدائی
 بندے ہیں، تمہارے جی میں جو آئے وہ سمجھو۔ اللہ دین کا اول اصول
 ہے اور اس نے زبردستی کی ہدایت نہیں فرمائی ہے۔ تمہارے پیر اور مرشد
 کون ہیں اور کہاں سے آئے ہیں۔ روزے رکھنے، نماز گزارنے اور کلمہ
 پڑھنے سے جنت نہیں ملتی۔ کاش کوئی یہ بات جانے کہ ایک دل میں
 ستر کعبے موجود ہیں۔ اپنے محبوب کو پہچانو، اور دل میں رحم پیدا
 کرو اور مال و متاع کو حقیر سمجھو۔ بہست تو تب ملتی جب سائیں
 (محبوب) کو اپنے پاس محسوس کریں۔ ایک مٹی ہے اور طرح طرح
 کی شکلیں اور سب میں برہم (ذات مطلق) موجود ہے۔ کبیر کہتے
 ہیں کہ بہست اور دوزخ کا تصور من مانا ہے۔



ابناسی دولہا کب ملہو، بھکتن کے رچھپال
 جل ابھی جل ہی سوں نیہا، رلت پیاس پیاس
 میں ٹھاڑی برہیں مگ جوؤں پریم نمری آس
 چھوڑے گیہ نیہ لگ نم سوں، بھئی چرن لو لین
 والا بیل ہوت گھر بھیتر، جیسے جل بن مین
 دؤس نہیں بوکھ۔ رین نہیں ندرا گھر انگنا نہ سہائے
 سیجر یا بیرن بھئی ہم کو، جاکت رین بہائے
 ہم تو نمری داسی سجننا، تم ہمرے بھرتار
 دیں دیال دیا کر او سمرتھ سرجن پار

गुरुवा सहित सिय सब वृद्ध अंतकाल पछिताना ।
 बहुतक देखे पीर-औलिया पढ़ें किताब-कुगाना ।
 करें मुरीद कवर बतलावें उन्हें खुदा न जाना ।
 हिन्दुकी दया मेहर तुम्हकनकी दोनों घरसे भागी ।
 वह कौं जिब्रह वाँ झटका मार आग दोऊ घर लागी ।
 या विधि हँसत चलत हैं हमको आप कहावें स्याना ।
 कहै कबीर मुनो माई साधो, इनमें कौन दिवाना ॥

देखो साधु, सारी दुनिया पागल हो गयी है। सच्ची बात कहो तो मारने को दौड़ते हैं लेकिन झूठपर सब का विश्वास है। हिन्दू राम का नाम लेता है और मुसलमान रहमान का और दोनों आपस में इस बात पर लड़ते मरते हैं लेकिन सच्चाई से कोई भी परिचित नहीं। मुझे धर्म और उसके नियमों के मानने वाले बहुत मिले जो हर प्रातःकाल स्नान करते हैं और आत्मा को छोड़कर पत्थर की पूजा करते हैं। उनका ज्ञान झूठा है। दम्भ धारण करके आसन लगा कर बैठते हैं और उनका मन अहंकार में डूब जाता है, जिसके कारण वह पत्थर और पीपल को पूजते हैं (देखो नोट) माला और टोपी पहनकर तिलक और छापा लगाते हैं। उपदेश देते देते वह आत्मा से बेखबर हो गये हैं। जो गुरु माया के घमण्ड में घर घर मन्त्र सुनाते फिरते हैं वह गुरु और उनके चेले सब डूब चुके हैं। उनके पास पछतावे के सिवा कुछ नहीं है। मैं ने पीर और औलिया बहुत देखे हैं जो किताब और कुरान पढ़ते रहते हैं। वह क्रम दिखा कर लोगों को मुरीद बनाते हैं। जाहिर है कि उन्होंने खुदा को नहीं पहचाना है। हिन्दू की दया और मुसलमानों की मुहब्बत दोनों उनके घरों से निकल गयी हैं। एक जानवर को जिब्रह करता है और दूसरा झटका करता है लेकिन आग दोनों के घर में लगी है। इस तरह वह हम पर तो हंसते हैं और खुद सियाने कहलाते हैं। कबीर कहते हैं, अय साधु तुम ही बताओ हम दोनों में कौन दिवाना है।



मीयों तुम्हसौ बोल्यो बणि नहीं आवैं ।
 हम मसकीन खुदाई बन्दे तुम्हरा जस मनि भावैं ॥

'گرووا' سہت سِشِیہ سب 'وڑے' انت کال پچھتا نا
 'ہتک' دیکھے پیر اولیا پڑھیں کتاب 'کراما'
 کریں مرید کبر بتلاویں انہوں 'کھدا' نہ جانا
 ہندو کی دیا، مہر ترکن کی، دونوں گھر سے 'ہاگی'
 وہ کرے جہہ واں جھٹکا مارے آگ دوڑ گھر لاگی
 یا بدھ ہنست چلت ہیں ہمکو آپ کہاویں سیانا
 کہیں کیر سنو بھائی سادھو، ان میں کون دوانا

دیکھو سادھو ساری دنیا پاگل ہوگئی ہے، سچی بات کہو تو مارنے
 کو دوڑتے ہیں لیکن جھوٹ پر ساری دنیا کا ایمان ہے۔ ہندو رام کا
 نام لیتا ہے اور مسلمان رحمان کا اور دونوں اس بات پر آپس میں لڑے
 مرتے ہیں لیکن حقیقت سے کوئی واقف نہیں۔ مجھے دھرم اور اس کے
 قوانین کے ماننے والے بہت ملے جو ہر صبح اشان کرتے ہیں اور آتما
 کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کرتے ہیں۔ ان کا علم اور عرفان جھوٹا ہے۔
 غرور سے آسن مار کے بیٹھے ہیں اور ان کا من گمان میں مبتلا ہوجاتا
 ہے جس کی وجہ سے وہ بستھر اور پسیل کو پوجتے ہیں
 مالا اور ٹوبی پن کر تلک اور چھاپا لگاتے ہیں۔ نصیحت اور اپدیش
 (ظاہری علم) کے الفاظ بولتے بولتے وہ آتما سے بے خبر ہوگئے ہیں۔
 جو گرو مایا کے غرور میں گھر گھر منتر سناتے پھرتے ہیں وہ گرو
 اور ان کے چیلے سب ڈوب چکے ہیں اور پچھتاوے کے سوا ان کے
 پاس کچھ نہیں ہے میں نے پیر اور مرید بہت دیکھے ہیں جو کتاب اور
 قرآن پڑھتے رہتے ہیں، وہ قبر دکھا کر لوگوں کو مرید بناتے ہیں، ظاہر
 ہے کہ انہوں نے خدا کو نہیں پہچانا ہے، ہندو کی دیا اور مسلمانوں
 کی محبت دونوں ان کے گھروں سے نکل گئی ہیں ایک جانور کو ذبح
 کرتا ہے اور دوسرا جھٹکا کرتا ہے لیکن آگ دونوں کے گھر میں
 لگی ہے۔ اس طرح وہ ہم پر تو ہنستے ہیں اور خود سیانے کہلاتے
 ہیں۔ کبیر کہتے ہیں اے سادھو تم ہی بتاؤ ہم دونوں میں کون دیوانہ ہے

≡ ۱۱۸ ≡

میاں تمہ سو بولیاں بن نہیں آوے
 ہم مسکین کھدائی بندے تمہرا جس من بہاوے

➤ ११६ ➤

दुलहिन अँगिया काहे न धोवाई ।
 बालपनेकी मैली अँगिया विषय-दाग परि जाई ।
 बिन धोये पिय रीकत नही, संजसें देत गिराई ।
 मुझिन ध्यानकै साबुन करि ले सत्तनाम दरियाई ।
 दुविधाके भेद खोल बहुरिया मनकै मैल धोवाई ।
 चेत करी तीनों पन बीते, अब तो गवन नगिचाई ।
 पालनहार द्वार हैं ठाढ़े अब काहे पछिताई ।
 कहत कबीर सुनो गी बहुरिया चित अंजन दे आई ॥

अब दुल्हन, तुने अपनी अँगिया क्यों नहीं धुलवाई। यह बचपन की मैली अँगिया है जिसपर विषय वासना के धब्बे पड़े हुए हैं। इसे बिना धोये प्रीतम रीकते नहीं हैं और सेज से नीचे गिरा देते हैं। भगवान की याद को अपना साबुन बना ले और सत्त नाम को दरिया। अब दुल्हन दुविधा की गाँठें खोल दे और मन का मैल धो डाल। परा विचार तो कर आयु के तीन भाग बीत चुके हैं और गौने का समय निकट आ गया है। तेरा पानेवाला दरवाजे पर खड़ा है। अब क्यों उदास है। कबीर कहते हैं कि अब दुल्हन अपने मन की आँख में ज्ञान का काजल लगाकर आ जा।

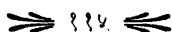
➤ ११७ ➤

साधो, देखो जग बोराना ।
 साँची कहौ तो मारन धावै झूठे जग पतियाना ।
 हिन्दू कहत है राम हमाग मुसलमान रहमाना ।
 आपसमें दोउ लड़े मरतु हैं मरम कोड नहि जाना ।
 बहुत मिले मोहि नेवी धनी प्रात करै असनाना ।
 आतम-छोड़ि पराने पूज तिनका थोथा ज्ञाना ।
 आसन मारि डिम धरि बैठे मनमें बहुत गुमाना ।
 पीपर-पाथर पूजन लागे तीर्थ-वर्न भुलाना ।
 माला पहिरे टोपी पहिरे छाप-तिलक अनुमाना ।
 साखी सचदे गावत भूले आतम खबर न जाना ।
 घर घर मंत्र जो देन फिरत हैं माया के अभिमाना ।

دولہن انگیا کاہے نہ دھووانی
 بال پنے کی میلی انگیا وشے داگ پر جائی
 بن دھونے بہہ ریجھت باہیں، سیج سین دیت گرائی
 سمرن دھیان کے صاہن کر لے ست نام دریائی
 دُبدھا کے بھید کھول بھریا من کے میل دھووانی
 چیت کرو نینوں پن بیتے، اب تو گون نکچائی
 بالنہار دوار ہیں ٹھاڑھے، اب کاہے پچھتائی
 کہت کسیر سنو ری بھریا، چت انجن دے آئی
 اے دولہن تو نے اپنی انگیا کیوں نہیں دھولوائی یہ بچن کی میلی انگیا ہے
 جس پر نفسانی خواہشات کے داغ پڑے ہوئے ہیں۔ بغیر دھونے ہوئے پریم
 ریجھتے نہیں ہیں اور سیج سے گرا دیتے ہیں۔ خدا کی یاد کو اپنا
 صابن بنالے اور ست نام کو دریا بنالے۔ اے دولہن تذبذب کی گرہیں
 کھول دے اور من کا میل دھو ڈال۔ سوچ تو کہ عمر کے تین
 حصے بیت چکے ہیں اور اب گونے (رخست) کا وقت قریب آگیا ہے،
 تیرا پالنے والا دروازے پر کھڑا ہے، اب کیوں اداس ہے۔ کبیر کہتے
 ہیں اے دولہن اپنے دل کی آنکھ میں گیان کا کاجل لگا کر آجا۔

سادھو دیکھو جگ بورانا
 سانچی کھو تو مارن دھاوے جھوٹھے جگ پتیانا
 ہندو کہت ہے رام ہمارا مسلمان رحمانا
 آپس میں دوؤ لڑے مرت ہیں مرم کوئی نہیں حانا
 بہت ملے مونہی نیمی دھرمی پرات کریں اسانا
 آتم چھوڑ پشانیں پوچیں، تنکا تھوٹھا گیانا
 آسن مار ڈمہ دھر بیٹھے، من میں بہت گمانا
 پیپر پاتھر پوجن لاگے تیرتھ تیرن مہلانا
 مالا پسرے لٹوی پھرے چھاپ تملک اسمانا
 ساکھی سدھے گاوت بھولے آتم گھر نہ جانا
 گھر گھر منتر جو دین پھرت ہیں مایا کے اہمانا

मन का बनिया अपना बनियापन नहीं छोड़ता। यह जनम जनम का मारा आज़ भी पूरा नहीं तोलता। कम तोलने को उसने अपना अधिकार समझ लिया है और उसके घमण्ड में भूला भूला रहता है। दुविधा ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी है और वह हर पल अपने अन्तःकरण को घायल करता है। उसका सारा कुटुम्ब हराभी है जो अमृत में विष घोलता है। (प्रत्यक्ष यही कहता रहता है कि) जल थल में तुम ही तुम हो, हर शरीर के अन्दर तुम बोल रहे हो (लेकिन मन में इस पर विश्वास नहीं है)। कबीर कहते हैं कि ऐसे ज्ञान से डरते रहो जो दिल की गँठ नहीं खोलता (दिल की बात प्रकट नहीं करता)।



मेरा-तेरा मनुओं कैसे डक होई रे।

मैं कहता हों आँखिन देखी, तू कहता कागदकी देखी।

मैं कहता सुग्गावनहागी, तू गाय्यों उरभाई रे।

मैं कहता तू जागते रहियो, तू रहता है सोई रे।

मैं कहता निर्मोही रहियो, तू जाता है मोही रे।

जुगन जुगन समुभावत हाग, कहीं मानत कोई रे।

तू तो रंडी फिर विहंडी, सब धन डार खोई रे।

सतगुरु धारा निर्मल बाहैं, वामें काया धोई रे।

कहत कबीर मुनो भाई साधो, तब ही वैसा होई रे॥

मेरा और तेरा दिल एक कैसे हो सकता है। मैं आँखों देखी कहता हूँ और तू किताबों में लिखी बात सुनाता है। मैं सुलझाने वाली बात कहता हूँ और तू उलझाने वाली। मैं कहता हूँ कि जागते रहना और तू सोता रहता है। मैं कहता हूँ कि संसार से दिल न लगाना और तू उसके मोह में फँसा हुआ है। समझाते समझाते युग बीत गये परन्तु मेरी कही बात कोई मानता नहीं। तू तो रंडी की तरह आवारा है और सारा धन सम्पत्ति (अन्तःकरण का सतीत्व) खो बैठा है। कबीर कहते हैं कि सतगुरु निर्मल और पवित्र जल की धारा हैं। जो कोई इस पानी से अपनी काया को धो लेगा वही सतगुरु जैसा हो सकता है।

من کا بنیا اپنا بنیسا پن نہیں چھوڑتا۔ یہ جنم جنم کا مارا آج بھی پورا نہیں تولتا۔ کم تولنے کو اس نے اپنا حق سمجھ لیا ہے اور اس کے غرور میں بھولا بھولا رہتا ہے۔ تذبذب نے اُس کی عقل خراب کردی ہے اور وہ ہر لمحہ اپنے ضمیر کو مجروح کرتا ہے۔ اس کا سارا خاندان حرامی ہے کہ وہ امرت میں زہر گھولتا ہے۔ (اوپر سے یہی کہتا رہتا ہے کہ،) بحر و بر میں تم ہی تم ہو، ہر جسم کے اندر تم بول رہے ہو۔ (لیکن دل میں اس کا یقین نہیں ہے) کبیر کہتے ہیں کہ ایسے گیان سے ڈریے جو دل کی گاتھ نہیں کھولتا، (دل کی بات ظاہر نہیں کرتا)

» ۱۱۵ «

میرا تیرا منواں کیسے اک ہوئی رہے
میں کہتا ہوں آنکھن دیکھی، تو کہتا کاگد کی دیکھی
میں کہتا 'سر جھاون ہاری، تو راکھیو ارجھانی رہے
میں کہتا تو جاگت رہیو، تو رہتا ہے سوئی رہے
میں کہتا 'نرموہی رہیو، تو حانسا ہے موہی رہے
'جگن 'جگن سمجھاوت پارا کہی نہ مانت کوئی رہے
تو تو رنڈی پھرے بہنڈی، سب دھن ڈارے کھوئی رہے
ست گرو دھارا نرمل باہے، وا میں کایا دھوئی رہے
کہت کبیر سنو بھائی سادھو، تب ہی وبسا ہوئی رہے

میرا دل اور تیرا دل ایک کیسے ہوسکتا ہے۔ میں آنکھوں دیکھی کہتا ہوں اور تو کتابوں میں لکھی بات سناتا ہے، میں سمجھانے والی بات کہتا ہوں اور تو الجھانے والی، میں کہتا ہوں کہ جاگتے رہنا اور تو سوتا رہتا ہے، میں کہتا ہوں کہ سنسار سے دل نہ لگانا اور تو اس کے موہ میں مبتلا ہے۔ سمجھانے سمجھانے 'جگ بیت گئے لیکن میری کہی ہوئی بات کوئی جانتا نہیں۔ تو تو رنڈی کی طرح آوارہ ہے، اور دھن دولت (ضمیر کی عصمت) کھو بیٹھا۔ کبیر کہتے ہیں کہ ست گرو صاف و پاک پانی کا بہتا ہوا دھارا ہی اور جس نے اپنی کایا اُس میں دھوئی وہی ست گرو جیسا ہوسکتا ہے۔

भौनै घड़ै संवारै सोई,

यहु गोव्यंदकी माया ।

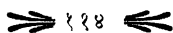
माटीका मंदिर ग्यानका दीपक

पवन बाति उजियाग ॥

तिहि उजियागै सब जग सूझै,

कबीर ग्यान बिचाग ॥

देखो पाँडे, व्यर्थ वाद विवाद न करो । इस शरीर के बिना न तो शब्द है और न शब्द का स्वाद । यह धरती, यह ब्रह्माण्ड, इसका कोई अंश या पूर्ण सब मिट्टी है । यह नवनिधियों की काया (शरीर, जो भांति भांति के खजानों से परिपूर्ण है) भी मिट्टी है । इस मिट्टी की खोज में (स्वयं को पहचानने में) सत्गुरु से भेंट हुई और उन्होंने थोड़ेसे रहस्य पर से पर्दा उठाया (अनदेखे को दिखाया) ज़रा ज्ञान ध्यान से काम लो तो मालूम होगा कि जीवित भी मिट्टी है और मूर्त भी मिट्टी है । इस अत्यन्त काली मिट्टी में हम रहते हैं । इस में पाँव फैलाये लेटे हुए हैं । हवा के स्तम्भ पर लगा यह मिट्टी का चित्र वह संयोग है जिसे एक बिन्दु ने प्रकट किया है । यह गोविन्द (भगवान) की शक्ति का चमत्कार है कि वह इस मिट्टी को तोड़ता बनाता और संवारता रहता है । मिट्टी का मंदिर है जिस में ज्ञानका दीपक जल रहा है और हवा की बत्ती का प्रकाश फैल रहा है । कबीर सोच विचारकर कहते हैं कि इस प्रकाश से सारा जग दिखायी देता है ।



मन बनियाँ बनिज न छोड़ै ।

जनम जनमका माग बनियों, अजहूँ पूर न तौले ।

पासँग कै अधिकांग लैले, भूला भूला डोलै ।

घरमें दुविधा कुमति बनी है, पलमें चित्त तोरै ।

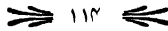
कुनबा वाके सकल हगमी, अमृतमें विष बोलै ।

तुमहीं जलमें तुमहीं थलमें, तुमही घट घट बोलै ।

कहै कबीर वा सिषको डगिये, हिन्दे गौंठि न खोलै ॥

بھانیں کھڑے سنوارے سوئی
یہ گوو بند کی مایا
مائی کا مندر گیان کا دیپک
پون بات اُجیارا
نہیں اُجیارے سب جگ سوچھے
کبیر گیان بچارا

دیکھو پانڈے، فضول بحث مباحثہ نہ کرو۔ اس جسم کے بغیر نہ تو شبد (صوتِ سرمدی) ہے اور نہ شبد کا مزا، یہ کرۂ زمین، یہ کائنات، اس کا جزو اور مکمل سب مٹی ہے یہ نوندھیوں کی کایا (یعنی جسم بھی جو طرح طرح کے خزانوں سے معمور ہے) مٹی ہے۔ اس مٹی کی تلاش میں (یعنی اپنے آپ کو پہچانتے میں) ست کرو سے ملاقات ہوئی اور انہوں نے تھوڑے سے راز سے پردہ اٹھایا (ان دیکھے کو دکھایا) ذرا گیان دھیان سے کام لو تو معلوم ہوگا کہ زندہ بھی مٹی ہے اور مردہ بھی مٹی ہے۔ اس بے حد کالی مٹی میں ہماری رہائش ہے اور ہم اس میں پاؤں پھیلانے لیٹے ہوئے ہیں، ہوا کے ستون پر آویزان یہ مٹی کی بنی ہوئی تصویر وہ سنجوگ ہے جسے ایک نقطے نے ظاہر کیا ہے یہ گووند (بھگوان) کی شکنی کا کرشمہ ہے کہ وہ اس مٹی کو توڑتا، بناتا اور سنوارتا رہتا ہے، مٹی کا مندر ہے جس میں عرفان کا چراغ جل رہا ہے اور ہوا کی بنی کا اجالا پھیل رہا ہے، کبیر سوچ بچار کے کہتے ہیں کہ اس روشنی میں سارا جگ دکھائی دیتا ہے۔



من بنیاں بنج نہ چھوڑے
جنم جنم کا مارا بنیاں اج ہوں پور نہ تولے
باسنگ کے ادھکاری لے لے، بھولا بھولا ڈولے
گھر میں مڈبھا مکت بنی ہے، پل پل میں چت تورے
کنا وا کے سکل حرامی، امرت میں وش گھولے
تم ہیں جل میں تم ہیں تھل میں، تم ہی گھٹ گھٹ تولے
کہے کبیر واسش کو ڈرے، پردے کانٹھ نہ کھولے

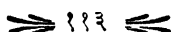
पाप-कटनको कथा सुनावें, करम करावैं नीचा ।

बूझत दोउ परस्पर दीखें, गहे बाँहि जम खींचा ।

गाय बधैं सो तुरक कहावैं, यह क्या इनसे छोटे ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, कलिमें बाम्हन खोटे ॥

अथ साधु, ये पाँडे बड़े कुशल कसाई हैं । बकरी का बलिदान करके भेड़ की ओर लपकते हैं । इन के दिल में दया नाम मात्र को भी नहीं है । स्नान करके तिलक लगाकर बैठते हैं और बड़ी विधि से भगवान की पूजा करते हैं । ये अपनी आत्मा को क्षण भर में मार देते हैं और खून की नदियाँ बहा देते हैं । ये बड़े पवित्र हैं और कुलीन घराने से सम्बन्ध रखते हैं । सभा में इनका बड़ा मान है । सब लोग इनसे दीक्षा लेते हैं और मुझे यह देखकर बड़ी हँसी आती है । लोगों के पाप काटने के लिए ये कथा सुनाते हैं और उनसे नीचे काम करवाते हैं । मैंने दोनों को एक साथ दूबते देखा है । जिसको इन्होंने सहारा दिया उसी को ले दूबे । जो गाय को मारे वह मुसलमान कहलाता है लेकिन क्या ये पाँड़े उन मुसलमानों से कुछ कम हैं । कबीर कहते हैं कि कलियुग में ब्राह्मण बहुत खोटे हो गये हैं ।



पाँड़े न करसी बाद-बिबादं

या देही त्रिन सबद न स्वादं ।

अंड ब्रह्मंड खंड भी माटी,

माटी नवनिधि काया ।

माटी खोजत सतगुरु भेद्या,

तिनु कछु अलख लखाया ।

जीवत माटी मूवा भी माटी

देखो ग्यान त्रिवार्गी ।

अति काली माटीमें वासा

लैटै पाँव पसार्गी ॥

माटीका चित्र पवनका थंभा

व्यंद संजोगि उहाया ।

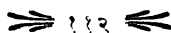
پاپ کٹن کو کتھا سناویں ، کرم کراویں نیچا
 بوڑت دوؤ پر سپر دیکھے گے بانہ جم کھینچا
 گائے بدھے سو ترک کھاوے یہ کیا ان سے چھوٹے
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو ، کل میں بامہن کھوٹے
 اے سادھو ، یہ پانڈے بڑے مشاق قصائی ہیں ، بکری کا بلیدان کر کے
 بھیڑ کی طرف لپکتے ہیں۔ ان کے دل میں ذرا بھی رحم نہیں ، اشنان
 کر کے اور تلک لگا کے بیٹھتے ہیں اور بڑی باقاعدگی سے دیوتا کی
 پوجا کرتے ہیں۔ یہ اپنی آتما کو ایک پل میں مار دیتے ہیں ، اور خون
 کی ندی بہا دیتے ہیں۔ یہ بہت مقدس ہیں اور اونچے خاندان کے ہیں
 اور سبھا میں ان کی بڑی مان دان ہے ان سے سب لوگ علم اور
 عرفان حاصل کرتے ہیں اور مجھے یہ تماشا دیکھ کے ہنسی آتی ہے ،
 لوگوں کا پاپ کائے کے لئے یہ کتھا سناتے ہیں اور کام ان سے بہت
 نیچے کرواتے ہیں۔ میں نے دونوں کو ایک ساتھ ڈوبتے دیکھا ہے ،
 جس کو انہوں نے سہارا دیا اس کو لے ڈوبے ، جو گائے کو مارے
 وہ مسلمان کہلاتا ہے ، لیکن کیا یہ پانڈے اُن مسلمانوں سے کچھ کم
 ہیں۔ کبیر کہتے ہیں کلجگ میں برہمن بہت کھوٹے ہو گئے ہیں ۔

۱۱۳

پانڑے نہ کرسی باد ببادم
 یاد یہی بن سب نہ سوام
 اڈ رہمنڈ کھنڈ بھی مائی
 مائی نونڈھ کایا
 مائی کھوجت ست فگرو بھیٹیا
 تن کچھ لکھ لکھایا
 جیوت مائی مووا بھی مائی
 دیکھ گیان بچاری
 ات کالی مائی میں واسا
 لیٹے پاؤں پساری
 مائی کا چتر پون کا تھمبھا
 ویند سنجوگ اُپایا

पैग पैग पैगम्बर गाड़े, सौ सब सरि भा माँटी ।
 तेहि मिटियाके भौंडि पौंडे, बूझि पियहु तुम पानी ।
 मच्छ-कच्छ वरियाग बियाने, रुधिर-नीर जल भगिया ।
 नद्रिया नीर नरक बहि आवै, पसु-मानुस सब सरिया ॥
 हाड़ भरि भरि गूद गरि गरि, दूध कहँति आया ।
 सो लै पौंडे जेवन बैठे, मटियहि छूति लगाया ॥
 वेद कितेव छौंड़ि देउ पौंडे, ई सब मनके भरमा ।
 कहहि कबीर सुनहु हो पौंडे, ई तुम्हरे हैं करमा ॥

यह तुम्हारी मूर्खता है कि तुम पहले पौंडे की जाति पूछते हो, फिर उसके हाथका पानी पीते हो । तुम जिस मिट्टी के घर में बैठे हो उसमें सारी सृष्टि समायी हुई है । छप्पन करोड़ यादव और अठासी हजार सुनि यहाँ डूब गये और क्रदम क्रदम पर गड़े हुए पैगम्बरों की लाशें सड़ कर मिट्टी हो गयी है । अय पौंडे, ये बर्तन उसी मिट्टी के हैं और तुम जाति पूछकर पानी पीते हो । इस पानी में मगर, कछुए और घड़ियाल बच्चे देते हैं और उनका खून पानी में मिल जाता है । इस नदी के पानी में सारा नर्क (गन्दी चीजें) बहकर आता है और जानवर और इंसान सब इस में सड़ते हैं । जब हड्डी और गूदा गल जाता है तब दूध बनता है । इस दूध को लेकर पौंडे भोजन करने बैठते हैं लेकिन सारी छुआ-छूत मिट्टी में मानते हैं । अय पौंडे जी वेद और कुगन सब को छोड़ दो । ये सब दिल का धोका हैं । सुनो पौंडेजी, कबीर कहते हैं कि ये तुम्हारे कर्म हैं जो तुम्हारे सामने आते हैं ।



साधो, पौंडे निपुन कसाई ।
 बकरि मारि भेड़िको धाये, दिलमें दरद न आई ।
 करि अस्नान तिलक दै बैठे, विधिसों देवि पुजाई ।
 आतम भारि पलकमें त्रिनसे, रुधिर की नदी बहाई ।
 अति पुनीत ऊँचे कुल कहिये, सबामाहि अधिकारी ।
 इनसे दिच्छा सब कोई माँगे, हँसि आवे मोहि भाई ।

پینگ پینگ پیکہر گاڑے، سو سب سر بہو مانی
 تے ہی مٹیا کے بھانڑے پانڑے، بوجھ پی ہو تم پانی
 چھہ کچھہ گھر یار بیانے، اُدھر نیر جل ہوریا
 ندیا نیر نرک بھی اوے، پس مانس سب سریا
 ہاڑ جھری جھر گود گری گر، دودھ کہاں تیں آیا
 سولے پانڑے جیون بیٹھے، مٹیاہن چھوت لگایا
 بید کتیب چھاڑ دیو پانڑے، ای سب من کے بھرما
 کہیں کبیر سنو ہو پانڑے، ای تمہرے ہیں کرما
 یہ تمہاری حماقت ہے پانڈے کہ تم پہلے ذات پوچھتے ہو پھر اس کے
 ہاتھ کا پانی پیتے ہو۔ تم جس مٹی کے گھر میں بیٹھے ہو اس میں
 ساری کائنات (سٹ = سرشتی = فطرت = تخلیق) سمائی ہوئی ہے۔
 چھن کروڑ یادو اور اٹھاسی ہزار مٹی یہاں غرق ہو گئے ہیں اور قدم
 قدم پر گڑے ہوئے پیغمبروں کی لاشیں سڑ کر مٹی ہو گئی ہیں، اے
 پانڈے یہ برتن اُسی مٹی کے ہیں اور تم ذات پوچھ کے پانی پیتے ہو۔
 اس پانی میں مگر چھہ، کچھوے اور گھڑیاں بچے دیتے ہیں اور ان
 کا خون پانی میں مل جاتا ہے۔ اس ندی کے پانی میں سارا نرک
 (گندی چیز = دوزخ) بہ کر آتا ہے اور جانور اور انسان سب اس
 میں سڑتے ہیں۔ جب ہڈی اور گودا گل جاتا ہے تب دودھ بنتا ہے،
 اس دودھ کو لے کر پانڈے کھانا کھانے بیٹھتے ہیں۔ لیکن ساری چھوت
 چھات مٹی ہی میں مانتے ہیں، اے پانڈے جی وید اور قرآن سب کو
 چھوڑ دو، یہ سب دل کے دھوکے ہیں۔ سنو پانڈے جی کبیر کہتے
 ہیں کہ یہ تمہارے کرم ہیں جو تمہارے سامنے آتے ہیں۔

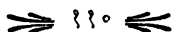
≡ ۱۱۲ ≡

سادھو، پانڑے نہن کسان
 نکرے مار بیڑ کو دھائے، دل میں درد نہ آئی
 کراسنان تلک دے بیٹھے بدھی سوں دیو ہجائی
 آنم مار ہلک میں بنسے، رُدھر کی ندی بہائی
 ات پُنت اوجھے کُل کہئے، سبھا مانہ ادھکائی
 ان سے دچھا سب کوئی مانگے، ہنسی آوے مونہ بہائی

भक्तनके भक्तिन होइ बैठी, ब्रह्माके ब्रह्मानी ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह सब अकथ कहानी ।

हम माया को बहुत बड़ी ठानी समझते हैं उसके हाथ में त्रिगुण की फांसी का फंदा है और होंठों पर मीठे बोल। केशव (विष्णु) के यहाँ कमला (लक्ष्मी) बन बैठी और शिव के यहाँ भवानी । पण्डे घर मूर्ति बनी बैठी है और तीर्थ में पानी । जोगी के घर में जोगन हो गयी और राजा के घर रानी । किसी के यहाँ हीरा बन कर आयी और किसी के यहाँ कानी कौड़ी । भक्तों के यहाँ भक्तिन हो गयी और ब्रह्मा के घर ब्रह्मानी । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यह अकथनीय कथा है।



या करीम बलि हिकमति तेरी,

खाक एक सूरति बहुतेरी ॥

अर्ध गगन में नीर जमाया,

बहुत भौंति करि नूरनि पाया ॥

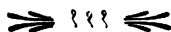
अवलिय-आदम-पीर-मुलाना

तेरी सिफति करि भये दिवाना ॥

कहै कबीर यहु हेतु बिचारा

या रब या रब या रब हमारा ॥

अब करीम, मैं तेरी हिकमत पर कुरबान जाऊँ । खाक एक है लेकिन सूरतें हज़ारों हैं । तूने मध्य आकाश में पानी को स्थापित किया और भौंति भौंति के प्रकाश फैलाये । ओलिया, आदम, पीर, मौलवी सब तेरी प्रशंसा करते करते दिवाने हो गये । कबीर कहते हैं कि हमने तो बस यह सोचा है कि यारब हमारा यार है ।



पोंड़े बूझि पियहु तुम पानी ।

जिहि मिटियाके घर भँह बैठे, तामँह सिस्ट समानी ।

छपन कोटि जादव जहँ भीजे, मुनिजन सहस अटासी ।

بھگتن کے بھگتین ہونی بیٹھی، برہما کے برہمانی
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، یہ سب اکٹھ کہانی
 ہم مایا کو بہت بڑی ٹھکنی سمجھتے ہیں، اس کے ہاتھ میں ترگن
 کی پھانسی کا پھندا ہے اور ہونٹھوں پر میٹھے بول۔ کیشو (وشنو) کے
 یہاں کملا (لکشمی) بن بیٹھی اور شیو کے یہاں بھوانی، پنڈا کے
 گھر مورت بن بیٹھی اور تیرتھ میں پانی۔ جوگی کے گھر میں جوگن
 ہوگئی اور راجا کے گھر رانی۔ کسی کے یہاں پیرا بن کر آئی اور
 کسی کے یہاں کانی کوڑی، بھگتوں کے یہاں بھگتن ہوگئی اور برہما
 کے گھر برہمانی۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ ناقابل
 بیان کہانی ہے۔

» ۱۱۰ «

یا کریم بل حکمت تیری
 کھاک ایک صورت بُھتیری
 اردھ گن میں نیر جمایا
 بہت بھانت کر نورن پایا
 اولیا آدم پیر ملانا
 تیری صفت کر بھنے دوانا
 کہے کبیر یسہ بیت چارا
 یارب یارب یار ہمارا
 اے کریم میں تیری حکمت پر قربان جاؤں، خاک ایک ہے لیکن صورتیں
 ہزاروں ہیں۔ تونے وسط آسمان میں پانی کو قائم کیا اور طرح طرح
 کے نور پھیلانے، اولیا، آدم، پیر، مولوی سب تیری صفات بیان کرتے
 کرتے دیوانے ہو گئے، کبیر کہتے ہیں کہ ہم نے تو بس یہ نکتہ سوچا
 ہے کہ یارب ہمارا یار ہے۔

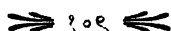
» ۱۱۱ «

بانڑے بوجھ پیو تم پانی
 جہی مٹیا کے گھر ماں بیٹھے، تا ملک سسٹ سما
 چھین کوٹ جا دو جہاں بھینجے، مَن جن سہس اٹھاسی

“मेरी बहन (माया) तुम अपने घर जाओ। तुम्हारी आँखें ज़हर लग रही हैं। मैंने अंजनरूप संसार को छोड़कर निरंजन को अपना लिया है। अब मुझे किसी से कुछ लेना देना नहीं है। मैं उसपर बलि जाऊँ जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है। हम दोनों तो बहन भाई हैं।”

“अब कबीर इस लाल तलवार को देखो, यह मेरा श्रृंगार देखो। मैं स्वर्गलोक से उतरकर आयी हूँ और तुम्हें अपना पति बनाना चाहती हूँ।”

“स्वर्ग में तुम्हें क्या तकलीफ़ थी जो तुमने इस कलयुगी दुनिया में आनेका कष्ट किया। हम जाति के जुलाहे हैं और हमारा नाम कबीर है। हमें तो कभी किसी ने पूछा नहीं। तुम वहाँ जाओ जहाँ तख्त बिछे हैं, बाग़ सजे हैं और अनाज के बोरे भरे हैं। रेशम की भरमार है, अगर और चंदन घिसा जा रहा है। हमारे पास आकर क्या करोगी। हम तो नीच लोग हैं जिसने हमें पैदा किया है और जिसकी दया दृष्टि हमपर है उसने हमें अपने प्यार के कच्चे धागे में बांध लिया है (दूसरे अर्थ में जहाँ जिनि का मतलब मत या नहीं है इन सजावटों से हमें मत नवाजो और हमें कच्चे धागे में बाँधने की कोशिश मत करो) तुम चाहे जितने जतन करो, पानी में आग नहीं लगा सकोगी (मुझे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकोगी) मेरा मालिक तो लेखा माँगता है, वह मैं उसे कैसे दिखाऊँगा। तुम चाहे जितने जतन करो पत्थर में पानी नहीं सोख सकता। मैं जिसकी मछली हूँ वही मेरा मछेरा है। वही मेरा रखवाला है। यदि तुम्हें हाथ भी लगा दूँ तो राम मुझसे रूठ जायेंगे। मैं तो जाति का जुलाहा हूँ और जंगल जंगल भूका प्यासा मारा फिरता हूँ। तुम मेरे आसपास घूमो और बैठो। हमारी माँ और मौसी एक ही हैं। (यानी हम सगे बहन भाई हैं)



मया महा ठगनी हम जानी।

तिरगुन फाँसि लिये कर डोलै, बोलै मधुरी बानी ॥

केसवके कमला होइ बैठी, सिवके भवन भवानी।

पडाँके मूरत होइ बैठी तीरथद्वारें पानी।

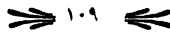
जोगीके जोगिन होइ बैठी, राजाके घर गनी।

काहूके हीरा होइ बैठी काहूके कोड़ी कानी।

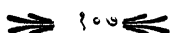
میری بن (مایا) تم اپنے گھر جاؤ، تمہاری آنکھیں مجھے زہر لگ رہی ہیں۔ میں نے صفت کو چھوڑ کر صفات سے لو لگائی ہے، اب مجھے کسی سے کچھ لینا دینا نہیں، میں اس کے قربان جاؤں جس نے تمہیں بھیجا ہے، ہم دونوں تو بہن بھائی ہیں۔

اس لال تلوار کو دیکو و کبیر، میرا سنگار دیکھو، میں جنت سے اتر کر آئی ہوں اور کبیر میں تمہیں اپنا دولہا بنانا چاہتی ہوں۔

جنت میں تمہیں کیا دکھ تھا ج۔ نے اس کل جگی دُنیا میں آنے کی تکلیف گوارا کی، ہماری ذات جلا ہے کی ہے اور نام کبیر ہے، ہمیں تو کبھی کسی نے پوچھا نہیں، تم وہاں جاؤ، تخت بچھے ہیں، باغ آراستہ ہیں، اناج کے بورے بھرے ہیں، ریشم سی بھر مار ہے، اگر اور صندل گھسا جا رہا ہے، ہمارے پاس آکر کیا کروگی، ہم تو کمینوں کی ذات سے تعلق رکھتے ہیں۔ جس نے ہمیں پیدا کیا ہے اور جس کی نوازش ہم پر ہے اس نے ہمیں اپنے پیار کے کچے دھاگے میں باندھ رکھا ہے۔ تم چاہے جتنے جتن کرو پانی میں آگ نہیں لگا سکوگی (مجھے اپنی طرف مائل نہیں کر سکوگی) میرا مالک تو اعمالنامہ مانگتا ہے، وہ میں اُسے کیسے دکھاؤں گا۔ تم چاہے جتنے جتن کرو پتھر میں پانی جذب نہیں ہو سکتا۔ میں جس کی مچھلی ہوں وہی میرا چھیرا ہے وہی میرا رکھوالا ہے۔ اگر تمہیں ہاتھ بھی لگا دوں تو رام مجھ سے روٹھ جائیں گے، میری تو جلا ہے کی ذات ہے اور میں جنگل جنگل بھوکا پیاسا مارا پھرتا ہوں، تم میرے آس پاس گھومو اور بیٹھو، ہماری ماں اور خالہ ایک ہی ہے (یعنی ہم سگے بہن بھائی ہیں)۔



مایا مہا لکھتی ہم جانی
تر گن پھانسر لئے کر ڈولے، بولے مدھری بانی
کیسو کے کھلا ہوئی بیٹھی، سو کے بھون بھوانی
پنڈا کے مورت ہوئی بیٹھی، تیرتھو میں پانی
جوگی کے جوگی ہوئی بیٹھی، راجا کے گھر رانی
کاہو کے پیرا ہوئی بیٹھی، کاہو کے کوڑی کانی



रहना नहिं देस बिगाना है ।

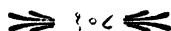
यह संसार कागदकी पुड़िया, बूँद पड़े धुल जाना है ॥

यह संसार काँटकी बाड़ी, उलझ-पुलझ मरि जाना है ।

यह संसार झाड़ औ झोंखर, आग लगे बरि जाना है ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नाम ठिकाना है ।

यह पराया देश है, यहाँ नहीं रहना है । यह संसार कागज की पुड़िया है जो एक बूँद पानी से गल जाती है । यह कांटों की झाड़ी है जिसमें उलझ कर लोग मर जाते हैं । यह झाड़ मँकाड़ है जो आग लगते ही जल जाता है । कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, सतगुरु का नाम ही आखरी ठिकाना है ।



“तुम्ह वरि जाहु हमारी बहना, विष लागे तिहार नैन ॥

अंजन छांड़ि निरंजन राते, ना किसहींका दैनां ।

बलि जाऊँ ताकि जिनि तुम्ह पठई, एक भाई एक बहनां ॥”

“राती खौड़ी देखि हमारा सिंगारो ।

सरग-लोकथै हम चलि आई, करन कबीर भगतारी ॥”

“सरगलोकमें क्या दुख पड़िया, तुम्ह आई कलिमौहीं ।

जाति जुलाहा नाम कबीरा, अजहुँ पतीजौ नाही ॥

तहाँ जाहु जहाँ पाट-पटेंबर अगर चंदन घसि लीनां ।

आइ हमारै कहा करौगी, हम तौ जाति कर्माना ॥

जिनि हम साजे साज्य निवाजे, बोंधे काचै धागे ।

जे तुम्ह जतन करौ बहुतेग, पाणी आगि न लागै ॥

साहिब मेरा लेखा मोगै, लेखा क्यूँ करि दीजै ।

जे तुम्ह जतन करौ बहुतेग, तो पाहण नीर न भीजै ॥

जाकी मैं मछी सो मेरा मछा सो मेरा रखवाछ ।

टुक एक तुम्हारै हाथ लगाऊँ तो राजाराम रिसाछ ॥

जाति जुलाहा नाम कबीरा बनि बनि फिरौ उपासी ।

आसि-पासि तुम्ह फिरि फिरि बैसौ एक माउ एक मासी ॥”

رہتا نہیں دیس پرانا ہے
 یہ سنسار کا گد کی پڑیا، بوند پڑے کُھل جانا ہے
 یہ سنسار کاٹ کی اڑی، الجھ بُلجھ مر جانا ہے
 یہ سنسار جھاڑا و جھانکر، اک لکے بر جانا ہے
 کمٹ کبیر سو بھائی سادھو، ست گرو نام ٹھکانا ہے
 یہ پرانا دیس ہے۔ یہاں نہیں رہتا ہے۔ یہ سنسار کاغذ کی پڑیا ہے جو
 ایک بوند پانی سے گل جاتی ہے۔ یہ کانٹوں کی جھاڑی ہے جس میں
 الجھ کر لوگ مرجاتے ہیں۔ یہ جھاڑ جھنکاڑ ہے جو آگ لگتے ہی جل
 جاتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں سنو بھائی سادھو اصل منزل ست گرو کا نام ہے۔

» تمہ گھر جاؤ ہماری بہنا، وش لاگین تھارے بیناں
 انجن چھابڑ برنجن راتے، ناکس ہیں کا دیناں
 بل جاؤں تاکی جن تمہ پٹھنی، ایک بھائی ایک بہناں »
 » راتی کھانڈی دیکھ ہمارا سنگارو
 سرگ لوک تھیں ہم چل آئی کرن کبیر بھر تاری »
 » سرگ لوگ میں کیا دکھ پڑیا، تمہ آئی کل مانہیں
 جات جلاہا نام کبیرا، اج ہوں پتیجو ناہیں
 ہاں جاؤں جہاں پاٹ پٹھیر، اگر چندن گھس لیناں
 آئی ہمارے کہا کروگی، ہم تو جات کمیناں
 جن ہم ساحے ساجیہ نواجے، باندھے کاچے دھاگے
 جے تم جتن کرو بُہتیرا، پانی آگ نہ لاگے
 صاحب میرا لیکھا مانگے، لیکھا کیوں کر دیجے
 جے تم جتن کرو بُہتیرا تو پاہن نیر نہ بھیجے
 جاکي میں پچھی سو میرا پچھا سو میرا رکھوالو
 مُک ایک تمہارے ہاتھ لگاؤں تو راجا رام رسالو
 جات جلاہا نام کبیرا بن بن پھروں آپاسی
 آسو پاس تمہ پھر پھر ویسو ایک ماؤ ایک ماسی »

यह माया जो रघुनाथ (भगवान) की दिवानी है, शिकार खेलने निकला है। बड़े बड़े चालाक और चतुर लोगों को चुन चुनकर मारती है और किसी को अपने निकट नहीं आने देती। कहीं वह मौनी, बीर और दिगम्बर को मारती है और कहीं ध्यान में खोये हुए जोगी को और कहीं जंगलों में रहने वाले जंगम साधुओं को। कहने का मतलब यह है कि माया से किसी को लाभ नहीं पहुँचा। वह वेद पढ़ते हुए ब्राह्मणों को भी मार लेती है और पूजा करते हुए स्वामियों को भी और अर्थ समझने वाले पण्डितों को भी। उसने सब के मुँह में लगाम लगा दी है। वह जंगल में जाकर संगी ऋषि को मारती है और ब्रह्मा का सग फोड़ देती है। उसके प्रवेश ने मछिन्दर नाम को भी, जो माया की ओर से मुँह मोड़कर चले थे, लंका में जाके डुबो दिया। माया दुनियादार के घर में कर्ता धरता बन बैठती है लेकिन हरि की भक्ति में खोये हुए लोगों की दासी हो जाती है।

॥ १०६ ॥

बागड़ देस लूवनका घर है, तहाँ जिनि जाइ दामनका डर है।

सब जग देखौ कोई न धोरा, परत धूरि सिंग कहत अबीरा ॥

न तहाँ सगवर न तहाँ पाणी, न तहाँ सतगुरु साधू-वाणी।

न तहाँ कोकिल न तहाँ सूवा, ऊँचै चढ़ि चढ़ि हंसा मूवा ॥

देस मालवा गहर गँभीर, डग डग रोटी पग पग नीर।

कहै कबीर धरती मन मानां, गूंगेका गुड़ गूंगै का जांगा ॥

बागड़ देश (पश्चिमी भाग) गरम लूओं का देश है। वहाँ मत जाओ, जल जाने का डर है। मैं सारे संसार को देखता हूँ किसी के दिल में सन्तोष और शान्ति नहीं है। सर पर जो घूल पड़ती है उसे वह अबीर समझते हैं। न वहाँ मील है, न पानी। न सतगुरु है न साधु की आवाज। न वहाँ कोयल है न तोता और हंस ऊँचा उड़ते उड़ते मर गया। लेकिन मालवे का देश गहर गम्भीर है। वहाँ क्रदम क्रदम पर गेटी और क्रदम क्रदम पर पानी है। कबीर कहते हैं कि इस संसार की हैसियत वही है जिसपर विश्वास कर लिया गया है। गूंगा गुड़ खाकर उसका स्वाद नहीं बता सकता।

یہ مایا جو رگھوناتھ (بھگوان) کی دیوانی ہے، شکار کھیلنے نکلی ہے۔
 بڑے بڑے چالاک اور سبک دست آدمیوں کو چن چن کر مارتی ہے
 اور کسی کو اپنے قریب نہیں آنے دیتی۔ کہیں وہ مونی، بیر اور دگمیر
 کو مارتی ہے اور کہیں دھیان میں کھوئے ہوئے جوگی کو اور کہیں
 جنگلوں میں رہنے والے جنگم سادھوؤں کو۔ غرض مایا سے کوئی
 فیض یاب نہیں ہوسکا۔ وہ وید پڑھتے ہوئے برہمنوں کو بھی مار لیتی
 ہے اور پوجا کرتے ہوئے سوامیوں کو بھی اور نفسیر بیان کرتے ہوئے
 پنڈتوں کو بھی۔ اس نے سب کے منہ میں لگام لگا دی ہے، وہ جنگل
 میں جا کر سنگی رشی کو مارتی ہے اور برہما کا سر پھوڑ دیتی ہے۔
 اس کے فریب نے پھندر ناتھ کو بھی جو مایا کی طرف سے پیٹھ موڑ کر
 چلے تھے لٹکا میں جا کے ڈبو دیا۔ مایا دنیا دار کے گھر میں کرتا دھرتا
 بن بیٹھتی ہے لیکن ہری کی بھگتی میں کھوئے ہوئے لوگوں کی کنیز
 ہوجاتی ہے۔

» ۱۰۶ «

بانگڑ دیس لوؤں کا گھر ہے، نہاں جن جائی دا جہن کا ڈر ہے
 سب جگ دیکھوں کوئی نہ دھیرا، برت دھور سر کھت ائیرا
 نہ نہاں سرور نہ نہاں پانی، نہ نہاں ست گگر سادھو وانی
 نہ نہاں کوکل نہ نہاں سووا، اونچے چڑھ چڑھ ہنسا مووا
 دیس مالوا گھر گنہیر ڈگ ڈگ روٹی پگ پگ نیر

بانگڑ دیس (مغربی علاقہ) گرم لوں کا دیس ہے۔ وہاں مت جاؤ، جل
 جانے کا ڈر ہے۔ میں ساری دنیا کو دیکھتا ہوں، کسی کے دل میں،
 صبر قناعت نہیں ہے۔ سر پر جو خاک پڑتی ہے اسے وہ عبیر سمجھتے
 ہیں۔ نہ وہاں جھیل ہے نہ پانی نہ ست گرو ہیں نہ سادھو کی آواز
 (صدائے حق) نہ وہاں کوئل ہے نہ طوطا، اور بنس اونچا اڑتے اڑتے
 مرگیا، لیکن مالوے کا دیس گھر گنہیر ہے وہاں قدم قدم پر روٹی
 اور قدم قدم پر پانی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس دنیا کی حیثیت
 اعتباری ہے۔ گونگا گڑ کھا کر اس کا مزا بیان نہیں کرسکتا۔

राम तेरी माया दुंद मचावै ।
 गति-मति वाकी समझि परै नहिं, सुग-नर मुनिहि नचावै ।
 का सेमरके साखा बढ़ये, फूल अनूपम बानी ।
 केतिक चातक लागि गहे हैं, चाखत सुवा उड़ानी ॥
 कहा खजूर बढ़ाई तरी, कल कोई नहीं पावै ।
 ग्रीखम रित अब आई तुलानी, छाया काम न आवै ॥
 अपना चतुर औरको सिखवै, कामिनि-कनक सयानी ।
 कहैं कबीर सुनो हो सन्तो, राम-चरण रति मानी ॥

राम तेरी माया ने दुन्द मचा रखा है । उसकी गति समझ में नहीं आती । देवता मनुष्य ऋषि और मुनि सबको नचाती रहती है । माया ने सेमल की शाखा की तरह जो यह अपनी शाखाएँ फला रखी हैं उससे एक फ्रायदा है । तरह तरह के फूल खिलते हैं कितने ही परीहे आकर बैठते हैं और तोते फल खाकर उड़ जाते हैं । खजूर के पेड़ तेरी बढ़ाई बेकार है । तुमसे किसी को आराम नहीं मिलता । गर्मी का मौसम आ गया है और तेरी छाया काम नहीं आती । माया अपनी चालाकी औरों को सिखा देती है और औगत तथा सोने में यही सियानापन और धोका है । सुनो सन्तो, कबीर कहते हैं कि हमने तो राम (भगवान) के चरणों से लौ लगाने का मार्ग अपना लिया है ।

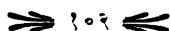
ई माया रघुनाथकी बीरी, खेलन चली अहेरा हो ।
 चतुर चिकनिया चुनि चुनि मारे, काहु न राखे नेरा हो ।
 मौनी-बीर-दिगंबर मारे, ध्यान धरंते जोगी हो ।
 जंगलमेंके जंगम मारे, माया किन्हूँ न भोगी हो ।
 बेद पढ़ते बेदुआ मारे, पुजा करंते सामी हो ।
 अरथ विचारत पंडित मारे, बाँधेउ सकल लगामी हो ।
 सिंगी रिषि बन भीतर मारे, सिर ब्रह्माका फोरी हो ।
 नाथ मछंदर चले पीठि दै, सिंहलहूमें बोगी हो ।
 साकटके घर करता-धरता हरि-भगतनकी चेरी हो ।
 कहहिं कबीर सुनहु हो सन्तो, जौ वावै तौ फेरी हो ॥

رام تیری مایا دُند بھاوے

گت مت واکِ سمجھ پرے نہیں، سرسِ مں ہی نچاوے
کاسمیر کے ساکھا بڑھبے، پھول انویم باہی
کیتک چانک لاگ رہے ہیں، چاکھت سُوا اُڑانی
کھا کھجور بڑائی تیری، کل کوئی نہیں پاوے
گریکھم رُت اب آئی مُتلانی، چھایا کام نہ اوے
ابنا چُتر اور کو سکھوے، کامن، کنک، سیانی
کہیں کبیر سنو ہو سنتو، رام چرن رت مانی

رام، تیری مایا دُند بھاوے ہے۔ اس کی کیفیت سمجھ میں نہیں آتی،
دیوتا، انسان، رشی اور مئی سب کو نچانی رہتی ہے، مایا نے سیمل کی
شاخ کی طرح جو یہ اپنی شاخیں پھیلا رکھی ہیں اس سے کیا فائدہ۔
طرح طرح کے پھول لگتے ہیں، کتنے ہی پیسے آکر بیٹھتے ہیں اور
طوطے پھل کھا کر اُڑ جاتے ہیں۔ کھجور کے پیڑ تیری بڑائی بیکار ہے
نچھ سے کسی کو آرام نہیں ملتا، گرمی کا طولانی موسم آگیا ہے
اور تیرا سایہ کام نہیں آتا۔ مایا اپنی چالاکی اوروں کو سکھا دیتی
ہے اور عورت اور سونے میں یہی سیانا پن اور دھوکا ہے۔ سنو سنتو
کبیر کہتے ہیں کہ ہم نے تو رام (بھگوان) کے چرنوں سے لو لگائے کا
راستہ اختیار کیا ہے۔

ای مایا رُگھنانہ کی بوری، کھیلن چلی اہیرا ہو
چتر چکنیا مچن مچن مارے، کاہُ نہ راکھے نیرا ہو
مدنی، بیر، دگمبر، مارے، دھیان دھرتے جوگی ہو
جنگل میں جنگم مارے، مایا کنہ ہوں نہ بھوگی ہو
بید بڑھتے بیدوا مارے، بُجا کرتے سامی ہو
ارتھ وچارت پنڈت مارے، باندھیو سکل لگامی ہو
سنگی رشی بن بھیت مارے، سر برہما کا پھوری ہو
نانہ پچھندر چلے بیٹھ دے، سنگھامو میں بوری ہو
ساکت کے گھر کرتا دھرتا ہری بھگن کی چیری ہو
کہیں کبیر سنو ہو سنتو، جوں واوے نوں پھیری ہو



उलटि जात-कुल दोऊ बिसारी । सुन सहज महि बुनत हमारी ।

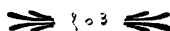
हमरा झगरा रहा न कोऊ । पंडित-मुल्ला छौंड़े दोऊ ।

बुनि बुनि आप आप पहिरावों । जहँ नहीं आप तहाँ है गावों ।

पंडित-मुल्ला जो लिखि दीया । छौंड़ि चले हम कछु न लीया ।

रिदै खलामु निरखि ले मीरा । आजु खोजि खोजि मिले कबीरा ॥

हम ने जाति और कुल दोनों को भुला दिया है और हमारी बुनत शून्य और सहज में जारी है । हमारा झगड़ा किसी से नहीं रहा । हमने पंडित और मुल्ला दोनों की ओर से मुंह मोड़ लिया है । आप ही बुनता हूँ और आप ही पहनता हूँ और जहाँ स्वयं को नहीं पाता वहाँ जाकर गाता हूँ । पंडित और मुल्ला ने जो लिखा उसमें से हमने कुछ भी नहीं लिया ऐ मीर । देख ले मेरा दिल बिल्कुल खाली है । अब कबीर उस मंजिल में पहुँच गया है कि बहुत तलाश करने के बाद ही मिल सकता है ।



ब्रूमहु पंडित, करहु बिचारी, पुरुष अहै का नारी ।

ब्राम्हनके घर ब्राम्हनि होती, योगीके घर चेली ।

कलमा पढ़ि पढ़ि भई तुरुकिनी, कलिमें रही अकेली ।

बर नहि बरै ब्याह नहि करई, पुत्र-जन्म-होनिहारी ।

कारे-मूडे एक नहि छौंड़े, अब ही आदिकुंवारी ॥

रहै न मैके जाइ न ससुरे साईंके सँग सोवै ।

कह कबीर वह जुग जुग जीवै जाति-पाँति कुल खोवै ॥

अप्य पण्डित तू सोच विचार कर यह पहेली ब्रूम कि वह (माया) पुरुष है या नारी । ब्राह्मण के घर वह ब्राह्मणी होती है और योगी के घर चेली बन जाती है । कलमा पढ़कर वह मुसलमान हो जाती है और फिर भी इस सारे झगड़े में सबसे अलग रहती है । पति नहीं रखती, विवाह नहीं करती फिर भी गर्भवती है । किसी को छोड़ती भी नहीं फिर भी कुंवारी है । मैके में रहती नहीं ससुराल जाती नहीं लेकिन साईं के साथ सोती आवश्यक है । कबीर कहते हैं कि वह (माया) जात पांत, कुल खान्दान कुछ नहीं रखती मगर शाश्वत है ।

﴿ ۱۰۲ ﴾

اُٹنی جات کُل دوؤ ساری سن سہج مہی مُست ہماری
ہمارا جھگڑا رہا نہ کوؤ پنڈت مُلا چھانڑے دوؤ
بُن بُن آپ آپ پہراووں جہاں نہیں آپ تہاں پوے گاووں
پنڈت مُلا جو لکھ دیا چھانڑ چہے ہم کچھ نہ لیا
ردے کھلاس نہ رکھ لے میرا آج کھوچ کھوچ ملے کبیرا

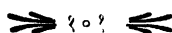
ہم نے ذات اور خاندان دونوں کو بھلا دیا ہے۔ اور ہماری بُنت شونہ اور سہج میں جاری ہے، ہمارا جھگڑا کسی سے نہیں رہا۔ پنڈت اور ملا دونوں کو نظر انداز کر دیا۔ آپ ہی بُنتا ہوں اور آپ ہی پھنتا ہوں اور جہاں اپنے آپ کو نہیں پاتا وہاں جا کر گاتا ہوں۔ پنڈت اور ملا نے جو کچھ لکھا اس میں سے ہم نے کچھ بھی نہیں لیا۔ اے میر (جماعت کا پیشوا) دیکھ لے میرا دل بالکل خالی ہے۔ اب کبیر اس منزل میں پہنچ گیا ہے کہ بہت تلاش کرنے کے بعد ملے گا۔

﴿ ۱۰۳ ﴾

بوجھو پنڈت، کرہو بچاری، پُرمش ہے کہ ہاری
ہامہن کے گھر ہامہن ہوتی، یوگی کے گھر چیلی
کما پڑھ پڑھ بھئی ترُکھی، کلی میں رہی اکیلی
بر نہیں برے بیاہ نہیں کرئی، پُتر جنم ہونہاری
کارے مونڈے ایک نہیں چھانڑے، اب ہی آد کوارہ
رہے نہ میکے، جانی نہ سسرے، سائیں کے سنگ سووے
کہ کبیر وہ جُگ جُگ جیوے جات پانت کھووے

اب پنڈتو غور کر کے یہ پہیلی بوجھو کہ وہ (مایا) مرد ہے یا عورت۔ برہمن کے گھر وہ برہمنی ہوتی ہے اور یوگی کے گھر چیلی بن جاتی ہے۔ کلمہ پڑھ کر وہ مسلمان ہو جاتی ہے اور پھر بھی اس تمام جھگڑے میں سب سے الگ رہتی ہے۔ شوہر نہیں رکھتی، بیاہ نہیں کرتی، پھر بھی حاملہ ہے۔ کسی ایک کو بھی نہیں چھوڑتی ہے پھر بھی ہمیشہ کی کنواری ہے۔ میکے رہتی نہیں، سسرال جاتی نہیں، لیکن سائیں کے ساتھ سوتی ضرور ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ وہ (مایا) ذات، پات، کنبہ خاندان کچھ نہیں رکھتی مگر لا فانی ہے۔

जिससे उसके हित की बात कहता हूँ वही मेरा बैरी हो जाता है। कायाण और स्याही मैंने कभी छुपा नहीं और कलम को कभी हाथ नहीं लगाया, चारों युगों का माहात्म्य मैंने अपने मुख से वर्णन किया। मेरी बोली पूरब की है और इसलिए हमें कोई महत्व नहीं देता। हमारा महत्व तो वही जाने जो खुद धुर पूरब का हो।



अवधू, कुदरतकी गति न्यारी।

रंक निवाज करै वह राजा, भूपति करै भिखारी ॥

ये ते लवंगहि फल नहि लागे, चंदन फूल न फूलै।

मच्छ शिकारी रंगै जंगलमें, सिंह समुद्रहि झूलै ॥

रेड़ा रख भया मलयागिर, चहुँ दिसि फूटी बासा।

तीन लोक ब्रह्मांड खंडमें देखै अंध तमासा ॥

पंगुल मेरु सुमेरु उलंघै त्रिभुवन मुक्ता डोलै।

गूंगा ज्ञान-विज्ञान प्रकाशै अनहद बानी बोलै ॥

बाँधि अकास पताल पठावै सेस सरगपर राजै।

कहे कबीर राम हैं राजा जो कछु करै सो छाजै ॥

उधो प्रकृति का खेल विचित्र है। यदि कृत्तोर को नवाषे तो राजा कर दे और राजा पर बिगड़े तो उसे भिकारी बना दे। यह उसी का खेल है कि लौंग में फल नहीं लगता और चंदन फूल से वंचित है हालांकि उसकी सुगन्ध चारों ओर फैली रहती है (यदि वह चाहे तो लौंग में फल लग जायें और चन्दन में फूल खिलने लगें) मगर मच्छ शिकार के लिए जंगल में घूमें और सिंह समुद्र में गोते लगायें। रेड़ा का वृक्ष चन्दन से भरे जंगलों का पहाड़ बन जाये और चारों ओर सुगंध फैलने लगे। अंधा त्रिलोक के दर्शन कर ले, लंगड़ा सुमेरु पहाड़ लांघ जाये और तीनों लोक में आजादी से घूमे। गूंगा ज्ञान विज्ञान की बातें करे और अनहद गीत गाने लगे और यदि वह चाहे तो आकाश को उठाकर पाताल में फेंक दे और शेषनाग को स्वर्ग में भेज दे। कबीर कहते हैं कि राम राजा हैं वह जो कुछ भी करे उन्हें शोभा देता है।

شب (حرف حق) کو کون نہیں جانتا۔ جس سے اس کے فائدے کی بات کرتا ہوں، وہی میرا دشمن ہو جانا ہے۔ روشنائی اور کاغذ میں نے چھوا نہیں، قلم کو ہاتھ نہیں لگایا، چاروں ٹیگوں کی تفسیر زبانی ہی بیان کی، میری بولی پورب کی ہے اور اس لئے ہمیں کوئی خاطر میں نہیں لانا، ہمساری قدر تو وہ جانے جو خود پورب کا ہو۔

۱۰۱

اودھو، قدرت کی گت نیاری
رنک نواج کرے وہ راجا، بھوپت کرے بھکاری
بے نے لو نگم۔ پھل نہیں لاگے، چندن پھول نہ پھولے
چھہ شکاری رمے جنگل میں سنہ سمندر ہی پھولے
ریڑا روکھ، ہیا ملیا گر، چھوں پس پھوتی باسا
تین لوک برہمانڈ کھنڈ میں دیکھے اندھ تماشا
پنگل میرو سمیر اُلنگھے ترہون مکنا ڈولے
گونگا گیان و گیان پرکاسے انہد بانی بولے
باندھ اکاس پتال پٹھاوے سیس سرگ پر راجے
کہے کبیر رام ہیں راجا جو کچھ کریں سو چھاجے
اودھو، قدرت کا کھیل عجیب و غریب ہے۔ اگر فقیر کو نوازے تو راجہ کر دے اور راجہ کو چاہے تو بھکاری بنادے۔ یہ اسی کا کھیل ہے کہ لونگ میں پھل نہیں لگتا اور صندل جو مہکتا ہے پھول سے محروم ہے۔ (اگر وہ چاہے تو لونگ میں پھل لگ جائے اور صندل میں پھول کھلنے لگیں) مگر چھہ شکار کے لئے جنگل میں گھومے اور شیر سمندر میں غوطے کھائے، ریڑ کا پیڑ صندل سے بھرے جنگلوں کا پہاڑ بن جائے اور چاروں طرف خوشبو پھیلنے لگے۔ اندھا بھی کائنات کے تینوں عالم (آسمان، دھرتی اور پاتال) کا تماشا دیکھے۔ لنگڑا آدمی سمیر کے پریت کو پھاند جائے اور تینوں عالم میں آزادی سے گھومے۔ گونگا آدمی علم اور عرفان کی باتیں کرے اور الوہیت کا گیت گائے، اور اگر وہ چاہے تو آسمان کو پاتال میں پھینک دے اور شیش ناگ جو پاتال میں ہے اس کو جنت میں پہنچا دے۔ کبیر کہتے ہیں کہ رام (بھگوان) راجا ہیں اور وہ جو کچھ کریں وہ انہیں زیب دیتا ہے،

के पास आ जाओ और उसे अपने मन की व्याकुलता का हाल बताओ । मुनो
भाई साधु, कबीर कहते हैं कि अपने पिया के ध्यान में लीन हो जाओ ।

» ९९ «

अमृत बरिसै हांग निपजै,
घंटा पड़े टकसाल ।
कबीर जुलाहा भया पारबू,
अनमे उतरया पार ॥ १ ॥
कबीर हरि-रस यो पिया,
बाकी रही न थाकि
पाका कलस कुम्हारका,
बहुनि न चढ़ई चाकि ॥ २ ॥

अमृत बरस रहा है और हीरा उत्पन्न हो रहा है । टकसाल का घंटा इस बात की
घोषणा कर रहा है । कबीर जुलाहा पारखी बन गया है और बिना किसी भय
के पार उतर गया है । कबीर ने हरि-रस इस तरह पिया है कि अब प्यास बाक़ी
नहीं रह गयी है जैसे कुम्हार के पक्के घड़े को दुबारा चाक पर चढ़ाने की
आवश्यकता नहीं रह जाती ।

» १०० «

हौं तो सबहीकी कहों, मोको कोउ न जान ।
तबो भला अब भी भला, जुग जुग होउँ न आन ॥ १ ॥
कलि खोटा, जग आँधरा, सब्द न मानै कोय ।
जाहि कहौं हित आपुना, सो उठि बैरी होय ॥ २ ॥
मसि-कागज छूयो नहिं, कलम गहि नहिं हात ।
चारिउ जुगको महातम मुखहि जनाई बात ॥ ३ ॥
बोली हमरी पूर्वकी, हमें लखै नहिं कोय ।
हमको तो सोई लखै, धुर पूरबका होय ॥ ४ ॥

मैं तो सबकी कहता हूँ लेकिन मुझे कोई नहीं जानता । मैं तब भी भला या और
अब भी भला हूँ और कई युग बीत जाने के बाद भी मुझ में कोई परिवर्तन
नहीं होगा । कलियुग खोटा है और दुनिया अंधी है, शब्द को कोई नहीं जानता ।

کے کان کے قریب آجاؤ اور اُسے اپنے دل کی بیکراری کا حال سناؤ۔
سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اپنے محبوب کے تصور میں ڈوب جاؤ۔

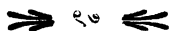
» ۹۹ «

امرت برسے پیرا پیچے
گھنٹ پڑے ٹکسال
کبیر جلاہا بھیا بارشو
انہنے اُتریا پار
کبیر ہری رس یوں پیا
ناکی رہی نہ تھاک
با کا کلس کمہار کا

بُھری نہ چڑھنی چاک
امرت برس رہا ہے اور پیرا پیدا ہو رہا ہے، ٹکسال کا گھنٹ بیج رہا ہے،
کبیر جولاہا جواہرات کا پرکھنے والا بن گیا ہے، اور بغیر کسی خوف
کے پار اتر گیا ہے۔ کبیر نے ہری رس (عشق حقیقی کی شراب)
اس طرح پیا ہے کہ اب پیاس باقی نہیں رہ گئی، کمہار کا پکا گھڑا
دوبارہ چاک پر نہیں چڑھتا۔

» ۱۰۰ «

ہوں تو سب ہی کی کہوں، موکوں کوؤ نہ جان
تب ہو بھلا اب بھی بھلا، جُگ جُگ ہوؤں نہ آن
کل کھوٹا جگ آندھرا، سد نہ مانے کوئے
جاہے کہوں بت اُپنا، سو اُنھ بیری ہوئے
مس کا گچ چھوڑو نہیں، کلم گہی نہیں بات
چار یو جُگ کو مہاتم مُکھ ہی جٹائی بات
بولی ہماری پوزو کی، ہمیں لکھے نہیں کوئے
م کو تو سونے لکھے، مُدھر پورب کا ہوئے
میں تو سب گئی کہتا ہوں لیکن مجھے کوئی نہیں جانتا، میں تب بھی
بھلا تھا، اب بھی بھلا ہوں اور جُگ بیت جانے کے بعد بھی مجھ
میں کوئی فرق نہیں آئے گا، کلجگ کھوٹا ہے و دنیا اندھی ہے؛



नारद, प्यार सो अन्तर नाहीं ।
 प्यार जागै तौही जागूँ प्यार सोवै तब सोऊँ ॥
 जो कोई मेरे प्यार दुखावै जड़-मूलसों खोऊँ ॥
 जहाँ मेरा प्यार जस गावै तहाँ करौ मैं बासा ।
 प्यार चले आगे उठ भाऊँ मोहि प्यारकी आसा ॥
 बेहद तीरथ प्यारके चरननि कोट भक्त समाय ।
 कहैं कबीर प्रेमकी महिमा प्यार देत बुझाय ॥

ओ नारद, मेरा प्यार (प्रीतम) मुझसे दूर नहीं है। जब वह जागता है तो मैं भी जागता हूँ और प्यार सोता है तो मैं भी सोता हूँ। जो मेरे प्रियतम को दुःख पहुँचाता है उसको मैं जड़-मूल से नष्ट कर देता हूँ। मैं वहाँ रहता हूँ जहाँ मेरे प्रियतम का यशगान होता है। जब वह चलता है तो उससे पहले उठकर भागता हूँ। मुझे तो बस अपने प्रियतम से मिलने की अभिलाषा है। उसके तीरथ अनेक हैं और उसके चरणों में करोड़ों प्रेमी बैठे हैं। कबीर कहते हैं कि प्रेम की महिमा प्रियतम ही समझा सकता है।



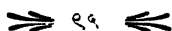
कोई प्रेमकी पैंग झुलावै ।
 मुजके खंभ और प्रेमके रससे,
 तन-मन आजु झुलाव रे ।
 नैनन बादरकी झर लाओ,
 श्याम घटा उर छाव रे ।
 आवत आवत श्रुतकी राहपर,
 फिकर पियाको सुनाव रे ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो,
 पियाको ध्यान चित लाव रे ।

आज कोई प्रेम का झूला झुलाओ। प्रियतम की बाँहों में झूला ढालकर और प्रेम-रस में डूबकर तन-मन के पैंग बढ़ाओ। नैनों के बादलों की झड़ी लगा दो और हृदय पर काली घटा छा जाने दो। आते आते बिल्कुल प्रियतम के कान

نار د پیار سو انتر ناہیں
 پیار جاگے تب ہی جاگوں پیار سووے تب سوؤں
 جو کوئی میرے پیار دکھاوے جڑا مول سوں کھوؤں
 جہان میرا پیار جس گاوے تہاں کروں میں باسا
 پیار چلے آگے اُلھ دھاؤں موہ پیار کی آسا
 بے حد نیرتھ پیار کے چرنن کوٹ بھکت سمانے
 کہیں کبیر پریم کی مہما پیار دیت بجھانے
 او نار د میرا محبوب مجھ سے دور نہیں ہے۔ جب پیار جاگتا ہے تو میں
 بھی جاگتا ہوں اور پیار سوتا ہے تو میں بھی سوتا ہوں۔ جو میرے محبوب
 کو دکھ پہنچاتا ہے اس کو میں نیست و نابود کر دیتا ہوں، میں وہاں
 رہتا ہوں جہاں میرے محبوب کا قصیدہ پڑھا جاتا ہے۔ جب وہ چلتا ہے
 تو اس سے پہلے اُلھ کر بھاگتا ہوں۔ مجھے صرف محبوب کا اشتیاق ہے۔
 اس کے نیرتھ بہت ہیں اور اس کے قدموں میں کروڑوں عاشق بیٹھے
 ہوئے ہیں۔ کبیر کہتے ہیں کہ عشق کا راز صرف محبوب آشکار کرتا ہے۔

کوئی پریم کی پینگ جھلاؤ رے
 بھج کے کہمبہ اور پریم کے رس سے
 تن من آج جھلاؤ رے
 نین بادل کی جھلاؤ
 شام گھٹا اُر چھاؤ رے
 آوت اُترت کی راہ پر
 فکر پیا کو سناؤ رے
 کہت کبیر سنا بھائی سادھو
 پیا کو دھیان چت لاؤ رے
 آج کوئی پریم کا جھولا جھلاؤ۔ محبوب کی باہوں میں جھولا ڈال کے
 اور پریم کے رس سے سرشار ہو کے تن اور من کی پینگ بڑھاؤ۔ نینوں کی
 جھڑی لگاؤ اور دل پر کالی گھٹا چھا جانے دو۔ آنے آنے بالکل محبوب

मगा रही हैं। प्यारे भाई सुनो, कबीर कहते हैं कि सत्य-धर्म ही सब कुछ है और बाकी कुछ नहीं।



सौँईके संग सासुर आई।

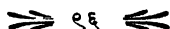
संग ना रही स्वाद ना जान्यो, गयो जावन सपने को नाई।

सखी-सहेली मंगल गावैं, सुख-दुख माथे हरई चढ़ाई।

भयौ विवाह चली बिन दूल्हा, बाट जात समधी समझाई।

कहैं कबीर हम गौने जैबे, तरब कन्त लै तूर बजाई।

मैं अपने स्वामी (साई) के साथ ससुराल आयी। उसके साथ रही नहीं, प्रणय का स्वाद नहीं जाना। यौवन सपने की तरह आया और चला गया। ब्याह के दिन सखियों ने मंगल गाया और मेरे माथे पर सुख-दुख की हल्दी लगायी, लेकिन जब ब्याह हो चुका तो मैं दूल्हा के बिना चल दी। रास्ते में सगे-संबंधियों ने मुझे समझाया। कबीर कहते हैं कि हम प्रीतम के प्रेम के गीत गाते हुए गौने जायेंगे।



समुझ देग्व मन मीत पियगवा,

आसिक होकर सोना क्या रे।

पाया होतो दे ले प्यारे,

पाय पाय फिर खोना क्या रे।

जब अखियनमें नींद घनेरी,

तकिया और बिछौना क्या रे।

कहैं कबीर प्रेमका मार्ग,

सिर देना तो रोना क्या रे।

देख मेरे मन के मीत, प्यारे इस बात को समझ ले कि प्रेमी होकर सोना कैसा। अगर तूने पाया है तो दिल खोलकर दे; उसे पाकर खो देने का सवाल नहीं पैदा होता। जब आँखों में घनेरी नींद बसी हो तो फिर तकिये और बिस्तार की क्या जरूरत है। कबीर कहते हैं कि प्रेम के मार्ग में सर दिया है तो रोना कैसा।

(صداقت) کے مہتاب جگمگا رہے ہیں . پیارے بھائی سنو کبیر کہتے ہیں
کہ ست دھرم ہی سب کچھ ہے باقی کچھ نہیں .

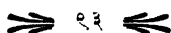
» ۹۵ «

سائیں کے سنگ سائسز آئی
سنگ نہ رہی ، سُواد نہ جانیو ، کیو جوس سپنے کے نائی
سکھی سہلی منگل گاویں ، سُکھ دُکھ ماتھے پر دی چڑھائی
بھو وواہ ، چلی بن دولہا ، باٹ جات سمتھی سمجھائی
کہیں کبیر . ہم گونے جتی ہے ، ترپ کُنٹ لے تور بجائی
میں اپنے سوامی کے سنگ سُسرال آئی . اس کے ساتھ رہی نہیں ، وصال
کا مزا جانا نہیں ، جوانی خواب کی طرح آئی اور چلی گئی . شادی کے
دن سکھیوں نے گیت گائے اور ماتھے پر دُکھ سُکھ کی ہلدی لگائی .
لیکن جب شادی ہوچکی تو میں بغیر دولہا کے چل دی ، راستے میں
رشتہ داروں نے سمجھایا کبیر کہتے ہیں ہم پریم کے عشق کا گیت گانے
ہوئے گونے جائیں گے (رخصت ہوں گے) .

» ۹۶ «

سُجھ دیکھ من میت پیروا
عاسک ہو کر سونا کیارے
پایا ہو تو دے لے پیارے
پائے پائے پھر کھونا کیارے
جب آنکھیں میں نیند گھنیری
نکیہ اور بچھونا کیارے
کہیں کبیر پریم کا مارگ
سر دینا تو رونا کیارے
دیکھ میرے دلدار ، عاشق ہو کر سونا کیسا ، وہ مل گیا ہے تو اپنے وجود
کو محو کر دے ، اُسے پا کر کھو دینا کیا معنی رکھتا ہے . جب آنکھوں
میں گھنیری نیند بسی ہو تو پھر نکیے اور بستر کی کیا ضرورت ہے .
کبیر کہتے ہیں کہ عشق کی راہ میں سر دے کر رونا بیکار ہے .

हन्दी लगने पर पहने जानेवाले कपड़े) तैयार हो रहा है कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, मैं दिन और रात की माला गूँथ रहा हूँ। जब मेरे पिया आयेंगे और (मेरे घर में) पैर रखेंगे तो मैं अपनी आँखों के आँसु मेट चढ़ाऊँगी।



कोटिन भानु-चन्द्र-तारा-नान छत्रकी छाँह रहाई।
मनमें मन नैननमें नैना, मन नैना इक हो जाई।
सुरत सोहागिन मिलन पियाको, तनकै नयन बुझाई।
कहैं कबीर मिलै प्रेम-पूरा, पियामें सुरत मिलाई॥
उसकी छत्रछाया में करोड़ों चौंद और करोड़ों तारे चमक रहे हैं। उसका मन मेरे मन में है, उसकी आँखें मेरी आँखों में हैं, अब मन और आँख दोनों एक हो गये हैं। सुरत सुहागिन ने पिया से मिलने के लिए अपने तन के नैन बंद कर लिए हैं (मन के नैन खोल लिए हैं)। कबीर कहते हैं कि पूरा प्रेम उस समय मिलता है जब अपना प्यार प्रीतम में समा जाता है।



अबधू बेगम देस हमारा।
राजा-रंक-फकीर-बादसा सबसे कहौ पुकारा।
जो तुम चाहो परम पदको, बसिहो देस हमारा॥
जो तुम आये झीने होके, तजो मनकी भाग।
धरन-अकास-भागन कछु नाहीं, नहीं चन्द्र नहि तारा।
सत्त-धर्मकी हैं महताबें, साहेबके दरबार।
कहैं कबीर सुनो हो प्यारे, सत्त-धर्म है सारा॥
अबधू, हमारा देश वह है जहाँ कोई गम नहीं है। यह बात हम राजा और भिखारी, फकीर और बादशाह सबसे पुकार-पुकार कर कह रहे हैं। अगर तुम परम पद को पाना चाहते हो तो हमारे देश में आकर सब जाओ। अगर तुम धककर चूर हो गये हो तो यहाँ मन का बोझ हल्का कर लो। इस जगह जमीन आसमान, चौंद-तारे कुछ भी नहीं। प्रभु के दरबार में सत्य-धर्म की महताबें जग-

برہن سوت کو مہین کات رہی ہے اور اس سے پریم اور بھگتی کا عروسی جوڑا تیار ہو رہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ » میں دن اور رات کی مالا گوندھ رہا ہوں۔ جب میرے پریم آئیں گے اور (میرے گھر میں) اپنے قدم رکھیں گے تو میں اپنی آنکھوں کے آنسو نذر کروں گا۔



کوئن بھان، چندر، تارا گن، چہتر کی چھانہ رہانی
من میں من، نین میں نینا، من نینا اک ہو جائی
سُرت سوباگن ملن پیا کو، تن کے نین بُجھائی
کپیں کبیر ملے پریم پورا، پیا میں سرت ملائی
اس کی چہتر چھایا میں کروڑوں سورج، کروڑوں چاند اور کروڑوں تارے
چمک رہے ہیں۔ اس کا دل میرے دل میں ہے، اس کی آنکھیں میری
آنکھوں میں ہیں۔ اب دل اور آنکھ دونوں ایک ہو گئے ہیں۔ پیار کی ماری
سہاگن اپنے پریم سے مل گئی ہے اور تن کی آنکھ بند کر کے من کی
آنکھ کھول دی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ پورا پریم اس وقت ملتا ہے جب
اپنا پیار پریم میں سما جاتا ہے۔



اودھو، بیگم دیس ہمارا
راجہ، رنک، پھکیر، بادسا، سب سے کہوں پکارا
جو تم چاہو پریم بد کو، بسی ہو دیس ہمارا
جو تم آئے جھینے ہو کے، تجو من کی مہارا
دھرن، اکاس، گگن، کچھ ناہیں، نہیں چندر، نہیں تارا
سُت دھرم کی ہیں مہتابیں۔ صاحب کے دربارا
کپیں کبیر سنو ہو پیارے، سُت دھرم ہے سارا
اودھو، ہمارا دیس وہ ہے جس میں کوئی غم نہیں ہے۔ یہ بات ہم راجہ
اور بھکاری، فقیر اور بادشاہ سب سے پکار پکار کر کہہ رہے ہیں۔ اگر
تم ذاتِ اعلیٰ کے متلاشی ہو ہمارے دیس میں آن بسو۔ اگر تم تھک کر
چور ہو گئے ہو تو یہاں من کا بوجھ ہلکا کر لو۔ اس جگہ زمین، آسمان،
چاند، تارے کچھ بھی نہیں۔ مالک کے دربار میں صرف ست دھرم

९०

में कासो कही आपन पियकी बात री ।
 कहैं कबीर बिछुड़ नहि मिलिहौ
 ज्यो तरवार छोड़ बन्धाम री ॥

मैं अपने पिया की बात किससे कहूँ। कबीर कहते हैं कि एक बार बिछुड़ जाने के बाद पिया से मिलना संभव नहीं है जैसे ढालसे टूटने के बाद जंगल का फूल दुबारा उस ढाल तक नहीं पहुँच सकता।

९१

संस्कृत भाषा पढ़ि लीन्हा, ज्ञानी लोक कहां री ।
 आसा तृस्नामें बहि गयो सजनी, कामके ताप सहो री ॥
 मान-मनीकी मटुकी सिरपर, नाहक बोझ मरो री ।
 मटुकी पटक मिला प्रीतमसे, साहेब कबीर कहां री ॥

मैंने संस्कृत भाषा पढ़ली है, लोगो अब मुझे ज्ञानी कहो। (लेकिन इससे क्या लाभ जब) आशा की तृष्णा बहाये ले जा रही है और कामनाओं की अग्नि जलाये डाल रही है। मान और अहंकार का बोझ सर पर उठाये फिगना और उसके नीचे दबकर मरना बेकार है। कबीर कहते हैं कि इस बोझ को फेंक दो और प्रीतम से जा मिलो।

९२

चरखा चलै सुरत विरहिनका ।
 काया नगरी बनी अति सुंदर, महल बना चेतनका ।
 सुगत भौवरी होत गगनमें, पाड़ा ज्ञान-रतनका ।
 मिहीन सूत विरहिन कातै, मौझा प्रेम भगतिना ।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, माला गूंथो दिन रैनका ।
 पिया मोर ऐहें पगा रखिहै, आँसू भेंट देहों नैनका ॥

सुरत (प्रेम) की विरहिणी चरखा चला रही है। शरीर की नगरी बहुत सुंदर बनी हुई है और उस में चेतना का महल बना है। आकाश में सुरत के फेरे पड़ रहे हैं और ज्ञान के रत्नों का बना हुआ आसन बिछा है। विरहिणी सूत को महीन कात रही है और उससे प्रेम और भक्ति का मौझा (ब्याह से पहले

» ۹۰ «

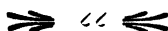
میں کاسوں کہوں آپن پیہ کی بات رے
کہیں کبیر چھوڑ نہیں ملیہو
جیوں ترور چھوڑ بن دھام ری
میں اپنے پریم کی بات کس سے کہوں . کبیر کہتے ہیں کہ ہجر کے
بعد وصال ممکن نہیں ہے جیسے پیڑ کو چھوڑ کر جنگل نہیں مل سکتا
(ایسے ہی وہ مجروح خیال میں تلاش نہیں کیا جاسکتا .)

» ۹۱ «

سنسکرت بھاشا پڑھ لینا، گیانی لوک کہوری
آسا ترسنا میں بہ گیو سجنی، کام کے تاپ سہوری
مان منی کی مٹکی سر پر، ناہک بوجھ مروری
مٹکی پٹک ملو پریم سے صاحب کبیر کہوری
میں نے سنسکرت بھاشا پڑھ لی ہے . لوگو اب مجھے گیانی کہو . (لیکن
اس سے کیا فائدہ جب) پیاس بھائے لئے جارہی ہے اور خواہشوں کی
آگ جلاتے ڈال رہی ہے . غرور اور تکبر کا بوجھ سر پر الھائے پھرنا
اور اس کے نیچے دب کر مرنا فضول ہے . کبیر کہتے ہیں کہ اس
بوجھ کو پھینک دو اور پریم کو مالک کہہ کر پکارو اور اس سے جا ملو .

» ۹۲ «

چرکھا چلے سُرت برہن کا
کایا نگری بنی ات سُندر محل بنا چیتن کا
سُرت بھانوری ہوت گگن میں ، پیڑھا گیان رتن کا
مہین سوت برہن کانیں ، مانجھا پریم بھکت کا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو ، مالا گوتھو دن رین کا
پیا مورائی ہیں پگا رکھی ہیں ، آنسو بھینٹ دیہوں نین کا
پریم کی ماری برہن (جو اپنے پریم سے جدا ہو گئی ہے) چرخا چلا
رہی ہے . جسم کا شہر اپنے سارے جلال و جمال کے ساتھ ابھر رہا
ہے اور اس کے اندر دل کا محل تعمیر ہو رہا ہے . آسمان پر پیار کے
بھیرے پڑ رہے ہیں اور عرفان کے جواہرات کا بنا ہوا تخت بچھا ہے .



आज दिनके में जाऊँ बलिहागी ।

पीतम साहेब आये मेरे पहुना, घर-आंगन लगे सुहोना ॥

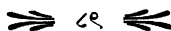
सब प्यास लगे मंगल गायन, भये मगन लखि छवि मनभावन ॥

चरन पखारूँ बदन निहारूँ, तन-मन-धन सब साईं पै वारूँ ॥

जा दिन पाये पिया धन सोई, होत अनंद परम सुख होई ॥

सुरत लगी सत नामकी आसा, कहै कबीर दासनके दासा ॥

आज का दिन धन्य है, इस पर न्योछावर हो जाने को जी चाहता है । आज प्रियतम हमारे यहाँ मेहमान आये हैं, और घर और आँगन सुहावने लग रहे हैं । मेरी प्यास मंगल गा रही है और उसकी मनभावन छवि देखकर मगन हो उठी है । मैं उसके पैर धोती हूँ, उसके मुख को (प्यार से) देखती हूँ और अपना तन-मन-धन उस साईं पर न्योछावर करती हूँ । यह दिन कितना शुभ है कि मुझे अपने पिया जैसी निधि मिल गयी है, मेरे आनंद और सुख की कोई सीमा नहीं है । दासों के दास कबीर कहते हैं कि मुझे प्रेम हो गया है और सतनाम की आसा में हृदय तड़प रहा है ।



कोई सुनता है ज्ञानी राग गगनमें, अवाज होती पीना ।

सब घट पूरन पूर रहा है, सब सुरनके खानी ।

जो तन पाया खंड देखाया, तृस्ना नहीं बुझानी ।

अमृत छोड़ खंडरस चाखा, तृस्ना ताप तपानी ॥

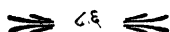
ओं अंग सो अंग बाजा वाजे, सुरत-निरत समानी ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, यही आदकी बानी ॥

है कोई ज्ञानी जो गगन के राग को सुने, जैसे तेज वर्षा हो रही हो । पूर्ण (पूरन-पूर्ण सत्ता) ने हर घट (शरीर) को अपने अस्तित्व से भर दिया है और सबको सोने की खान बना दिया है । जिसने तन पाया लेकिन केवल खंड (अपूर्ण) सत्य को देखा, उसकी तृष्णा कभी नहीं बुझी, उसने अमृत को छोड़कर खंड-रस (अशुद्ध रस) चाखा और तृष्णा की अग्नि में जलता रहा । ओहं-सोहं का राग गूँज रहा है और सुरत-निरत एक हो गये हैं । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि यही आदि की वाणी है ।

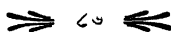
آج دن کے میں جاؤں بلہاری
 یتیم صاحب آئے میرے پہونا، گھر آنکھ لگے سہونا
 سب پیاس لگے منگل گاین، بھنے مکن لکھ چھب من بھاون
 چرن پکھاروں، بدن نہاروں، تن، من، دھن، سب سائیں پے واروں
 جا دن پائے پیسا دھن سوئی، ہوت اتند پر م سکھ ہوئی
 سُرَت لگی ست نام کی آسا، کہے کبیر داسن کے داسا
 اس دن پر تشار ہو جانے کو جی چاہتا ہے، آج پر یتیم مہمان آئے ہیں
 اور گھر آنکھ سہانے لگ رہے ہیں۔ میری پیاس گیت گا رہی ہے اور
 خوش ہو کر اس کے دل موہ لینے والے حسن میں کھوئی جا رہی ہے۔
 میں اس کے پاؤں دھونی ہوں، اس کے چہرے کو (پیار سے) دیکھتی
 ہوں اور اپنا تن من دھن سب سائیں پر نہچا اور کر دیتی ہوں۔ یہ دن
 کتنا مبارک ہے کہ مجھے اپنے پیسا کی دولت ملی ہے۔ میری خوشی کی
 کوئی اتھا نہیں ہے۔ داسوں کے داس کبیر کہتے ہیں کہ مجھے عشق ہو گیا
 ہے اور دل ست نام کے لئے تڑپ رہا ہے۔ (بدن = ودن = چہرہ)

کوئی سنتا ہے گیانی راگ گکن میں، اواج ہوئی پانی
 سب گھٹ پورن پور رہا ہے، سب سُرَن کے کھانی
 جو تن پایا کھنڈ دیکھا یا، تر سنا نہیں بھجانی
 امرت چھوڑ کھنڈ رس چاکھا، تر سنا تاپ تپانی
 اوں انگ سو انگ باجا باجے، سُرَت نرت سمانی
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، یہی آد کی بانی
 ہے کوئی گیانی جو آسمان کے راگ کو سنے جیسے تیز بارش ہو رہی
 ہو۔ مکمل ذات نے ہر جسم کو اپنے وجود سے بھر دیا ہے۔ اور سب
 کو سونے کی کان بنا دیا ہے۔ جس نے تن پایا لیکن صرف نیم حقیقت
 کو دیکھا اس کی پیاس کبھی نہیں بجھی۔ اس نے امرت کو چھوڑ کر
 ناقص رس چکھا اور تشنگی کی آگ میں جلتا رہا۔ اوں انگ سو انگ
 کا راگ گونج رہا ہے، اور سُرَت (عشق) نرت (بیراگ) ایک ہو گئے
 ہیں۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہی ازلی نغمہ ہے۔



जीव महलमें सिव पङ्कनवाँ, कहाँ करत उनमाद रे ।
 पङ्कछा देवा करिलै सेवा, रैन चली आवत रे ।
 जुगन जुगन करै पतीछन, साहबका दिल लाग रे ।
 सूझत नाहिं परम सुख-सागर, बिना प्रेम वैराग रे ।
 सरवन सुर बुझि साहेबसे, पूरन प्रगट भाग रे ।
 कहै कबीर सुनो भाग हमारा, पाया अचल सोहाग रे ॥

जीवन के महल में शिव (परमात्मा) अतिथि है, तू कहाँ पागल बना फिर रहा है । अपने देवता की सेवा कर ले, रात बड़ी तेष्वी से चली आ रही है । मेरी राह देखते-देखते जाने कितने युग बीत गये, प्रभु का दिल मुझसे लग गया है । प्रेम और वैराग्य के बिना परम सुख का सागर दिखायी नहीं देता । जो सुर हमने सुना था उसे अपने साहब से समझ लेने के बाद हमारे भाग जाग उठे हैं । कबीर कहते हैं कि हमारा भाग्य कितना अच्छा है कि मुझे अचल सोहाग मिल गया है ।



गगनघटा घहरानी साधो, गगनघटा घहरानी ।
 पूरन दिससे उठी है वदगिया, रिमझिम बरसत पानी ।
 आपन आपन मेंड़ सम्हारो, बह्यौ जात यह पानी ।
 सुरत-निरतका बेल नहायन, करै खेत निर्वाणी ।
 धान काट मार घर आवै, सोई कुसल किसानी ।
 दोनों थार बराबर परसैं, जेवै मुनि और ज्ञानी ॥

आकाश पर बादल गरज रहे हैं, साधुओं, आकाश पर बादल गरज रहे हैं ।
 पूरब की ओरसे घटा उठी है और रिमझिम-रिमझिम पानी बरस रहा है । अपने-अपने खेत की मेंड़ को सँभालो नहीं तो यह पानी बहा जाता है । सुरत और निरत के बेल बाँधकर जो निर्वाण की खेती करता है और धान काटकर घर ले आता है वही कुशल किसान है । दोनों थालियों में (सुरति और निरति) बराबर खाना परोसता है जिसे मुनि और ज्ञानी खाते हैं ।

جیو محل میں سو پہنواں، کہاں کرت اُنساد رے
 پہوچھا دیوا کرلے سیوا، رین چلی آوت رے
 جُگن جُگن کرے پتیچھن، صاحب کا دل لاگ رے
 سو جہت ناہیں ہرم سُکھ ساگر، بنا پریم بیراگ رے
 سرون سُر بُجھ صاحب سے پورن پرگٹ بھاگ رے
 کہے کبیر سنو بھاگ ہمارا، پایا اچل سوہاگ رے
 زندگی کے محل میں خود شیو مہمان ہیں۔ تو کہاں پاگل بنا پھر رہا
 ہے۔ اپنے دیونا کی سیوا کر لے۔ رات بڑی تیزی سے چلی آرہی ہے،
 میرا انتظار کرتے کرتے نہ جانے کتنے جُگ بیت گئے۔ مالک کا دل
 مجھ سے لگ گیا ہے۔ پریم اور بیراگ کے بغیر مسرت کا بحر بیکراں
 دکھائی نہیں دیتا لیکن اب اپنے مالک سے محبت کا نغمہ سننے کے بعد
 میری قسمت جاگ اٹھی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ ہمارے بھاگ کیسے
 اچھے ہیں کہ کبھی نہ ختم ہونے والا سہاگ ملا ہے۔

گگن گھٹا گھبرانی سادھو، گگن گھٹا گھبرانی
 پورب دس سے اٹھی ہے بدریا، رم جھم برست پانی
 آپن آپن میڑ سَمہارو، بہیو جات یہ پانی
 سُر نرت کا بیل نہایں، کرے کھیت نروانی
 دھان کاٹ مار گھر آوے، سوئی مُکسل کسان
 دونوں تھار برابر پرسیں، جیوئیں مُنی اور گیانی
 آسمان پر بادل گرج رہے ہیں سادھو آسمان پر بادل گرج رہے ہیں۔
 پورب کی طرف سے گھٹا اٹھی ہے اور رم جھم رم جھم پانی برس
 رہا ہے۔ اپنے اپنے کھیت کی مینڈھ کو بچانے کی ترکیب کرو نہیں
 تو پانی سب کا سب بہ جائے گا۔ عشق اور بے تعلقی کی بیلوں کو بھٹکنے
 دو اور نجات کی کھیتی تیار کرلو۔ (یہ ترجمہ بھی ہو سکتا ہے، "مُسرت
 اور نرت کے بیلوں کو جوت کر نروان کی کھیتی کرلو") سمجھدار
 کسان وہی ہے جو دھان کو کاٹ کر گھر لے آتا ہے۔ اور دونوں تھالوں
 میں برابر کھانا نکالتا ہے جسے مُنی اور گیانی دونوں کھاتے ہیں۔

नैहरसे जियरा फाट रे ।
 नैहर नगरी जिनके बिगड़ी, उसका क्या घर-बाट रे ।
 तनिक जियरवा मोर न लागै, तन मन बहुत उचाट रे ।
 या नगरीमें लाख दरवाजा, बीच समुंदर घाट रे ।
 कैसेकै पार उतरिहैं सजनी अगम पंथका पाट रे ।
 अजब तरहका बना तंबूरा, तार लागै नन मातर रे ।
 खूँटी टूटी तार बिलगाना, कोउ न पूछत बात रे ।
 हँस हँस पूछै मातुपितासों, भोगे सासुर जात्र रे ।
 जो चाहैं सो वो ही करिहैं, पत वाहीके हाथ रे ।
 नहाय-धोय दुल्हन होय बैठी, जोहै पियकी बाट रे ।
 तनिक धुघटवा दिखाव सखीरी, आज सोहागकी गत रे ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, पिया-मिलन की आस रे ।
 मोर होत बंदे याद करोगे, नौद न आवे खाट रे ।

मों-बाप के घर से जी उकता गया है। जिसके नैहर की नगरी बिगड़ गयी, उसका न कोई घर है न रास्ता। अब तो तनिक भी जी नहीं लगता, तन-मन उचाट रहता है। इस नगरी में लाख दरवाजे हैं लेकिन बीच में समुद्र की बाधा है। सजनी, मैं कैसे पार उतरूँ, इस रास्ते का कोई मोर-छोर नहीं है।

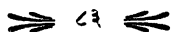
यह तंबूरा अजब तरह से बना है। जब इसके तार बजने लगते हैं तो मन मुग्ध हो जाता है। लेकिन जब खूँटी टूट जाती है और तार अलग होताजा है, तो फिर कोई उसकी बात नहीं पूछता। मैं हँस-हँसकर मों-बाप से पूछती हूँ कि मोर होते ही मैं समुद्राल जाऊँगी। जो चाहेंगे वही करेंगे, अब तो लाज उन्हीं के हाथ है। पिया की प्रतीक्षा में वह नहा-धोकर दुल्हन बनी बैठी है। सखी, तनिक अपना धूँघट उठाओ, आज सोहाग की गत है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि पिया से मिलने की आशा है। खाट पर नौद नहीं आती, सबह होगी तो मुझे याद करोगे।

نیہر سے جیرا بھاٹ رے
 نیہر نگرے جن کے بگڑی، اس کا کیا گھر باٹ رے
 تنک جیروا مور نہ لاگے، تن من بہت اچاٹ رے
 یا نگرے میں لکھ درواجا، بیچ سمندر گھاٹ رے
 کیسے کے پار اتریں سجنی، اکم ہستہ کا پاٹ رے
 عجب طرح کا بنا تنبورا، نار لگے من مات رے
 کھونٹی ٹوٹی نار بلگانا، کوو نہ پوچھت سات رے
 ہنس ہنس پوچھے مات پتا سوں، بھریں ساسر جاب رے
 جو چاہیں سو وو ہی کری ہیں، پت واہی کے ہاتھ رے
 بھائے دھوئے دلن ہوئے بیٹھی، جو ہے پیہ کی ناٹ رے
 تنک گھونگھٹا دکھاو سکھی ری، آج سواگ کی رات رے
 کہے کبیر سنو بھائی سادھو پیا ملن کی آس رے
 مہور ہوت بندے یاد کرو گے، نیند نہ آوے کھاٹ رے
 ماں باپ کے گھر سے جی اکٹا گیا ہے، جس کی یہ نگرے بگڑ گئی
 اس کا نہ کوئی گھر ہے نہ راستہ، اب تو ذرا بھی جی نہیں لگتا، تن
 من اچاٹ رہتا ہے، اس نگرے میں لاکھ دروازے ہیں لیکن بیچ میں
 سمندر حائل ہے، سجنی میں کیسے پار اتروں، اس راستے کا کوئی اور
 چھوڑ نہیں ہے۔

یہ تنبورا عجب ترکیب سے بنا ہوا ہے۔ جب اس کے نار بجنے لگتے
 ہیں تو دل نغمے میں کھو جاتا ہے۔ لیکن جب کھونٹی ٹوٹ جاتی ہے اور
 نار الگ ہو جاتے ہیں تو پھر کوئی اس کی بات نہیں پوچھتا۔

میں ہنس ہنس کر ماں باپ سے پوچھتی ہوں کہ صبح ہوتے ہی سسرال
 حانا پڑے گا۔ وہ جو چاہیں گے کریں گے اب تو عزت انہیں کے ہاتھ
 ہے۔ چونکہ پیا کا انتظار ہے اس لئے نہا دھو کر دلن بنی بیٹھی ہوں۔
 سکھی ذرا اپنا گھونگھٹ اٹھاؤ آج سواگ کی رات ہے۔ سنو بھائی سادھو
 کبیر کہتے ہیں کہ بیا سے ملنے کی امید ہے۔ ستر پر لیٹ کر نیند
 نہیں آئی، صبح ہوگی تو مجھے یاد کرو گے۔

(लीला) हैं। जल-थल, सारा संसार खेल है। पृथ्वी और आकाश ये भी खेल ही समझो। चारों ओर उसी की लीला व्याप्त है और इसी लीला में सारे संसार का अस्तित्व है। कबीर कहते हैं कि सारा संसार इसी खेल के अंदर है लेकिन खेलनेवाले को कोई नहीं पहचानता।



श्री श्री जंतर बाजै।

कर चरन बिहूना नाचै।

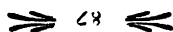
कर बिनु बाजै सुनै श्रवन बिनु

श्रवन ओता लोई।

पाट न सुबास सभा बिनु अवसर

ब्रह्मो मुनि-जन सोई ॥

यंत्र (बाजा) बज रहा है। हाथ हैं न पाँव लेकिन नाच हो रहा है। हाथ के बिना बाजा बज रहा है और कानों के बिना सुनायी दे रहा है। वही खुद कान है और वही सुननेवाला। न कोई सिंहासन है न कोई बैठने की जगह, और बिना किसी अवसर (दरबार) के सभा जमी हुई है जो इस रहस्य को जान ले वही असली मुनि है।



मोर फकिरवा मांगि जाय,

में तो देखहू न पौल्यो।

मंगनसे क्या मांगिये,

बिन मांगे जो देय।

कहैं कबिर मैं हौं वाही को,

होनी होय सो होय।

मेरा फकिर तो मोंगकर चला भी गया, लेकिन मैंने तो उसकी झलक भी नहीं देखी। मोंगनेवाले से मैं क्या मोंगूँ, वह तो बिन मोंगे देता है। कबीर कहते हैं कि मैं तो उसी का हूँ, अब जो होना है हो जाये।

کے دھاریے۔ خالق ایک ہے، زندگی اور موت، ہجر اور وصال سب اس کے کھیل ہیں۔ کھیل پانی کا، کھیل مٹی کا، کھیل سارے جہان کا، کھیل زمین اور آسمان کا۔ کائنات کی سرشت میں کھیل ہے اور کھیل ہی میں ساری کائنات ہے، کبیر کہتے ہیں کہ ساری دنیا اس کا (حسین و جمیل) کھیل ہے لیکن کھیلنے والے کو کوئی نہیں پہچانتا۔

» ۸۳ «

جھی جھی جنتِ باجے
کر چرنِ بھونا باجے
کر بنِ باجے سُنے شروںِ بن
شروںِ شروتا اوئی
باٹ نہ سساس سبھا بن اوسر
سو جھو مُس جن سوئی

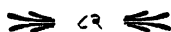
ساز بچ رہا ہے، ہاتھ ہیں نہ پاؤں لیکن ناچ پور رہا ہے۔ انگلیاں نہیں لیکن نغمہ ہے، کان نہیں ہیں لیکن سنائی دے رہا ہے۔ وہی خود کان ہے اور وہی سننے والا، دروازہ بند ہے اور اندر خوشبو پھری ہے۔ کوئی محفل آرا نظر نہیں آتا لیکن محفل سچی ہوئی ہے، بوجھنے والے اسے بوجھ لیں گے۔ (یہ ترجمہ بھی ممکن ہے » نہ تخت نہ دربار، پھر بھی محفل آراستہ ہے جو اس کو سمجھ لے وہی محرم راز ہے «)۔

» ۸۴ «

مور پھکروا مانگ جائے
میں تو دیکھو نہ پولیوں
منکر سے کیا مانگے
بن مانگے جو دیسہ
کہیں کبیر میں ہوں وہی کو
ہوئی ہوئی سو ہوئے

میرا فقیر مانگتا پھر رہا ہے لیکن میں نے تو اس کی جھلک بھی نہیں دیکھی مانگنے والے سے میں کیا مانگوں، وہ تو بن مانگے دیتا ہے، کبیر کہتے ہیں کہ میں تو اس کا ہوں جو ہونا ہے ہو جائے۔

कर्ता (सृष्टि का रचयिता) न कुछ खाता है न पीता है। वह न मरता है न जीता है। उसका न कोई रूप है न आकार (रेखा), न कोई रंग है न भेष। उसकी न कोई ज्ञात-प्राप्त है न गोत्र। उसकी महिमा मुझसे वर्णन नहीं की जाती। न उसका रूप है, न वह अरूप है, न उसका कोई नाम है। न उसका कोई रंग है, न बेरंग है। उसका कोई स्थान नहीं है।



कहें कबीर विचारिके, जाके चने न गोंध ।

निराकार और निर्गुना, है पूरन सब ठाँव ॥

करता आनंद खेल लाई, ओंकारते सृष्टि उपाई ॥

आनंद धरती आनंद आकास । आनंद चंद-सूर प्रकास ॥

आनंद आदि-भघ-ताग । आनंद अन्धकूप उजियारा ॥

आनंद सागर-समुद्र-तरंगा । आनंद समुत्ति जमुना-गंगा ॥

करता एक और सब खेल । मरन-जनम बिगड़ मेल ॥

खेल जल-थल-सकल जहाना । खेल जानौं जमी असमाना ॥

खेलका यह सकल पसारा । खेल मौंहि रहै संसारा ॥

कहैं कबीर सब खेलनमार्ही । खेलनहारकों चीन्हैं नार्ही

कबीर सोच-विचारकर कहते हैं कि वह जिसका न कोई वर्ण है न कोई ठिकाना, जो निराकार और निर्गुण है सारी सृष्टि उसी से पूर्ण है। वह कर्ता है जिसने आनंद का खेल शुरु किया और ॐ ध्वनि से सारी सृष्टि को जन्म दिया। आनंद पृथ्वी है आनंद आकाश है। चंद्र और सूरज का प्रकाश आनंद है। आदि, अंत और मध्य का क्रम आनंद है, अंधेरा आनंद है उजाला भी आनंद है। समुद्र आनंद है और उसकी लहरें आनंद हैं। आनंद हैं गंगा, जमुना और सरस्वती की धारा। कर्ता एक है और जन्म-मरण, विरह-मिलन सब उसके खेल

خالق (کرتا = کرتار) نہ کچھ کھاتا ہے نہ پیتا ہے ۔ وہ نہ مرنا ہے نہ جیتا ہے ، اس کا نہ کوئی روپ ہے نہ ریکھا (لکیر) نہ رنگ ہے نہ بھیس ۔ نہ اس کی ذات پات ہے نہ گوثر ، اس کی شان بیان سے باہر ہے ۔ نہ وہ مشکل ہے نہ شکل (نہ خوبصورت ہے نہ بدصورت) اس کا کوئی نام نہیں ہے ۔ نہ وہ رنگ میں اسیر رہا اور نہ رنگ سے آزاد ہے ۔ اس کا کوئی مقام نہیں ہے ۔

(یہ نظم اگر ایک طرف ان معنوں میں خالص ویدانت ہے کہ برہما مکمل عدم اور مکمل خاموشی (شونہ) ہے تو دوسری طرف ہمہ اوست کی تشریح ان معنوں میں ہے کہ کائنات کی کسی چیز سے الگ اس کا وجود نہیں ۔ وہ سب کچھ ہے الگ کچھ نہیں ہے)

» ۸۲ «

کہیں کبیر وچار کے جا کے برن نہ گاؤں
نراکار اور برگسا ، ہے پورن سب لھاؤں
کرنا آند کھیل لائی ، اونکارتے سرشتی اپانی

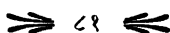
آند دھرتی آند اکاس	آند چند سور پرکاس
آند آد انت مدھ تارا	آند اندھ کوپ اجبارا
آند ساگر سمدر ترنگا	آند سرستی حمنا گنگا
کرنا ایک اور سب کھیل	مرون جنم سرہ میل
کھیل جل نھل سکل جہانا	کھیل حانوں جمی اسمانا
کھیل کا یہ سکل پسارا	کھیل ماہی رہے سنسارا
کہیں کبیر سب کھیلن ماہیں	کھیلن ہار کو چینہیں ناہیں

کبیر سوچ وچار کے بعد کہتے ہیں کہ وہ جس کی نہ کوئی ذات پات ہے نہ کوئی ٹھکانہ ، جو جسم سے پاک اور صفات سے بے نیاز ہے ، اُس کامل سے ساری کائنات بھری ہوئی ہے ۔ وہ خالق ہے جس نے مسرت اور سعادت کا کھیل شروع کیا ہے اور اوم کے لفظ سے کائنات کی تخلیق کی ہے ۔ زمین مسرت ہے ، آسمان مسرت ہے ، چاند کا نور اور سورج کی روشنی مسرت ہے ، ازل مسرت ہے ، ابد مسرت ہے ، ارتقا مسرت ہے ، اندھیرا مسرت ہے ، اجالا مسرت ہے ، سمندر مسرت ہے ، اس کی لہریں مسرت ہیں ، مسرت ہیں گنگا اور جمنا اور سرسوتی

साईं मिलानी मुख दिलानी।

निर्गन-सर्गुन भेद भिटानी॥

सत्य नाम सबसे न्यारा है। निर्गुण और सगुण केवल शब्द हैं। निर्गुण बीज है और सगुण फल और फूल। ज्ञान उसकी डाल है और नाम उसकी जड़। जो जड़ तक पहुँच गया, उसे सब सुख मिल गये। जो डाल-पात में उलझ गया वह जड़ तक कभी नहीं पहुँचा। साईं से मिलन सुख प्राप्त करना है और उससे निर्गुण और सगुण का भेदभाव भिट जाता है।



प्रथम एक जो आपै आप। निरकर निर्गुन निर्जाप।

नहिं तव आदि-अन्त-मध-तारा। नहिं तव अंध धुंध उजियारा॥

नहिं तव भूनि पवन-आकासा। नहिं तव पायक-नीम-निवासा॥

नहिं तव सगुति-जमुना-गंगा। नहिं तव मागर-समुद्र-संगा॥

नहिं तव पाप-पुत्र नहिं वेद-पुराना। नहिं तव मये कतेब कुराना॥

कहैं कबीर विचारिकै, तब कुछ किम्पा नाहिं।

परम पुरुष तहँ आपही, अगम-अगोचर माहिं॥

करता कुछ खावै नहिं पीवै। करता कबहूँ भौ न जीवै॥

करताके कुछ रुप न रेखा। करता के कलु बगन न भेखा॥

जाके जात-गोत कुछ नाहीं। महिमा बगनि न जाय मो पाहीं।

रूप-अरूप नहिं तेरा नाँव। बर्न-अबर्न नहीं तेहि ठाँव॥

आरंभ में वह अकेला था और वह निराकार निर्गुण और उसका कोई वर्णन नहीं किया जा सकता था। न तो आदि था, न अन्त था और न मध्य, यह क्रम था ही नहीं। तब न अँधेरा था, न धुँधलका, न उजाला। न पृथ्वी थी, न हवा थी, न आकाश था। न आग थी न पानी। न गंगा, जमुना और सरस्वती नदियाँ थीं, न समुद्र और उसकी लहरें। तब न पाप था न पुण्य, न वेद और पुराण थे न कुरान। कबीर सोच-विचारकर कहते हैं, तब तक कोई (ईश्वर की) लीला दिखायी नहीं देती थी। परम-पुरुष अगम और अगोचर की गहराइयों में खोया हुआ था।

سائیں ملانی سکھ دلانی
نرگن سرگن بھید مٹانی

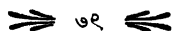
ست نام سب سے نیارا ہے۔ (ایسا نام کوئی نہیں) نرگن (بے صفات)
اور سرگن (صاحب صفات) صرف الفاظ ہیں۔ نرگن بیج ہے اور
سرگن پھل اور پھول گیان اس کی شاخ ہے اور نام اس کی جڑ۔
جو جڑ تک پہنچ گیا اس نے مسرت حاصل کر لی۔ جو ڈال پات میں
الچھ گیا وہ جڑ تک کبھی نہیں پہنچا۔ مالک (سائیں) سے ملاقات
مسرت کا حصول ہے اور اس سے نرگن اور سرگن کے بھید ہٹاؤ
مٹ جانے ہیں۔

۸۱

پرہم ایک جو آپے آپ نرگر نرگن نرجاپ
نہیں تو آد انت مدھ تارا
نہیں تو بھومی پون آکسا
نہیں تو ساگر سمد ترنگا
نہیں تو پاپ پن نہیں وید پرانا
نہیں تو بھئے کنب کیرانا
کہیں کبیر وچار کے تب کچھ کرپا ناہیں
پرہم پرش نہاں آپ ہی، اگم اکو چرماہیں
کرتا کچھ کھاوے نہیں پیوے
کرتا کے کچھ روپ نہ ریکھا
جا کے جات گوت کچھ ناہیں
روپ اروپ نہیں تیرا ناؤں
برن ابرن نہی تہہ لھاؤں

ازل میں وہ اکیلا تھا اور اس کا اپنا وجود ہی اس کے لئے کافی تھا،
وہ جس کا نہ رنگ ہے نہ روپ ہے، وہ جو بے صفات ہے۔ نہ تو ابتدا
تھی، نہ ارتقا (مدھ = وسط) نہ انتہا، نہ اندھیرا تھا، نہ دھندلکا تھا،
نہ اجالا۔ نہ زمین تھی، نہ ہوا تھی۔ نہ آسمان، نہ آگ تھی نہ پانی۔
نہ گنگا جمنا اور سرسوتی کے دھارے تھے، نہ سمندر تھا نہ موجیں
نہ گناہ تھا، نہ ثواب، نہ وید پُران تھے نہ قرآن۔ کبیر سوچ بچار کے
بعد کہتے ہیں کہ تب کوئی حرکت اور جنبش نہیں تھی، ذات مطلق
(پرہم پرش = ذات اعلیٰ) اپنی خودی کی نا معلوم اور لا محدود گہرائیوں
میں کھوٹی ہوئی تھی۔

कबीर कहते हैं कि ऐ बंदे, क्यों दुख उठाता है, वह तो तेरे अस्तित्व में व्याप्त है। अपने आपको पहचानो, कबीर, वह सर से पाँव तक तुम में बसा हुआ है। आनंद-मंगल गाओ और अपने मन को स्थिर रखो।



ना मैं धर्मी नहीं अधर्मी, ना मैं जती न कामी हो।
 ना मैं कहता ना मैं सुनता, ना मैं सेवक-स्वामी हो।
 ना मैं बंधा ना मैं मुक्ता, ना मैं विरत न रंगी हो।
 ना काहूँसे न्यारा हुआ, ना काहूँके संगी हो।
 ना हम नरक-लोकको जाते, ना हम सुर्ग सिधारे हो।
 सब ही कर्म हमारा कीया, हम कर्मनतें न्यारे हो।
 या मतको कोई बिरलै बूझै, सो अटल हो बैठे हो।
 मत कबीर काहूँको थापै, मत काहूँको मेटे हो॥

न मैं धर्मात्मा हूँ न अधर्मी। न मैं ब्रह्मचारी हूँ न कामुक। न मैं बोलता हूँ न सुनता हूँ। न मैं सेवक (उपासक) हूँ न स्वामी (प्रभु)। न मैं बंधा हुआ हूँ न मुक्त हूँ, न मैं विरक्त हूँ न आसक्त (रंगी)। न किसी से अलग हूँ न किसी के साथ। न हम नरक लोक को जाते हैं, न स्वर्ग को सिधारते हैं। सब कर्म हमने किये हैं लेकिन हम कर्म से अलग हैं। इस मत के समझनेवाले बिरले ही हैं, लेकिन जिसने समझ लिया वह अटल होकर बैठ गया। कबीर ने न तो किसी मत की स्थापना की है, न किसी मत को मिटाया है।



सत्त नाम है सबत न्यारा।
 निर्गुन-सर्गुन शब्द पसारा॥
 निर्गुन बीज सर्गुन फल-फूला।
 साखा ज्ञान नाम है मूला॥
 मूल गहेतें सब सुख पावै।
 डाल-पातमें मूल गँवावै॥

اے بندے (داس) کیوں دکھ اٹھاتا ہے۔ وہ تو تیرے وجود میں جاری اور ساری ہے۔ اپنے آپ کو پہچانو کبیر وہ سر سے پاؤں تک تم میں بسا ہوا ہے۔ خوشی کے گیت (آند منگل) گاؤ اور دل کا سکون باقی رکھو۔

» ۷۹ «

نا میں دھرمی ناہیں ادھرمی، نامیں جتنی بہ کامی ہو
 نامیں کہنا نا میں سنتا، نامیں سیوک سوامی ہو
 نا میں بندھا نا میں مکتا، نامیں برت نہ رنگی ہو
 نا کاہو سے نیارا ہوا، نا کاہو کے سنگی ہو
 نا ہم نرک لوک کو جانے نا ہم سرگ سدھارے ہو
 سب ہی کرم ہمارا کیا، ہم کرم تیں نیارے ہو
 با مت کو کوئی برائے بوجھے، سو اثر ہو بیٹھے ہو
 مت کبیر کاہو کو تھاپے، مت کاہو کو میٹھے ہو
 نہ میں دھرمی ہوں اور نہ ادھرمی، نہ میں قانون کا بندہ (برہم چاری)
 ہوں اور نہ خواہشوں کا غلام۔ نہ میں بولتا ہوں نہ میں سنتا ہوں۔ نہ
 میں عابد ہوں نہ معبود۔ نہ میں جبر کے قبضے ہوں نہ اختیار کے۔
 نہ میرا کسی سے تعلق ہے نہ میں بے تعلق ہوں۔ نہ میں کسی سے
 دور ہوں نہ کسی سے قریب۔ نہ ہم جہنم میں جاتے ہیں نہ جنت کا
 راستہ لیتے ہیں۔ سب کام ہم نے کیے ہیں لیکن ہر کام سے بے نیاز ہیں۔
 اس فلسفے (مت) کے سمجھنے والے کم ہیں۔ لیکن جس نے سمجھ
 لیا وہ مطمئن ہو گیا۔ کبیر نہ تو کسی مت کا بانی ہے اور نہ کسی مت
 کا مٹانے والا۔

» ۸۰ «

ست نام ہے سب تیں نیارا
 نرگن سرگن شبد پسارا
 نرگن بیچ سرگن پھل پھولا
 ساکھا گیان نام ہے مولا
 مول کہے تیں سب سکھ پاوے
 ڈال پات میں مول گنواوے

जे करतातै ऊपजे, तासों परी गयो बीच ।
 अपनी बुद्धि विवेक-विन, सहज बिसाही बीच ॥
 यहिमेंते सब मत चलै, यही चल्यो उपदेस ।
 निश्चय गहि निर्भय रहो, सुन परम तत्त संदेस ॥
 कहि गावो केहि ध्यावहु, छोड़ो सकल धमार ।
 यह हिरदे सबको बसे, क्यों संवो मुन्न-उजाड़ ॥
 दूरहि करता थापिकै, करी दूरकी आस ।
 जो करता दूरै हुतै, तो को जग सिरजै पास ॥
 जो जानो यहै है नहीं, तो तुम धावो दूर ।
 दूरसे दूर भ्रमि भ्रमि, निष्फल मरो विसूर ॥
 दुरलभ दगसन दूरके, निथर सदा सुख-वास ।
 कहैं कबीर मोहि व्यापिया, मत दृग्व पावै दास ॥
 आप अपनपौ चीन्हहु, नख-सिख सहित कबीर ।
 आनंद-मंगल गावहु, होहि अपनपौ श्रीर ॥

सुनो साधु, कबीर कहते हैं कि हमारा वचन अमृत है । अगर भला चाहते हो तो हमारे वचन को परखो और उस पर विचार करो । तुम अपने कर्ता (रचयिता, सृजक) से अलग हो गये हो । तुमने अपनी बुद्धि खो दी है और सहज ही मौत को मोल ले लिया है । सारे मत यहाँ से चलते हैं, सारे उपदेश यहाँ से निकलते हैं । मन में निश्चय पैदा करो और भय त्याग दो और परम सत्य का संदेश मुझसे सुनो । तुम किस के गीत गाते हो, किसका ध्यान करते हो । अरे, साकार के इस भ्रम से बाहर निकलो । वह तो सबके हृदय में बसता है फिर उजाड़ और निर्जन स्थानों में मारे-मारे फिरने से क्या फायदा । अगर तुमने सृष्टि को दूर रखा है तो स्पष्ट है कि तुम दूरी की पूजा कर रहे हो । अगर कर्ता (ईश्वर) सचमुच दूर है तो फिर इस आस-पास की दुनिया को किसने पैदा किया है । अगर तुमने उसको दूर समझ लिया है तो तुम दूर से दूर उसकी खोज में जाओगे, लेकिन वह गेने-बिसूरने और औसू बहाने से भी नहीं मिल सकता । जब वह दूर है तो उसका दर्शन भी दूर है । जब वह पास है तो सदा सुख ही सुख है ।

جسے کرتا نہیں اوہجے تاسوں پر گویا بیچ
 اپنی بُدھی وویک بن، سہج سہا ہی میچ
 یہی میں تے سب مت چلے، یہی چلیو اُپدیس
 شچنے گہ رہئے رہو، سُن پر م تَت سندیس
 کیہی گاؤ کیہی دھیا وہو، چھوڑو سکل دھمار
 یہ پردے سب کو سے، کیوں سیو سُن اجاڑ
 دور ہی کرتا تھاپ کے، کری دور کی اُس
 جو کرنا دورے ہتے، تو کو حگ سر جے پاس
 جو جاو یہاں ہے نہیں، تو تم دھاوو دور
 دور سے دور بھرم بھرم شہل مرو سور
 درلھ درسن در کے، بیر سدا سکھ پاس
 کہیں کبیر مونہ ویا پنا، مت دکھ پاوے داس
 آپ اپن پوچینہو، نکھ سکھ سہت کبیر
 آنند منگل گاؤ ہو ہی اپن پونہیر

سنو سادھو کبیر کہتے ہیں کہ »ہمارا بچپن امرت ہے (ہماری بات
 لا فانی ہے) اگر اپنا بھلا چاہتے ہو تو ہمارے بچپن کو پرکھو اور اس
 پر غور کرو۔ تم اپنے خالق سے بیگانے ہو گئے ہو۔ تم نے اپنی عقل کم
 کر دی ہے اور موت کو خرید لیا ہے۔ تمام فلسفے ہیں سے چلے ہیں
 تمام تعلیمات ہیں سے نکلی ہیں، یقین پیدا کرو اور بے خوف ہو جاؤ
 اور عظیم صداقت کا پیام مجھ سے سنو۔ تم کس کے گیت گاتے ہو،
 کس کا دھیان کرتے ہو، ارے شکلوں کے اس فریب سے باہر نکلو؛
 وہ تو سب کے دل میں بستا ہے پھر اجاڑ ویرانوں میں مارے مارے
 پھرنے سے کیا فائدہ، اگر تم نے گرو کو دور رکھا ہے تو ظاہر ہے
 کہ تم دوری اور فاصلے کی پوجا کر رہے ہو، اگر مالک واقعی دور
 ہے تو پھر اس اُس پاس کی دنیا کو کس نے پیدا کیا ہے، اگر تم
 نے اس کو دور سمجھ لیا ہے، تو پھر تم دور سے دور اس کی
 تلاش میں جاؤ گے لیکن وہ رونے بسورنے اور آنسو بہانے سے بھی نہیں
 مل سکتا۔ جب وہ دور ہے تو پھر اس کا درشن بھی دور ہے، جب
 وہ پاس ہے تو صرف مسرت اور سعادت ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ

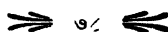
वहैं। रूप-स्वरूप कुछ नहीं है, और ठौर-ठाँव कुछ दिखायी नहीं देता।
 उसका विस्तार दृष्टि से ओझल है, फिर कैसे कहूँ कि उसकी गणना (सुमारा-
 शुमार) की जा सकती है।

जिसपर साईं की कृपा होगी वही अनहद मार्ग को पा सकता है।
 जिसे उसका दीदार (दर्शन) हो गया उसके लिये उद्भव और प्रलय के बंधन
 मिट गये।

कबीर कहते हैं कि उसका वर्णन मुख से नहीं किया जा सकता, कारण
 पर लिखा नहीं जा सकता। जैसे अगर गूँगा आदमी गुड़ खा ले तो उसकी
 मिठास का वर्णन कैसे कर सकता है।



चल हंसा वा देस जहँ पिया बसै चितचोर।
 सुरत सोहागिन है पनिहारिन, भरै टाढ़ बिन डोर॥
 वहि देसवाँ बादर ना उमड़ै रिमझिम बरसै मेह।
 चौबारेमें बैठ रहो ना, जा भीजहु निर्देह॥
 वहि देसवामें नित पूर्णिमा, कबहुँ न होय अँधेर।
 एक सुरजकै कवन बतावै, कोटिन सुरज ऊँजै॥
 ऐ हंस, उस देश चल जहाँ चितचोर पिया रहता है, जहाँ सुरतकी सुहागिन खड़ी
 हुई बिना डोर के पानी भर रही है। उस देश में बादल घिरकर नहीं आते लेकिन
 मेह रिमझिम बरसता है। चौबारे में मत बैठ, बाहर निकल और निदेह (बिना
 शरीर का अस्तित्व) इस पानी में भीग। उस देश में हमेशा पूर्णिमा रहती है
 और अँधेरा कभी नहीं होता। एक सुरज की बात कौन करता है, वहाँ तो
 करोड़ों सुरज चमक रहे हैं।



कहैं कबीर सुनो हो साधो, अमृत-बचन हमारा।
 जो भल चाहो अपनो, परखो करो बिचार॥

بڑی صداقت ہے اور تمام صداقتیں اسی میں عموماً ہیں۔ دانش اور فلسفے کی رسائی سے دور اس کے وجود میں تخلیق کا کھیل جاری ہے جو خود سب سے نیارا ہے۔ بھائی وہ احدیت (یکتائی) کی دنیا ہے جس کے مالک (پُرش) کا کوئی نام نہیں ہے کوئی بیان نہیں ہے، جو وہاں پہنچے گا وہی جانے گا، کہنے سننے کی کوئی گنجائش نہیں ہے۔ وہاں روپ سروپ کچھ نہیں ہے۔ کوئی مقام دکھائی نہیں دیتا۔ عرض و طول کچھ نظر نہیں آتا۔ پھر کیسے کہوں کہ اس کا شمار کیا جاسکتا ہے۔ جس پر معبود (سائیں) کی عنایت ہے وہی صوتِ سرمدی کا راز پاسکتا ہے۔ جسے اس کا دیدار ہو گیا اس کے لئے ازل اور ابد بے معنی ہیں۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس کا بیان زبان سے نہیں کیا جاسکتا، کاغذ پر لکھا نہیں جاسکتا، یہ ایسا ہی ہے جیسے گونگے نے گڑ کھایا ہو، اس کا ذائقہ کیسے بیان ہو سکتا ہے۔



چل ہنسوا دیس جہاں پیا بسے چت چور
 سُرت سوہاگن ہے پنہارن بھرے ٹھاڑھ بن ڈور
 وہ دیسواں بادر نا امڑے رم جھم برسے مہ
 چوہارے میں بیٹھ رہو نا، جا بھیجہ نردیہ
 وہ دیسوا میں نت پورنما کب ہوں نہ ہوئے اندھیر
 ایک سُرج کے کون بتاوے، کوئن سُرج اُنحیر
 اے ہنس اُس دیس چل جہاں دل چرا لینے والے پیا کی نگری ہے
 جہاں پر پریم کی سہاگن کھڑی ہوئی بغیر ڈور کے پانی بھر رہی ہے۔
 اُس دیس میں بادل گھر کے نہیں آنے لیکن مینہ رم جھم برستا ہے۔
 چوہارے میں مت بیٹھ، باہر نکل اور اپنے بغیر جسم کے وجود
 (نردیہ) کو بھیگ جانے دے۔ اُس دیس میں چاندنی ہمیشہ کھلی رہتی
 ہے اور اندھیرا کبھی نہیں ہوتا، ایک سورج کی بات کون کرنا ہے
 وہاں تو کروڑوں سورج چمک رہے ہیں۔ (ہنس = روح = دل)



کہیں کبیر سنو ہو سادھو امرت بچپن ہمار
 جو بھل چاہو آہنو، پرکھو کرو بچار

जो पढ़ेंचे जानेगे वाही

कहन सुनते न्यारा है ॥ ९ ॥

रूप-सरूप कछु वहाँ नाहीं,

ठौर-ठाँव कछु दीसै नाहीं ।

अजर-तूल कछु दृष्टि न आई

कैसे कहैं सुमारा है ॥ १० ॥

जापर किरपा करिहै साई

अनहद मारग गावै ताही ।

उद्वव परलय पावत नाहीं

जब पावै दीदारा हो ॥ ११ ॥

कहैं कबीर मुख कहा न जाई

ना कागदपर अंक चढ़ाई ।

मानों गूँगे सम गुड़ खाई

कैसे बचन उचारा हो ॥ १२ ॥

वहाँ सुख की लिला अनंत है और व अपार रास-विलास है । यह मिल जाए तो दुनिया का सारा खोना और पाना व्यर्थ है । वही अनंत अपार निर्वाण है । इसी में सारे लोक में सुरति (प्रेम) का अस्तित्व है । सत्पुरुष ने नया तन धारण किया है, हर रूप में उसी (साहब) की शक्ल दिखायी दे रही है ।

बाग महक रहे हैं और फुलवारीयों खिली हुई हैं, अमृत की धारा बह रही है । वहाँ हंस (आत्मा) मगन होकर किड़ा कर रहे हैं और अनहद नाद आकाश में गूँज रहा है ।

उसके बीच में वह सिंहासन लटका हुआ है जिस पर महापुरुष विराजमान है । और उसका दर्शन इतना नयनाभिराम है कि उसके एक बाल की ज्योति से लाखों सूरज शरमा जाते हैं ।

पंथ के बिना सत्-राग गूँज रहा है जो दिल में उतर जाता है । जन्म-जन्म की अमृत-धारा बह रही है और अमृत की फुहार पड़ रही है ।

वह जिसे शून्य समझा जाता वही सबसे बड़ा सत्य है, उसी में सत्य का भंडार है नितःत्व रचना उसी से हुई है, जो सबसे न्यारा है ।

भाई वह अनंत लोक वहाँ है जिसके पुरुष (स्वामी) का कोई नाम नहीं है और उसका वर्णन नहीं किया जा सकता । जो वहाँ पहुँचेगा वही जानेगा, कहने-सुननेकी कोई गुंजाइश नहीं है ।

جو پہنچے جانیکے واہی
 کہن سنن تے نیارا ہے
 رُوپ سَرُوپ کچھو وہاں ناہیں
 ٹھور ٹھاؤں کچھو دیسے ناہیں
 اجر تول کچھ درشت نہ آئی
 کیسے کموں سمارا ہے
 جا پر کرپا کرہے سائیں
 ان ہد مارگ گاوے ناہی
 اُدھو پرلے پاوت ناہیں
 جب پاوے دیدارا ہو
 کہیں کبیر مکھ کہا نہ جانی
 نا کاگد پر انک چڑھانی
 مانوں گونگے سم گڑ کھانی

کیسے بچن اُچارا ہو
 وہاں سُکھ کا کھیل مسلسل جاری ہے اور سعادت اور مُسرت
 ابدی ہے۔ یہ مل جائے تو دنیا کا سارا کھونا اور پانا بے معنی
 ہے۔ (حاصل کرنے کی جد و جہد اور تِج دینے کی لذت ختم ہو جانی
 ہے) وہی لاحدود نروان ہے۔ اسی سے ساری کائنات میں عشق (مُرت)
 کا ظہور ہے۔ ذات حق (ست پرش) سے نئے نئے اجسام کے دھارے
 بہ رہے ہیں اور ہر روپ میں اسی (صاحب) کی شکل دکھائی دے رہی
 ہے۔ باغ مہک رہے ہیں اور پھلواڑیاں کھلی ہوئی ہیں، امرت کی لہریں
 جاری ہیں، وہاں ہنس (روح) خوش ہو کر ناچ رہا ہے اور لاحدود نفعے
 کے بادل چھائے ہوئے ہیں، اس کے بیچ میں وہ سنگھاسن معلق ہے
 جس پر مہا پرش (ذات پاک) براجمان ہے اور اس کا دیدار ایسا
 دلکش ہے کہ اس کے ایک بال کی روشنی سے لاکھوں سورج شرما
 جاتے ہیں۔

کوئی راہ نہیں ہے پھر بھی صوت سرمدی گونج رہی ہے جو دل میں
 اتر جاتی ہے۔ جنم جنم کا امرت دھارا بہ رہا ہے اور ابدیت کا پھوار
 بڑ رہی ہے۔ وہ جسے شونہ (خلا) سمجھا جاتا ہے وہی سب سے

(इस ब्रह्मांड में होते हुए भी) ब्रह्मांड से परे हैं। सारा जगत सत्य की नगरी है, इसकी टेढ़ी-मेढ़ी गलियों में मन भटक जाता है। यह कैसा अजीब खेल है कि इन मार्गों पर जो पैरों के बिना चलता है वही मंजिल तक पहुँचता है।

(२) लीला सुख अनन्त वहाँ की
जहाँ रास विज्ञास अपारा है,
गहन-तजन छूटे यह पाई
फिर नहीं पाना सताना है ॥ ३ ॥
पद निरञ्जन है अनन्त अपारा
सुगति मूर्ति लोक पसागा,
सत्तपुरुष नूतन तन धारा
साहिब सकल रूप साग है ॥ ४ ॥
बाग-अगीचे खिली फुलवारी
अमृत-लहरें हो रहीं जारी
हंसा केल करत तहँ भारी
जहँ अनहद धूरै अपारा है ॥ ५ ॥
तामघ अधर सिंहासन गाजै
पुरुष महा तहँ अधिक विराजै
कोटिन सूर रोम इक लाजै
ऐसा पुरुष दीढाग है ॥ ६ ॥
पंथ बिना सतराग उचारै
जो बेधत हिये भँझारा है।
जन्म जन्मका अमृत धारा
जहँ अधर-अमृत फुहाग है ॥ ७ ॥
सतसे सत्त सुन कहलाई,
सत्त भँडार याहीके मँही।
निःतत रचना ताहि रचाई
जो सबहिनतें न्याग है ॥ ८ ॥
अहद लोक वहाँ है भाई,
पुरुष अनामी अकह कहाई।

کے اور تب محسوس ہوگا کہ وہ (اس دنیا میں ہوتے ہوئے بھی) اس دنیا سے ماورا ہے۔ یہ جگت سب کی فکری ہے، اس کی ٹیڑھی بانکی پگڈنڈیاں دلکش ہیں۔ یہ کیسا عجیب کھیل ہے کہ ان راہوں پر قدم رکھے بغیر ہی چلتے والے منزل پر پہنچ جاتے ہیں۔

لیلا سُکھ انتت وہاں کی (۲)

جہاں راسِ ولاس اپارا ہے

کہن تچن چھوٹے بہ پائی

پھر نہیں پانا ستانا ہے

پد نرمان ہے است اپارا

سُرت مورتِ لوک پَسارا

ست پُرش نو تن تن دھارا

صاحبِ سکل روپ سارا ہے

ناگ بگیچے کھلی پھلواڑی

امرت لہریں ہو رہیں جاری

ہنسا کیل کرت تنہ بھاری

جہاں ان حد گھورے اپارا ہے

نا مدھ ادھر سنہاسن گاجے

پرش مہاتماں ادھک براجے

کوئن سور روم اک لاجے

ایسا پرش دیدارا ہے

پنتھہ بنا ست راگ اُچاریں

جو بیدھت پیٹے منجھارا ہے

جنم جنم کا امرت دھارا

جہاں ادھر امرت پُہارا ہے

ست سے ست سُن کھلائی

ست بھنڈار باہی کے مانہی

نہت رچنا تاہ رچائی

جو سہن تیں نیارا ہے

احد لوک وہاں ہے بھائی

پُرش انامی اکھا کھائی



बेद कहे सगुनके अगे निगुनका बिसराम ।

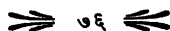
सगुन-निगुन तजहु सोहागिन, देख सबहि निज धाम ।

सुख दुख वहाँ कछु नहीं व्यापै, दरसन आठो जाम ।

नूर ओदन नूर ड़ासन, नूरका सिगहान ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सतगुरु नूर तमाम ॥

वेदों में कहा गया है कि सगुन (सगुण) के आगे निगुन (निर्गुण) फैला हुआ है। ऐ सुहागिन सगुण-निर्गुण के क्रमेलों में तुझे क्या मिलेगा, देख हर जगह तेरा घर है। वहाँ जीव और दुख कुछ नहीं है। आठों पहर हर तरफ दर्शन ही दर्शन है। नूर (प्रकाश) की चादर है, नूर का बिछौना है, नूर के तकिये हैं। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि सतगुरु सिरसे पैर तक नूर ही नूर है।



(१) तू सूरत नैन निहाग वह अंडमें सारा है ।

तू हिरदे सोच बिचार यह देश हमारा है ।

सतगुरु दरस होय जब भाई,

वह दें तुमको प्रेम चिताई,

सुरत-निरतके भेद बताई,

तब देखे अण्डकै पारा है ॥

सकल जगत्मे सतकी नगरी,

चित्त भुलावे बांकी डगरी,

सो पहुँचे चाले बिन पग री,

ऐसा खेल अपारा है ॥

तू उसकी सूरत अपनी आखों में बसा ले और देख कि सारा ब्रह्मांड उसी से भरा हुआ है। तू हृदय में सोच तो मालूम होगा कि यह सारा देश तेरा अपना है। जिस दिन सतगुरु के दर्शन होंगे उस दिन प्रेम जाग उठेगा, सुरत (प्रेम) और निरत (वैराग्य) के सारे रहस्य प्रगट हो जायेंगे और तब मालूम होगा कि वह

» ۷۵ «

بید کہے سرگن کے آگے نرگن کا بسرام
 سرگن نرگن نیچ بو سو پاگن ، دیکھ سب ہی نیچ دھام
 سکھ دکھ وہاں کچھو نہیں و یاہے ، درسن آٹھو جام
 نور اوڑھن نورے ڈاسن ، نورے کا سرپان
 کہے کبیر سنو بھائی سادھو ، ست گرو نور تمام
 ویدوں کا کہنا ہے کہ سرگن کے آگے نرگن پھیلا ہوا ہے ، (صفات
 کی آڑ میں بے صفات چھپا ہوا ہے) اے سہاگن سرگن اور نرگن
 کے جھمیلوں میں تجھے کیا ملے گا ، دیکھ ہر مقام تیرا مقام ہے ، وہاں
 سکھ اور دکھ کا دھندلکا نہیں ہے ، آٹھوں پہر چاروں طرف درشن ہی
 درشن ہے (دیدار ہی دیدار ہے) نور کی چادر ہے ، نور کی مسند
 ہے ، نور کا تکیہ ہے ، سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ ست گرو
 سر ! نور ہے ۔

» ۷۶ «

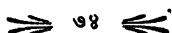
تو صورت نین بہار ، وہ انڈ میں سارا ہے
 تو پردے سوچ بچار یہ دیش ہمارا ہے
 ست گرو درس ہوئے جب بھائی
 وہ دیں تم کو پریم چٹائی
 سرت نرت کے بھید بتائی
 تب دیکھے انڈ کے بارا ہے
 سکل جگت میں ست کی نگری
 چت بھلاوے بانکی ڈگری
 سو پہنچے جالے بن بگ ری
 ایسا کھیل اپارا ہے

تو اس کی صورت اپنی آنکھوں میں بسا لے اور دیکھ کہ یہ دنیا
 اس کے وجود سے بھری ہوئی ہے ۔ دل میں سوچ تو معلوم ہوگا کہ
 یہ سارا دیس تیرا اپنا ہے ۔ جس دن ست گرو کے درشن ہوں گے اس
 دن عشق جاگ اٹھے گا ، تعلق اور بے تعلق کے سارے راز کھل جائیں

दास कबीर गींव निगुन हो, साधो करि ले बिचार ।

नरम-गरम सौदा करि ले हो, आगे हाट ना बाजार ॥

गौने का दिन आ गया है और दिल खुशी से फूला नहीं समाता । वे हमारी डोली जंगल में उठा लाये हैं जहाँ मेरा कोई नहीं है । ऐ कहार, मैं तेरे पाँव पड़ती हूँ, पल भर के लिये डोली नीचे रख दे, मैं अपनी सखियों, सहेलियों और घरवालों से विदा तो हो लूँ । कबीरदास निर्गुण होकर (संसार के माया-मोह से मुक्त होकर) गा रहे हैं कि “ऐ साधु, नरम-गरम जो भी सौदा करना हो जल्दी से कर लो क्योंकि आगे कोई हाट कोई बाजार नहीं है ।”



अरे दिल,

प्रेमनगरका अन्त न पाया, ज्यों आया त्यों जावैगा ।

सुन मेरे साजन सुन मेरे मीता, या जीवन में क्या क्या बीता ॥

सिर पाहनको बोझा लीता, आगे कौन छुड़ावैगा ।

पगली पाग मेग मीता खड़िया, उस मिलनेका ध्यान न धरिया ।

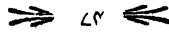
टूटी नाव उपर जो बैठा, गाफिन गोता खावैगा ॥

दास कबीर कहैं समुझाई, अन्तकाल तेग कौन सहाई ।

चला अकेला संग न कोई, किया आपना पावैगा ॥

ओ दिल, आखिर तुझे प्रेमनगर का अंत नहीं मिला (प्रेम का मर्म समझ में नहीं आया) । तू जैसे आया है वैसे ही जायेगा । सुन मेरे साजन, सुन मेरे मीत, इस जीवन में क्या क्या नहीं बीत चुकी है । तूने अपने सर पर पत्थरों का बोझ उठा रखा है, इस बोझ को कौन हल्का करेगा । मीत (मित्र) तो दूसरे किनारे पर खड़ा है । तुमने उससे मिलने की कोई तरकीब नहीं निकाली । तू टूटी हुई नाव पर बैठा है, गाफिल तू ज़रूर पोता खायेगा । दास कबीर समझाकर कहते हैं अन्तकाल में तेरा कोई सहारा नहीं है । तू अकेला जा रहा है, कोई संगी-साथी नहीं है । तूने अब तक जो किया है उसका फल तुझे मिलेगा ।

داس کبیر گاویں فرگن ہو، سادھو کرلے بچار
 نرم گرم سودا کرلے ہو، آگے ہاٹ نا باچار
 گونے (دولہن کی رخصت) کا دن آگیا اور دل خوشی سے پھولا نہیں
 سماتا، وہ میری ڈولی جنگل میں اٹھا لائے ہیں جہاں میرا کوئی نہیں ہے،
 اے کھار میں تیرے پاؤں پکڑتی ہوں، پل بھر کے لئے ڈولی نیچے رکھ
 دے، میں اپنی سکھیوں، سیلیوں، اور گھر والوں سے رخصت تو ہولوں۔
 داس کبیر ہر صفت سے بے نیاز ہو کر گا رہے ہیں کہ »اے سادھو نرم
 گرم جو بھی سودا کرنا ہو جلدی سے کرلو کیونکہ آگے کوئی ہاٹ
 کوئی بازار نہیں ہے۔«



ارے دل

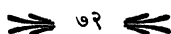
پریم نگر کا انت نہ پایا، جیوں آیا تیوں جاویگا
 سن میرے ساجن سن میرے مینا، یا جیوں میں کیا کیا بیتا
 سر پاپن کو بوجھا لیتا، آگے کون چھڑاویگا
 پرلی پار میرا مینا کھڑیا، اس ملنے کا دھیان نہ دھریا
 ٹوٹی ناؤ اُپر جو بیٹھا، گا پھل گوتا کھاویگا
 داس کبیر کہیں سمجھائی، انت کال تیرا کون سہائی
 چلا اکیلا سنگ نہ کوئی، کیا اپنا پاویگا

ارے دل، آخر تجھے پریم نگر کا انت نہ ملا (عشق کے راز
 سمجھ میں نہیں آئے) تو جیسے آیا ہے ویسے ہی جائے گا، میرے
 ساجن، مَن میرے دوست، اس زندگی میں کیا کیا نہیں بیت چکی ہے۔
 تونے اپنے سر پر پتھروں کا بوجھ اٹھا رکھا ہے، اس بوجھ کو کون
 ہلکا کرے گا۔ دوست تو دوسرے کنارے پر کھڑا ہے، تونے اس سے
 ملنے کی کوئی ترکیب نہیں نکالی، تو ٹوٹی ہوئی ناؤ پر بیٹھا ہے، اے غافل
 تو ضرور غوطہ کھائے گا۔ داس کبیر سمجھا کر کہتے ہیں کہ آخری
 وقت میں تیرا کوئی سہارا نہیں ہے، تو اکیلا جا رہا ہے، کوئی سنگی
 سہائی نہیں ہے، تونے اب تک جو کیا ہے اسی کا پھل تجھے ملے گا۔

संगत ही जरि आव न चरचा नाम की ।
 दूलह बिना बरात कहो किस कामकी ॥
 दुबिधाको कर दूर पीतमको ध्याइये ।
 आन देवकी सेव न चित्त लगाइये ॥
 आन देवकी सेव भली नहि जीवको ।

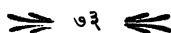
कहै कबीर विचार न पावै पीवको ॥

सधुओं की संगत में रहो, उन्हीं के साथ प्रियतम (ईश्वर) तक पहुँच सकोगे ।
 भाव, भक्ति और उपदेश उन्हीं से मिलेगा । वह संगत ही जलकर राख
 हो जाये जहाँ उसके नाम की चर्चा नहीं है । अगर दूल्हा ही न हो तो बरात
 किस काम की । मन से दुबिधा निकाल कर सिर्फ प्रीतम का ध्यान करो, किसी
 और देवता की सेवा का विचार भी मन में न लाओ क्योंकि किसी और
 देवता की सेवा में कोई भलाई नहीं है । कबीर सोच-विचार कर यह कहते हैं
 कि इस तरह प्रीतम नहीं मिल सकता ।



तोर हीरा दिगड़ल बा किचड़ेमें ।
 कोई ढूँढ़ै पूरब कोई ढूँढ़ै पच्छिम
 कोई ढूँढ़ै पानी-पथरेमें ।
 दास कबीर ये हीराको परखे
 बाँध लिहलै जीयराके अंचरेमें ।

तेरा हीरा कीचड़ में गिरकर खो गया है । कोई उसे पूरब में ढूँढ़ रहा है और
 कोई पच्छिम में और कोई पानी और पत्थर में । लेकिन कबीरदास इस हरी
 का मूल्य जानते हैं और उन्होंने उसे अपने दिल की गँठ में बाँध लिया है ।



आयौ दिन गौनेकै हो, मन होत डुलास ।
 डोलिया उठावे बीजा बनवौ हो, जहँ कोई न हमार ॥
 पड़्यौ तोरी लागौ कहरवा हो, डोली धर छिन बार ।
 भिज लेवै सखिया सहेलर हो, मिलौ कुल परिवार ॥

سنگت ہی جر جاو نہ چرچا نام کی
 دولہا بنا برات کہو کس کام کی
 دہدہا کو کر دور پریم کو دھیانیے
 آن دیو کی سیو نہ چت لگائیے
 آن دیو کی سیو ہلی نہ جیو کو
 کہے کبیر وچار نہ پاوے پیو کو

نیک لوگوں کی صحبت اختیار کرو، انہیں کے ساتھ پریم نک رسائی
 ہوگی۔ فکر اور ذکر اور ہدایت وہیں سے ملے گی، وہ عفل جل کر
 راکھ ہو جائے جہاں اس کے نام کا چرچا نہیں ہے، اگر خود دولہا نہ
 ہو تو برات کس کام کی۔ شک اور شبہ کو دل سے دور کر کے صرف
 پریم سے لو لگاؤ، اور دیوتا کی سیوا کا خیال بھی نہ کرو کیونکہ کسی
 اور دیوتا کی سیوا میں کوئی بھلائی نہیں ہے، کبیر سوچ بچار کے
 بعد یہ کہتے ہیں کہ اس طرح پریم نہیں مل سکتا،

» ۷۲ «

توبار پیرا ہرائل با کچڑے میں
 کوئی ڈھونڈھے پورب کوئی ڈھونڈھے پچھم
 کوئی ڈھونڈھے پانی پتھرے میں
 داس کبیر بے پیرا کو پرکھیں
 باندھ لہلے جیرا کے انجرے میں
 تیرا پیرا کیچڑ میں گر کر کھو گیا ہے، کوئی اُسے پورب میں تلاش
 کر رہا ہے اور کوئی پچھم میں، اور کوئی پانی اور پتھر میں۔ لیکن
 داس کبیر اس پیرے کی قدر جانتے ہیں اور انہوں نے اُسے اپنے دل
 کی گانٹھ میں باندھ لیا ہے۔

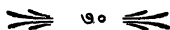
» ۷۳ «

ایو دن گونے کے ہو من ہوت ہلاس
 ڈولیا اٹھاوے بیجا بنواں ہو، جہاں کوئی نہ ہمار
 پٹیاں توری لاگوں کمروا ہو، ڈولی دھر چھن بار
 مل لیویں سکھیا سپار ہو، ملوں کل پروار

जेते औरत-मरद उपानी सो सब रूप तुम्हारा ।

कबीर पोंगड़ा अल्लाह-रामका सो गुरु पीर हमारा ।

अगर खुदा सिर्फ मस्जिद में बसता है तो यह दुनिया किसकी है । अगर राम सीर्फ तीर्थ स्थानों की मूर्तियों में दिखायी देता है तो फिर उस स्थान के बाहर क्या हो रहा है । हरि पूरबमें बसता है और अल्लाह का वास पच्छिम में है । मैं कहता हूँ अपने दिल में भँककर देखो करीम और गम दोनों यहाँ मिलेंगे । औरत और मर्द उसकी जीती जागती तस्वीरें हैं, वे सब तुम्हारे अपने रूप हैं । कबीर अल्लाह और गम दोनों का बालक है और वही हमारा गुरु है, वही हमारा पीर है ।



शील-सन्तोष सदा समदृष्टि, रहनि गहनिमें पूरा ।

ताके दरस-परम भय भाजै, होइ कलेस सब दूरा ॥

निसो-वासर चर्चा चित-चंदन, आन कथा न सोहावै

करनी धरनी संगीत गावै, प्रेम रंग उड़ावै ॥

राग-सरूप अखंडित अविचल- निर्भय बेपरवाई ।

कहै कबीर ताहि पग परसो, घट घट सब सुखदाई ।

जिसके स्वभाव में शील और सन्तोष है, जो सबको एक दृष्टि से देखता है, और रहन-गहन में पूरा है, उसके परम दर्शन से सारे भय भाग जाते हैं और सब क्लेश दूर हो जाते हैं । हर समय उसकी चर्चा (कल्पना) इस तरह रहती है जैसे मन में चंदन की सुगंध बसी हो, उसे कोई दूसरी कथा अच्छी नहीं लगती । उठते-बैठते वह उसका गीत गाता है और चारों तरफ़ प्रेम का रंग उड़ाता रहता है । वह गग की तरह अखंडित और अविचल है, निडर है और बेपरवाह है । कबीर कहते हैं कि उसी के चरण छुओ जो हर प्राणी को सुख और प्रेम से भर देता है ।



साध-संगत पीतम उहाँ चल जाइये ।

भाव-भक्ति-उपदेस तहाँते पाइये ॥

جیتے عورت مرد اپانی، سو سب روپ تمہارا
کبیر ہونکڑا اللہ رام کا، سو گرو پیر ہمارا

اگر خدا صرف مسجد میں بستا ہے تو یہ دنیا کس کی ہے، اگر رام
صرف تیرتھ استھان کی مورتی میں نظر آنا ہے تو پھر اس استھان کے
باہر کیا ہو رہا ہے، ہری پورب میں بستا ہے اور اللہ کا مقام پچھم میں
ہے، میں کہتا ہوں اپنے دل میں جھانک کر دیکھو، کریم اور رام
دونوں یہیں ملیں گے، عورت اور مرد اس کی جیتی جاگتی تصویریں ہیں۔
وہ سب تمہارے اپنے روپ ہیں، کبیر اللہ اور رام دونوں کا بالک ہے
وہی ہمارا گرو ہے وہی ہمارا پیر۔

» ۷۰ «

سیل سنتوش سدا سَم درشت، رہن کہن میں پورا
ناکے درس پرَم ہاجے، ہوئی کلیں سب دورا
نس واسر چرچا چت چندن آن کتا نہ سو پاوے
کرنی دھری سنگیت گاوے، پریم رنگ اڑاوے
راگ سروپ اکھنڈت آپچل، رہے بے پروائی
کہے کبیر تہ پگ برسو، گھٹ گھٹ سب سُکھ، دائی

جس کی طبیعت میں انکار ہے، دل میں صبر ہے، جو صاحب نگاہ
ہے اور رہن کہن میں پورا ہے، جو اُس (ذات پاک) کا دیدار کر چکا ہے
وہ خوف اور ہراس سے بے نیاز ہے۔ اُس کے ذہن میں ہر وقت ذات
پاک کا تصور اس طرح رہتا ہے جیسے دل میں صندل کی خوشبو بسی
ہو، اُسے کوئی دوسری داستان پسند نہیں آتی۔ اُلہتے بیٹھتے وہ اس
کا گیت گانا ہے اور چاروں طرف پریم رنگ اڑانا رہتا ہے۔ وہ راگ
کی طرح مسلسل اور پرسکون ہے، نڈر ہے اور بے پروا ہے، کبیر
کہتے ہیں کہ اُس کا چرن چھوڑ جو ہر وجود کو سُکھ اور پریم سے
بھر دیتا ہے۔

» ۷۱ «

سادھ سنگت پیتم اہاں چل جائیے
ہاو بھکت آپدیس نہاں تے پاہیے

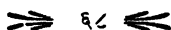
माला फेरी तिलक लगाया,

लंबी जटा बढ़ाता है ।

अन्तर तेरे कुम्हर-कटारी,

यों नहीं साहब मिलता है ।

न जाने यह कैसा साहब (प्रभु) है । मुल्ला होकर जो तू बाँग (अज्ञान) देता है तो क्या तेरा खुदा बढ़ा है । वह तो वह आवाज भी सुनता है जो कीड़ों-मकोड़ों के चलने से पैदा होती है । तू माला जपता है, तिलक लगाता है और लंबी-लंबी जटाएँ रखता है । तेरे दिल में तो कुम्ह की कटारी रखी हुई है । इस तरह ईश्वर नहीं मिलता ।



हमसों रहा न जाय मुगलियाँ के धुन सुनके ।

बिना वसन्त फूल इक फूलै भँवर सदा बोलाय ।

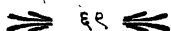
गगन गरजै बिजुली चमकै, उटती हिये हिलोर ।

विगसत कैवल मेघ बरसाने चितवत प्रभुकी ओर ।

तारी लागी तहाँ मन पहुँचा, गैब धुजा फहगाय ।

कहाँ कबीर आज प्राण हमारा, जीवत ही मर जाय ॥

मैं मुरली की धुन सुन रहा हूँ और मेरा दिल क़ाबू से बाहर डुबा जा रहा है । बिना वसन्त के फूल खिल रहा है और भँवरा दीवाना डुबा जा रहा है । आसमान गरज रहा है और बिजली चमक रही है और मेरे दिलके अंदर लहरें उठ रही हैं । कमल खिल रहा है, पानी बरस रहा है और मेरी ली प्रभु की ओर झगी हुई है । मेरा मन वहाँ पहुँच गया है जहाँ सृष्टि की तालियाँ बज रही हैं और गैब की ध्वजा फहरा रही है । कबीर कहते हैं कि आज तो जीते जी मर जाने में सुख है ।



जो खोदाय मसजिद बसतु है और मुलुक केहि केरा ।

तीरथ-मूत राम-निवासी बाहर करे को हेरा ।

पूब दिसा हरीकौ वासा पच्छिम अलह मुकामा ।

दिलमें खोज दिलहिमें खोजौ इहँ करीमा-रामा ।

مالا پھیری . تلک لگایا

لمبی جٹا بڑھاتا ہے

اتر تیرے کُکھر کٹاری

یوں نہیں صاحب ملتا ہے
نہ جانے یہ کیسا صاحب (خدا) ہے . مُلا ہو کر جو تو اذان دیتا ہے
تو کیا تیرا خدا بھرا ہے . وہ تو وہ آواز بھی سنتا ہے جو کیڑوں مکوڑوں
کے چلنے سے پیدا ہوتی ہے . تو مالا چپتا ہے ، تلک لگانا ہے اور لمبی
لمبی جٹائیں رکھتا ہے . تیرے دل میں تو کفر کی کٹاری رکھی ہوئی ہے .
ظاہر ہے کہ خدا اس طرح نہیں ملتا .

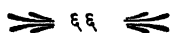
» ۶۸ «

ہم سوں رہا نہ جائے مُرلیا کے دُھن سن کے
بنا بسنت پھول اک پُھولے بھنور سدا بولائے
گگن گرجے ، بجلی چمکے ، اُلہتی پیسے پلور
بگست کدول ، میگھ برسانے ، چنوت پر بھوکی اور
ناری لاگی تھاں من پُہنچا ، کب کُھجا پھرائے
کہیں کبیر آج پران ہمارا ، جیوت ہی مرجائے
میں مُرلی کی دھن سن رہا ہوں اور میرا دل قابو سے باہر ہوا جا رہا
ہے . بغیر بسنت کے پھول کھل رہے ہیں اور بھونرا دیوانہ ہوا جا رہا ہے .
آسمان گرج رہا ہے ، بجلی چمک رہی ہے اور میرے دل کے اندر لہریں
الہ رہی ہیں . کدول کھل رہا ہے ، پانی برس رہا ہے اور میرے
دل کی لو پر بھو کی طرف لگی ہوئی ہے . میرا من وہاں پہنچ گیا ہے
جہاں کائنات کی تالیاں بچ رہی ہیں اور غیب کا پرچم لہرا رہا ہے . کبیر
کہتے ہیں کہ آج تو جیتے جی مرجائے میں مزا ہے .

» ۶۹ «

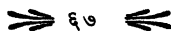
جو کھودائے مسجد بست ہے ، اور مُلک کبیر کیرا
تیرتھ مورت رام نواسی ، باہر کرے کو ہیرا
پورب دسا ہری کو واسا ، پچھم اللہ مُکاما
دل میں کھوج دل ہی میں کھوجو ، ابیں ک یما راما

कहते हैं कि सत्य-नाम उसी को मिलता है जो दूसरे की कड़वी बात भी
बर्दाश्त कर लेता है , मगड़े से बचता है और घमंड से दूर रहता है ।



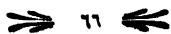
मन ना रँगाये रँगाये जोगी कपड़ा ।
आसन मारि मंदिरमें बैठे
ब्रह्म-छाड़ि पूजन लागे पथरा ॥
कनवा फड़ाय जटवा बढ़ौले
दाढ़ी बढ़ाय जोगी होइ गैले बकरा ।
जंगल जाय जोगी धुनिया रमौले
काम जराय जोगी होय गैले हिजरा ॥
मथवा मुँडाय जोगी कपड़ा रंगौले,
गीता बाँचके होय गैले लबरा ।
कहहिं कबीर सुनो भाई साधो,
जम दरवजवा बाँधल जैबे पकड़ा ॥

जोगी के मन में प्रेम का रंग है नहीं, उसने सिर्फ कपड़े रँगवा लिये हैं, आसन
मारकर मंदिर में बैठ गया है और ब्रह्म को छोड़कर पत्थर की पूजा कर रहा
है । उसने अपने कान खीरकर कुंडल पहन लिये हैं बाल लंबे कर लिये हैं
और दाढ़ी बढ़ाकर बकरा बन गया है । जोगी जंगल में जाकर धुनी रमा रहा
है और काम-कासना का दमन काके जोगी हिजड़ा हो गया है । सर मुँडकर
जोगी ने कपड़े रँग लिये हैं और गीता पढ़के बड़ी-बड़ी बातें बना रहा है ।
सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि इस तरह तू हाथ-पाँव बाँधकर यमराज के
दरवाजे पर डाल दिया जायेगा ।



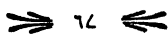
ना जानै साहब कैसा है ।
मुल्ला होकर बांग ओ दैवे,
क्या तेरा साहब बहरा है ।
कीड़ीके पग नेवर बाजे
सो भी साहब सुनता है ।

اُسی کو ملتے ہیں۔ کبیر دانشمند ہیں اور کہتے ہیں کہ ست نام صرف اس کو ملتا ہے جو گالیاں کھا لیتا ہے اور غرور کو ترک کر دیتا ہے۔



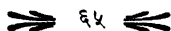
من نا رنگائے رنگائے جوگی کپڑا
 آسن مارکر مندر میں بیٹھے
 برہم چھاڑ پوجن لاگے پتھرا
 کُنوا پھڑائے جٹوا بڑھوایے
 داڑھی بڑھائے جوگی ہونی گیلے بکرا
 جنکل جانے جوگی دھنیا رمولے
 کام جرانے جوگی ہونے گیلے ہجرا
 منہوا مُنڈائے جوگی کپڑا رنگولے
 گیتا بانچ کے ہونے گیلے لہرا
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو
 جم درو جٹوا باندھل جیسے پکڑا

جوگی کے من میں تو پریم کا رنگ ہے نہیں۔ اس نے صرف کپڑے رنگوالیے ہیں۔ آسن مارکر مندر میں بیٹھ گیا ہے اور برہم کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کر رہا ہے۔ اس نے اپنے کان چیر کر کُٹڈل پن لٹے ہیں، بال لمبے کر لٹے ہیں اور داڑھی بڑھا کر بکرا بن گیا ہے۔ جوگی جنکل میں جاکر دھونی رما رہا ہے اور خوابشوں کو مارکر ہجڑا ہو گیا ہے۔ سر منڈا کر جوگی نے کپڑے رنگ لٹے ہیں اور گیتا پڑھ کر بانیں بنا رہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح تو ہاتھ پاؤں باندھ کر موت کے دروازے پر ڈال دیا جائے گا۔



ناجانے صاحب کیسا ہے
 مُلا ہو کر بانگ جو دیوے،
 کیا تیرا صاحب بہرا ہے
 کیڑی کے پگ نیور باجے
 سو بھی صاحب مُستا ہے

दिन-रात तड़पती है लेकिन दूसरा कोई पानी उसे अच्छा नहीं लगता । जैसे संगीत का प्रेमी श्रुत संगीत सुनने चला जाता है और संगीत सुनते-सुनते जान दे देता है और डरकर पीछे नहीं हटता, जैसे सती अपने पति की लाश के साथ चिता पर चढ़ जाती है, आग को देखकर डरती नहीं है, उसी तरह तुम भी अपने तन की आशा छोड़कर निडर होकर (प्रभु के) गुण गाओ । कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु, नहीं तो तुम्हारा जीवन व्यर्थ है ।



मैं जब भूला रे भाई,

मेरे सतगुरु जुगत लगाई ।

किरिया-कर्म-अचार छोड़ा, छौंड़ा तीरथका नहाना ।

सगरी दुनिया भइ सयानी, मैं ही इक बौराना ।

ना मैं जानूँ सेवा-बंदगी, ना मैं घंटा बजाई ।

ना मैं मूर्त धरी सिंहासन, ना मैं पुद्गल चढ़ाई ।

ना हरि रीझै जप तप कीन्हें, ना कायाके जारे ।

ना हरि रीझै धोती छौंड़े, ना पाँचोंके मारे ।

दया राखि धर्मको पालै, जगसों रहे उदासी ।

अपना-सा जिव सबको जानै, ताहि मिलै अविनासी ।

सहै कुशब्द बादको त्यागी, छौंड़े गर्व-गुमाना ।

सत्त नाम ताहीको मिलिहै कहै कबीर सुजाना ॥

मेरे भाई, मुझसे जब भूल डूब तो मेरे सतगुरु ने मुझे मार्ग दिखाया । मैं ने पूजा-पाठ सब छोड़ दिया, तीर्थों में जाकर नहाना छोड़ दिया । सारी दुनिया सयानी होगयी, एक मैं ही दीवाना ठहराया गया । न तो मैं सेवा-उपासना जानता हूँ, न घंटा बजाता हूँ, न मैं सिंहासन पर मूर्ति की स्थापना करता हूँ और न उस पर झूल चढ़ाता हूँ । जप-तप करने से हरि नहीं रीझता और न शरीर को कष्ट देने से प्रसन्न होता है । नंगे रहने से और पाँचों इंद्रियों का दमन करने से भी हरि प्रसन्न नहीं होता । जो हृदय में दया रखकर धर्म का पालन करता है, जो संसार के माथ-मोह से उदासीन रहता है और हर जीव को अपनी तरह मानता है, केवल उसी को भगवान मिलता है । सुजान कबीर

تڑپتی ہے لیکن دوسرا ہائی اُسے پسند نہیں آتا، جیسے سنگیت کا عاشق
 ہرن سنگیت سنتے چلا جاتا ہے اور سنگیت سنتے سنتے جان دے دیتا ہے
 لیکن ڈر کر پیچھے نہیں ہٹتا، جیسے سنی اپنے شوہر کی لاش کے ساتھ
 جلنے کو بیٹھ جاتی ہے، آگ کو دیکھ کر ڈرتی نہیں، اسی طرح تم
 بھی اپنے جسم کی فکر چھوڑ کر بے خوف ہو کر اس کے گن گاؤ۔ سنو
 بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ نہیں تو تمہاری زندگی بیکار ہے۔



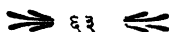
جب میں بھولا رہے بھائی

میرے ست گرو بھکت لکھائی

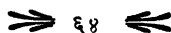
کر یا کرم اچار چھانڑا، چھانڑا تیرتھ کا نہا
 آسگری دنیا بھی سیانی، میں ہی اک بورانا
 نا میں جانوں سیوا بندگی، نا میں گھنٹا بجاتی
 نا میں مورت دھری سنگھاسن، نا میں پُہپ چڑھائی
 نا ہری ریچھے جپ تپ کینہیں، نا کایا کے جارے
 نا ہری ریچھے دھونی چھانڑے، نا پانچوں کے مارے
 دیا راکھ دھرم کو پالے، جگ سوں رہے اداسی
 اپنا سا جو سب کو جانے، تھ ملے اوباسی
 سے کشید باد کو تبا کیے، چھانڑے گرو کُشما
 ست نام تاہی کو ملیے، کہے کبیر سجانا

میرے بھائی، مجھ سے جب بھول ہوئی تو میرے ست گرو نے میری رہنمائی
 کی۔ میں نے ظاہری عبادت کو ترک کر دیا، تیرتھ اشنان بھی چھوڑ
 دیا۔ ساری دنیا سیانی ہو گئی، ایک میں ہی دیوانہ قرار پایا۔ نہ تو میں
 بندگی جانتا ہوں، نہ گھنٹا بجاتا ہوں، نہ میں سنگھاسن پر مورت بٹھاتا
 ہوں اور نہ اس پر پھول چڑھاتا ہوں۔ جاپ اور تپسیا کرنے سے ہری
 نہیں ریچھتا اور نہ جسم کو جلانے سے راضی ہوتا ہے۔ کپڑے اتار دینے
 سے اور پانچوں حواس کو قتل کر دینے سے ہری کی خوشنودی حاصل
 نہیں ہوتی۔ جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے،
 جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس رہتا ہے، اور دنیا کے ہر ذی حیات
 کو اپنی طرح جانتا ہے، اس کو لافانی (بھگوان) ملتا ہے۔ ست گرو

प्रेमको कौन सिखावता है,
 त्यागभीहि भोगका पावना जी ।
 अपने स्वामी के साथ चिता में जल जाना सती को कौन सिखाता है । प्रेम को
 कौन सिखाता है कि त्याग ही में भोग (सुख) है ।



अरे मन धीरज काहे न धैरे ।
 पसु-पंछी जीव कीट-पतंगा सबकी सुध करै ।
 गर्भ-वासमें खबर लेतु है बाहर क्यों बिसरै ।
 मन तू हसनसे साहेबके भटकत काहे फिरै ।
 प्रीतम छोड़ और को धरै, कारज इक न सरै ॥
 अरे मेरे मन, धीरज क्यों नहीं धरता । वह जो जानवरों, पक्षियों, कीड़ों-मकोड़ों
 तक की रखवाली करता है, जिसने माँ के पेट में तेरी रक्षा की है, पैदा होने
 के बाद तुझे क्यों भूल जायेगा । ऐ मेरे मन, तू अपने साहब (प्रभु) की
 मुस्कराहट को छोड़कर कहाँ भटकता फिर रहा है, अपने प्रियतम को छोड़कर
 और किसका ध्यान कर रहा है । इस तरह तो कोई काम नहीं बनेगा ।



साईंसे लगन कठिन है भाई ।
 जैसे पपीहा प्यासा बूँदका, पिया पिया रट लाई ।
 प्यासे प्राण तड़फै दिन-राती, और नीर ना भाई ।
 जैसे भिग्गा शब्द-सनेही, शब्द सुननको जाई ।
 शब्द सुनै और प्रानदान दे, तनिको नाहि डराई ।
 जैसे सती चढ़ी सत-ऊपर, पिया की राह मन भाई ।
 पावक देख डरे वह नारी, हँसत बंटे सदा माई ।
 छोड़ो तन अपनेकी आसा, निर्भय है गुन गाई ।
 कहत कबीर सुनो भाई साधो, नाहि तो जनम नसाई ॥
 भाई, साईं (प्रभु) से लगन लगाना बहुत कठिन काम है । जैसे स्वाति की बूँद
 का प्यासा पपीहा पिया पिया की रट लगाता है और उसकी प्यासी आत्मा

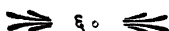
ہریم کو کون سکھاتا ہے
تباگ مانہی بھوگ کا باونا جی
اپنے سوامی کے ساتھ آگ میں جلنا سنی کو کون سکھاتا ہے۔ عشق کو
کون سکھاتا ہے کہ ترک ہی میں لفت ہے (ہجر ہی میں وصال ہے)



ارے من، دھیرج کاہے نہ دھرے
پس، پنچھی، جیو، کیٹ، پتنگا، سب کی سدھ کرے
گر بہ باس میں کھیر لیت ہے باہر کیوں بسرے
من تو پسن سے صاحب کے بھٹکت کاہے پھرے
پریم چھاڑ اور کو دھارے، گارج اک نہ سرے
ارے میرے من دھیرج کیوں نہیں دھرنا (صبر اور قناعت کیوں نہیں
کرتا) وہ جو جانوروں، چڑیوں، کیڑوں اور پتنگوں تک کی خیر گیری
کرتا ہے، جس نے ماں کے پیٹ میں تیری نگہبانی کی ہے، پیدا ہونے
کے بعد تجھے کیوں بھولے گا۔ اے میرے من تو اپنے صاحب کی
مسکراہٹ کو چھوڑ کر کہاں بھٹکتا پھر رہا ہے۔ اپنے محبوب کو چھوڑ کر
کسی اور کا دھیان کر رہا ہے۔ اس طرح تو ایک بھی کام نہیں بنے گا۔



ساتن سے لکن کٹھن ہے بھائی
جیسے پیسا پیسا بوند کا، پیا پیا رٹ لانی
پیا سے پران تڑپے دن راتی، اور نیر نا بھائی
جیسے مرگا شبد سنہی، شبد سنن کو جانی
شبد اور پران دان دے، تنکو نانہ ڈرائی
جیسے سنی چڑھی ست اوپر، پیار کی راہ من بھائی
پاوک دیکھ ڈرے وہ ناہیں، ہنسست بیٹھے سدا مائیں
چھوڑو تن اپنے کی آسا، نہرہے وہے گن گائی
کہت کبیر سنو بھائی سادھو، ناہیں تو جنم نسائی
بھائی ساتن سے لکن لگانا بہت دشوار ہے۔ جیسے سوانی کی بوند کا
پیسا پیسا پیا پیا کی رٹ لگانا ہے اور اس کی پیاسی روح دن رات



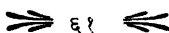
सुखविश्वकी सैरका म्वाद तब पाइ है ।

च हका चौतग भूल जाये ।

बीजके माहि ज्यों बीज-विस्तार यों

चाहके माहि सब गेय आये ॥

सुख के सागर की सैर का म्वा तो तब मिलेगा जब कामना (चाह) के चबूतरे पर (आरामसे) बैठने का विचार तू भूल जायेगा । जैसे बीज के अंदर बीज का विस्तार (पेड़) छुगा हुआ है उसी तरह कामना के अंदर सारी बीमारियों, सारी तकलीफों की जड़ है ।



सुखसागरमें आयके मत जॉरे प्यासा ।

अजहुं समझ नर बावरे, जम करत निगसा ॥

निर्भल नीर भरे तेरे आगे, पी ले स्वाँसो स्वाँस ।

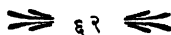
मृगतृप्ता-जल छाँड़ बावरे, कगे मुधा-रस-प्यासा ॥

धू प्रह्लाद-शुकदेव पिया, और पिया रैदासा ।

प्रेमहि संत सदा मतवाला, एक प्रेनकी आसा ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, निट गई मय की वासा ।

सु-खसागर में आकर प्यासा वापस मत जा । ऐ बावले, अब भी समझ ले, तू निराश क्यों होता है । तेरे सामने निर्भल जल भग है, हर साँस के साथ उसे पी जा । मृगतृष्णा के जल को छोड़ दे, पगले, और मुधा-रस (भगवान से प्रेम) की प्याम पैदा कर । यह रस ध्रुव, प्रह्लाद, शुकदेव, रैदास सबने पिया है । सभी साधु-संत प्रेम ही के मतवाले हैं और प्रेम ही के प्यासे । कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, अब मय का वास निट गया ।



सतीको कौन सिखादता है,

सँग स्वामीके तन जारना जी ।

» ۶۰ «

سُکھ سُنْدھ کی سیر کا سُود تب پانی ہے
چاہ کا چوترا بھول جساوے
بیج کے مانہی جیوں بیج رستاریوں
چاہ کے مانہی سب روگ آوے
سُکھ ساگر کی سیر کا مزا تو تب ملے گا جب آرزو کے چبونرے پر
(آرام سے) بیٹھنے کا خیال فراموش ہو جائے گا۔ جیسے بیج کے اندر
بیج کا پھیلاؤ (درخت) چھپا ہوا ہے اسی طرح آرزو کے اندر ساری
بیماریوں، ساری تکلیفوں کی جڑ ہے۔

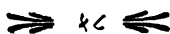
» ۶۱ «

سُکھ ساگر میں آئے کے، مت جا رہے پیاسا
اج ہوں سمجھ کر باورے، جم کرت نراسا
نرمل نیر بھرے تیرے آگے، پی لے سوانسو سوانسا
مرگ تر سنا جل چھانڑ باورے، کرو سُدھارس آسا
دھرو پرہلاڈ مُشکدبو پیا، اور پیا ریداسا
پریمہی سنت سدا متوالا۔ ایک پریم کی آسا
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو مٹ گئی بھے کی آسا
ارے سُکھ ساگر میں آکر پیاسا واپس مت جا، اے بیوقوف (باؤرے =
باؤلے = پاگل) اب بھی ہوش میں آجا موت تیرا پیچھا کر رہی ہے۔
تیرے سامنے صاف شغاف پانی لہریں لے رہا ہے ہر سانس کے ساتھ
اسے پی جا۔ سراب کو ترک کر دے اور آب حیات (سُدھارس =
بھگوان سے پریم) کی پیاس پیدا کر۔ یہ پانی دھرو، پرہلاڈ، مُشکدبو،
رائے داس سب نے پیا ہے۔ تمام سنت سادھو پریم ہی کے متوالے ہیں
اور پریم ہی کے پیاسے، سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اب خوف
کا آشیانہ اجڑ گیا ہے،

» ۶۲ «

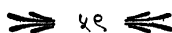
سقی کو کون سکھاوتا ہے
سنگ سوامی کے نن جارنا جی

असली शिष्य और महात्मा गुरु है। वेदों और पुराणों में भी शब्द का उल्लेख है और शब्द ही इस सृष्टि का आधार है। ऋषि-मुनि सब शब्द ही बोल रहे हैं, लेकिन शब्द का भेद नहीं मिलता। शब्द ही सुन-सुनकर आदमी (क्रात्री का) भेष धारण करता है और इसी शब्द के सहारे वह अनुरागी बनता है। घट्टाशन में भी शब्द का ही वर्णन है और बैराग लेनेवाले भी शब्द ही को दोहराते हैं। शब्द ही से सृष्टि की रचना हुई है और यह सृष्टि शब्द ही का पैलाव है। कबीर कहते हैं कि जहाँ शब्द है वहाँ जीवन और सृष्टि का रहस्य निहित है।



पीले प्याला हो मतवाला
प्याला नाम अभीरसका रे।
कहैं कबीर सुनो-साधो
नख सिख पूर रहा विषका रे।

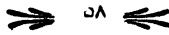
प्याला पीकर मतवाला हो जा। यह वह प्याला है जिस में उसके नाम का अमृत छलक रहा है। सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि तुमने सिर से पैर तक अपने अस्तित्व को विष से भर रखा है।



खसम न चीन्हें बावरी, का करत बड़ाई।
बातन लगन न होयेंगे, छोड़ौ चतुगई।
साखी शब्द संदेश पढ़ि, मत भूलो भाई।
सार-प्रेम कुछ और है, खोजा सो पाई॥

बावली, अपने पति को तो पहचानती नहीं है, अपनी बड़ाई क्या कर रही है। यह चालाकी छोड़ दे, खाली बातें बनाने से प्रियतम हाथ नहीं आयेगा। इस पर मत इतराओ कि तुमने शब्दों का संदेश सुना है (किताबें पढ़ी हैं)। यह प्रेम कुछ और ही चीज है, जो इसे सच्चे मन से खोजता है वही इसे पाता है।

سمجھنے والے بہت کم لوگ ہیں۔ جو دل کی کیفیت (مرم = راز دروں) جانتا ہے وہی چیلہ ہے اور وہی گرو وید اور پُران بھی شبد ہی کا ذکر کرتے ہیں۔ اور شبد ہی سے یہ دنیا قائم ہے۔ رشی اور مہن سب شبد ہی بول رہے ہیں لیکن شبد کا بھید نہیں ملتا۔ شبد ہی مَن سن کر آدمی فقیر بنتا ہے اور شبد ہی کہہ کر وہ محبوب سے لو لگاتا ہے۔ چھ فلسفے شبد ہی کا بیان کر رہے ہیں اور بیراگ لینے والے بھی شبد ہی کو دھراتے ہیں۔ شبد ہی سے دنیا کا ظہور ہوا ہے اور یہ کائنات شبد ہی کا پھیلاؤ ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جہاں شبد ہے وہیں زندگی اور کائنات کا عجیب و غریب راز مضمر ہے۔



پی لے پیالا، ہو متوالا
پیالا نام امی رس کا رہے
کبیر کبیر سنو بھائی سادھو
نکھ نکھ سکھ پور رہا وش کارے

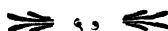
پیالا ہی کے متوالا ہو جا۔ یہ وہ پیالا ہے جس میں اس کے نام کا امرت چھلک رہا ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ تم نے سر سے پانوں تک اپنے وجود کو زہر سے کیوں بھر رکھا ہے۔



کھسم نہ جیسے باوری، کا کرت بڑائی
باتن لکن نہ ہونیں گے، چھوڑو چٹرائی
ساکھی شبد سندیش پڑھ مت بھولو بھائی
سار پریم کچھ اور ہے، کھوجا سو پائی
اپنے خسم کو تو پہچانی نہیں ہے باؤلی، اپنی بڑائی کیا کر رہی ہے۔
یہ چالاکی چھوڑو۔ خالی باتیں بنانے سے محبوب ہاتھ نہیں آنے گا۔ اس پر مت اتراؤ کہ تم نے لفظوں کا پیغام (شبد سندیس) سنا ہے، (کتابیں پڑھی ہیں) یہ کچھ اور ہی چیز ہے۔ جو اس کو تلاش کرتا ہے وہی اس کو پاتا ہے۔

सदा विलास त्रास नहि तनमें, भोगमें जोग जगावै,
 धरती-पानी आकाश-पवनमें अधर मँडैया छावै ।
 सुख सिखरके साग सिलापर, आसन अचल जमावै ।
 भीतर रहा सौ बाहर देखै, दूजा दृष्टि न आवै ।

भाई, सद्गुरु संत वही है जो आँखों को न दिखायी देनेवाले का दर्शन कराता है । जो बाहरी पूजा-पाठ से मुक्त करके सहज समाधि सिखाता है । दरवाजे बंद करके नहीं बैठता, सोंस रोकने का अभ्यास नहीं करता, संसार को त्याग देने का उपदेश नहीं देता । मन जब इस अवस्था में पहुँच जाता है तभी परमात्मा का दर्शन होता है । वह गुरु ऐसा मार्ग दिखाता है जिसमें मनुष्य कर्म करने के बाद भी निष्कर्म रहता है । वहाँ विलास ही विलास है और तन को त्रास नहीं देना पड़ता, वहाँ भोग के साथ ही जोग भी है । धरती हो या पानी, आकाश हो या हवा, हर जगह उसका वास है । वह शून्य के शिखर पर सार-शिला पर अपना अचल आसन जमाता है । जो आत्मा में है वही बाहर दिखायी देता है, दूसरा कोई दिखायी नहीं देता ।



साधो, शब्द-साधना कीजै ।
 जे ही शब्दते प्रकट भये सब, सोई शब्द गहि लीजै ॥
 शब्द गुरु शब्द सुन सिख भये, शब्द सो बिगला बूझै ।
 सोई शिष्य सोई गुरु महात्म, जेहि अन्तर-गति सूझै ॥
 शब्दै वेद-पुरान कहत हैं, शब्दै सब ठहरावै ।
 शब्दै मुर-मुनि-सन्त कहत हैं, शब्द-भेद नहि पावै ॥
 शब्दै सुन मुन भेष धरत है, शब्दै कहै अनुरागी ।
 षट्-दर्शन सब शब्द कहत हैं, शब्द कहे बैरागी ॥
 शब्दै काया जग उतपानी, शब्दै केरि पसाग ।
 कहैं कबीर जहँ शब्द होत है, भवन भेद है न्याग ॥

साधु, शब्द-साधना करो; जिस शब्द से सब कुछ उत्पन्न हुआ है उसी शब्द को ग्रहण करो । शब्द ही गुरु है जिसे सुनकर हम शिष्य बने हैं और इस शब्द के समझनेवाले बहुत कम लोग हैं । जो अन्तर-गति को जानता है वही

سدا ولاس تراس نہیں تن میں ، بھوک میں جوگ جگاوے
 دھرتی ، پانی ، آکاش ، ہوں میں ، اہر مذہب چھاوے
 سُن سکھ کے سار سلا پر ، اس اچل جماوے
 بہتر رہا سو باہر دیکھے ، دوحا درشت نہ اوے

بھائی ست گرو سنت (اصلی سادھو) وہ ہے جو آنکھوں کو نہ دکھائی
 دینے والے کا نظارہ کرانا ہے۔ جو ظاہری پوحا پاٹ سے بے نیاز کر کے
 سہج سادھی سکھانا ہے۔ دروازے بند کر کے نہیں بیٹھتا ، سانس روکنے
 کی مشق نہیں کرتا ، دنیا کو تہج دینے کا سبق نہیں دیتا۔ من جب اس
 منزل پر پہنچتا ہے تب ہی پرمانما کا درشن ہوتا ہے۔ وہ گرو ایسا
 راستہ دکھانا ہے جس میں عمل کرنے کے بعد ہی انسان نتیجے سے
 بے نیاز رہتا ہے۔ وہاں لذت ہی لذت ہے اور تن کی تکلیف نہیں ہے۔
 دنیا کی نعمتوں کا لطف بھی ہے اور بھگوان سے لو لگانے کا مزا بھی۔
 دھرتی ہو یا پانی ، آکاش ہو یا ہوا ، ہر جگہ معبود کا اصل مقام ہے۔
 وہ شونہ (آسمان = خلا) کی چوٹی پر ، حقیقت کی چٹان پر ، اپنا
 آسن جماتا ہے۔ جو اندر ہے وہی باہر ہے۔ دوسرا کوئی نظارہ نہیں ہے۔

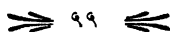


سادھو شبد سادھا کیجے

جسے ہی شبد تے پرگٹ بھنے سب ، سوئی شبد کہہ لیجے
 شبد گرو شبد سُن سکھ بھنے ، شبد سو بر لا بوجھے
 سوئی شش سوئی گرو مہاتم ، جیہیں انترگت سوچھے
 شبدے وید پُران کہت ہیں ، شبدے سب ٹھہراوے
 شبدے سُرُمی سنت کہت ہیں ، شبد بھید ہیں پاوے
 شبدے سُن سُن ہمیش دھرت ہیں ، شبدے کہے اُتراگی
 شت درشن سب شبد کہت ہیں ، شبد کہے ہیراگی
 شبدے کایا جگ اُنہانی ، شبدے کیر پسارا
 کہیں کبیر جہاں شبد ہوت ہے ، بھون بھید ہے نیارا

سادھو ، شبد سادھنا کرو (لفظ پر ریاض کرو) جس شبد سے سب
 کچھ ظاہر ہوا ہے (تخلیق کائنات ہوئی ہے) اسی شبد کو حاصل کرلو۔
 شبد ہی گرو ہے جسے سن کر ہم چیلے بنے ہیں اور اس شبد کے

क्या फायदा । क्राष्णी किताबें ढूँढता फिरता है, दूसरों को नसीहत करता है, लेकिन अगर वह मर्म को नहीं जानता तो केवल क्राष्णी होने से क्या फायदा है । योगी अपने कपड़े लाल रंग से रंगते हैं लेकिन अगर वह उस (प्रेम के) रंग से परिचित नहीं है तो कपड़े रंगने से क्या होगा । मंदिर में बैठना, झरोखों में झोंकना, अटारियों पर ध्यान लगाना और बाघ-बगीचों में सैर करना बेकार है । कबीर सच ही कहते हैं कि साहब (भगवान, ब्रह्म) तो हर साँस में रमा हुआ है ।



भक्तिका मार्ग झीना रे ।

नहि अचाह नहि चाहना, चरनन लौ लीना रे ।

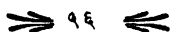
साधनके रस-धारमें, रहे निस-दिन भीना रे ।

रागमें लुत ऐसे बसे, जैसे जल भीना रे ।

साँई सेवनमें देत सिग, कुछ बिलम न कीना रे ।

कहैं कबीर मत भक्तिका, परगट कर दीना रे ।

भक्ति का मार्ग बहुत सूक्ष्म (भीना) है । वहाँ चाहना और न चाहना बेकार है, केवल (प्रभु के) चरणों से लौ लगायी जाती है । वहाँ भक्त अपनी साधना की रस-धार में हर वक्रत डूबा रहता है । उसके राग में प्रेम ऐसा रचा-बसा है जैसे मछली पानी में रहती है । वह साँई की सेवा में बिना किसी संकोच के तन-मन अर्पित कर देता है । कबीर कहते हैं कि मैंने इन शब्दों में भक्ति के मत को व्यक्त कर दिया है ।



भाई, कोई मतगुरु सन्त कहावै ।

नैनन अलगव लखावै ॥

प्राण पूज्य किग्याने न्याग, सहज समाध सिखावै ।

द्वार न रूँधै पवन न रोके, नहि भगवण्ड तजावै ।

यह मन जाय यहाँ लग जब ही परमात्म दर्शावै ।

काम करै निःकाम रहै जो, ऐसी जुगत लखावै ।

چکھا ہے۔ (عشق کا جام نہیں پیا ہے) تو اوپری عمل (روزہ، نماز، پوجا پاٹ) سے کچھ نہیں ہوسکتا۔ قاضی کتابیں ڈھونڈھتا پھرتا ہے، اوروں کو نصیحت کرنا ہے لیکن وہ محرم راز نہیں ہے تو صرف قاضی ہونے سے کیا فائدہ، جوگی اپنے کپڑے لال رنگ سے رنگتے ہیں لیکن اگر وہ محبت کے رنگ سے واقف نہیں تو کپڑے رنگتے سے کیا ہوگا۔ مندر میں بیٹھنا، حوروں کوں میں جھانکنا، پھولوں کے باغ میں سیر کرنا بے سود ہے۔ کدیر صحیح کہتے ہیں کہ صاحب (بھگوان، برہم) تو ہر سانس میں رچا اور بسا ہوا ہے۔



بھکت کا مارگ جھینارے

اجاہ نہیں چاہا، چرس لو لینارے

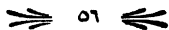
سادھن کے رس دھار میں، رہے بس دن بھینارے

راگ میں سُرت ایسے بسے، جیسے حل میارے

ساڑیں سیوَن میں دبت سر، کچھ بلم نہ کینارے

کہیں کبیر مت بھکتی کا، پرگٹ کر دینارے

بھکت (جو پائے حق) کا راستہ باریک ہے۔ وہاں چاہنا اور نہ چاہنا بیکار ہے۔ صرف مالک کے قدموں پر نثار پوجانا ہی سب کچھ ہے۔ وہاں بھکت اپنی سادھنا کی رس دھار میں ہر وقت ڈوبا رہتا ہے۔ اس کے راگ میں محبت ایسی رچی اور بسی ہوئی ہے جیسے پھلی پانی میں تیرتی ہے۔ وہ ساڑیں (حق) کی سیوا میں اپنا سر دے دیتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ میں نے اس بھگتی کے راز کو ظاہر کر دیا ہے۔



بھانی، کوئی ست مگرو سنت کھاوے

نینن الکھ لکھاوے

پران پوتجیہ کریانے نیارا، سہج سادھ سکھاوے

دوآر نہ رُوندھے پوَن نہ روکے، نہیں بھوکھنڈ تجاوے

بہ من جائے یہاں لگ جب ہی پرمانم دَرساوے

کرَم کرے نہ کرم رہے حو، ایسی بُجگت لکھاوے



कौन मुगली-शब्द मुन आनन्द भयो

जात बरे बिन बाती ।

बिना मूलक कमल प्रगट भयो ।

फूलवा फूलत भौंति भौंति ।

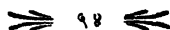
जैसे चकोर चन्द्रमा चितवै

जैसे चातुक स्वाँती ।

तैसे संत सुरतक होके

हो गये जनम सँवातां ॥

यह कौनसी मुगली बज रही है जिसें सुनकर मैं आनंद-विभोर होगया । बत्ती नहीं है लेकिन ज्योति जल रही है । जड़ नहीं है लेकिन कमल खिल रहा है । रंग-बिरंगे फूल हैंस रहे हैं । जैसे चकोर चंद्रमा को देखता है और चातक स्वाति की बूँद की आस लगाये रहता है वैसे ही उससे प्रेम (सुरत) हो जाने पर मेरा संतो से जनम-भर का साथ हो गया ।



सुनता नहीं धुनकी खबर, अनहद का बाजा बाजता ।

रस मंद मंदिर बाजता, बाहर मुने तो क्या हुआ ।

इक प्रेम-रस चाखा नहीं, अमली हुआ तो क्या हुआ ॥

काजी कितारें खोजता, कगता नसीहत औरको ।

महरम नहीं उस हालसे, काजी हुआ तो क्या हुआ ॥

जोगी दिगंबर संवड़ा, कपड़ा रंगे रंग लालमं ।

वाकिफ नहीं उस रंगसे, कपड़ा रंगेसे क्या हुआ ॥

मन्दिर-भोगवा-रावटी, गुल चमनमें रहते सदा ।

कहते कबीरा हैं मही हर-दममें सादिव रम रहा ॥

अनहद नाद हो रहा है लेकिन तुम्हें उसकी धुन की खबर नहीं है । मधुर संगीत स्वयं मंदिर के अंदर गूँज रहा है उसे मंदिर से बाहर आकर सुनने से क्या फायदा । अगर तूने प्रेम रस नहीं चखा है तो और सारे नशे करने से

کوں مرلی شمدُ سن اُسد بھیو
جوت برے س باتی
نا مول کے کمل پر گت بھیو
بُھلوا بُھلت بھات بھائی
جیسے چکور چندرما چنوسے
جیسے چا ترک سوانی
نہیے سنت سُرت کے ہو کے
ہو گئے جسم سنگھانی

یہ کیسی مرلی بچ رہی ہے میں جسے سن کر سرشار ہو گیا ہوں۔ بقی
نہیں ہے لیکن چراغ جل رہا ہے۔ جڑ نہیں ہے لیکن کنول کھل رہا ہے۔
رنگ برنگے پھول ہنس رہے ہیں۔ جیسے چکور چاند کو لگاتار نکسا
رہتا ہے اور چانک (پیپا) سوانی کی ایک بوند کی امید لگائے رہتا
ہے اسی طرح اس کے پریم (سُرت) میں میرا سنتوں سے عمر بھر کا
ساتھ ہو گیا ہے۔

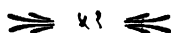
مُستنا نہیں مُدھن کی کھیر اُہد کا باحا باجنا
رس مُند مندر باحا، باہر مُسنے تو کیا ہوا
اک پریم رس چاکھا نہیں، عملی ہوا تو کیا ہوا
کاحی کتابیں کھوجتا، کرنا صیحت اور کو
محرم نہیں اس حال سے، گاجی ہوا تو کیا ہوا
جوگی دگمبر سیوڑا، کپڑا رنگے رنگ لال سے
واقع نہیں اس رنگ سے، کپڑا رنگے سے کیا ہوا
مندر جھروکھا راوٹی، مُگل چمن میں رہنے سدا
کہتے کبیرا ہیں صحیح، پردم میں صاحب دم رہا

ابدیت کا ساز بچ رہا ہے لیکن تجھے اس کی مُدھن کی خیر نہیں ہے۔
مسرت کا یہ نغمہ خود مندر (وجود = گھٹ) کے اندر گونج رہا ہے۔
اس کو مندر کے باہر آکر سننے سے کیا فائدہ۔ اگر پریم رس نہیں

उठत सुगंध महा अधिकाई, जाको वाग न पाग है ।

कोटि भान रागको रूपा, बीन सत-धुन बजे अनूपा ॥

यह मुरली सदा से निरंतर बज रही है, और प्रेम इसकी ध्वनि है । जब मनुष्य प्रेम की सीमाओं से पार निकल जाता है तो सत्यलोक की सीमा आती है । वहाँ सुगंध का अपार विस्तार है । यह राग करोड़ों सूर्यों का रूप धारण कर रहा है । वीणा पर सत्य की अनुपम धुन बज रही है ।



सखिया, हमहूँ भाई बलमासी ।

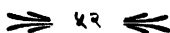
आयो जावन बिरह सतायो, अब मैं ज्ञान गली अठिलाती ।

ज्ञान-गलीमें खबर मिल गये, हमें मिली पियाकी पाती ।

वा पातीमें अगम सँदेसा, अब हम मरनेको न डगाती ।

कहत कबीर सुनो भाई प्यार, नर पाये अविनासी ।

सखियो, मैं अपने बालम से मिलने को बेचैन हूँ । यौवन आया है और विरह सता रहा है । मैं ज्ञान की गली में इठलाती फिर रही हूँ । ज्ञान की गली में मुझे उसकी खबर मिल गयी है । बालम का पत्र मेरे नाम आया है और उसमें एक ऐसा संदेश है जिसे मैं कह नहीं सकती (अगम) मगर अब मरने से डर नहीं लगता । प्यारे भाई सुनो, कबीर कहते हैं कि मुझे अविनाशी पति मिल गया है ।



साईं बिन दरद करेजे होय ।

दिन नहीं चैन रात नहीं निदिया, कासे कहूँ दुख होय ।

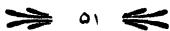
आधी रतियाँ पिछले पहरवा, साईं बिना तरस रही साय ।

कहत कबीर सुनो भाई प्यारे, साईं मिले सुख होय ॥

साईं (स्वामी) नहीं है तो कलेजे में पीड़ा होती है । दिन को चैन नहीं, रात को नींद नहीं, आखिर मैं अपना दुःख किससे कहूँ । आधी रात हो या पिछला पहर अपने साईं के बिना मैं एक नींद के लिए तरस रही हूँ । सुनो प्यारे भाई, कबीर कहते हैं कि साईं (प्रेमी) मिले तो चैन आये ।

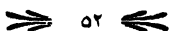
انہٹ سکدھ مہا ادھکائی، حاکو وار نہ پارا ہے
کوت بہان راگ کو روپا، بین ست دھ بجے اٹوہا

ابدیت کا ساز ہمیشہ سے بچ رہا ہے اور عشق اس کی جھنکار ہے۔
جب انسان عشق کی تمام حدوں سے باہر آ جاتا ہے تب عالم صداقت
(ست لوک) کی حدوں میں داخل ہوتا ہے۔ خوشبو کا پھیلتا ہوا دامن
بے کنار ہے۔ اُس کا کوئی اور چہور نہیں ہے، یہ راگ کروڑوں آفتابوں
کی شکل اختیار کر رہا ہے۔ صداقت کی وینا کی مٹھن نرالی ہے۔



سکھو، ہم ہوں بھئی الماسی
ایو حوس رہ سایو، اب میں گیان گلی اٹھلائی
گیان گلی میں کھیر مل گئے، ہمیں ملی پیا کی پانی
واپاتی میں اگم سندیس، اب ہم مرے کو نہ ڈراتی
کہت کبیر سو بھائی پیارے، ربائے آسائی

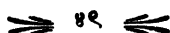
سکھو میں اپنے بالم سے ملنے کے لئے بیکرار ہوں۔ جو بن چڑھ رہا
ہے اور جدائی ستا رہی ہے۔ میں گیان کی گلی میں اٹھلاتی پھر رہی
ہوں۔ مجھے گیان کی گلی میں اس کی خیر مل گئی ہے۔ بالم کا پتر میرے
نام آیا ہے اور اس میں ایک ایسا سندیسہ ہے جسے میں کہہ نہیں سکتی
مگر اب مرے سے ڈر نہیں لگتا۔ پیارے بھائی سنو کبیر کہتے ہیں کہ مجھے
لافانی بریتیم (بر = شوہر) ملا ہے۔



سائیں رن درد کریجے ہوئے
دن نہیں چین رات نہیں سندبا، کاپے کہوں دکھ ہوئے
آدھی رتیاں پچھلے پھروا، سائیں سا ترس رہی سوئے
کہت کبیر سو بھائی پیارے، سائیں ملے سکھ ہوئے

سائیں (محبوب) نہیں ہے تو کلیجے میں درد اٹھتا ہے۔ دن کو چین
نہیں، رات کو نیند نہیں، آخر میں اپنا دکھ کس سے کہوں۔ آدھی
رات ہو یا پچھلا پھر محبوب کے بغیر ایک نیند کے لئے ترس رہی ہوں۔
سنو پیارے بھائی کبیر کہتے ہیں کہ محبوب ملے تو چین آئے۔

मैंने अपने चंचल मन को स्थिर कर लिया है । मेरे मन पर ऐसा रंग चढ़ गया है कि मैंने तत्त्व (साक्षात्) में निःतत्त्व (निराकार) को देखा है और मिलन में अपना इष्ट प्राप्त कर लिया है । सारी सीमाओं को तोड़कर मैंने बंधनों से अपने आपको मुक्त कर लिया है । कबीर कहते हैं कि मैंने अगम को गम कर लिया है और मेरा मन प्रेम के रंग में रंग गया है ।



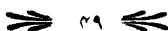
जो दीसे सो तां है नाही, है सो कहा न जाई ।
 बिन देखै परतीत न आवै, कहै न को पतियाना ।
 समझा होय तो शब्दै चीन्है, अचरज होय अयाना ।
 कोई ध्यावै निराकारको, कोई ध्यावै आकारा ।
 या विधि इस दोनोंतें न्यारा, जानै जाननहाग ।
 वह राग तो लग्वा न जाई, मात्रा लगै न काना ।
 कहैं कबीर सो पदै न परलय, सुरत-निरत जिन जाना ॥

जो दिखायी देता है वह है नहीं और जो है वह बयान सं बाहर है । बिना देखे विश्वास नहीं होता और जैसा उसका वर्णन किया जाता है वह विश्वास करने योग्य नहीं है । जिसे ज्ञान हो वही शब्दों को पहचान सकता है और जो अज्ञानी है वह हैरान है । कोई तो निराकार का ध्यान करता है और कोई साकार का लेकिन केवल ज्ञानी ही जानते हैं कि ब्रह्म इन दोनों से भिन्न है । वह राग है जो आँखों से देखा नहीं जासकता क्योंकि उसमें शब्दों की तरह मात्रा (पाई) और भिदियाँ आदि नहीं लगायी जाती । कबीर कहते हैं कि जिसने प्रेम और वैराग दोनों को अपना लिया है उसे प्रलय का कोई भय नहीं ।



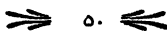
मुरली बजत अखंड सदासे, तहाँ प्रेम कनकाग है ।
 प्रेम-हृद तजी जब भाई, सत्त लोककी हर पुनि आई ।

میں نے اپنی بے چین روح کا سکون حاصل کر لیا ہے اور اب میرا دل ایسے رنگ میں ڈوب گیا ہے کہ میں نے تنو (= ساکار = شکل) میں نہ تنو (= نراکار = بے شکل) کو دیکھ لیا ہے اور وصال میں محبوب کو حاصل کر لیا ہے میں علاقہ کی بندشوں سے آزاد ہو گیا ہوں اور میں نے تنگ حدود کو توڑ دیا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ میں نے ناقابل حصول کو حاصل کر لیا ہے اور میرا دل محبت کے رنگوں سے رنگین ہو گیا ہے ۔



جو دیسے سو تو ہے باہیں ، ہے سو کہا نہ جانی
 اس دیکھے پر تیت نہ آوے ، کہے نہ کو پتیانا
 سمجھا ہوئے تو شدے چیسے ۔ اچرج ہوئے ایانا
 کوئی دھیاوے نراکار کو ، کوئی دھیاوے آکارا
 باودھ اس دونوں میں بھارا ، جائے جاس بارا
 وہ اک تو لکھا نہ حائی ، ماترا لگے نہ کانا
 کہیں کبیر سو پڑھے نہ پڑھے ، مُسرت رت حی حاما

جو دکھائی دیتا ہے وہ ہے نہیں اور جو ہے وہ بیان سے باہر ہے ۔
 بغیر دیکھے یقین نہیں آتا اور جو بیان کیا جائے وہ قابل اعتبار نہیں ۔
 صرف عارف لفظوں کو پہچان سکتا ہے اور جسے عرفا نہیں وہ حیران ہے کوئی تو نراکار (بے شکل) کا دھیان کرتا ہے اور کوئی آکار (شکل) کا ایکن صرف جانتے والے (عارف) یہ جانتے ہیں کہ برہم دونوں سے پرے ہے ۔ وہ راگ ہے جو آنکھوں سے دیکھا نہیں جاسکتا اور اس کی ماترائیں (آوازیں ، زیر و بم) کانوں کو سنائی نہیں دیتیں ۔ کبیر کہتے ہیں کہ جس نے پریم اور بیراگ دونوں کو اپنا لیا ہے اسے موت سے نجات مل گئی ۔



مُمرلی تَجَت اکھنڈ سداسے ، تنہا پریم جھنکارا ہے
 پریم حد تَجی جب بھائی ، ست لوک کی حد پُر آئی

साधु, काया को शुद्ध करना बहुत आसान है। जैसे बरगद के बीज में पत्ते, फूल, फल, छाया सभी कुछ छुपा है वैसे ही शरीर के अंदर बीज है और बीज के अंदर शरीर। उसके बिना आग, हवा, पानी, पृथ्वी, आकाश कुछ भी नहीं मिल सकता। क्राज्जी और पंडित ज़रा विचार करें कि आप में (आत्मा में) क्या नहीं है। पानी से भरा घड़ा पानी में रखा है। उसके अंदर भी पानी है और बाहर भी पानी। उसको कोई नाम देना गलती है क्योंकि इससे यह भ्रम हो सकता है कि वह मुझसे भिन्न है। कबीर कहते हैं कि केवल सत्य शब्द ही असल आत्मा है। अपने अस्तित्व में वह आप ही बोल रहा है, वह जो स्वयं अस्तित्व है, स्वयं ही सृजनहार भी है।



तरवर एक मूल बिन ठाढ़ा, बिन फूल फल लागे।

साखा-पत्र कछु नहीं ताके, सकल कमल-दल गाजें।

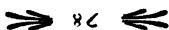
चढ़ तरवर दो पंछी बोले, एक गुरु एक चेला।

चेला रहा सो रस चुन खाया, गुरु निरन्तर खेला ॥

पंछीके खोज अगम परगट, कहैं कबीर बड़ी भारी।

सब ही मूरत बीज अमूरत, मूरतकी बलिहारी ॥

एक पेड़ है जो बिना जड़ के खड़ा है, और बिना फूल लगे ही फल दे रहा है। उसमें न डालें हैं न पत्तियाँ। उसमें बस कमल की पंखड़ियाँ ही पंखड़ियाँ हैं। इस पेड़ पर बैठे हुए दो पक्षी बोल रहे हैं — एक गुरु और एक चेला। चेला चुन-चुनकर रसीले फल खा रहा है और गुरु खुश होकर देख रहा है। कबीर कहते हैं कि उसका समझना बहुत कठिन है क्योंकि पंछी खोज की सीमा से बाहर है फिर भी साफ़ दिखायी दे रहा है। हर मूरत (साकार) के अंदर अमूरत (निराकार) है। हर मूरत की बलिहारी है।



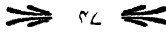
चलत मनसा अचल कीन्ही, मन हुआ रंगी।

तत्वमें निहतत्व दरसा, संगमें संगी ॥

बंधते निर्बन्ध कीन्हा, तोड़ सब तंगी।

कहैं कबीर अगम गम कीया, प्रेम रंग रंगी ॥

سادھو جسم کی پاکیزگی بہت آسان ہے ۔ حیسے پیڑ کے بیج میں پھول ، پتیاں ، پھل اور سایہ چھپا ہے ویسے ہی جسم کے اندر بیج ہے اور بیج کے اندر جسم ۔ اس کے بغیر آگ ، ہوا ، پانی ، زمین ، آسمان ، کچھ نہیں مل سکتا ۔ قاضی اور پنڈت ذرا غور کریں کہ آپ (وجود) کے اندر کیا نہیں ہے ۔ پانی سے بھرا گھڑا پانی میں رکھا ہے ۔ اس کے اندر بھی پانی ہے اور باہر بھی پانی ۔ اس کو کوئی نام دینا غلطی ہے ۔ اس سے دوئی کا دھوکا ہوتا ہے ۔ بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں کہ صرف صداقت ہی اصل روح ہے ۔ اپنے وجود کے اندر وہ خود ہی بول رہا ہے وہ جو خود وجود ہے اور خود خالق ہے ۔



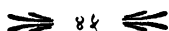
ترور ایک مومل س ٹھاڑھا ، س پھولے پھل لاکے
ساکھا بتو کچھو نہیں ناکے ، سکل کمل دل گاحے
چڑھ ترور دو پنچھی بولے ، ایک گرو ایک چیل
چیل رہا سو رس مچن کھایا ، گرو برنتر کھیلا
پنچھی کے کھوج اگم پرگٹ ، کہیں کبیر بڑی بھاری
سب ہی مورت بیج امورت ، مورت کی بھاری

ایک درخت ہے کہ بغیر جڑ کے کھڑا ہوا ہے اور بغیر پھول کے پھل دے رہا ہے ۔ اس میں شاخیں ہیں نہ پتیاں ۔ وہ سارے کا سارا کنول ہے ۔ اس پر بیٹھے ہوئے دو پنچھی بول رہے ہیں ۔ ایک گرو اور ایک چیل ۔ چیل جن جن کے دسیلے پھل کھا رہا ہے اور گرو خوش ہو کر دیکھ رہا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس کا سمجھنا دشوار ہے کہ پنچھی تلاش کی حدوں سے باہر ہے پھر بھی صاف دکھائی دے رہا ہے ۔ ہر مورت (شکل) کے اندر امورت (بے شکل) ہے ۔ ہر مورت پر قربان جائے ۔



چلت منسا اچل کینھی ، من ہوا رنگی
تسو میں نہ تو درسا ، سنگ میں سنگی
بدھ تے برندھ کینھا ، توڑ سب تنگی
کہیں کبیر اگم گم کیا ، پریم رنگ رنگی

आकाश के मंदिर पर यौव का (अद्भुत) झंडा लहरा रहा है जिसे चंद्रमा ने चंद्रहार और सितारों ने मायिक-भोतियों से सजा दिया है । इसकी महिमा देखकर मन को स्थिर करो, जिसमें चोंड और सूरज-की रोशनी है । कबीर कहते हैं कि जिसने यह शराब पी ली वह मस्त हो गया ।



साधो, को है कहैं आये ।

तेहिके मन धौं कहाँ बसत है, को धौं नाच नचायो ॥

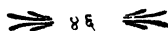
पावक सर्व अंग काठहिमें, को धौं डहक जगायो ।

हो गया थाक तेज पुनि वाको, कहु धौं कहाँ समायो ॥

अहे अपाग पार कहु नाहीं, सतगुरु जिन्है लग्वायो ।

कहैं कबीर जेहि सूझ-बूझ अस, तेई तस आज सुनायो ॥

साधु, तुम कौन हो, कहाँ से आये हो ? वह सर्वशक्तिमान कहाँ बसता है और वह सृष्टि को कैसा नाच नचा रहा है । आग लकड़ी के हर हिस्से में छुपी हुई है फिर उसे कौन जगा देता है । जब लकड़ी जलकर राख होजाती है तो आग कहाँ चली जाती है । जिनको सत्गुरु के दर्शन हो गये हैं उनके लिए पार-अपाग कुछ नहीं है । कबीर कहते हैं कि जिसकी सूझ-बूझ जैसी है उसको वैसे ही बात मैंने आज सुनायी है ।



साधो, सहजै काया सोधो ।

जैसे बटका बीज ताहिमें पत्र-फल-फल-छाया ।

काया-मद्वे बीज बिगजे, बीजा मद्वे काया ।

अग्नि-पवन-पानी-पिग्थी-नभ, ता-बिन मिलै नाहीं ।

काजी पंडित कगे निगनय को न आपा माहीं ।

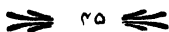
जल-भर कुंभ जलै बिच धरिया, बाहर-भीतर सोई ।

उनको नाम कहनको नाहीं, दूआ धोखा होई ।

कहै कबीर मुनो भाई साधो, सत्य-शब्द निज साग ।

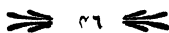
आपा-मद्वे आपै बोले, आपै सिग जनसाग ।

آسمان کے مندر پر غیب کا پرچم لہرا رہا ہے جس کو چاند نے چندر
بار اور ستاروں نے جواہرات سے سجا دیا ہے۔ اس عظیم نظارے کو
دیکھ کر روح و دل کا سکون حاصل کرو جس میں چاند اور سورج روشن
ہیں۔ کبیر کہتے ہیں کہ جس نے یہ شراب پی لی وہ مست ہو گیا۔



سادھو، کو ہے کہاں سے آو
نبی کے من دھوں کہاں بست ہے، کو دھوں ناچ نچایو
پاؤک سرو انگ کالھہی میں، کو دھوں ڈھک حگایو
ہو گیا کھاک تیج پُن وا کو، کہو دھوں کہاں سماو
اے اپار پار کیجھ ناہیں، ست گُرو جنہیں لکھایو
کہیں کمیر جھی سو جھ، بوجھ جس، تیج تَس آج سناو

سادھو تم کون ہو، کہاں سے آئے ہو؟ وہ ارفع اور اعلیٰ کہاں بستا
ہے اور وہ کائنات کو کیسا ناچ نچا رہا ہے۔ آگ لکڑی میں چھپی ہوتی ہے۔
پھر اسے کون جگا دیتا ہے۔ جب لکڑی جل کر خاک ہو جاتی ہے تو آگ
کہاں چلی جاتی ہے۔ جنہوں نے ست گرو کو دیکھ لیا ہے اُن کے لئے
بار اپار (محدود لا محدود) کچھ بھی نہیں۔ کبیر کہتے ہیں کہ جس کی
سو جھ بوجھ جیسی ہوتی ہے اس کو ویسی ہی بات میں نے آج سنائی ہے۔



سادھو سہجے کا یا سودھو
حیسے بٹ کا بیج ناہی میں پتر پھول پھل چھایا
کا یا مدھے بیج راجے، بیجا مدھے کا یا
اگن پون پانی پرنتھی نہ، تا بن ملے ناہیں
کاجی پنڈت کرو نرتے کو نہ آبا ماہیں
جل بھر کُسمبھ حلے بچ دھریا، ناہر بھیت سونی
اُن کو نام کہن کو ناہیں۔ دوجا دھوکھا ہوئی
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، ستیہ شمد نیج سارا
آبا مدھیں آہے بولے آہے سر جس بارا

➤ ४२ ➤

तीर्थमें तो सब पानी है, होवे नहीं कछु अन्हाय देखा ।
प्रतिमा सकल तो जड़ हैं भाई, बोलें नहीं बोलाय देखा ।
पुरान-कोरान सबै बात है, या घटका परदा खोल देखा ।
अनुभवकी बात कबीर कहैं यह, सब है झूठी पोल देखा ॥

तीर्थों में तो सब पानी ही पानी है । मैंने वहाँ नहाकर देखा है, उससे कुछ भी नहीं होता । सारी मूर्तियाँ जड़ (निर्जीव) हैं, मैंने आवाज देकर देखा है, कोई जवाब नहीं मिलता । पुराण और कुरान में शब्द ही शब्द हैं । मैं अपने घट (शरीर) का परदा छटाकर देख चुका हूँ । कबीर तो अपने अनुभव की बात कहते हैं, बाक़ी सब झूठी बातें हैं, मैंने इनकी पोल देख ली है ।

➤ ४३ ➤

पानी बिच भीन पियासी ।
पोंहि सुन सुन आवै हाँसी ॥
घरमें वस्तु नजर नहि आवत
बन बन फिरत उदासी ।
आत्मज्ञान बिना जग झूठा
क्या मथुरा क्या कासी ।

पानी में मछली प्यासी है, यह सुनकर मुझे हँसी आती है । घर ही में रखी हुई चीज दिखायी नहीं दी और उसकी खोज में जंगल जंगल परेशान फिर रहे हैं । अगर आत्म-ज्ञान न हो तो चाहे मथुरा जाओ चाहे काशी, यह दुनिया झूठी ही दिखायी देगी ।

➤ ४४ ➤

गगन मठ गैब निसान उड़े ।
चन्द्रहार चँदवा जहँ टोंगे, मुक्ता-मानिक मड़े ।
महिमा तासु देव मन धिरकर, रवि-मसि जोत जरे ।
कहैं कबीर पियै जोई जन, माता फिरत मरे ।

تیرتھ میں تو سب پانی ہی ہے ، ہووے نہیں کچھ ۔ اُنہائے دیکھا
پر تما سکل تو حڑ ہیں بھائی ، بولیں نہیں ، لائے دیکھا
پُران کُڑاں سبے بات ہے ۔ یا گھٹ کا پردہ کھول دیکھا
اُنہو کی بات کبیر کہیں بہ ، سب ہے جھوٹی پول دیکھا

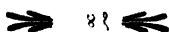
تیرتھ میں تو سب پانی ہی پانی ہے ۔ میں نے نہا کے دیکھا ہے اس سے
کچھ بھی نہیں ہوگا ۔ ساری مورتیاں بے جان ہیں ۔ میں نے آواز دے کے دیکھا
ہے کوئی جواب نہیں ملتا ۔ پُران اور قرآن سب لفظ ہی لفظ ہیں ۔
میں اپنے وجود کا پردہ اٹھا کر دیکھ چکا ہوں ۔ کبیر تو صرف تجربے
کی بات کرتے ہیں (اُنہو = تجربہ ، گیان = عرفان) باقی سب جھوٹی
باتیں ہیں ۔ میں نے ان کی پول دیکھ لی ہے ۔

پانی سچ مین پیاسی
موہی سُس سُس اُوے ہاسی
گھر میں وستُ بجر نہیں اُوت
س سن پھرت اُداسی
آتم گیان بنا جگُ جھونٹھا
کیسا متھرا کیسا کلسی

پانی میں پھولی پیاسی ہے ۔ یہ سن کر مجھے ہنسی آجاتی ہے ۔ گھر ہی میں
رکھی ہوئی چیز نظر نہیں آتی (اور اس کی تلاش میں) جنگل جنگل
اداس پھر رہے ہیں ۔ اگر آتم گیان (خود شناسی ، عرفانِ روح) نہ ہو تو
چاہے متھرا جاؤ چاہے کاشی یہ دنیا جھوٹی ہی نظر آئے گی ۔ (بھگوان تیرتھ
استھانوں میں نہیں ہے انسان کیے وجود میں ہے) ۔

گگن مٹھ کب سان اڑے
چندر ہار چندوا جہاں ٹانگے ، مُکتا مانک موہے
مہما تاسُ دیکھ من تھر کر ، رو سس جوت جرے
کپیں کبیر پئے جوئی جن ، مٹانا پھرت مرے

छेड़े । कबीर कहते हैं कि घर ही सब कुछ है । सत्य घर ही में है और घर ही में वह सत्य मिल सकता है ।



सन्तो, सहज समाधि भली ।
 सोईते मिलन भयो जा दिनतें, सुरत न अन्त चली ॥
 आँख न मूँदूँ कान न रूँधूँ, काया कष्ट न धारूँ ।
 खुले नैन में हँस हँस देखूँ, सुन्दर रूप निहारूँ ॥
 कहूँ सो नाम सुनूँ सो मुमिन, जो कुछ करूँ सो पूजा ।
 गिरह-उद्यान एकसम देखूँ, भाव भिटाऊँ दूजा ॥
 जहँ जहँ जाऊँ साईं परिक्रमा, जो कुछ करूँ सो सेवा ।
 जब सोऊँ तब करूँ दण्डवत, पूजौँ और न देवा ॥
 शब्द निरन्तर मनुआ गाता, मलिन वचनका त्यागी ।
 उठत-बैठत कबहुँ न बिसरै, ऐसी तागी लागी ।
 कहँ कबीर यह उन्मुनि रहनी, सो परगट कर गाई ।
 सुख-दुखके एक परे पगम सुख, तेहिमें रहा समाई ॥

संतो, सहज समाधि ही भली है । जबसे साईं से मिलन हो गया है तबसे मैंने किसी और से लौ नहीं लगायी है । न आँख बंद करता हूँ न कान, और न शरीर को कष्ट पहुँचाता हूँ । खुली आँखों से हँस-हँसकर उसका सुंदर रूप देखता हूँ । जो बोलता हूँ वह नाम है, जो सुनता हूँ वही मुमिन है, जो करता हूँ वह पूजा है । मेरे लिए घर और उद्यान सब समान है, मेरे लिए उनमें कोई अंतर बाक्ती नहीं है । मैं जहाँ भी जाऊँ वही मेरे लिए परिक्रमा है और जो कुछ करूँ वही उसकी सेवा है । जब मैं सोता हूँ तब वही मेरी दंडवत है, मैं किसी और देवता की पूजा नहीं करता । मेरा मन निरंतर उसी के गीत गाता है और कोई कुशब्द मेरी जवान पर नहीं आता । उठते-बैठते उसकी याद ताजा रहती है और इस राग का क्रम टूटने नहीं पाता । कबीर कहते हैं कि मेरे हृदय में जो उन्माद था उसे मैंने प्रगट कर दिया है । मैं पगम सुख की उस अवस्था में पहुँच गया हूँ जो सुख और दुख दोनों से परे है ।

سب کچھ ہے . حقیقت گھر ہی میں ہے اور گھر ہی میں وہ حقیقت
مل سکتی ہے .

۴۱

ستو سہج سمدھہ بھلی
سائیں تے ملن بھو حارن تیں ، سُرت نہ انت چلی
آنکھ نہ موندون . کان نہ رُوندھوں ، کاپا کشٹ نہ دھاروں
کھالے بین میں ہنس ہنس دیکھوں ، سدر روپ نہاروں
کہوں سو نام سُنوں سو سُمرن ، جو کچھ کروں سو پوجا
گرہ اُدیان ایک سَم دیکھوں ، ہاؤ مشاؤں دوجا
جہاں جہاں حاؤں ، سوئی پر کرما ، جو کچھ کروں سو سیوا
جب سوؤں تب کروں دندوت ، پوجوں اور نہ دیوا
شد نرنتر منوا رانا ، ملن بچس کا تیاگی
اوٹھت بیٹھت کہوں نہ سرے ایسی تاری لاگی
کہیں کبیر یہ اُس رہی ، سو پرگٹ کر گائی
سکھ دکھ کے اک پرے پرے سکھ نیہی میں رہا سمائی

ستو سہج سمدھہ ہی بھلی ہے . جب سے محبوب مل گیا ہے میں نے کسی
اور سے لو نہیں لگائی ہے . نہ آنکھ بند کرتا ہوں نہ کان ، نہ جسم کو
تکلیف پہنچاتا ہوں . کھلی آنکھوں سے ہنس ہنس کر اس کے حسن کا
جلوہ دیکھتا ہوں . جو بولتا ہوں وہ نام ہے ، جو سنتا ہوں وہ تسبیح ،
جو کرتا ہوں وہ عبادت . میرے لئے گھر اور گلستان ایک سا ہے ،
دونوں باقی نہیں ہے . میں جہاں بھی حاؤں وہ طواف شوق ہے اور جو
کچھ کروں وہی اس کی خدمت ہے . میری نیند میرا سجدہ ہے ، میں
کسی اور دیوتا کی پوجا نہیں کرتا . دل مسلسل اس کے نام کا گیت
گاتا ہے اور کوئی ناپاک لفظ زبان پر نہیں آتا ، اٹھتے بیٹھتے ، اس کی
یاد تازہ رہتی ہے اور ساز کی لے ٹوٹتے نہیں پاتی . کبیر کہتے ہیں کہ
میں نے اپنے دل کی دیوانگی کو ظاہر کر دیا ہے . میں انبساط کی اس
منزل میں ہوں جہاں دکھ اور سکھ دونوں بے معنی ہیں .

साधो, यह तन ठाठ तँबूरेका ।

ऐंचत तार मगोरत खँट्टी, निकसत राग हजरेका ॥

टूटे तार बिखर गई खँट्टी, हो गया धूरम-धूरेका ।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, अगम पंथ कोई सूरेका ॥

साधु, यह तन-तंबूरे का ठाठ है । जब खँट्टी मरोड़ी जाती है और तार खिंचते हैं तो ढुङ्गरी (भक्ति) का गीत बाहर निकलता है । अगर खँट्टी टूट जाये और तार बिखर जायें तो यह धूल का साष् धूल में मिल जायेगा । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि इसमें से केवल ब्रह्मा ही सुर बाहर निकाल सकते हैं ।

अवधू, भूलेको घर लावै ।

सो जन हमको भावै ॥

घरमें जोग भोग घरहीमें, घर तज बन नहि जावै ।

घरमें जुक्त मुक्त घरहीमें, जो गुरु अलख लखावै ।

सहज सुन्नमें रहै समाना, सहज समाधि लगावै ।

उन्मुनि रहै ब्रह्मको चीन्है, परम तत्वको ध्यावै ।

सुरत-निरतसो मेला करके, अनहद नाद बजावै ।

घरमें बसत वस्तु भी घर है, घर ही वस्तु मिलावै ।

कहै कबीरा सुनो हो साधू, ज्योका त्यों ठहरावै ॥

ऊधो, हमको तो बस वह प्यारा है जो भूले-भटके को घर वापस लाता है । हमें वह प्यारा है जो घर छोड़कर जंगल में बसेरा नहीं करता । क्योंकि घर ही में प्रिय का मिलन है और घर ही में जीवन का आनंद है । हमें वह प्यारा है जो अनदेखे को दिखा देता है । घर ही में पाबंदियों और बंधन हैं और घर ही में मुक्ति । हमें वह प्यारा है जो आसानी से शून्य में समा जाये और आसानी से समाधि लगा ले । जो हर चीज से विरक्त होकर ब्रह्म को पहचाने और सत्य को अनुभव करे । जो प्रेम और वैराग्य को मिलाकर अनहद राग

سادھو یہ تں ٹھاٹھ تہورے کا
 اینچت تار، مروت کھونٹی، نکست راگ بچورے کا
 ٹوٹے تار، نکھر گئی کھونٹی، ہو گیا دھورم دھورے کا
 کمے کبیر سنو بھائی سادھو، اگم پتھ کوئی سُور۔ کا
 سادھو یہ تں تہورے کا ٹھاٹھ ہے۔ جب کھونٹی مروڑی جانی ہے اور
 تار کھینچتے ہیں تو حضوری کا نغمہ باہر نکلتا ہے۔ اگر کھونٹی ٹوٹ
 جائے اور تار نکھر جائیں تو یہ دھول کا ساز دھول میں مل جائے گا۔
 سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اس میں سے صرف برہما سُور
 باہر نکال سکتے ہیں۔

اودھو، بھولے کو گھر لاوے
 سو جن ہم کو بھاوے
 گھر میں جوگ، بھوگ گھر ہی میں، گھر تچ بن نہیں جاوے
 گھر میں جُکنت، مُکنت گھر ہی میں، جو گُر الکھ لکھاوے
 سوچ سُن میں رہے سمانا، سوچ سادھ لگاوے
 اُنمَن رہے، برہم کو چاہیے، پر م تنو کو دھیاوے
 سُرَت نِرت سوں میلا کر کیے، ان حد ناد بجاوے
 گھر میں بست، بست بھی گھر ہے، گھر ہی بست ملاوے
 کہیں کبیرا سنو ہو سادھو، جیوں کا تیوں ٹھہراوے
 اودھو، ہم کو وہ پیارا ہے جو بھولے بھٹکے کو گھر واپس لانا ہے جو
 گھر چھوڑ کر جنگل میں پناہ نہیں لیتا کیونکہ گھر ہی میں وصال محبوب
 ہے اور گھر ہی میں زندگی کا لطف۔ جو اُن دیکھے کو دکھانا ہے۔
 گھر ہی میں پابندیاں اور بندشیں ہیں اور گھر ہی میں نجات اور مکتی۔
 جو آسانی سے شونیسہ (مکمل خاموشی، برہم) میں سما جائے اور
 آسانی سے سادھی لگالے۔ جو ہر چیز سے بے نیاز ہو کر برہم کو
 پہچانے اور اصل حقیقت کو محسوس کرے جو پریم اور بیراگ کو
 ملا کر صوت سرمدی کا ساز چھیڑے۔ کبیر کہتے ہیں کہ گھر میں

मचा घमसान तन-खेत मौँहीं ।
 सील और सौँच सन्ताँष साही भये,
 नाम समसंग तहाँ खूब बाजे ।
 कहै कबीर कोई जूझिहै सूरमा

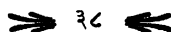
कायेंग भीड़ तहँ तुर्त भाजे ॥

वीर रणक्षेत्र को देखकर घबराते नहीं और भागनेवाले बहादुर नहीं होते । शरीर और प्राण के संग्राम में क्या घमासान लड़ाई हो रही है । काम, क्रोध, मद और लोभ मुक्ताबले पर खड़े हुए हैं । धीरज, संतोष और सत्य के राज्य में तलवार का नाम ऊँचा होजाता है । कबीर कहते हैं कि जब कोई सूरमा लड़ाई के लिए निकलता है तो कायरों की सेना पीठ दिखाकर भाग जाती है ।

(४) साधको खेल तो बिकट बेंड़ा मती
 सती और सूरकी चाल आगे ।
 सूर घमसान है पलक दो चारका
 सती घमसान पल एक लागै ।
 साध संग्राम है रैन-दिन जूझना

देह परजन्तका काम भाई ॥

सत्य की खोज करनेवाले का संघर्ष बहुत कठिन होता है । सती और सूरमा की तुलना में इसका वचन निभाना ज्यादा कठिन होता है । सूरमा की लड़ाई दो-चार घंटे चलती है, सती का संघर्ष एक पल में समाप्त हो जाता है, परंतु सत्य को खोजने वाला दिन-रात संघर्ष करता है । उसकी लड़ाई जीवन के अंतिम क्षण तक चलती रहती है ।



भ्रमका ताला लगा महल रे, प्रेमकी कुंजी लगाव ।

कपट-किंवद्विया खोलके रे, यहि बिधिपियको जगाव ॥

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, फिर न लगै अस दाव ॥

हृदय के महल में भ्रम का ताला पड़ा हुआ है । इसमें प्रेम की कुंजी लगाओ और किवाड़ खोलकर सोते हुए पिया को जगा लो । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि ऐसा मौक़ा फिर हाथ नहीं आयेगा ।

چھا گھمسان تن کہتے مانہیں
 سیل اور سانچ، سنسوش ساہی بھٹے
 نام سمسیر تہاں کھوب ناحے
 کہے کبیر کوئی جو جھپے سورما
 کایراں بھڑ تہاں مُرت بھاجے

بہادر جنگ کے میدان کو دیکھ کر بھاگتے نہیں اور بھاگنے والے
 بہادر نہیں ہوتے۔ جسم و جان کے رن میں کیا گھمسان کی لڑائی ہو رہی
 ہے۔ ہوس، غصہ، غرور اور لالچ مقابلے پر کھڑے ہوئے ہیں۔ صبر،
 قناعت اور صداقت کی بادشاہت میں شمشیر کا نام بلند ہو جاتا ہے۔ کبیر
 کہتے ہیں کہ جب کوئی سورما لڑائی کے لئے نکلتا ہے تو بزدلوں کی
 فوج پیٹھ دکھا کر بھاگ جاتی ہے۔

(۴) سادھ کو کھیل تو رکت بینڑا متی
 ستی اور سور کی چال آگے
 سور گھمسان ہے پلک دو چار کا
 ستی گھمساں پل ایک لاگے
 سادھ سنگرام ہے رین دن جو جھپا
 دیہ پر جنت کا کام بھائی

صداقت کے متلاشی کی حد و حید بڑی کٹھن ہے۔ ستی اور
 سورما کیے مقابلے میں اس کا عہد وفا زیادہ دشوار ہے۔ سورما کی
 لڑائی دو چار گھنٹے چلتی ہے، ستی کی جد و جہد ایک پل میں ختم
 ہو جاتی ہے۔ لیکن صداقت کا متلاشی دن رات جنگ کرتا ہے۔ اس کی
 لڑائی زندگی کے آخری لمحے تک جاری رہتی ہے۔

» ۳۸ «

بہرم کا نالا لگا محل رے، پریم کی کنجی لگاؤ
 کپٹ کوڑیا کھول کے رے، یہ بدھ پی کو جگاؤ
 کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، پھر نہ لگے اُس داؤ
 دل کے محل میں وہم و گمان کا قفل لگا ہوا ہے۔ اس میں پریم کی
 کنجی لگاؤ اور کواڑ کھول کر سوئے ہوئے محبوب کو جگا لو۔ سنو
 بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ ایسا موقع پھر ہاتھ نہیں آئے گا۔

देख । तेरी सेज पर पिया नहीं है । वह तुझे छोड़कर सबेरे ही सबेरे चले गये ।
कबीर कहते हैं कि सिर्फ वह जाग रही है जिसका दिल पिया के
शब्द-बाण से घायल है ।



(१) सूर-परकास, तहँ रैन कहँ पाडये

रैन-परकास नहि सूर भासै ।

ज्ञान-परकास अज्ञान कहँ पाडये

होय अज्ञान तहँ ज्ञान नासै ।

काम बलवान तहँ प्रेम कहँ पाडये

प्रेम जहाँ होय तहँ काम नाहीं ।

कहै कबीर यह सत्त विचार है

समझ विचार कर देख मोहो ।

जहाँ सूरज की रोशनी फैली हुई है वहाँ रात कहीं मिलेगी और जहाँ
रात का अँधेरा है वहाँ सूरज नहीं दिखायी देगा । ज्ञान की रोशनी में अज्ञान
कहीं मिलेगा और अज्ञान के अँधेरे में ज्ञान की ज्योति नहीं दिखायी देगी ।
जहाँ वासना प्रबल है वहाँ प्रेम का पता नहीं और जहाँ प्रेम है वहाँ वासना का
अस्तित्व नहीं । कबीर कहते हैं कि सच्चा विचार यही है ।

(२) पकड़ समसेर संग्राममें पैसिये

देह-परजन्त कर जुझ भाई ।

काट सिर बैगियों दाब जहँका तहो

आय दरबारमें साँस नवाई ॥

तलवार हाथ में लेकर रणक्षेत्र में उतरो और तब तक लड़ते रहो जब तक
जान में जान है । दुरमन का सर काट कर उसका काम तमाम करो, फिर
मालिक के दरबार में आकर अपना सर झुका दो ।

(३) सूर संग्रामको देख भागै नहीं,

देख भागै सोई सूर नाहीं ।

काम और क्रोध मद लोमसे जूझना,

نہیں پہچان سکی۔ آنکھ کھول کے دیکھ۔ تیری سیج پر پیا نہیں ہیں۔
وہ تجھے چھوڑ کر سویرے ہی سویرے چلے گئے۔ کبیر کہتے ہیں کہ
صرف وہ جاگ رہی ہے جس کا دل پیا کے شبدان (لفظوں کے تیر)
سے زخمی ہے۔

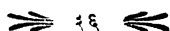
» ۳۷ «

(۱) سور پر کاس تہاں دین کہاں پانیے
ریں پر کاس تہاں سور ہاے
گناں پر کاس اگیان کہاں پانیے
بوئے اگیان تہاں گیان ناے
کام نلواں تہاں بریم کہاں پانیے
پرہ جہاں ہوئے تہاں کام ناہیں
کہے کبیر ۱ ست وچار ہے
سمجھ وچار کر دیکھ ماسی
جہاں سورج کی روشنی پھیلی ہوئی ہے وہاں رات کہاں ملے گی۔
اور جہاں رات کا اندھیرا ہے وہاں سورج نہیں دکھائی دے گا۔ گیان
(علم، عرفان) کی روشنی میں اگیان (جہل) کہاں ملے گا۔ اور جہل
کے اندھیرے میں عرفان کا نور نہیں نظر آئے گا۔ جہاں ہوس کا زور ہے
وہاں عشق کا پتہ نہیں اور جہاں عشق ہے وہاں ہوس کا وجود نہیں۔ کبیر
کہتے ہیں کہ سچا وچار یہی ہے۔

(۲) بکڑ سمیر سنگرام میں پیستے
دیم پر جنت کر مُدّہ بھائی
کاٹ سر تیریاں داب جہاں کا تہاں
آئے دربار میں، سیس وائی
شمشیر ہاتھ میں لے کر میدانِ جنگ (سنگرام) میں اترو اور
اس وقت نک لڑو جب نک حان میں جان ہے۔ دشمن کا سر کاٹ کر
اس کا کام تمام کرو۔ پھر مالک کے دربار میں آکر اپنا سر جھکا دو۔
(۳) سور سنگرام کو دیکھ بھاگے نہیں
دیکھ بھاگے سوئی سور ناہیں
کام اور کرو دھم، اوبھ سے جوجھنا

अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-वन धरै न धीर रे ।
 कामिनको है बालम प्याग, ज्यों प्यासेको नीर रे ।
 है कोई ऐसा पर-उपकारी, पियसों कहै सुनाय रे ।
 अब तो बेहाल कबीर भयो है, बिन देखे जिव जाय रे ॥

बालम हमारे घर आओ । तुम्हारे बिना मेरा तन-मन दुःखी है । सब लोग मुझे तुम्हारी दुल्हन (नारी) कहते हैं और मुझे लाज आती है । दिल से दिल तो लगाया ही नहीं है फिर यह कैसा प्रेम है । खाना-पीना भाता नहीं, नींद आती नहीं । दिल है कि बेचैन है, घर में वन में कहीं भी चैन नहीं मिलता । प्रेमिका (कामिनी) को अपना बालम प्याग है जैसे प्यासे को पानी । है कोई ऐसा परोपकारी जो पिया तक मेरा संदेश पहुँचा दे और कहे कि कबीर बेहाल हो रहा है, तुम्हें देखे बिना अब उसकी जान जा रही है ।



जाग पियारी अब का सोवै ।
 रैन गई दिन काहेको खोवै ॥
 जिन जागा तिन मानिक पाया ।
 तैं बौरी सब सोय गँवाया ।
 पिये तेरे चतुर तू मुख नारी ।
 कबहुँ न पियकी सेज सँवारी ॥
 तैं बौरी बोगपन कीन्ही ।
 भर-जोवन पिय अपन न चीन्ही ॥
 जाग देख पिय सेज न तेरे ।
 तोहि छाँड़ि बठि गये सबेरे ॥
 कहै कबीर सोई धुन जागै ।
 शब्द-बान उर अन्तर लागै ॥

जाग, प्यारी, अब क्या सोती है । रात खत्म हो गयी अब दिन का क्यों खो गयी है । जागने वालों ने हरि-मोती समेट लिये । तूने, ऐ पगली, सोकर सब कुछ गँवा दिया । तेरे पिया समझदार (चतुर) हैं और तू मुख नारी है तू ने कभी अपने पिया की सेज नहीं सँवारी । भरे पगली, तू ने क्या गलती की है । भरा यौवन लेकर भी अपने पिया को नहीं पहचान सकी । आँख खोलकर

اَن نہ بہاوے بند نہ آوے ، گرہ بن دھرے نہ دھیر رے
 کامن کو ہے بالم پیارا ، جیوں پیاسے کو نیر رے
 ہے کوئی ایسا پر اُپکاری پوسوں کہے سنائے رے
 اب تو بے حال کبیر ہیو ہے ، بن دیکھے جو جائے رے

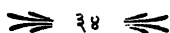
بالم ہمارے گھر آؤ۔ تم بن من دکھیا ہیں۔ سب لوگ مجھے تمہاری
 دلہن کہتے ہیں اور مجھے لاج آتی ہے۔ دل سے دل تو لگایا نہیں ہے ،
 پھر یہ کیسا پیار ہے۔ کھانا پینا بھانا نہیں ، نیند آتی نہیں ، دل ہے کہ
 بے قرار ہے۔ گھر میں ویرانے میں کہیں بھی تسکین نہیں ملتی۔ دلہن کو
 اپنا بالم پیارا ہے جیسے پیاسے کو پانی۔ ہے کوئی ایسا سخی جو پیا تک
 میرا سندیسہ پہونچا دے اور کہے کہ کبیر بے حال ہو رہا ہے۔ بن دیکھے
 اس کی جان جارہی ہے (دیدار کے لئے بیچین ہے)۔

» ۳۶ «

جاگ پیاری اب کا سووے
 رین گئی دن کاہے کو کھووے
 جن حاکا تر مانک پایا
 تیں بوری سب سوئے گنوا یا
 پیے تیرے چتر ، تو مورکھ ناری
 کبھوں نہ پی کی سیج سنواری
 تیں بوری بورا پن کینہی
 بھر جون پی اپن نہ چینہی
 جاگ دیکھ ، پی سیج نہ تیرے
 توه چھانڑ اُلھ گئے سبیرے
 کہیں کبیر سُونی دھن جاگے
 شد بان اُر اتر لاگے

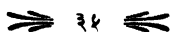
جاگ پیاری۔ اب کیسا سوتی ہے رات ختم ہو گئی اب دن کیوں کھو
 رہی ہے۔ جاگنے والوں نے سیرے موتی سمیٹ لیے۔ تونے اے پگلی
 سوکر سب کچھ گنوا دیا۔ تیرے پیا سمجھدار (چتر) ہیں اور تو مورکھ
 ناری (بیوقوف عورت) ہے۔ تونے کبھی اپنے پیا کی سیج نہیں سنواری۔
 ارے پگلی تونے کیا غلطی کی ہے۔ بھرا جون لے کر بھی اپنے پیا کو

जब तराजू हलकी थी तो उसका पलड़ा ऊपर था । अब तराजू भरी हुई है तो तोलना बेकार है । प्रेम की मारी शराब बेचनेवाली ऐसी मस्त हुई कि बिना नापे-तोले सारी शराब पी गयी । हंस को मानसरोवर झील मिल गयी है तो वह छोटे-छोटे तालाबों का चक्कर क्यों लगाये । जब तेरा मालिक (साहब) घर ही में है तो बाहर आँखें खोलने से क्या मिलेगा । सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि मेरा साहब (प्रभु) जो तिल की ओट में छुपा हुआ है मुझे मिल गया है ।



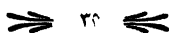
मोहि तोंहि लागी कैसे छूटे ।
जैसे कमलपत्र जल बासा,
ऐसे तुम साहब हम दासा ॥
जैसे चकोर तकत निम चंदा,
ऐसे तुम साहब हम बंदा ॥
मोहि-तोंहि आदि-अन्त बन आई,
अब कैसे लगन दुराई ॥
कहैं कबीर हमरा मन लागा,
जैसे सरिता सिंध समाई ॥

मेरा और तेरा प्रेम कैसे खत्म हो सकता है । जैसे पानी पर कमल का पत्ता काँपता है वैसे तुम साहब (इष्टदेव) हो और मैं तुम्हारा दास हूँ । जैसे रात को चकोर चाँद को प्यार-भरी दृष्टि से देखता है वैसे ही तुम मालिक हो और मैं बंदा हूँ । मेरा और तुम्हारा प्रेम तो आदिकाल से चला आ रहा है और अंतकाल तक रहेगा । यह कैसे खत्म हो सकता है । कबीर कहते हैं कि जैसे नदी समुद्र में जा मिलती है हमारा दिल तुमसे लग गया है ।



बालम, आवो हमारे गेह रे ।
तुम बिन दुखिया देह रे ।
सब कोई कहे तुम्हारी नारी, मोकों लागत लाज रे ।
दिलसे नहीं दिल जगाया, तब लग कैसा सनेह रे ।

ترازو ہلکی تھی تو اس کا پلا اوپر تھا۔ اب ترازو بھری ہوئی ہے تو تولنا بیکار ہے۔ پریم کی ماری شراب بیچنے والی ایسی متوالی ہوئی کہ بغیر ناپے تولے ساری شراب چڑھا گئی۔ ہنس کو مان سروور جھیل مل گئی ہے تو پھر وہ چھوٹے چھوٹے تالابوں کا چکر کیوں لگائے۔ جب تیرا مالک (صاحب) گھر ہی میں ہے تو باہر آنکھیں کھولنے سے کیا ملے گا۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ میرے صاحب جو تل کی اوٹ میں چھپے ہوئے تھے مجھے مل گئے ہیں۔ (میں عین ذات سے مل گیا ہوں۔)



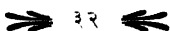
میں ہی توں ہی لاگی، کیسے چھوٹے
جیسے کمل پتر جل ناسا
ایسے تم صاحب، ہم داسا
جیسے چکور نکت نس چدا
ایسے تم صاحب، ہم بندا
میں ہی توں ہی آدانت بن آئی
اب کیسے لکن ڈرائی
کہیں کبیر ہمارا من لاگا
جیسے سرتا سندھ سمانی

میرا اور تیرا عشق کیسے ختم ہو سکتا ہے۔ جیسے پانی پر کنول کا پتا تیرا ہے ویسے تم صاحب (معبود) ہو اور ہم غلام ہیں۔ جیسے رات کے وقت چکور چاند کو پیار بھری نظروں سے دیکھتا ہے ویسے تم مالک ہو اور ہم بندے ہیں۔ میرا اور تمہارا عشق ازل سے ابد تک پھیلا ہوا ہے۔ یہ کیسے ختم ہو سکتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جیسے ندی سمندر میں جاملتی ہے ہمارا دل تم سے لگ گیا ہے۔



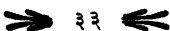
ہالم آؤ ہمارے گہرے
تم بن دکھیا دیہرے
سب کوئی کہے تمہاری ناری، موکوں لاگت لاج رے
دل سے نہیں دل لگایا، تب لگ کیسا سنیہے رے

गगन (शून्य) का द्वार खुल गया है और (अनंत का) मन्दिर प्रकाश से जगमगा उठा है । पुरुष (परमात्मा) से मेरा मिलन हो गया है और मैंने अपना तन-मन उस पर वाग दिया है ।



नाचु रे मेरे मन मत्त होय ।
 प्रेमको गग बजाय रैन-दिन शब्द मुने सब कोइ ।
 राहु-केतु नवग्रह नाचै जन्म जन्म आनंद होइ ।
 गिरी-समुन्दर धरती नाचै, लोक नाचै हँस-रोइ ।
 छापा तिलक लगाइ बाँस चढ़, हो रहा जगसे न्यारा ।
 सहस कला कर मन मेरो नाचै, रीझै सिरजनहारा ॥

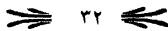
ऐ मेरे मन, आज मस्त होकर नाच । रात-दिन प्रेम का राग बज रहा है और हर आदमी उसके मीठे बोल सुन रहा है । राहु-केतु और नौ ग्रह जन्म-जन्मांतर के हथौल्लास के साथ नाच रहे हैं । पृथ्वी, पर्वत और समुद्र सब नाच रहे हैं और मनुष्य का यह संसार कभी हँसकर नाचता है कभी रोक । केवल छापा और तिलक लगानेवाले बाँस पर चढ़ कर यह समझ रहे हैं कि वे संसार से (सृष्टि के इस नृत्य से) अलग हैं । मेरा मन हज़ार कलाओं के साथ नाच रहा है और उसके नाच पर स्वयं सृष्टि का रचयिता रीझ गया है ।



मन मस्त हुआ तब क्यों बोले ।
 हीरा पायो गोंठ गठियायो, बार बार वाको क्यों खोले ।
 हलकी थी तब चढ़ी तराजू, पूरी भई तब क्यों तोले ।
 सुरत-कलागी भई मतवारी, मदवा पी गई बिन तोले ॥
 हंसा पाये मानसरोवर, ताल तलैया क्यों डोले ।
 तेरा साहब है घरमाहीं, बाहर नैना क्यों खोले ।
 कहैं कबीर सुनो भाई साधो, साहब मिल गये तिल ओले ॥

मन मस्त हो गया तो अब बोलने की क्या जरूरत है । जब हीरा मिल गया और उसे गोंठ में बाँध लिया तो बार-बार उसे खोलकर देखने से क्या फायदा ।

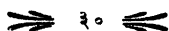
نہیں لگتا۔ آسمان کے دروازے کھل گئے ہیں اور (ابدیت کا) مندر
روشنی سے جگمگا رہا ہے۔ محبوب (پُرش = ذات واحد، عین ذات)
سے ملاقات ہوئی اور میں نے اپنا تن من اُس پر وار دیا۔



ناچ رہے میرے من مت ہوئے
پریم کو راگ بجائے رین دن، سبب سنے سب کوئی
راہ کیت بوگرہ ناچے، جنم جنم آند ہوئی
گری، سمندر، دھرتی ناچے، لوک ناچے ہنس روئی
چھاپا تلک لگائی بانس چڑھ، پوربا جگ سے نیارا
سہس کلاکر، من من میرو ناچے، ریجھے سرجن ہارا
اے میرے دل آج مست ہو کر ناچ۔ رات دن پریم کا راگ بج رہا ہے
اور ہر شخص اس کے میٹھے بول سن رہا ہے۔ راہو، کیتو اور دوسرے
ستارے (موت اور زندگی) سب جنم جنم کی سرمستی کے ساتھ ناچ
رہے ہیں۔ پاڑ، سمندر، زمین سب اس ناچ میں مبتلا ہیں۔ اور انسانوں
کی دنیا کبھی ہنس کر ناچتی ہے اور کبھی روکر۔ صرف چھاپا تلک
لگانے والے بانس پر چڑھ کر یہ سمجھ رہے ہیں کہ وہ جگ سے الگ
تھلک (اس ناچ سے بے نیاز) ہیں۔ میرا دل ہزار انداز سے ناچ رہا
ہے اور اس کے ناچ پر خود خالق کائنات (سرجن ہارا) ریجھ گیا ہے۔

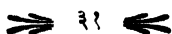


من مست ہوا تب کیوں بولے
پیرا پایو، گانٹھ گنٹھایو، بار بار واکو کیوں کھولے
ہلکی تھی تب چڑھی نراجو، پوری بھی تب کیوں تولے
سُرت کلاری بھی متواری، مدوا پی گئی یں تولے
بسسا ہائے مان سروور، تال تلیا کیوں ڈولے
تیرا صاحب ہے گھر ماہیں، باہر نینا کیوں کھولے
کہیں کبیر ستو بھائی سادھو۔ صاحب مل گئے تل اولے
من مست ہو گیا تو اب بولنے کی کیا ضرورت ہے۔ جب پیرا مل گیا اور
اسے گانٹھ میں باندھ لیا تو بار بار کھول کر دیکھنے سے کیا فائدہ۔



या तरिवरमें एक पखेरू, भोग सरस वह डोलै रे ।
 वाकी संघ लखै नहीं कोई, कौन भावसों बोले रे ।
 दुर्म-डाग तहँ अति घन छाया, पंछी बसेरा लेई रे ।
 आवै सौँझ उड़ि जाय सबेरा, मरम न काहू देई रे ।
 सो पंछी मोहि कोई न बतावै, जो बोले घटमाँही रे ।
 अबरन-बरन रूप नाहि रेखा, बैठा प्रेमके छाँही रे ।
 अगम अपार निरन्तर बासा, आवत-जात न दीसा रे ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, यह कुछ अगम कहानी रे ।
 या पंछीके कौन ठौर है, बूझो पंडित ज्ञानी रे ।

इस पेड़ पर एक चिड़िया है जो भीठा रस पीकर भ्रूम रही है। कोई नहीं जानता कि वह कौन है, किसी को नहीं मालूम कि उसके गीत का क्या रहस्य है। जहाँ डालियों की छाया सब से घनी है वहीं इस चिड़िया का बसेरा है। वह शाम को आती है और सुबह उड़ जाती है और अपना भेद किसी पर खुलने नहीं देती। कोई नहीं बताता कि वह कौनसी चिड़िया है जो मेरे घट (शरीर) में बोल रही है। वह न तो रंगीन है न बेरंग, न उसका कोई रूप है, वह प्रेम की छाँव में बैठी है। अगम और अपार विस्तार में निरंतर उसका वास है, उसे आते-जाते कोई नहीं देखता। कबीर कहते हैं कि सुनो भाई साधु, यह बड़ी रहस्यमयी कहानी है। इस पंछी का ठिकाना कहाँ है इसे कोई ज्ञानी पंडित ही बूझ सके तो बूझे।



निस-दिन सालै धाव, नींद आवै नहीं ।
 पिया-मिलन की आस, नैहर भावै नहीं ॥
 खुल नये गगन-किवाड़, मन्दिर उजियाग भयो ।
 भयो है पुरुषसे भेट तन-मन वार दयो ॥
 एक धाव है जो रात-दिन रिसता रहता है। दर्द से नींद नहीं आती। पिया से मिलने के लिए दिल लड़प रहा है। मौँ-बाप का घर अब अच्छा नहीं लगता।

یاترور میں ایک پکھیرو، بھوگ سرس وہ ڈولے رہے
 واکھی سندھ لکھے نہیں کوئی، کون بھاؤ سوں بولے رہے
 مُدِرم ڈار نہاں اتر گھن چھایا، پنچھی بسیرا لینی رہے
 آوے سانجھ، اُڑ جائے سبیرا، مَسَرَم نہ کاہو دینی رہے
 سو پنچھی مونہی کوئی نہ بتاوے، جو بولے گھٹ ماسی رہے
 ابرن برن روپ ناہیں ریکھا، بیٹھا پریم کے چھانہی رہے
 اگم اپار نرنتر باسا، آوت جلاوت نہ دیسا رہے
 کہے کبیر، سنو بھائی سادھو، یہ کچھ اگم کہانی رہے
 یا پنچھی کے کون ٹھور ہے، بوجھو پنڈت گیانی رہے

اس پیڑ پر ایک چڑیا ہے جو میٹھا رس پی کر جھوم رہی ہے۔ کوئی
 نہیں جانتا کہ وہ کہاں ہے۔ کسی کو نہیں معلوم کہ اس کے گیت کا
 کیا راز ہے۔ جہاں ڈالیوں کا سایہ سب سے زیادہ گہرا ہے وہیں اس
 چڑیا کا بسیرا ہے۔ وہ شام کو آتی ہے اور صبح اڑ جاتی ہے اور اپنا
 راز کسی پر ظاہر نہیں کرتی۔ کوئی نہیں بتاتا کہ وہ کون سی چڑیا ہے
 جو میرے وجود (گھٹ = جسم) میں بول رہی ہے۔ وہ نہ تو رنگین
 ہے نہ بے رنگ، اس کی شکل ہے نہ صورت۔ وہ پریم کی چھانٹوں میں
 بیٹھی ہوئی ہے۔ لا محدود اور بیکراں ابدیت اس کا نشیمن ہے۔ اُسے
 آتے جاتے کوئی نہیں دیکھتا۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ یہ
 بڑی پراسرار (اگم) کہانی ہے۔ اس پنچھی کا ٹھکانا کہاں ہے اسے
 کوئی گیانی والا بوجھ سکے تو بوجھے۔

نس دن سالے گھاؤ، نیند آوے نہیں
 پیا ملن کی آس نہر بھاوے نہیں
 مکھل گئے گگن کواڑ، مندر اُجیار بھو
 بھو ہے پُرمش سے بھینٹ، تن من وار دیو

ایک زخم ہے کہ رات دن لپک رہا ہے۔ دُرد سے نیند نہیں آتی۔
 محبوب سے ملنے کے لئے دل یقرا رہا ہے۔ ماں باپ کا گھر اب اچھا

प्रश्न

कबीर, कबसे भये बैरागी ।
तुम्हरी सुगति कहाँको लागी ॥

उत्तर

बड़चित्राका मेला नहीं, नहीं गुरू नहीं चेला ।
सकल पसारा जिन दिन नहीं, जिहि दिन पुरुष अकेला ॥
गोरख, हम तबके अहैं बैरागी ।
हमारी सुगति ब्रह्मसों लागी ।
ब्रह्मा नहि जब टोपी दीन्ही, बिस्तु नहि जब टीका ।
सिव-शक्तीके जनमै नहीं, तबै जोग हम सीखा ॥
कासीमें हम प्रगट भये हैं, रामानंद चेताये ।
प्यास अहदकी साथ हम लाये, मिलन-कर्मको आये ॥
सहजै सहजै मेला होइगा, जागी भक्ति उत्तंगा ।
कहैं कबीर सुनो हो गोरख, चलो गीतके संगी ॥

सवाल : कबीर तुम कब से बैरागी हुए ? तुम किस के प्रेम में लीन हो ?

जवाब : जब वैचित्र्य का मेला नहीं लगा था, जब एकता में अनेकता दिखानेवाले ने अपना खेल शुरू नहीं किया था, जब गुरु और चेले का अंतर नहीं था, जब पृथ्वी और आकाश का विस्तार नहीं था, जब पुरुष (परमात्मा) अकेला था, ऐ गोरखनाथ, कबीर तभी से बैरागी हैं । तभी से हम ब्रह्म के प्रेम में लीन हैं । हम ने योग उस समय सीखा जब ब्रह्म के सग पर तःज नहीं था, जब विष्णु का राजतिलक नहीं हुआ था, जब शिव की शक्ति पैदा नहीं हुई थी । हम काशी में प्रगट हुए और रामानंद ने हमें ज्ञान दिया । अनंत (अहद) की प्यास और उस से मिलने की तड़प हम साथ लाये थे । बड़ी आसानी से हमारा उसका मिलन हो गया, और भक्ति का सागर उमड़ पड़ा । कबीर कहते हैं कि ऐ गोरखनाथ सुनो, उसके गीत के साथ-साथ बड़े चलो ।

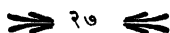
پرشن

کبیر کب سے بھٹے بیراگی
تعمری سُرت کہاں کو لاگی
اُتر

بہی چترا کا میلا ناہیں، نہیں گرو بہیں چیل
سکل پسارا جن دن ناہیں، چہ دن پُرش اکیلا
گورکھ ہم تب کے اہیں بیراگی
بہری سُرت برہم سوں لاگی

برہم انہیں جب ٹوپی دینہی، بسن نہیں جب ٹیکا
سو شکتی کے جنمے ناہیں تبے جوگ ہم سیکھا
کاسی میں ہم پرگٹ بھٹے ہیں، رامانند چیتائے
پیاس احد کی سانہ ہم لائے، ملن کرن کو آئے
سہجے سہجے میلا ہوئیگا، جاگی بھکت اُنکا
کبیر کبیر، سنو سو گورکھ، چلو گیت کے سنگا

سوال: کبیر تم کب سے بیراگی ہوئے۔ تم کس کے عشق میں مبتلا ہو۔
جواب: جب وچتر کا میلا نہیں لگا تھا، جب وحدت میں کثرت کے
جلوے دکھانے والے نے اپنا کھیل نہیں شروع کیا تھا، جب گرو اور
چیلے کی تفریق نہیں تھی، جب زمین اور آسمان (سکل = سنسار)
کا پھیلاؤ نہیں تھا، جب پرش (ذات مطلق) تنہا تھا، اے گورکھ نانہ۔
کبیر تب ہی سے بیراگی ہیں تب ہی سے ہم برہم کے عشق میں مبتلا
ہیں۔ ہم نے یوگ اس وقت سیکھا تھا جب برہما کے سر پر تاج نہیں
تھا، (تخلیق کائنات کا حق نہیں پایا تھا)۔ جب وشنو کے ماتھے پر
ٹیکا نہیں تھا (دنیا کو پالنے کا ادھیکار نہیں ملا تھا) جب شو کی شکتی
پیدا نہیں ہوئی تھی۔ ہم کاشی (بنارس) میں ظاہر ہوئے اور رامانند نے
ہمیں شعور کی روشنی عطا کی۔ احدیت کی پیاس (لاحدود کو حاصل
کرنے کا شوق) اور اُس سے ملنے کی تڑپ ہم سانہ لائے تھے۔ اس
سادہ سے ہم سادگی ہی کے سانہ مل سکیں گے اور بھگتی (محبت) کا
طوفان امنڈ آئے گا۔ اے گورکھ نانہ۔ سنو کبیر کہتے ہیں کہ اس کے
سنگیت کی آواز کے سانہ سانہ بڑھے چلو۔



सतगुरु सोई दया करि दीन्हा ।

ताते अन-चिन्हार मैं चीन्हा ॥

बिना पग चलना बिन पर उड़ना, बिना चूँचका चुगना ।

बिन नैननका देखन-पेखन, बिन सरवन का सुनना ।

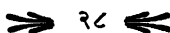
चंद्र न सूर दिवस नहिं रजनी, तहाँ मुगत लौ लाई ।

बिना अन्न अमृत-रस-भोजन, बिन जल तृषा बुझाई ।

जहाँ हरस तँह पुरन सुख है, यह सुख कासों कहना ।

वहै कबीर बल बल सतगुरुकी, धन सिष्यका लहना ।

यह मेरे सद्गुरु की कृपा है कि मैंने उसे पहचान लिया जिसे पहचाना नहीं जा सकता । इस ज्ञान का क्या कहना जिसमें बिना पैरों के चलते हैं, बिना पंखों के उड़ते हैं, बिना चोंच के चुगते हैं, बिना आँखों के देखते हैं, बिना कानों के सुनते हैं । मेरा प्रेम मुझे वहाँ ले आया है जहाँ न चाँद है, न सूरज, न दिन है न रात । अनाज नहीं है लेकिन अमृत रस का भोजन मिल रहा है, पानी नहीं है लेकिन प्यास बुझ रही है । जहाँ आनंद है वहाँ पूर्ण शांति है और यह आनंद अवर्णनीय है । कबीर कहते हैं कि ऐसे गुरु की बलिहारी । उसके शिष्य का भाग्य सहायनीय है ।



निरगुन आगे सरगुन नाचै,

बाजै सोहँग तूरा ।

चेलाके पावैं गुरुजी लागैं,

यही अचम्भा पूरा ॥

निर्गुण के आगे सगुण नाच रहे हैं । सोहँग तूर (अनहद नाद) बज रहा है ।

सबसे बड़े अचम्भे की बात यह है कि गुरु चेले के पैर छू रहा है ।

ست گرو سوئی دیا کردینہا

تاتے ان چنہار میں چنہا
 بن پگ چلنا بن پر اڑنا . بنا چونچ کا چگنا
 بن نین کا دیکھن پیکھن ، بن سروں کا سننا
 چند نہ سور دوس نہیں رخی ، تہاں سرت کولانی
 با ان امرت رس بھوح ، بن حل تر شا ٹھہائی
 جہاں پرس تہاں پورن سکھ ہے ، یہ سکھ کاسوں کہنا
 کہے کبیر بل ست گرو کی ، دھن سش کا لہا

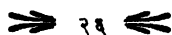
یہ میرے ست گرو (سچے مالک) کی مہربانی ہے کہ میں نے عقل و
 فہم سے بالاتر کا عرفان حاصل کیا ہے۔ اس عرفان کا کیا کہنا جس میں
 بغیر پیروں کے چلتے ہیں، بغیر پروں کے اڑتے ہیں، بغیر چونچ کے
 چگتے ہیں، بغیر آنکھوں کے دیکھتے ہیں، بغیر کانوں کے سنتے ہیں۔
 میرا عشق مجھے وہاں لے آیا ہے جہاں نہ چاند ہے نہ سورج، نہ دن ہے
 نہ رات۔ اناج نہیں ہے لیکن امرت رس کا بھوجن مل رہا ہے، پانی نہیں
 ہے لیکن پیاس بجھ رہی ہے۔ جہاں انبساط ہے وہیں مکمل سکون ہے
 اور یہ آئند ناقابل بیان ہے، کبیر کہتے ہیں کہ ایسے گرو کے قربان
 جائیے۔ اس کے چیلے (سش = شاگرد) کی قسمت مبارک ہے۔

نرگن آگے سرگن ناچے

باجے سوہنگ تورا
 جیلا کے پاؤں گرو جی لاگے
 یہی اچمبھا پورا

ذات کے سامنے صفات ناچ رہی ہیں۔ انا الحق کا ساز بیج رہا ہے۔
 سب سے بڑے اچنبھے کی بات یہ ہے کہ گرو جیلے کے قدم چھو
 رہا ہے۔

कठिनाई में फँसा दिया है और फिर हरि ने ही मेरी दुविधा दूर की है । हरि ने सुख और दुख दोनों दिये हैं और हरि ने ही सारे द्वंद्व दूर किये हैं । ऐसे हरि पर मैं अपना तन-मन न्योछावर कर दूँगा । मैं अपना प्राण दे सकता हूँ लेकिन हरि को भूल नहीं सकता ।



ओंकार सबै कोई सिरजै, रागस्वरूपी अंग ।

निगाकार निर्गुन अविनासी, कर वाहीको संग ॥

नाम निरंजन नैनन-मद्रे, नाना रूप धरंत ।

निरंकार निर्गुन अविनासी, अपार अथाह अंग ॥

महासुख मगन होई नाचै, उपजै अंग तरंग ।

मन और तन धिर न रहतु है, महा सुखके संग ॥

सब चेतन सब अनन्द सब हैं दुःख गहन्त ।

कहाँ आदि कैह अन्त आप सुख बिच धरंत ॥

आकार ने, जो स्वयं राग-स्वरूप है, सब का सृजन किया है । वह निरंकार, निर्गुण और अविनाशी है । उसका नाम निरंजन है लेकिन आँखों में तरह-तरह के रूप धरकर समाता है । वह निरंकार है, निर्गुण है, अविनाशी है, उसका अंग (आकार) आपार और अथाह है । वह महासुख में मगन होकर नाचता है तो अंग-अंग तरंगित हो उठता है । उस महासुख के साथ मिलकर तन और मन स्थिर नहीं रह पाते । (उसका) हर अंग चेतन है और सुख-दुख को अनुभव करता है । उसका न कोई आदि है न कोई अंत । वह अपने ही आनंद के अंदर से फलक रहा है ।

میں پہنسا دیا ہے اور پھر ہری نے ہی شک اور شبہ کی زنجیریں کاٹ دی ہیں۔ ہری نے سکھ اور دکھ دونوں دیشے ہیں اور ہری ہی نے کشمکش کو مٹایا ہے۔ ایسے ہری پر میں اپنا تن من نثار کر دوں گا۔ جان دے سکتا ہوں لیکن ہری کو بھول نہیں سکتا۔

» ۲۶ «

اونکار سبے کوئی سرچے ، راگ سروپی انگ
نراکار نرگن اناسی ، کرواہی کو سنگ
نام نرنجن ، نین مدھے ، نانا روپ دھرت
نرنکار نرگن اناسی اپار اتھاہ انگ
مہا سکھ مگن ہوئی ناچے ، اچے انگ ترنگ
من اور تن تھر نہ رہت ہے ، مہا سکھ کے سنگ
سب چیتن سب اتند سب ہیں دکھ گہنت
کہاں آد کہاں ات آپ سکھ بچ دھرت

اوم نے سب کی تخلیق کی ہے جو خود نغے کی طرح ہے۔ وہ جسم سے بے نیاز ہے (نراکار) اور صفات سے پاک (نرگن) ہے۔ وہ لایموت (اناسی) ہے۔ نام نرنجن ہے لیکن نظروں میں طرح طرح کے روپ دھار کے سماتا ہے۔ وہ لامحدود ہے، لامتناہی ہے، لازوال ہے، وہ مہا سکھ، مہا آتند (انتہائی سرور) کے عالم میں ناچتا ہے تو بے شمار جسم موج در موج پیدا ہو جاتے ہیں۔ (انگ انگ میں ترنگ الہی ہے) اس مہا سکھ اور مہا آتند کے ساتھ مل کر تن اور من اپنے آپ کو سنبھال نہیں پاتے۔ شعور اور احساس، عیش اور غم اس سے سرشار ہیں۔ (پر انگ میں حس و حرکت ہے، پر انگ سکھ اور درد کو محسوس کرتا ہے) اس کی کوئی ابتدا نہیں ہے، کوئی انتہا نہیں ہے۔ وہ اپنے انبساط کے اندر سے جھلک رہا ہے۔

(نوٹ: اس نظم میں لفظوں کا جو حسن اور نشہ ہے وہ ترجمے میں نقل کرنا ناممکن ہے۔ پہلے چار مصرعوں کو بار بار پڑھئے تو ان کی لذت خود بخود محسوس ہونے لگے گی)۔

जिससे रहनि अपाग जगतमें, सो प्रीतम मुझे पियारा हो ।
जैसे पुरइन रहि जल-भीतर, जलहिमें करत पसारा हो ।
वाके पानी पत्र न लागै, ढलकि चलै जस पाग हो ।
जैसे सती चढ़े अगिनपर, प्रेम-वचन ना टाग हो ।
आप जरै औरनिको जरै, गखै प्रेम-मगजादा हो ।
भवसागर इक नदी अगम है, अहट अगाह धारा हो ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बिरले उतरे पारा हो ।
मुझे वह प्रीतम प्यारा है जो इस संसार में अनंत काल तक इस तरह रखे,
जैसे कमल का पत्ता पानी में रहता है, पानी ही में अपनी हथेली फैलाता है
लेकिन पानी उसे भिगो नहीं सकता और पारे की तरह ढलक जाता है (इसी
तरह मैं संसार में रहकर संसार के मोह में नहीं फैसता) । जैसे सती प्रेम-वचन
नहीं तोड़ती और आग में कूद जाती है, खुद जलती है औरों को जलाती है
(शोक में डुबोती है) लेकिन प्रेम की मर्यादा रख लेती है (मैं वैसे ही
संसार की आग में जलता हूँ) । संसार का सागर बहुत गहरा और अथाह है ।
सुनो भाई साधु, कबीर कहते हैं कि कम ही लोग इसे पार करके दूसरे किनारे
तक पहुँच सकते हैं ।

हरिने अपना आप छिपाया ।
हरिने नफ़ीज कर दिखाया ॥
हरिने मुझे कठिन बिच घेरी ।
हरिने दुबिधा काटी मेरी ॥
हरिने सुख-दुख बतलाये ।
हरिने सब दुंद मिटाये ॥
ऐसे हरिपै तन-मन वाहूँ,
प्राणहिं तजै हरि नहीं बिसाहूँ ॥

हरि ने अपने अस्तित्व को छुपाया और फिर बड़े सुचारु रूप से (नफ़ीज = नफ़ीस)
उसे प्रकट किया (वह सृष्टि के सौंदर्य के रूप में सामने आया । हरि ने मुझे

جس سے رہن اپار جگت میں، سو پریم مجھے پیارا ہو
جیسے پُرنِ روِ جل بہتر، جلی میں کرت پسارا ہو
واکے پانی پتر نہ لاگے، ڈھلک چلے جس پارہ ہو
جیسے سنی چڑھے اِگن پر، پریم وچن ناٹارا ہو
آپ جرے اورن کو جارے، راکھے پریم مرجادا ہو
بھو ساگر اک ندی اکم ہے، احد اگاہ دھارا ہو
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، برے اترے پارا ہو

مجھے وہ پریم پیارا ہے جو اس جگت میں مجھے ہم کنار کر کے بے کنار
بنادے۔ جیسے کنول کا پتا پانی میں رہتا ہے، پانی ہی میں اپنی پتھلی
پھیلاتا ہے، لیکن پانی اُسے بھگو نہیں سکتا اور پارے کی طرح ڈھلک
جانا ہے (اسی طرح میں سنسار میں رہ کر سنسار کے موہ میں نہیں مبتلا
ہوتا) جیسے سنی محبت کے عہد و پیمان کو نہیں توڑتی اور آگ میں کود
جاتی ہے، خود جلتی ہے اوروں کو جلاتی ہے (غمناک کرتی ہے) لیکن
عشق کی لاج رکھ لیتی ہے (میں سنسار کی آگ میں جلتا ہوں) دنیا کا
سمندر بہت گہرا اور بیکراں ہے۔ سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ
کم ہی لوگ اسے پار کر کے دوسرے ساحل تک پہنچ سکتے ہیں۔

ہری نے اپنا آپ چھپایا
ہری نے پھینچ کر دکھرایا
ہری نے مجھے کٹھن سچ کھیری
ہری نے مُدبدا کائی میری
ہری نے سُکھ دکھ تلانے
ہری نے سب مُدند مٹانے
ایسے ہری پہ تن من واروں
پرائی تجوں ہری نہیں بساروں

ہری نے اپنے وجود کو چھپایا اور پھر نہایت نفاست سے ظاہر کیا
(وہ کائنات کے حسن کی شکل میں ظاہر ہوا) ہری نے مجھے کٹھنائی

साधो, सो सतगुरु मोहि भावै ।
 सत्त प्रेमका भर भर प्याला, आप पिवै मोहि प्यावै ।
 परदा दूर करै चाँखिनका, ब्रह्म दरस दिखलावै ।
 जिस दरसनमें सब लोक दरसै, अनहद सब्द सुनावै ।
 एकहि सब सुख-दुख दिखलावै, सब्दमें सुरत समावै ।
 कहैं कबीर ताको भय नाहीं, निर्भय पद परसावै ।

साधु, मुझे तो वह सच्चा गुरु प्याग है जो सच्चाई के प्याले भर भर कर खुद भी पीता है और मुझे भी पिलाता है । वह चाँखों के परदे उठा देता है और ब्रह्म के दर्शन करा देता है । ब्रह्म के दर्शन में सभी लोकोंके दर्शन हो जाते हैं और अनहद शब्द सुनायी देता है । वहाँ दुख-सुख एक हो जाते हैं और हर शब्द प्रेम-रस से भर जाता है । कबीर कहते हैं कि जिसको मार्ग दिखानेवाला ऐसा गुरु मिल जाये उसे कोई शम नहीं ।

तिविर सौंभका गहिरा आवै, छावै प्रेम मन-तनमें ।
 पच्छिम दिसकी खिड़की खोलो, दूबहु प्रेम-गगनमें ।
 चेत-कैवल्य-दल रस पीयो रे, लहर लेहु या तनमें ।
 संख घंट सहनाई बाजै, सोभा-सिंघ महलमें ।
 कहै कबीर सुनो भाई साधो, अमर साहब लख घटमें ।

संध्याकाल की परछाइयों गहरी हो रही हैं और प्रेम तन-मन पर छा गया है । पश्चिम की खिड़की खोल दो और प्रेम-गगन में दूब जाओ । मन के कमल का रस पीयो और लहरों को अपने शरीर में समो लो । समुद्र की तरह लहरें लेते हुए शोभा (रूप) के महल में संख, घंटे और सहनाइयों बज रही हैं । भाई साधु सुनो, कबीर कहते हैं, कि अमर साहब (प्रभु) हमारे घट (शरीर) में है, उसे वहीं देखो ।

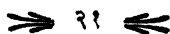
سادھو، سوست کرو مونہی بھاوے
ست پریم کا بھر بھر پیالا، آپ پیوے موہی پیاوے
پردہ دور کرے آنکھن کا، برہم درس دکھلاوے
حسن درس میں سب لوک درسے، ان حد سبند سناوے
ایکھی سب سکھ دکھ دکھلاوے سبند میں سرت سماوے
کہیں کبیر تاکو بھٹے ناپیں، نہ بھٹے پند پر ساوے

سادھو، مجھے تو وہ سچا گرو محبوب ہے جو سچائی کے پیالے بھر بھر کر
خود بھی پیتا ہے اور مجھے بھی پلاتا ہے۔ وہ آنکھوں کے پردے اٹھا دیتا
ہے اور برہم کا جلوہ دکھا دیتا ہے۔ برہم کے جلوے میں ساری دنیاؤں
کے جلوے نظر آتے ہیں اور لافانی اور ابدی نغمہ سنائی دیتا ہے۔ وہاں
رنج اور خوشی ایک ہو جاتے ہیں اور ہر لفظ عشق سے سرشار ہو جاتا
ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جس کو راہ دکھانے والا ایسا گرو مل جائے
اسے کوئی خوف نہیں ہے۔

نمر سانجھ کا گہرا آوے، چھاوے پریم من تن میں
پچھم دس کی کھڑکی کھولو ڈوم پریم گگن میں
چیت کنول دل رس پیو رہے، لہر لیہ یاتن میں
سنگھ گھنٹ سنائی ناجے، سو بھا سندھ محل میں
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، امر صاحب لکھ گھٹ میں

شام کے سائے گہرے ہو رہے ہیں اور پریم تن من پر چھا گیا ہے۔
پچھم کی کھڑکی کھول دو اور پریم گگن میں ڈوب جاؤ۔ دل کے
کنول کا رس پیو اور لہروں کو اپنے جسم میں جذب کرلو۔ سمندر کی
طرح لہریں لینے ہوئے حسن کے محل میں سنگھ گھنٹے اور شہنائیاں
بیج رہی ہیں، بھائی سادھو سنو کبیر کہتے ہیں کہ لافانی مالک (امر
صاحب) ہمارے گھٹ (جسم) کے اندر ہے اسے وہیں دیکھو۔

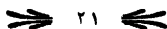
ठिकाना मिलेगा । अच्छी तरह सोच ले, ऐ मन, कहीं और न जाना । कबीर कहते हैं कि कल्पना को छोड़-छाड़ कर अपने अस्तित्व में लीन हो जा ।



घर घर दीपक बरै, लखै नहिं अन्ध है ।
 लखत लखत लखि पगै, कटै जम फन्द है ।
 कहन-सुनन कछु नाहिं, नहीं कछु कर्म है ॥
 जीते जी मरि रहै, बहुरि नहिं मरन है ॥
 जोगी पड़े वियोग, कहैं घर दूर है ।
 पासहि बसत हजूर, तू चढ़त खजूर है ॥
 बाम्हन दिच्छा देता घर घर बालि है ।
 मूर सजीवन पास, तू पाहन पालि है ॥
 ऐसन साहब कबीर सलोना आप है ।
 नहीं जोग नहीं जाप पुन नहीं पाप है ॥

घर घर दीप जल रहा है (हर व्यक्ति के अंदर भगवान की ज्योति है) लेकिन अंधी आँखों को दिखायी नहीं देता । देखने की कोशिश हो तो एक दम आँखें खुल जायेंगी और मौत के फंदे कट जायेंगे । कहने-सुनने और करने को कुछ नहीं है । जो जीते जी मर गया (जिसने कामनाओं को त्याग दिया) वह दुबारा नहीं मरेगा । जो योगी भगवान को न अपनाकर वियोग में पड़ा रहता है वह कहता है कि घर दूर है । हुजूर (भगवान) तो पास ही मौजूद हैं और तू खजूर के पेड़ पर चढ़कर झूठ रहा है । ब्राह्मण घर घर जाकर मंत्र सिखाता है और लोगों को चौपट करता है । संजीवनी धारा तो तेरे अंदर बह रही है और तू पत्थर को पूज रहा है । कबीर, अपना साहब (प्रभु) तो ऐसा सलोना है कि उसके सामने योग, जप-तप, पुण्य और पाप सब बेकार हैं ।

اے دل۔ کہیں اور نہ جانا۔ کبیر کہتے ہیں۔ کہ تخیل اور تصور کو چھوڑ
چھاڑ کر اپنے وجود میں محو ہو جا۔



گھر گھر دیپک برے ، لکھتے ہیں ، اندھ ہے
لکھت لکھت لکھی پڑے کٹے جم پھند ہے
کہن سُسن کچھ ناہی ، نہیں کچھ کر ن ہے
جیتے جی مر رہے ، ہو رہی نہیں مرن ہے
جوگی پڑے بیوگ ، کہیں گھر دور ہے
پاسی بست ہجور ، تو چڑھت کھجور ہے
بامہن دچھا دیتا ، گھر گھر گھال ہے
مور سنجیون پاس ، تو پاپن پال ہے
ایسن صاحب کبیر سلونا آپ ہے
نہیں جوگ نہیں جاپ ، پُن نہیں پاپ ہے

گھر گھر چراغ جل رہا ہے (ہر فرد کے اندر بھگوان کی جوت ہے)
اندھی آنکھوں کو دکھائی نہیں دیتا۔ لیکن دیکھنے کی کوشش ہو تو
ایک دن آنکھیں کھل جائیں گی اور موت کے پھندے کٹ جائیں گے۔
کہنے ، سنتے اور کرنے کو کچھ بھی نہیں۔ جو جیتے جی مر گیا (جس نے
آرزو کو ترک کر دیا) وہ دو بارہ نہیں مرے گا (« سراپا آرزو ہونے نے بندہ
کر دیا ہم کو۔ و گر نہ ہم خدا تھے گر دل بے مدعا ہوتے » میر) جو
جوگی بھگوان کو نہ پا کر ہجر کی تنہائی (بیوگ) میں پڑا رہتا ہے
وہ کہتا ہے کہ گھر دور ہے۔ حضور (بھگوان) تو پاس ہی موجود ہیں
(رگ جال سے زیادہ قریب ہیں) اور تو کھجور کے پیڑ پر چڑھ کے
تلاش کر رہا ہے۔ برہمن گھر گھر جاکر منتڑ سکھاتا ہے اور لوگوں کو
چوٹ کرتا ہے۔ آب حیات کی دھار (سنجیون = سنجیون) تو وجود کے
اندھ بہ رہی ہے اور تو پتھر کو پوج رہا ہے۔ کبیر اپنا صاحب تو ایسا
سلونا (حسین و جمیل) ہے کہ اس کے سامنے جوگ، جاپ، پُن اور
پاپ سب فضول ہیں (اس کو حاصل کرنے کے لئے عبادت، تسبیح،
عذاب اور ثواب کسی چیز کی ضرورت نہیں ہے)

➤ १९ ➤

परमात्म गुरु निकट विगजै
जाग जाग मन मेरे ।
धायके पीतम चरनन लागै
साई खड़ा सिर तेरे ।
जुगन जुगन तोहि सोत्रत बीता
अजहु न जाग सबेरे ।

देख, परमात्मा-रूपी गुरु तेरे पास ही है । ऐ मेरे मन, अब तू जाग जा, दौड़ कर प्रीतम के पैर छू ले । देख, तेरा साईं तेरे सिरहाने खड़ा हुआ है । तुझे सोते सोते युग बीत गये । क्या आज की सुबह भी तेरी नींद नहीं खुलेगी ।

➤ २० ➤

मन, तू पार उतर कहँ जैहौ ।
आगे पंथी पंथ न कोई, कूच-मुकाम न पैहौ ।
नहि तहँ नीर, नाव नहिं खेवट, ना गुन खैंचनहागा ।
धरनी-मगन-कल्प कछु नाहीं, ना कछु वाग न पागा ।
नहिं तन, नहिं मन, नहीं अपनपौ सुनमें सुद्ध न पैहौ ।
बलीवान होय पैठो घटमें, वारीं ठौर होइहौ ।
बार हि बार विचार देख मन, अंत कहूँ मत जैहौ ।
कहँ कबीर सब छाड़ि कलपना, ज्योंके त्यों ठहरहौ ॥

ऐ मेरे दिल, तू पार उतर कर कहाँ जायेगा । तेरे सामने न तो कोई राही है न कोई राह । न कूच है न पड़ाव । वहाँ न तो पानी है, न कोई नाव, न खेवनहारा । नाव को बाँधने के लिए रस्सी भी नहीं है और कोई उसे किनारे खींचने वाला भी नहीं है । पृथ्वी, आकाश, कल्प (काल) कुछ भी नहीं है । आग पार कुछ नहीं है — न तन है न मन, न कोई ऐसी जगह जहाँ आत्मा की प्यास बुझ सके । शून्य के निर्जन विस्तार में कुछ भी तो नहीं है । हिम्मत से काम ले और अपने घट में प्रवेश कर (देखिये पद ६) वहीं कोई ठौर

پرماتم گرو نکٹ وراجیں
جاگ جاگ من میرے
دھائے کیے پیتم چرن لاگے
سائیں کھڑا سر تیرے
مُجکُن مُجکُن تو نہ سُر و ت بیتا
احو نہ حاگ سبیرے

دیکھ پرماتما روپی گرو تیرے پاس ہی ہے اے میرے من اب تو
جاگ جا۔ دوڑ کے پریم کے پیر چھولے دیکھ تیرا سائیں تیرے سر
پر کھڑا ہوا ہے۔ تجھے سوتے سوتے مُجکُن یث گئے کیا آج کی صبح
بھی تو نیند سے بیدار نہیں ہوگا۔

من تو پار اُتر کہاں جیہو
آگے پنتھی پنتھ نہ کوئی، کوچ مُکام نہ پیہو
نہیں تہاں تیر، ناؤ نہیں کھیوٹ، ناگُن کھیچن ہارا
دھرنی گگن کلپ کچھ نہاں، ناکچھہ وار نہ پارا
نہیں تن، نہیں من، نہیں اپن پوسن میں سدھ نہ پیہو
بلی وان ہوئے پیٹھو گھٹ میں، واہیں ٹھوریں ہوٹھو
بارہ بار بچار دیکھ۔ من، ات کہوں مت جیہو
کہیں کبیر سب چھاڑ کلپنا، جیوں کے نیو ٹھہریو

اے میرے دل تو پار اُتر کر کہاں جائے گا۔ تیرے سامنے نہ تو کوئی
رہرو ہے نہ راہ۔ نہ کوچ ہے نہ مقام۔ وہاں نہ تو پانی ہے، نہ کوئی
ناؤ، نہ کھیون ہارا۔ ناؤ کے باندھنے کے لئے رسی بھی نہیں ہے اور
کوئی اسے کنارے کھینچنے والا بھی نہیں ہے۔ زمین، آسمان، وقت
(زمان و مکان) سب ناپید ہیں۔ آ رہا کچھیں نہ۔ نہ تن ہے نہ من نہ
کوئی مقام جہاں روح کی پیال بچھ سکے۔ شونہ کے سنائے اور خلا
میں کچھ بھی تو نہیں ہے۔ ہمت سے کام لے اور اپنے گھٹ میں داخل
ہوجا (دیکھیے نظم نمبر ۶) وہیں کوئی ٹھور ٹھکانہ ملے گا۔ خوب سوچ لے

(१७) खेल ब्रह्माण्डका पिंडमें देखिया

जगतकी भरमना दूर भागी ।

बाहरा-भीतरा एक आकासवत

घरियामें अधर भरपूर लागी ॥

मैंने अपने पिंड (शरीर) में ब्रह्माण्ड का खेल देखा है और मुझे इस संसार के अमों से मुक्ति मिल गयी है । बहिर्मुखी और अंतर्मुखी प्रवृत्तियाँ मिलकर एक आकाश बन गयी हैं । सीमित और असीम दोनों एक हो गये हैं ।

(१८) देख दीदार मस्तान में होय रह्या

सकल भरपूर है नूर तेरा ।

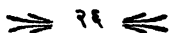
ज्ञानका थाल और प्रेम दीपक अहै

अधर आसन किया अगम डेरा ।

कहैं कबीर तहँ भर्म भासे नहीं

जनम और मरनका मिटा केरा ॥

मैं दीदार (दर्शन) की शराब से मस्त हो गया हूँ । तेरा नूर (ज्योति) भरपूर प्रकट हुआ है । ज्ञान की थाली में प्रेम का दीपक जल रहा है । शून्य के आसन पर साधना का डेरा है । कबीर कहते हैं कि वहाँ अम का अस्तित्व नहीं है और जीवन-मरण का चक्कर खत्म हो चुका है ।



मद्द अकास आप जहँ बैठे, जोत सब्द उजियारा हो ।

सेत सरूप राग जहँ फूलै, साईं करत बिहारा हो ।

कोटिन चन्द-सूर छिप जैहँ, एक रोम उजियारा हो ।

वही पार एक नगर बसतु है, बरसत अमृत-धारा हो ।

कहैं कबीर सुनो भ्रमदासा, लखो पुरुष दरबार हो ।

बीच आकाश में जहाँ स्वयं भगवान विराजमान हैं, ज्योति-सम शब्द का उजाला है, जहाँ उज्ज्वल राग फूलों की तरह खिल रहा है, जहाँ प्रभु विहार करते हैं । उसके एक रोम के प्रकाश के आगे करोड़ों चाँद-सूरज की रोशनी मंद पड़ जाती है । उस पार एक नगर बसा हुआ है जहाँ हर समय अमृत की धार बरस रही है । कबीर कहते हैं कि, ऐ धर्म के पुजारियों, आओ और मेरे प्रभु का दरबार देखो ।

(۱۷) کھیل برہمانڈ کا پنڈ میں دیکھیا

جگت کی بھرنا دور بھاگی

باہرا بھیترا ایک آکاس وت

دھریا میں آدھر بھرپور لاگی

میں نے اپنے وجود (جسم) میں کائنات کا ہنگامہ دیکھا ہے اور
مجھے دنیاوی غلطیوں سے نجات مل گئی ہے ، خارجی اور داخلی وجود
سے ایک آسمان بن گیا ہے ، محدود اور لائحہود متحد ہو گئے ہیں ۔

(۱۸) دیکھ دیدار مستان میں ہوئے رہیا

سکل بھرپور ہے نور تیرا

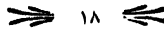
گیان کا تھال اور پریم دپیک اہے

آدھر آسن کیا اگم ڈیرا

کہیں کبیر نہاں بھرم بھاسے نہیں

جنم اور مرن کا مٹا پھیرا

میں دیدار کی شراب سے مست ہو گیا ہوں ، تیرا نور بھرپور شکل
میں ظاہر ہوتا ہے ۔ گیان کی تھال میں پریم کا دیا جل رہا ہے ۔
شونہ کے آسن پر سادھنا کا ڈیرا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں وہاں غلطی کا
وجود نہیں اور زندگی اور موت کی کشمکش ختم ہو چکی ہے ۔



مدھ اکاس آپ جہاں بیٹھے ، جوت سندُ اُجیارا ہو

سیت سروپ راگ جہاں پھولے ، سائیں کرت بہارا ہو

کوئن چندر سور چہپ جیہیں ، ایک روم اُجیارا ہو

وہی پار ایک نگر بست ہے ، برست امرت دھارا ہو

کہیں کبیر سنو دھرم داسا ، لکھو پُرش دربارا ہو

وسط آسمان میں جہاں خود بھگوان براجمان ہیں ۔ چمکتے دمکتے
لفظوں کا اجالا ہے (صوت سرمندی کا نور پھیلا ہوا ہے) جہاں سفید
راگ پھول کی طرح کھل رہا ہے ۔ مالک کے وجود کی بہار ہے ۔ اس کے
ایک روئیں کی روشنی کے سامنے کروڑوں چاند سورج ماند پڑ جائے ہیں ۔
اُس پار ایک نگر بسا ہوا ہے جہاں ہر وقت امرت کی دھار برس رہی ہے ۔
کبیر کہتے ہیں کہ اے دھرم داس آؤ اور میرے مالک کا دربار دیکھو ۔

आठहू पहर मस्तान माता रहै
ब्रह्मके देहमें भक्त जीवै ।

आठों पहर का मतवालापन है, आठों पहर जाम पर जाम चल रहे हैं । आठों पहर सरमस्ती छापी गृही है । ब्रह्म के शरीर में भक्त जीवित है ।

(१४) सौंच ही कहत और सौंच ही गहत है
कौंचकूँ त्यागकर सौंच लागा ।
कहैं कबीर यूँ भक्त निर्भय हुआ
जन्म और मरनका भर्म भागा ।

सच ही कहता है और सच ही को अपनाता है । झूठी चमक-दमक को छोड़ कर सच ही का साथ देता है । कबीर कहते हैं कि इस तरह भक्त निडर हो जाता है तो जीवन-मरण का भ्रम बाकी नहीं रहता ।

(१५) गगन गरज तहाँ सदा पावस झरे
होत झनकार नित बजत तूरा ।
गगनके भवनमें गैबका चाँदना
उदय और अस्तका नाँव नार्हो ।
दिवस और रैन तहँ नेक नहि पाइये
प्रेम, परकासके सिंधमार्हो ॥

वहाँ आकाश गूँजता है और नूर (ज्योति) की वर्षा होती रहती है, तारों में झंकार होती है और नक्कारे बजते हैं । गगन के महल में गैब की चाँदनी (दिव्य ज्योति) फैली हुई है, उदय और अस्त का नाम भी नहीं है । प्रेम का प्रकाश एक सागर है जिसमें दिन और रात का नाम नहीं ।

(१६) सदा आनंद दुगा-दन्द व्यापै नहीं
पूरनानंद भरपूर देखो ।
भर्म और भ्रांति तहँ नेक नहि पाइये
कहैं कबीर रस एष पेखा ॥

केवल आनंद ही आनंद है, न 'दुख है न द्वंद । वहाँ मैंने भरपूर आनंद देखा है । वहाँ भ्रम की कोई गुंजाइश नहीं है । कबीर कहते हैं कि वहाँ सिर्फ एक रस दिखायी देता है ।

آٹھو پہر مستان مانا رہے

برہم کے دیہ میں بھکت جیوے

آٹھوں پہر کا متوالا بن ہے ، آٹھوں پہر جام پر جام چل رہے ہیں ۔
آٹھوں پہر سر مستی چھائی رہتی ہے ، برہم کے جسم میں بھکت
زندہ ہے ۔

(۱۴) سانچ ہی کہت اور سانچ ہی کہت ہے

کانچ کوں تباہ کر سانچ لگا

کہیں کبیر یوں بھکت نہ رہے ہوا

جنم اور مرن کا بھرم بھاگا

سچ ہی کہتا ہے اور سچ ہی کو اپنانا ہے ۔ جھوٹی چمک دمک کو
چھوڑ کر سچ ہی کا ساتھ دیتا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس طرح بھکت
نڈر ہو جاتا ہے تو زندگی اور موت کا بھرم باقی نہیں رہتا ۔

(۱۵) گگن گر جے تہاں سدا پاؤں جھرے

ہوت جھنکار نت بخت تورا

گگن کے بھون میں گیب کا چاندنا

اُدے اور است کا ناؤں ناہیں

دوس اور دین تہاں نیک نہیں پائے

پریم ، پرکاس کے سندھ ماہیں

وہاں گگن گر جتا ہے اور نور کی جھڑی لگی رہتی ہے ۔ تاروں میں
جھنکار ہوتی ہے اور نقارے بجاتے ہیں ۔ عرش کے محل میں غیب کی
چاندنی پھیلتی ہے ۔ طلوع اور غروب کا نام بھی نہیں ہے ۔ عشق کا نور
(ظہور) ایک سمندر ہے جس میں دن اور رات کا وجود نہیں ۔

(۱۶) سدا آند دگ دند ویا ہے نہیں

پورنا نند بھر یور دیکھا

بھرم اور بھرائت تہاں نیک نہیں پائے

کہیں کبیر رس ایک پیکھا

صرف سرور ہی سرور ہے ۔ نہ دکھ ہے نہ کشمکش ۔ وہاں میں
نہ بھرپور آند دیکھا ہے ۔ وہاں غلطی کی کوئی گنجائش نہیں ہے ۔
کبیر کہتے ہیں کہ وہاں صرف وحدت کا جلوہ دکھائی دیتا ہے ۔

लेकिन जिसने ग्रम पाया वही बे-सम हो गया यहाँ अब आगम है । जिसने यह स्थान देखा है वही ज्ञानी है, ज्ञानी वही है जिसने उसका गीत गाया है ।

(१०) सुख बानी तिको स्वाद कैसे कहै
स्वाद पावै सोइ सुख मानै ।
कहै कबीर या सैन गूंगातई
होय गूंगा जोई सैन जाने ।

यह ग्रम सत्य है लेकिन इसका सुख वर्णन कैसे किया जाय । जिसने इसका आनंद लिया है वही इस स्वाद को जानता है । कबीर कहते हैं कि इसका स्वाद लेने के बाद अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है और ज्ञानी चुप हो जाता है ।

(११) छक्यौ अवधूत मस्तान माता रहै
ज्ञान-वैराग्य सुधि लिया पूरा ।
स्वौंस-उस्वौंसका प्रेम प्याला पिया
गगन गरजै तहाँ बजै तूरा ॥

अवधूत (जोगी) नशे में चूर है । ज्ञान और वैराग्य अपनी चरमावस्था को पहुँच गये हैं । आती-जाती साँस का प्रेम-प्याला उसने पिया है। सारा आकाश संगीत से भरा हुआ है ।

(१२) बिन कर तौलिया नाद गाता रहै
जतन जरना लिया सदा खेलै ।
कहै कबीर प्रान प्रान-सिंधमे मिलावै
परम सुखधाम तहँ प्रान मेलै ॥

बिना हाथ और वीणा (तंत्री) के नाद गूँज रहा है । सुख और दुख का खेल जारी है । कबीर कहते हैं कि जो कोई अपनी बिंदगी को बिंदगी के समुद्र में मिला देता है उसकी आत्मा महा आनंद में लीन हो जाती है ।

(१३) आठहू पहर मतवाल लागी रहै
आठहू पहरकी छाक पीवै ।

نارسائی کی منزل کہتے ہیں۔ یہ مقام غموں سے آزاد ہے۔ یہاں پہنچنے کا کوئی راستہ نہیں ہے لیکن جس نے غم پایا وہی بے غم ہو گیا۔ یہاں عجب آرام ہے۔ دانش مند وہ ہے جس نے یہ مقام دیکھا ہے۔ دانش مند وہ ہے جس نے اس کا گیت گایا ہے۔

(۱۰) مکھٹہ بانی تِکو سواد کیسے کہے
سواد پاوے سوئی سکھتہ مانے

کہیں کبیر یا سین گونگا تئیں
ہوئے گونگا حونی سین حانے
یہ حرف آخر ہے، مگر اس کا مزا کیسے بیان کیا جائے۔ جس نے مزا چکھا ہے وہی اس لذت کو جانتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس سے لذت اندوز ہونے کے بعد جاہل دانش مند بن جاتا ہے اور دانش مند خاموش ہو جاتا ہے۔

(۱۱) چھکیاں اؤڈھوت مستان مانا رہے
گیان ویراگیہ سُدھ لیا پورا
سوانس اُسوانس کا پریم پیالا پیا
گگن گرجے تہاں بجے تورا
اؤڈھوت (جوگی) نشے میں چور ہے۔ گیان (عام) اور ویراگیہ (بے تعلقی) کی تکمیل ہو گئی ہے۔ آتی جاتی سانس کا پریم پیالا اس نے پیا ہے۔ سارا آکاش سنگیت سے بھرا ہوا ہے۔

(۱۲) بن کر ناتھیا ناد گاتا رہے
جتن جرتا لیا سدا کھیالے
کہے کبیر پران پران سندھ میں ملاوے
پریم سُکھ دھام تہاں پران میلے
انگلیوں کی مضراب کے بغیر تاروں سے نغمے نکل رہے ہیں۔ عیش اور غم کا کھیل جاری ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جو کوئی اپنی زندگی کو زندگی کے سمندر میں ملا دیتا ہے اس کی روح مہا آندھ میں ڈوب جاتی ہے۔

(۱۳) آٹھو پھر متوال لاگی رہے
آٹھو پھر کی چھاکی پیوے

(७) चन्द्र-तपन कोटि दीप बरत हैं तू बाजै तहाँ सन्त झलै ।
 प्यार कनकार तहँ नूर बरसत रहै रस पीवै तहँ भक्त झलै ।
 चाँद और सूरज के करोड़ों दीप जल रहे हैं, नक्कारे बज रहे हैं और
 संत (प्रेमी) पैंग बढ़ा रहे हैं । प्रेम का गीत गूँज रहा है, नूर (दैवी ज्योति)
 बरस रहा है और भक्त भक्ति का रस पीकर मूम रहा है ।

(८) जनम-मरन बीच देख अन्तर नहीं
 दच्छ और बाम यूँ एक आहीं ।
 कहें कबीर या सैन गूँगातई
 वेद कत्तेबकी गम्म नाहीं ॥
 जीवन और मृत्यु के बीच कोई अंतर नहीं है । दाहिना और बायें हाथ एक ही हैं ।
 कबीर कहते हैं कि यहाँ बड़े से बड़ा मर्मज्ञानी भी गूँगा हो जाता है । यह वह
 सच्चाई है जो वेदों और किताबों में नहीं मिलती (केवल अनुभव की जाती है) ।

(९) अधर आसन किया अगम प्याला पिया
 जोगकी मूल जग जुगुति पाई ।
 पंथ बिन जाय चल सहर बेगमपुरे
 दया जगदेवकी सहज आई ।
 ध्यान धर देखिया नैन-बिन पेखिया
 अगम अगाध सब कहत गाई ।
 सहर बेगमपुरा गम्मको ना लहै ।
 होय बेगम्म जो गम्म पावै ।
 गुनाकी गम्म ना अजब बिसराम है
 सैन जो लखै सोइ सैन गावै ।
 मैंने शून्य के आसन पर बैठकर अगम का प्याला पिया । अब मैं मर्मज्ञानी
 हूँ और राह के बिना चलकर मैं उस शहर में पहुँच गया हूँ जहाँ कोई
 दुख नहीं है । जगदेव की कृपा दृष्टि सहज ही मिल गयी है । मैंने ध्यान धरके
 देखा तो वह बिना आँखों के नजर आगया जिसे सब लोग अगम और अगाधी
 कहते हैं । यह स्थान दुःखों से मुक्त है । यहाँ पहुँचने का कोई रास्ता नहीं है

(۷) چندر پن کوٹ دیپ برت ہے، تور باجے تہاں سنت جھولے
 پیار جھنکار تہاں نور برست رہے، دس پیوے تہاں بھکت جھولے
 چاند اور سورج کے کروڑوں چراغ جل رہے ہیں نفاڑے بج رہے
 ہیں اور عاشق (سنت) پینگ بڑھا رہا ہے۔ پریم کا کیت گونج
 رہا ہے، نور برس رہا ہے، اور ہجاری (بھکت) بھگتی کا دس ہی کر
 جھوم رہا ہے۔

(۸) جنم مرن بیچ دیکھ اتہ نہیں
 دچھ اور مام یوں ایک آپیں
 کہیں کبیر یا سین گونگا نہیں
 وید کتب کی گم تاپیں

زندگی اور موت کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے۔ داہنا اور بائیں
 ہاتھ ایک ہی ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ یہاں محرم راز گونگا ہو جاتا ہے۔
 یہ وہ صداقت ہے جو ویدوں اور کتابوں میں نہیں ملتی (صرف محسوس
 کی جاسکتی ہے)۔

(۹) ادھر آسن کیا 'اگم پیالا پیا
 جوگ کی مول جگ جگ گئی پائی
 ہنتہ بن جائے چل سہر بیگم پرے
 دیا جگدیو کی سہج آئی
 دھیان دھر دیکھیا، نین بن پیکھیا
 اگم اگادھ سب کہت گائی
 سہر بیگم پُرا گم کو نالہے
 ہونے بیگم جو گم پاوے
 مگنا کی گم نا عجب بسرام ہے
 سین جو لکھے سوئی سین گاوے

میں نے شونہ کے (خلاؤں میں معلق) آسن پر بیٹھ کر سادھنا کے
 ناقابل بیان رس کا پیالہ پیا۔ اب میں اسرار کا محرم ہوں اور وحدت
 کے راز کا سمجھنے والا ہوں۔ راہ کے بغیر چل کر میں اس شہر میں
 پہنچ گیا ہوں جہاں کوئی غم نہیں ہے۔ (بیگم پورا = بے غم پور) جگدیو
 کا رحم اور کرم آسانی سے نصیب ہو گیا ہے۔ میں نے دھیان دھر کے
 دیکھا تو وہ بغیر آنکھوں کے نظر آگیا جو لا محدود ہے، جسے لوگ

सुरतकी डोर सुख-सिंधका झूलना

घोरकी सोर तँह नाद गावै ।

नीर-विन कैवल तहँ देख अति फ़ुलिया

कहँ कबीर मन भँवर छावै ।

देख अस्तित्व (वज्रुद) में कैसा आराम है । इसका आनंद वही उठा सतका है जो अस्तित्व को अनुभव कर सके । प्रेम की डोरियों हैं और सुख के सागर का झूला है जो पोंगे ले रहा है । शब्द वहाँ बादलों की तरह गरज रहे हैं, एक भव्य गीत (नाद) गूँज रहा है । वहाँ बिना पानी के कमल खिला हुआ दिखायी देता है और कबीर कहते हैं कि मन का भँवरा उसका रस पी रहा है ।

(५) चक्रके बीजमें कैवल अति फ़ुलिया तासुका सुख कोइ सन्त जानै ।

शब्दकी घोर चहुँ ओर तहँ होत है असीम समुंदरकी सुख मानै ।

कहे कबीर यों दूब सुख-सिंधमें जन्म और मरनका भभे भाँने ।

सृष्टि के चक्र के बीच में कैसा सुंदर कमल खिला हुआ है । इसका आनंद कुछ संत ही उठा सकते हैं (जिनकी आत्मा पवित्र है), शब्द की घटाएँ चारों ओर छापी हुई हैं और दिल एक अथाह सागर के सुख में डूबा हुआ है । कबीर कहते हैं कि इस सुख-सागर में इस तरह डूब जाओ कि जिंदगी और मौत का भ्रम बाक़ी न रह जाये ।

(६) पाँचकी प्यास तहँ देख पूरी भई तीन की ताप तहँ लगे नाहीं ।

कहे कबीर यह अगमका खेल है गैबका चाँदना देख माहीं ।

जनम-मरन जहाँ तारी परत है होत आनंद तहँ गगन गाजै ।

उठत झनकार तहँ नाद अनहद घुरै तिरलोक-महलके प्रेम बाजै ।

देखो वहाँ पाँचों विषयों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) की प्यास बुझ गयी है और तीनों दुखों का ताप उतर गया है । यह अगम का खेल है । देखो, तुम्हारे अस्तित्व में दौब की चाँदनी है । वहाँ जिंदगी और मौत की तलियों दिन-रात बज रही हैं । आनंद की ध्वनियों से आकाश गूँज उठा है, अनहद नाद की झंकार सुनायी दे रही है और तीनों लोक के प्रेम के बाजे बज रहे हैं ।

مُسرَت کی ڈور سُکھ سند کا جھولنا
گھوڑ کی سور نہاں ناد گاؤے
نیرِون کنول تہاں دیکھ اتر پھولیا

کہیں کبیر من بھور چھاوے
دیکھ وجود میں کیسا آرام ہے۔ اس کا لطف وہی اٹھا سکتا ہے
جو وجود کو محسوس کر سکے۔ پریم کی ڈوریاں ہیں اور سکھ کے
ساگر کا جھولا ہے جو پینگیں لے رہا ہے، لفظ وہاں بادلوں کی
طرح گرج رہے ہیں، ایک عظیم الشان نغمہ بلند ہو رہا ہے، وہاں بغیر
بانی کے کنول کھلا ہوا دکھائی دیتا ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ من کا
بھونرا اس کا رس ہی رہا ہے۔

(۵) چکٹر کے بیج میں کنول ات پھولیا تاس کا سُکھ کوئی سنت جانے
شبد کی گھوڑ چھوں اور تہاں ہوت ہے، اسیم سمندر کی سکھ ماہے
کہیں کبیر یوں ڈوب سُکھ سندھ میں، جنم اور مرن کا بھرم بھانے
کائنات کے چکٹر کے دل میں کیسا حسین کنول کھلا ہوا ہے،
اس کا لطف کچھ سنت ہی اٹھا سکتے ہیں (جن کی روحیں پاک ہیں)
نغمے (شبد = لفظ) کی گھٹائیں چاروں طرف چھائی ہوئی ہیں اور
دل ایک بیکراں سمندر کی مسرت میں ڈوبا ہوا ہے۔ کبیر کہتے ہیں
کہ اس سُکھ ساگر میں اس طرح ڈوب جاؤ کہ زندگی اور موت کا
بھرم باقی نہ رہ جائے۔

(۶) پانچ کی پیاس تہاں دیکھ پوری بھئی، تین کی تپ تہاں لگے ناہیں
کہے کبیر یہ اگم کا کھیل ہے گیب کا چاندنا دیکھ ماہیں
جنم مرن جہاں تاری پرت ہے، ہوت آند تہاں گگن گاجے
اُٹھت جھنکار تہاں ناد ان حد گھرے ترلوک محل کے پریم باجے
دیکھو وہاں پانچوں لذتوں (شبد، سپرش، روپ، رس، گندھ) کی پیاس
بجھ گئی ہے اور تینوں دکھوں (مادی، روحانی، ذہنی) کا بخار اتر گیا
ہے۔ یہ عقل و فہم سے بالاتر (اگم) کا کھیل ہے۔ دیکھو تمہارے وجود
میں غیب کی چاندنی ہے۔ وہاں زندگی اور موت کی نالیاں مسلسل بیج
رہی ہیں، مسرت کی روشنی آسمانوں میں پھیلی ہوئی ہے، ایک ابدی
نغمے کی جھنکار سنائی دے رہی ہے اور تراوک محل (تین دنیاؤں کا
ایوان) کے پریم باجے بیج رہے ہیں۔

सूरज, चाँद और सितारों के दीपक बुझ गये हैं। प्रेम का राग वैराग्य के ताल और सुर पर ऊँचा उठ रहा है। शून्य में दिन-रात नौबत बज रही है। और, कबीर कहते हैं, मेरा प्रीतम आकाश में बिजली की तरह चमक रहा है।

(२) क्षण और पलककी आरती कौनसी
रैन-दिन आरती विस्व गावै।

धुरत निस्सान तहाँ गैबकी झालरा
गैबकी घंटका नाद आवै।

वहाँ क्षण भर की और पल भर की आरती कहाँ, वहाँ तो सारा संसार रात-दिन आरती उतारता है और गीत गाता है। झिलझिलाती हुई गैब की (रहस्यमयी, दैवी) झालर जगमगा रही है, गैब के घंटों की आवाज आ रही है।

(३) कहें कबीर तहाँ रैन-दिन आरती
जगत के तखतपर जगत साई ॥

कर्म और भर्म संसार सब करत है
पीवकी परख कोई प्रेमी जानै ॥

सुगत औ' निगत धार मनमें पकड़ कर
गंग और जमन के घाट आनै ॥

नीर निर्मल तहाँ रैन-दिन भरत है
जनम औ' मरन तब अन्त पाई ॥

कबीर कहते हैं कि वहाँ दिन और रात अपने दीपकों से आरती उतारते हैं और जगत के तखत पर जगत का स्वामी बैठा हुआ है। सारा संसार कर्म और भ्रम में फँसा हुआ है, ऐसे प्रेमी कम हैं जो प्रीतम को पहचानते हों। असली प्रेमी वह है जो अपने हृदय में प्रेम और वैराग्य की लहरों को इस तरह मिला लेता है जैसे गंगा और जमुना के धारे मिल जाते हैं। यह निर्मल पानी हमेशा बहता रहता है तब कहीं जाकर जन्म और मरण का अंत होता है।

(४) देख बोज़ूदमें अजब बिसराम है
होय मौजूद तो सही पावै।

سورج، چاند اور تاروں کے چراغ جل رہے ہیں۔ پریم کا راگ
بیراگ (بے تعلقی) کے تال اور سر پر بلند ہوزہا ہے۔ فضاؤں میں رات
دن نوبت بیچ رہی ہے، اور کبیر کہتے ہیں کہ میرا پریم آسمانوں میں
بجلی کی طرح چمک رہا ہے۔

(۲) چہن اور ہلک کی آرئی کون سی
رین دن آرئی روستہ گاؤے
گھرت نستان تہاں گیب کی جہالرا
گیب کی گھنٹ کا ناد آوے
وہاں لمحے بھر کی اور پل بھر کی آرئی کہاں۔ سارا سنسار رات
دن آرئی اتارتا ہے اور گیت گاتا ہے۔ طبل اور نشان بیچ رہے ہیں،
جھلمل جیوتی کی غبی جہالر جگمگا رہی ہے، غیب کے گھنٹوں کی
آواز آرہی ہے۔

(۳) کہیں کبیر تہاں رین دن آرئی
جگت کے نکھٹ پر جگت سائیں
کرم او بھرم سنسار سب کرت ہے
پیو کی پرکھ کوئی پریمی جانے
سُرت او نرت دھار من میں پکڑ کر
گنگ اور جنم کے گھاٹ آئے
نیر نرمل تہاں رین دن جھرت ہے
جنم او مرن تب انت پانی
کبیر کہتے ہیں کہ وہاں رات اور دن اپنے چراغوں کو گردش
دے رہے ہیں۔ جگت کے نغٹ پر جگت کا مالک بیٹھا ہوا ہے۔ سارا
سنسار کرم اور بھرم (کام اور غلطی) میں مبتلا ہے۔ ایسے پریمی کم
ہیں جو پریم کو پہچانتے ہوں۔ اصلی عاشق وہ ہے جو اپنے دل میں
پریم (تعلق) اور بیراگ (بے تعلقی) کی لہروں کو اس طرح ملا لیتا
ہے جیسے گنگا اور جمنا کے دھارے مل جاتے ہیں۔ اس کے دل میں
یہ مقدس پانی ہمیشہ بہتا رہتا ہے تب کہیں جا کر جنم اور مرن، موت
اور زندگی کا انت ہوتا ہے۔

(۴) دیکھ وجود میں عجب بسرام ہے
ہوئے موجود تو سہی پاوے

जहाँ श्रुतुराज वर्तत खेल रहा है, जहाँ अनहद बाजा बज रहा है, चारो ओर प्रकाश की नदियाँ बह रही हैं, बहुत कम लोग उसके पाग उतर सकते हैं; करोड़ों कृष्ण जहाँ हाथ जोड़े खड़े हैं, करोड़ों विष्णु जहाँ माथा टेकते हैं, करोड़ों ब्रह्मा पुण्य पढ़ रहे हैं, करोड़ों महेश जहाँ ध्यान में लीन हैं, करोड़ों सरस्वतियों अपनी वीणा बजाने में मगन हैं, करोड़ों इंद्र जहाँ आकाश में फैले हुए हैं, जहाँ अनगिनत देवता, गंधर्व और मुनि हैं, वहाँ मेरे साहब ने अपने आपको प्रगट किया है और सागी सृष्टि में चंदन, अजीर और फूलों की सुगंध बसी हुई है ।

➤ १६ ➤

जहँ चेत-अचेत खंब दोउ मन रच्य़ा है हिंडोर्ग ।
तहँ भूलै जीव जहान, जहँ कतहुँ नहि थिर ठोर्ग ॥
और चन्द-सूर दोऊ भूलै नाहीं पावै अन्त ।
चौरासी लच्छहु जीव भूलै भूलै रवि-ससि धाय ।
कोटिन कल्प जुग बीतिया आने न कबहुँ हाय ।
धरनी अकासहु दोऊ झूलै झूलै पवनहुँ नीर ।
धरि देह हरि आपहुँ झूलै जो लखहीं दास कबीर ।

जहाँ चेतन और अचेतन दो खंबे हैं वहाँ मन का हिंडोला हिल रहा है । वहाँ सारे जीव और सारे जहान भूल रहे हैं । चौंद और सुरज पैंग ले रहे हैं, जिसका कोई अंत नहीं है । चौरासी लाख योनियों में भटकने वाले जीव भूल रहे हैं और चौंद-सूरज भाग-भागकर भूल रहे हैं । करोड़ों युग और कल्प बीत रहे हैं लेकिन उनके मुँह से कभी हाय नहीं निकलती । पृथ्वी और आकाश और हवा और पानी सब भूल रहे हैं । स्वयं हरि (विष्णु) बार बार अवतार लेकर पैंगें बढ़ा रहे हैं और इस तमाशे को कबीरदास देख रहे हैं ।

➤ १७ ➤

(१) प्रह चंद्र तपन जोत बरत है
सुरत गग निरत तार बाजै ।
नौबतिया घुरत है रैन दिन सुजमें
कहै कबीर पिउ गगन गाजै ॥

جہاں بسنت یعنی رُت کا راجہ کھیل رہا ہے، جہاں ابدیت کا ساز بیج رہا ہے، چاروں طرف نور کی ندیاں بہ رہی ہیں، بہت کم لوگ اس کے بار اتر سکتے ہیں۔ جہاں کروڑوں کرشن ہاتھ جوڑے کھڑے ہیں، کروڑوں وشنو سجدے میں محو ہیں، کروڑوں برہما پران پڑھ رہے ہیں، کروڑوں مہیش گیان میں گم ہیں، کروڑوں سرسوتیاں وینا بجانے میں مصروف ہیں، کروڑوں اندر آسمانوں میں پھیلے ہوئے ہیں، دیوتا گندھرو (ناچنے والے) اور مُنی ان گنت ہیں، وہاں میرے صاحب نے اپنے آپ کو بے نقاب کیا ہے اور کائنات صندل، عبیر اور پھولوں کی خوشبو میں بسی ہوئی ہے۔

» ۱۶ «

جہاں چیت اچیت کھنہ دَوُو من رچیا ہے پنڈور
تہاں جھولیں جیو جہان، جہاں کتھوں نہیں تھر کھور
اور چند، سور دَوُو جھولیں ناہیں پاوے آنت
چوراسی چلے جیو جھولیں، جھولیں روی، سسی دھائے
کوئن کلب مُجگ بیتیا، آنے نہ کبھوں ہائے
دھرنی آکاسہ دَوُو جھولیں، جھولیں پونہوں نیر
دھر دیہ ہری آپھوں جھولیں جو لکھیں داس کبیر
جہاں شعور اور لاشعور دو ستون ہیں وہاں من کا ہنڈولا ہل رہا ہے۔
وہاں سارے جیو، سارے جہان جھول رہے ہیں۔ چاند اور سورج پینگ لے
رہے ہیں، جس کا کوئی انت نہیں ہے۔ چوراسی لاکھ قابلوں میں بھٹکنے والے
جیو جھول رہے ہیں۔ کروڑوں عہد اور دور گزر رہے ہیں لیکن اُن کے
منہ سے ہائے نہیں نکلتی۔ زمین اور آسمان اور ہوا اور پانی سب جھول
رہے ہیں۔ خود ہری (وشنو) بار بار اوتار لے کر پینگیں بڑھا رہے ہیں
اور اس تماشے کو داس کبیر دیکھ رہے ہیں۔

» ۱۷ «

(۱) گرہ چندر تین جوت برت ہے
سُرت راگ نرت تار باجے
تو بیتیا مگھرت ہے، رین دن سن میں
کبھیں کبیر پیو گگن گاجے

➤ १४ ➤

दरियावकी लहर दगियाव है जी
 दरियाव और लहरमें भिन्न कोयम् ।
 उठे तो नीर है बैठे तो नीर है
 कहो जो दूसरा किस तरह होयम् ॥
 उसीका फेरके नाम लहर धरा
 लहरके कहे क्या नीर खोयम् ।
 जक्त ही फेर जब जक्त परब्रह्ममें
 ज्ञान कर देख माल गोयम् ॥

दरिया की लहर भी दरिया है, दरिया और उसकी लहर में कोई अंतर नहीं ।
 लहर उठे तो भी पानी है, बैठे तो भी पानी है, फिर यह बताओ कि भेद कहाँ
 है । पानी का नाम बदलकर लहर रख दिया तो क्या पानी खो गया ।
 मन की भाँखें हों तो देखो, ब्रह्म के अस्तित्व में एक जगत के बाद दूसरे जगत
 का क्रम इस तरह चल रहा है जैसे जप की माला के दाने चल रहे हों ।

➤ १५ ➤

जहाँ खेलत बसन्त रितुराज
 जहाँ अनहद बाजा बजै बाज ।
 चहुँदिसि जोतिकी बहै धार
 बिरला जन कोई उतरै पार ।
 कोटि कृष्ण जहँ जोड़ै हाथ
 कोटि विष्णु जहँ नावै माथ ।
 कोटिन ब्रह्मा पढ़ै पुरान
 कोटि महेश धरै जहँ ध्यान ।
 कोटि सगस्वती जहँ धरै राग
 कोटि इन्द्र जहँ गगन लाग ।
 सुर-नाथर्व-मुनि गनै न जायँ
 जहँ साहब प्रगटे आय आय ।
 चोबा चन्दन और अबीर
 पुहप-वास रस गहो गँभीर ।

» ۱۴ «

دریاؤ کی لہر دریاؤ ہے جی
 دریاؤ اور لہر میں بہن مگویم
 اٹھے تو نیر ہے بیٹھے تو نیر ہے
 کہو جو دوسرا کس طرح ہویم
 اسی کا پھیر کے نام لہر دھرا
 لہر کے کہے کیا نیر کھویم
 جگت ہی پھیر جب جگت پر برہم میں
 گیان کر دیکھ مال گویم

دریا کی موج بھی دریا ہے . دریا اور موج میں کوئی فرق نہیں . لہر
 اٹھے تو بھی پانی ہے ، بیٹھے تو بھی پانی ہے . پھر یہ بتاؤ کہ بھید کہاں
 ہے . پانی کا نام بدل کر لہر رکھ دیا تو کیا پانی کھو گیا . دل کی آنکھیں
 ہوں تو دیکھو کہ برہم کے وجود میں ایک دنیا کے بعد دوسری دنیا
 اس طرح چل رہی ہے جیسے جب مالا (تسبیح) کے دانے چل رہے ہوں .

» ۱۵ «

جہاں کھیلست بسنت رت راج
 جہاں امہد باجا بجے باج
 چمٹوں دس جوت کی ہے دھار
 بر لاجن کوئی اترے پار
 کوئی کرشن جہاں جوڑیں ہاتھ
 کوئی وشنو جہاں ناویں ماتھ
 کوئن برہما پڑھیں پُران
 کوئی مہیش دھریں جہاں دھیان
 کوئی سرسوتی جہاں دھرے راگ
 کوئی اندر جہاں گگن لاگ
 سرگندھرو مٹی گئے نا جائیں
 جہاں صاحب پرگئے آئے آئے
 چوبا چندن اور ابیر
 پُپ واس رس دہیو گنبھیر

कहाँ हंसा बिसराम किया है, कहाँ लगाये आस ॥

अवहीं हंसा चेत सबेरा, चलो हमारे साथ ।

संसप-सोक वहाँ नहिं व्यापै नहीं कालकै त्रास ॥

हिअँ मदन-वन फूल रहे हैं, आवे सोहं वास ।

मन भोग जिहँ अरुम रहे हैं, सुखकी ना अभिलास ॥

ऐ हंस, अपनी पुगनी कहानी सुनाओ । तुम किस देश से आये हो, ऐ हंस, और किस घाट उतरोगे । तुम कहाँ आगम करोगे, ऐ हंस, और तुम्हें किसकी खोज है । अभी सबेरा है, ऐ हंस अब भी चेत जाओ और हमारे साथ चलो । एक ऐसी जगह है जहाँ शोक और संशय का नाम नहीं है, मौत का डर नहीं है । वहाँ कामदेव का वन फूल रहा है और ब्रह्म के साथ जीव की अभिन्नता की सुरांध फैली हुई है; वहाँ मन का भँवरा मस्ती में गुंजन कर रहा है । इसके बाद किसी और सुख की अभिलाषा नहीं है ।

➤ १३ ➤

अनगढ़िया देवा, कौन कौ तेरी सेवा ।

गढ़े देव को सब कोई पूजै, नित ही जावै सेवा ।

पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ताको न जानै भेवा ।

दस औतार निरंजन कहिए, सो अपना ना होई ।

यह तो अपनी करनी भोगै, कर्ता और हि कोई ।

जोगी जती तपी संन्यासी, आप आपमें लड़ियाँ ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, राग लखै सो तरियाँ ॥

अनगढ़ देवता, तुम्हें मूर्ती का रूप नहीं दिया जा सकता, तेरी सेवा कौन करेगा । हर एक अपने हाथों से बनाये हुए देवता को पूजता है और उसकी सेवा करता है, लेकिन वह जो पूर्ण है, जो ब्रह्म है, जो अखंडित है उसका नाम कोई नहीं लेता । ये लोग दस अवतारों को मानते हैं जो मन से गढ़े गये हैं, लेकिन कोई अवतार निरंजन (ईश्वर) नहीं है । ये तो अपनी-अपनी करनी भोग रहे हैं करनेवाला तो और ही कोई है । जोगी, तपस्वी और संन्यासी सब आपस में लड़ रहे हैं । कबीर कहते हैं, सुनो भाई, जिसने प्रेम (राग) को देखा है वह तग गया है ।

کہاں ہنسا ہسرام کیا ہے، کہاں لگائے آس
اب ہیں ہنسا چیت سیرا، چلو ہمارے ساتھ
سنسے سوک وہاں تئیں ویا ہے، نہیں کال کے تراس
پیاں مدن بن پھول رہے ہیں، آوے سوہم باس
من بھنورا جیہوں ارُجھ رہے ہیں، شکھ کی نا اہلاس

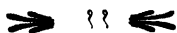
اے ہنس اپنی پرانی کہانی سناؤ، تم کس دیس سے آئے ہو اے ہنس
اور کس گھاٹ اترو گئے۔ تم کہاں آرام کرو گے اے ہنس اور تمہیں
کس کی تلاش ہے۔ اب بھی چیت جاؤ ابھی سویرا ہے اے ہنس، آؤ
ہمارے ساتھ چلو۔ ایک ایسی جگہ جہاں غموں کا نام نہیں، شک اور
دکھ کا نشان نہیں، موت کا خوف نہیں، وہاں مدن بن پھول رہا ہے
(عشق کی بہار چھائی ہوئی ہے) اور انا الحق کی سہانی خوشبو پھیلی
ہوئی ہے۔ من کا بھونرا مسقی میں گونج رہا ہے۔ اس کے بعد کسی اور
شکھ کی آرزو نہیں ہے۔

➤ ۱۳ ➤

ان گڑھیا دیوا، کون کرے تیری سیوا
گڑھے دیو کو سب کوئی پوجے، نت ہی لاوے سیوا
پورن پریم اکھنڈت سوامی ناگو نہ جاے بھوا
دس اوتار رنجن کہے سو اپنا نا ہوئی
یہ تو اپنی کرپی بھوگیں، کرتا اور ہی کوئی
جوگی جتی تہی ستیاسی، اپ آپ میں لڑیاں
کہیں کبیر سنو بھائی سادھو، راگ لکھے سوتریاں

ان گڑھ دیوتا تجھے مورتی کا روپ نہیں دیا جاسکتا، تیری سیوا کون
کرے گا، ہر ایک اپنے ہاتھوں کے بنائے ہوئے دیوتا کو پوجتا اور اس کی
خدمت کرتا ہے۔ مگر وہ جو مکمل ہے، جو برہمن ہے، جو ناقابل
تقسیم ہے اس کا نام کوئی نہیں لیتا۔ یہ لوگ دس اوتاروں کو مانتے
ہیں جو من سے گڑھے گئے ہیں لیکن کوئی اوتار وجود مطلق نہیں ہے۔ یہ
تو اپنی اپنی کرنی چوک رہے ہیں، کرنیوالا تو اور ہی کوئی ہے۔ جوگی،
تپسی اور ستیاسی آپس میں لڑ رہے ہیں۔ سنو بھائی کبیر کہتے ہیں کہ
جس نے پریم (راگ = رام) کو دیکھا ہے اسی کی نجات ہے۔

निकाल लिया । बात एक ही है, ऐ फ़क़ीर, तूने मुझे सारे बंधनों से छुटकारा दिला दिया । कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु, तूने मेरे दिल से अपना दिल मिला दिया है, ऐ फ़क़ीर ।



निस-दिन खेलत रही सखियन सँग,

मोहि बड़ा डर लागे ।

मेरे साहबकी ऊँची अटगिया,

चढ़तमें जियरा कौं पि ॥

जो सुख चाहै तो लज्जा त्यागे,

पियामें हिलमिल लागे ॥

घूँघट ग्वाल अंग भर भेंटे,

नैन आरती साजे ॥

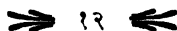
कहैं कबीर सुनो सखि मोगी,

प्रेम होय सो जाने ।

निज प्रीतम की आस नहीं है,

नाहक काज्र पारे ॥

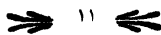
मैं तो दिन-रात अपनी सखियों के साथ खेलती थी और अब मुझे बड़ा डर लग रहा है । मेरे साहब की अटारी बहुत ऊँची है और उस पर चढ़ते हुए जी कौंपता है । (लेकिन प्रेम का तक्राबा कुछ और ही है) सुख (प्रणय सुख) के लिए लाज छोड़नी होगी, मैं पिया से घुल-मिल जाऊँगी, घूँघट हटाकर उसे अंग भरकर लिपटा लूँगी और आँखें आरती उतारूँगी । सुनो मेरी सखी, कबीर कहते हैं, कि जिसने प्रेम किया हो वही इस सुख को जाने, जिसे अपने प्रियतम से मिलने की आस ही न हो वह काजल पारके क्या करेगी । (काजल पारना दिखावटी रीत है वास्तव में प्रणय सुख असलीचीज है)



हंसा करो पुरातन बात ।

कौन देससे आया हंसा, उतरना कौन घाट ।

مجھے باہر نکال لیا۔ بات ایک ہی ہے اے فقیر، تو نے مجھے سارے بندھنوں سے چھٹکارا دلا دیا۔ سنو بھئی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ تو نے میرے دل سے اپنا دل ملا دیا ہے اے فقیر۔



نس دن کھلت رہی سکھیں سنگ
 موہ بڑا ڈر لاگے
 مورے صاحب کی اونچی الٹیا
 چڑھت میں جیرا کانپے
 جو سُکھ ہے نو لچتا تباکے
 پیاسے ہل مل لاگے
 گھونگھٹ کھول انگ بھر بھیتے
 نین آرتی ساحے
 کہیں کبیر سنو سکھی موری
 پریم ہوئے سو خانے
 رنج پریم کی آس نہیں ہے
 ناپک کاجر پارے

میں تو دن رات اپنی سکھیوں کے ساتھ کھلتی تھی اور اب مجھے ڈر لگ رہا ہے۔ میرے صاحب کی اٹاری اونچی ہے اور اس پر چڑھتے ہوئے جی کانپتا ہے۔ (لیکن عشق کا تقاضا کچھ اور ہی ہے) وصل کی لذت کے لئے شرم اور حجاب کو چھوڑنا ہی پڑے گا۔ میں اپنے محبوب (پریم) سے گھل مل جاؤں گی۔ گھونگھٹ اُٹھ جائے گا، جسم ہم آغوش ہو جائے گا اور آنکھیں آرتی اتاریں گی۔ سنو میری سکھی کبیر کہتے ہیں کہ جس نے عشق کیا ہو وہی اس کی لذت کو جانے، جسے اپنے پریم سے ملنے کی آس ہی نہ ہو وہ کاجل پار کے کیا کرے گی۔ (کاجل پارنا ظاہری رسوم ہیں، اصل حقیقت وصال ہے)۔



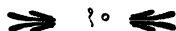
ہنسا کرو پُراتن بات
 کون دیس سے آیا ہنسا، اُترنا کون گھٹ

जुहारों फूट रही हैं। कबीर कहते हैं, सुनो भाई साधु इसी घट में हमारा
सौँई (स्वामी) है।



ऐसा लो नहिँ तैसा लो, मैं कहि बिधि कथौं गंभीरा लो ।
भीतर कहूँ तो जगमय लाजै, बाहर कहूँ तो झूठा लो ॥
बाहर-भीतर सकल निरन्तर, चित्त अचित्त दोउ पीठा लो ।
दृष्टि न मुष्टि परगट अगोचर, बातन कहा न जाई लो ॥

मैं इस गंभीर रहस्य का कैसे वर्णन करूँ, कैसे कहूँ कि वह ऐसा है या वैसा
है। अगर मैं कहूँ कि वह मेरे अंदर है तो साग जग शरमा जाये, और
अगर यह कहूँ कि वह मुझसे बाहर है तो बात झूठी हो जायेगी। अंदर और
बाहर की शक्तें एक दूसरे से अलग नहीं की जा सकती। चित्त और अचित्त
(चेतन और अचेतन) उसके दो पक्ष हैं। न वह दिखायी देता है न हाथ
से पकड़ा जा सकता है; न वह प्रगट है न अगोचर (अप्रत्यक्ष)। वह क्या
है, यह बताने के लिए शब्द नहीं हैं।



तोहिँ मोरि लगन लगाये रे फकिरवा ।
सोवत ही मैं अपने मन्दिरमें,
सबदन मारि जगाये रे फकिरवा ।
बूझत ही भवके सागरमें
बहियौं पकरि समुद्राये रे फकिरवा ।
एकै वचन वचन नहिँ दूजा
तुम मोसे बंद लुड़ाये रे फकिरवा ।
कहै कबीर सुनो भाई साधो,
प्रानन प्रान लगाये रे फकिरवा ।

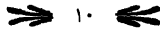
तूने ही मुझमें अपनी यह लगन लगायी है, ऐ फकीर। मैं तो अपने मंदिर में
सो रही थी, ऐ फकीर तेरे शब्दों की चोट ने मुझे जगा दिया। मैं इस
भव-सागर में डूब रही थी, ऐ फकीर तूने मेरी बाँह पकड़कर मुझे बाहर

اسی گھٹ میں لا محدود ابدیت گرج رہی ہے اور اسی سے فوارے
 بھوٹ رہے ہیں۔ سو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ اسی گھٹ میں
 ہمارا مالک (سائیں) ہے۔



ایسا لو نہیں ایسا لو، میں کبیر، بدھی گتھوں گنبھرا لو
 بھیت کہوں تو جگ مے لا جے، باہر کہوں تو جھوٹا لو
 باہر بھیت سکل زرت، چت اچت دوو پیشا لو
 درشت نہ مٹش پرگٹ آگوچر، بانن کہا نہ جانی لو

آہ میں حرف راز کو کیسے ادا کروں۔ کیسے کہوں کہ وہ ایسا ہے
 یا ویسا ہے، اگر میں کہوں کہ وہ میرے اندر ہے تو سارا جگ شرما
 جائے اور اگر یہ کہوں کہ وہ مجھ سے باہر ہے تو بات جھوٹی ہو جائیگی۔
 اندر اور باہر کی شکلیں ایک دوسرے سے الگ نہیں کی جاسکتیں۔
 شعور اور لاشعور اس کے دو رخ ہیں، نہ تو وہ نظر میں سماتا ہے
 نہ گرفت میں آتا ہے، نہ ظاہر ہے نہ پنہاں۔ وہ کیا ہے یہ کہنے کے
 لئے الفاظ نہیں ہیں۔



تو ہیں موری لگن لگانے رے پھکیروا
 سووت ہی میں اپنے مندر میں
 سدن مار جگانے رے پھکیروا
 بوڑت ہی بہو کے ساگر میں
 بہیاں پکیر سمجھائے رے پھکیروا
 ایکے بچن، بچن نہیں دوجا
 ہم موسیں بند چھڑائے رے پھکیروا
 کہے کبیر سو بھائی سادھو
 پرانن پران لگانے رے پھکیروا

تو نے ہی مجھے اپنے عشق میں مبتلا کیا ہے اے فقیر، میں تو اپنے مندر
 میں سو رہی تھی اے فقیر، تیرے لفظوں کے تازیانے نے مجھے جگا دیا،
 میں دنیا کے ساگر میں ڈوب رہی تھی اے فقیر، تو نے میرا بازو پکڑ کر

आत्ममें परमात्म दरसै परमात्ममें झोंई ।

झोंईमें परछाई दरसै, जखै कबीरा सोंई ॥

साधु, जब ब्रह्म ने अपने आपको प्रकट किया तो हमें वह सब भी दिखायी देने लगा जो हम अपनी आँखों से नहीं देख सकते । जैसे बीज में वृक्ष दिखायी देता है और वृक्ष में छाया, जैसे आकाश में शून्य दिखायी देता है और शून्य में अनन्त आकार, उसी तरह अक्षर (अविनाशी, असीमित) के गर्भ से अक्षर निकलता है और अक्षर के गर्भ से निकलकर क्षर (सीमित) फैल जाता है । जैसे सूरज में किरण दिखायी देती है और किरण में प्रकाश उसी तरह परमात्मा में जीव और जीव में साँस और साँस में शब्द और शब्द में अर्थ झलकते हैं । ब्रह्म में जीव है और जीव में ब्रह्म । दोनों अलग अलग हैं और दोनों एक हैं । वह स्वयं बीज है, स्वयं ही वृक्ष है और स्वयं ही अंकुर, फूल-फल और छाया है । वह स्वयं ही सूरज है, स्वयं ही किरण है और स्वयं ही रौशनी । वह स्वयं ही ब्रह्म है, स्वयं ही जीव है और स्वयं ही माया । वह स्वयं ही शून्य का अनन्त विस्तार है, स्वयं ही आकाश है, स्वयं ही साँस है, स्वयं ही शब्द है और स्वयं ही अर्थ । वह स्वयं ही क्षर है और स्वयं ही अक्षर और स्वयं ही क्षर-अक्षर से परे है । वह ब्रह्म और जीव के अंदर समाया हुआ मन है । आत्मा में परमात्मा दिखायी देता है परमात्मा में झोंई ; इसी झोंई में परछाई दिखायी देती है और कबीर इसी को देखने में लीन हैं ।



इस घट अन्तर बाग-बगीचे, इसीमें सिरजनहारा ।

इस घट अन्तर सात समुन्दर, इसीमें नौ लाख तारा ।

इस घट अन्तर पारस मोती, इसीमें परखनहारा ।

इस घट अन्तर अनहद गरजै, इसीमें उठत फुहारा ।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, इसीमें साईं हमारा ।

इसी घट में बाग-बगीचे खिले हैं और इसी में उनका सृजनहार है । इसी घट में सात समुद्र हैं और इसी में नौ लाख तारे । इसी में पारस और मोती हैं और इसी में परखने वाले । इसी घट में अनाहत नाद गूंज रहा है और इसी में

آتم میں پرمانم در سے، پرمانم میں جہائیں
جہائیں میں پرچھائیں در سے لکھے کبیرا سائیں

سادھو، جب برہم نے اپنے آپ کو ظاہر کیا تو غیب کو شہود کر دکھایا،
جیسے بیج میں درخت دکھائی دیتا ہے اور درخت میں سایا، جیسے آسمان
میں خلا (مسن = شونیہ) دکھائی دیتا ہے اور خلا میں ان گنت شکلیں،
اسی طرح لا محدود کی پشت سے لا محدود نکلتا ہے (وراء الورا) اور لا محدود
کے دل سے نکل کر محدود پھیل جاتا ہے، جیسے سورج میں کرن نظر آتی
ہے اور کرن میں روشنی ویسے ہی پرمانما میں جیو اور جیو میں سانس
اور سانس میں لفظ اور لفظ میں معنی جھلکتے ہیں۔ برہم میں جیو ہے
اور جیو میں برہم، دونوں الگ الگ ہیں اور دونوں ایک ہیں، وہ
خود ہی بیج ہے خود ہی پیڑ ہے خود ہی کونسل خود ہی پھول پھل
اور سایہ، وہ خود ہی سورج ہے، خود ہی کرن ہے، خود ہی روشنی۔
خود ہی برہم ہے، خود ہی جیو ہے خود ہی مایا۔ وہ خود ہی خلا کی
وسعت بیکراں ہے، خود ہی آسمان، خود ہی سانس، خود ہی لفظ،
خود ہی معنی۔ وہ خود ہی حد ہے اور خود ہی بے حد اور خود ہی حد
اور بے حد سے باہر۔ وہ وجود مطلق ہے، وہ برہم اور جیو کے اندر
عقل مکمل ہے، اتنا میں پرمانما دکھائی دیتا ہے اور پرمانما میں جہائیں
(جھلک) جہائیں میں پرچھائیں دکھائی دیتی ہے اور کبیر سائیں اس
نظارے میں عمو ہے۔ (بعض ہندی پنڈتوں کا خیال ہے کہ یہ کبیر کا پد
(نظم) نہیں ہے)



اس گھٹ انتر باگ بگیچے، اسی میں سرجن ہارا
اس گھٹ انتر سات سمندر، اسی میں نو لکھ تارا
اس گھٹ انتر پارس موتی، اسی میں پرکھن ہارا
اس گھٹ انتر آن حد گر جے، اسی میں اٹھت پھہارا
کھت کبیر سنو بھائی سادھو، اسی میں سائیں ہمارا

اسی گھٹ (وجود) کے اندر باغ کھلے ہوئے ہیں اور اسی میں باغبان
(سرجن ہار = خالق) ہے۔ اسی گھٹ میں سات سمندر ہیں اور اسی میں
نولاکھ تارے۔ اسی گھٹ میں پارس اور موتی ہیں اور اسی میں پرکھنے والے۔

जब मेरी ममता मर जाय । तब लग प्रभु काज सँवारै आय ॥
 ज्ञानके कारन करम कमाय । होय ज्ञान तब करम नसाय ॥
 फल कारन फूलै बनराय । फल लागे पर फूल सुखाय ॥
 मृगा पास कस्तूरी बास । आप न खोजै खोजै वास ॥

इसी घट (शरीर) में चौंद फलकता है लेकिन अंधी आँखों को दिव्यायी नहीं देता । इसी घट में चौंद है और इसी घट में सूरज और इसी घट में अनहद तूर (अनाहत ध्वनि) सुनायी देता है । इसी घट में डोल और डंके बज रहे हैं लेकिन बहरे कानों को कुछ सुनायी नहीं देता । जब तक आदमी मेरी मेरी करता रहता है तब तक कोई काम नहीं बनता । जब यह अहंकार भिड़ जाता है तब भगवान स्वयं आकर हर काम को सँवार देते हैं । कर्म का उद्देश्य केवल ज्ञान है लेकिन ज्ञान के आते ही कर्म बेकार हो जाता है, जैसे फूल फल पैदा करने के लिए खिलता है लेकिन यही फल लगाने के बाद फूल मुरझा जाता है । कस्तूरी हिरन की नमि में होती है लेकिन वह उसे अपने शरीर के बजाय वास में खोजता फिरता है ।



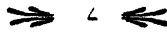
साधो, ब्रह्म अलख लखाया ।

जब आप आप दरसाया ।

बीज-मद्द ज्यों बृच्छा दरसै, बृच्छा मद्दे छाया ॥
 ज्यों नभ-मद्दे सुन देखिये, सुन अनन्त आकाश ।
 निःअच्छरते अच्छर तैसे, अच्छर छर विस्तार ।
 ज्यों रवि-मद्दे किरन देखिये, किरन मद्द परकाश ।
 परमात्ममें जीव ब्रह्म इमि, जीव-मद्द तिमि स्वौंसा ॥
 स्वौंसा-मद्दे शब्द देखिये, अर्थ शब्दके माहीं ।
 ब्रह्मते जीव जीवते मन यों, न्यारा मिला सदा ही ॥
 आपहि बृच्छ बीज अंकुरा, आप फूल-फल छाया ।
 आपहि सूर किरन परकाश, आप ब्रह्म जिउ माया ॥
 अनन्ताकार सुन नभ आपै, स्वौंस शब्द अरथाया ।
 निःअच्छर अच्छर छर आपै, मन जीव ब्रह्म समाया ॥

جب میری ممتا مرجائے تب لگ پر بھوکاج سنوارے آئے
گیان کے کارن کرم کماٹے ہوئے گیان تب کرم نساے
پہل کارن پھولے بن رائے پھل لاگے پر پھول مٹے کھائے
مرگا پاس کستوری باس آپ نہ کھوجے کھوجے گھاس

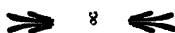
اس گھٹ (وجود) میں چاند جھلکتا ہے لیکن اندھی آنکھوں کو دکھائی نہیں دیتا، اسی گھٹ میں چاند ہے اور اسی گھٹ میں سورج اور اسی گھٹ میں ابدیت کا ساز چھڑا ہوا ہے، اس گھٹ میں نفارے بیج رہے ہیں لیکن بھرے کانوں کو کچھ سنائی نہیں دیتا، جب تک آدمی میری میری کرتا رہتا ہے کوئی کام نہیں بنتا، جب ممتا مرجاتی ہے تب پر بھو آکر کام سنوارتے ہیں، عمل کا مقصد صرف عام (عرفان) ہے لیکن جب علم (عرفان) آجاتا ہے تو عمل بیکار ہو جاتا ہے، جیسے پھول پھل پیدا کرنے کے لئے کھلتا ہے، پھل آنے کے بعد پھول مرجھا جاتا ہے، مُشک خود ہرن کے نافے میں ہوتا ہے (جس کی خوشبو اسے بے قرار رکھتی ہے) لیکن وہ اس کو اپنے جسم کے بجائے گھاس میں تلاش کرتا ہے۔



سادھو برہم الکھ لکھایا

جب آپ آپ درسایا
بیج مدھ جیوں پر چٹھا درسے، بر چٹھا مدھے چھایا
جیوں نہہ مدھے مُسن دیکھتے، مُسن انت آکارا
نہ اچھرتے اچھر تیسے، اچھر چھر بستاردا
جیوں ری مدھے کرن دیکھتے، کرن مدھے پرکاسا
پر ماتم میں جیو برہم ام، جیو مدھے تم سوانسا
سوانسا مدھے شبد دیکھتے، ارتھ شبد کے مانہیں
برہم تے جیو، جیوئے من یوں، نارا ملا سدا ہی
آپ ہی بر چھ بیج انکورا، آپ پھول پھل چھایا
آپ ہی سور کرن پرکاسا، آپ برہم جیو مایا
انتا کار مُسن نہہ آپے، سوانس شبد ارتھایا
نہ اچھر اچھر چھر آپے من جیو برہم سمایا

पर आज आस्था रखो । कबीर कहते हैं कि हम तो साधना के दास हैं क्योंकि अंत में साधना ही काम आती है ।



बागों ना जा रे ना जा, तेरी कायामें गुलजार ।

सहस-कैवलपर बैठके तू देखे रूप अपार ॥

अरे, बागों में क्या मारा-मारा फिर रहा है । तेरी अपनी काया (अस्तित्व) में गुलजार (उपवन, वाटिका) है । हजार पंखड़ियों वाले कमल पर बैठकर तू (ईश्वर का) अपरम्पार रूप देख सकता है ।



अवधू, माया तजी न जाई ।

गिरह तजके बस्तर बौधा, बस्तर तजके फेरी ॥

काम तजेतें क्रोध न जाई, क्रोध तजेतें लोभा ।

लोभ तजे अहंकार न जाई, मान-बड़ाई-सोभा ॥

मन बैरागी माया त्यागी, शब्दमें सुरत समाई ।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, यह गम विरले पाई ।

अवधू ! माया को तज देना कितना मुश्किल है । घर को छोड़कर जोगिया वेश धारण किया । उसे भी छोड़ा तो फेरी के फ़कीर बन गये । काम (कामनाओं) से छुटकारा पाया तो क्रोध बाकी रह गया और क्रोध को छोड़ा तो लोभ ने आ घेरा । लोभ को तज दिया तो अहंकार ने सर उठाया । जब माया को त्यागकर मन बैरागी हो जाता है तब भी शब्दों का फेर बाक्ती रह जाता है (यानी शास्त्रों में उलझा रहता है) कबीर कहते हैं, भाई साधु सुनो, मुक्ति का रास्ता कम ही लोगों को मिल सका है ।



चंदा बलकै यहि घटमाहीं । अंधी अँखन सूझै नाहीं ॥

यहि घट चंदा यहि घट सूर । यहि बट गाजै अनहद तूर ॥

यहि घट बाजै तबल-निसान । बहिरा शब्द सुनै नहि कान ॥

जब लग मेरी मेरी करै । तब लग काज एको नहि सरै ॥

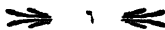
کبیر کہتے ہیں کہ ہم تو تلاش اور جستجو کے جذبے کے غلام ہیں
کیونکہ آخر میں یہی جذبہ کام آتا ہے۔



باگوں نا جا رہے نا جا، تیری کایا میں مگل جار
سہس کنول پر بیٹھ کے، تو دیکھے روپ اپار
ارے باغوں میں کیا مارا مارا پھر رہا ہے، خود تیرے وجود میں گزار ہے،
ہزار پنکھڑیوں کے کنول (دل) پر بیٹھ کر نو حسنِ مطلق کا لامتناہی
جلوہ دیکھ سکتا ہے۔



اودھو مایا تجی نہ جانی
گرہِ نچ کے بستر باندھا، سترِ نچ کے پھیری
کام تجے نیں کرودھ نہ جانی، کرودھ تجے تیں لوہا
لوہہ تجے آپنکار نہ جانی، مان بڑائی سوہا
من پیراگی مایا تیاگی، شبد میں سرت سمانی
کہیں کیر سنو بھائی سادھو، بہ کم برلے ہانی
اودھو، مایا کو تچ دینا کتنا مشکل ہے، گھر کو چھوڑ کر جو گیا بوس
بنایا، اُسے بھی چھوڑا تو پھیری کے فقیر بن گئے، خواہشوں سے نجات
حاصل کی تو غصہ باقی رہ گیا، اور غصے کو چھوڑا تو لالچ نے آکھیرا،
لالچ کو تچ دیا تو غرور نے سر اٹھایا، جب مایا کو تیاگ کر من پیراگی
ہوجاتا ہے تب بھی لفظوں کا پھیر باقی رہتا ہے (یعنی شاستروں میں
الچھا رہتا ہے) سنو بھائی سادھو کبیر کہتے ہیں کہ: نجات کا راستہ
(گم = رہس = بھید) کم ہی لوگوں کو مل سکتا ہے۔



چندا جھلکے یہی گھٹ ماییں
یہی گھٹ چندا یہی گھٹ سُور
بہ گھٹ باجے طبلِ نسان
جب لگ میری میری کرے
اندھی آنکھن سوچھے ناہیں
یہی گھٹ گاجے آن حد سُور
پہرا شبد سُنے نہیں کان
تب لگ کاج ایکو نیں سرے



सन्तन जात न पूछो निगुनियों ।
 साध ब्राह्मन साध छत्तरी, साधे जाती बनियों ।
 साधनमौ छत्तीस कौम है, टेढ़ी तोर पुछनियों ।
 साधे नाऊ साधे धोबी, साध जाति है बरियों ।
 साधनमौ रैदास सन्त हैं, सुपच ऋषि सो भैगियों ।
 हिन्दु-मुर्क दुइ दीन बने हैं, कछु नहीं पहचनियों ॥

ऐ नादानो, संतों की जाति क्या पूछते हो । (भगवान के भक्त) साधु ब्राह्मण भी हैं और क्षत्रिय भी और बनिये भी । साधुओं में छत्तीस जाति के लोग हैं जो उसे खोज रहे हैं । तुम्हाग यह सवाल कितना गलत है । नाई, धोबी, बढ़ई सभी जातियों में साधु हो चुके हैं । उन्हीं में संत रैदास हुए हैं और उन्हीं में स्वपच सुदर्शन जैसे ऋषि जिन्हें भेगी कहा गया है । बेकार में हिंदू और मुसलमान दो धर्म बन गये हैं, जिनमें कोई अंतर नहीं है ।



साधो भाई, जीवत ही करो आसा ।
 जीवत समझे जीवत बूझे, जीवत मुक्तिनिवासा ।
 जीवत करमकी फौस न काटी, मुये मुक्तिकी आसा ।
 तन छूटे जिव मिलन कहत है, सो सब भूठी आसा ।
 अबहुँ मिला तो तबहुँ मिलेगा, नहीं तो जमपुरासा ।
 सत्त गहे सतगुरुको चीन्हें, सत्त-नाम विस्वासा ।
 कहैं कबीर साधन हितकारी, हम साधनके दासा ॥

मेरे भाई, जब तक जिंदा रहो तब तक (ईश्वर के पाने की) आशा रखो । समझ-बूझ जीवन के साथ है । मुक्ति भी जीवन में ही संभव है । अगर तुमने अपने जीवन में अपने बंधन नहीं तोड़े (करम का फंदा नहीं काटा) तो मरने के बाद मुक्ति पाने की क्या आशा रखते हो । यह भ्रम है कि आत्मा शरीर से निकलकर भगवान में मिल जायगी । अगर वह अब मिल गया तो तब भी मिलेगा, नहीं तो तुम्हें यमपुरी में ही रहना पड़ेगा । सत्य को आज पकड़ो, सतगुरु को आज पहचानो, सत्-नाम



سنتن جات نہ پوچھو نرگنیاں
 سادھ براہمن، سادھ چھتری، سادھے جاتی بنیاں
 سادھن ماں چھتیس کوم ہے، ٹیڑھی تور پُچھنیاں
 سادھے ناؤ، سادھے دھوبی، سادھ جات ہے بریاں
 سادھن ماں ریداس سنت ہیں سُپیچ رشی سو بھنگیاں
 بندو مُترک کُئی دین بنے ہیں، کچھو نہیں پہنچنیاں

اے نادانو! سنتوں کی ذات کیا پوچھتے ہو، (بھگوان کو ڈھونڈھنے والے) سادھو برہمن بھی ہیں اور چھتری بھی اور بنیے بھی۔ سادھوؤں میں چھتیس ذاتیں اس کو تلاش کر رہی ہیں، تمہارا سوال کتنا احمقانہ ہے۔ ناٹی، دھوبی، بڑھن سب ہی سادھو ہیں۔ انہیں میں سنت ریداس ہیں اور انہیں میں سُپیچ رشی جنہیں لوگ بھنگی سمجھتے ہیں۔ خواہ غواہ ہندو اور مسلمان دو مذہب بن گئے ہیں۔ حقیقت یہ ہے کہ ان میں کوئی فرق نہیں۔



سادھو بھائی، جیوت ہی کرو آسا
 جیوت سمجھے، جیوت بوجھے، جیوت مُمکتی نواسا
 جیوت کرم کی بھانس نہ کالٹی، موئے مُمکتی کی آسا
 نن چھوٹے جیو ملن کہت ہے، سو سب جھوٹی آسا
 اب ہوں ملا تو تب ہوں ملے گا، نہیں تو جم بُر باسا
 ست گہے ست گرو کو چہیں، ست نام وسواسا
 کہیں کبیر سادھن ہنکاری، ہم سادھ کے داسا

میرے بھائی، جب تک زندہ ہو تب تک امید رکھو۔ سمجھ بوجھ زندگی کے ساتھ ہے۔ نجات بھی زندگی ہی میں ممکن ہے۔ اگر تم نے زندگی میں اپنے بندھن نہیں توڑے (کرم کا پھندا نہیں کاٹا) تو مرنے کے بعد نجات کی کیا امید رکھتے ہو۔ یہ ایک خیال خام ہے کہ روح تن سے نکل کر بھگوان سے مل جائے گی۔ اگر وہ اب ملا تو تب بھی ملے گا، نہیں تو موت کی نگری میں بسنا پڑے گا۔ ست (صداقت) کو آج گرفت میں لاؤ، ست گرو کو آج پہچانو، ست نام پر آج یقین کرو۔



मोको कहाँ ढूँढ़े बन्दे, मैं तो तेरे पासमें ।
ना मैं देवल ना मैं मसजिद, ना काबे कैलासमें ।
ना तो कौन क्रिया-कर्ममें, नहीं योग बैरागमें ।
त्वाजी होय तो तुरतै मिलिहौं, पल भरकी तालासमें ।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, सब स्वैसाँकी स्वैसासमें ॥

ऐ बंदे, तू मुझे कहाँ ढूँढ़ता फिर रहा है, मैं तो तेरे पास ही हूँ । न मैं मंदिर
में मिलूँगा न मस्जिद में, न काबे और कैलाश में, न पूजा-पाठ में, न
योग-बैराग में । सच्चे मन से खोजनेवाला हो तो उसे मैं पल भर की तलाश
में मिल जाऊँगा । कबीर कहते हैं, भाई साधु सुनो, वह तो हर सैस में
मौजूद है ।



مو کوں کہاں ڈھوڑھے بندے، میں تو تیرے پاس میں
اے میں دیول، اے میں مسجد، نا کعبے کیلاس میں
نا تو کون کریا کرم میں، نہیں یوگ بیراگ میں
کھوجی ہوئے تو مُترنے ملیہوں پل بھر کی نالاس میں
کہیں کبیر مُسنو بھائی سادھو، سب سوانسوں کی سوانس میں

اے بندے تو مجھے کہاں ڈھونڈھتا پھر رہا ہے، میں تو تیرے پاس
ہی ہوں۔ نہ میں مندر میں ہوں، نہ مسجد میں، نہ کعبے اور کیلاش
میں نہ کسی ظاہری عبادت میں، نہ یوگ بیراگ میں، اگر سچے دل سے
کھوجنے والا ہو، تو پل بھر کی تلاش میں مل جاؤں گا۔ کبیر کہتے ہیں
بھائی سادھو سنو، وہ تو ہر سانس میں موجود ہے۔

सहू खुरशीद का टपके अगर ज़रें का दिल चीरें
 यकीं मुहकम, बमल पैहम, मुहब्बत फ़ातहे-बालम
 जिहादे-बिदगानी में हैं, ये मरदों की शमशीरें

—इकबाल

[भावार्थ : गुलामी में न तलवारें काम आती हैं न तदबीरें, लेकिन अगर आदमी में आस्था हो तो हर ज़ंजीर कट जाती है। संत के बाहुबल का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि उस की निगाह से भाग्य बदल जाते हैं। संत होना, बादशाह होना या विद्वान का प्रभुत्व ये सब आस्था की व्याख्याओं के बलावा कुछ भी नहीं हैं। इब्नाहीम पैयंबर, जिनके बाप मूर्तियाँ बनाकर उनकी पूजा करते थे लेकिन जिन्होंने खुद एक अनदेखे खुदा की उपासना पर जोर दिया, उनकी ऐसी निगाह मुश्किल से मिलती है क्योंकि हवस (वासना) चुपके-चुपके दिल में नाना रूप धारण करती रहती है। स्वामी और दास का अंतर मानवता को कलंकित करता है। इसलिए आस्थाचारियों डरो कि प्रकृति का दंड बहुत कड़ा है। कोई चीज खाक की बनी हो या नूर की, हर चीज की वास्तविकता एक ही है अगर ज़रें का दिल चीरें तो उसमें से सूरज का खून टपकेगा। दृढ़ संकल्प, निरंतर सक्रियता, और विश्वविजयी प्रेम, ये जीवन-संवर्ष में वीरों की तलवारें हैं।]

यह कबीर की, रूमी की, गरुड तमाम सुक्रियों और संतों की शिक्षाओं की व्याख्या है जिसमें एक नयी मानवता की रूपरेखा निहित है।

बन्जई

अगस्त १९६५

सरदार जाफ़री

برایمی نظر پیدا مگر مشکل سے ہونی ہے
 ہوس چھپ چھپ کے سینے میں بنالیتی ہے تصویریں
 تمیز بندہ و آقا فساد آدمیت ہے
 حذر امے چہرہ دستان سخت ہیں فطرت کی تعزیریں
 حقیقت ایک ہے ہر شے کی خاکی ہو کہ نوری ہو
 لہو خورشید کا ٹپکے اگر ذرے کا دل چیریں
 یقین محکم، عمل پیہم، محبت فاتح عالم
 جہادِ زندگانی میں ہیں، یہ مردوں کی شمشیریں
 اقبال

یہ کبیر کی رومی کی، غرض تمام سنتوں اور صوفیوں کی تعلیمات
 کی نئی تفسیر ہے جو ایک نئی انسانیت کی بشارت لے ہوئے ہے۔

سردار جعفری

بمبئی
 اگست ۱۹۶۵ء

दूसरे सूफियों और सन्तों की शिक्षाओं के साथ मिलकर कबीर की शिक्षाएँ और विचार उसरी भारत की लगभग सभी भाषाओं के साहित्य का अंग बन गये। उनके प्रत्यक्ष प्रभाव का संकेत गुरु नानक की शिक्षाओं में भी मिलता है और आधुनिक युग में टैगोर के विचारों में भी। किसी कवि को इससे बड़ी श्रद्धांजलि क्या मिल सकती है।

हमें आज भी कबीर के नेतृत्व की जरूरत है, उस रोशनी की जरूरत है जो इस संत सूफ़ी के दिल से पैदा हुई थी। आज दुनिया आबाद हो रही है। विज्ञान की असाधारण प्रगति ने मनुष्य का प्रभुत्व बढ़ा दिया है। उद्योगों ने उसके बाहुबल में वृद्धि कर दी है। मनुष्य सितारों पर कमरे फेंक रहा है। फिर भी वह लुच्छ है, संकटग्रस्त है, दुःखी है। वह रंगों में बैठा हुआ है, जातियों में विभाजित है। उसके बीच धर्मों की दीवारें खड़ी हुई हैं। साम्प्रदायिक द्वेष हैं, वर्ग-संवर्ष की तलवारें खिंची हुई हैं। बादशाहों और शासकों का स्थान नौकरशाही ले रही है। दिलों के अंदर अंधेरे हैं। छोटे-छोटे स्वार्थ और दंभ हैं जो मनुष्य को मनुष्य का शत्रु बना रहे हैं। जब वह शासन, शहशाहियत और प्रभुत्व से मुक्त होता है तो खुद अपनी बंदी का गुलाम बन जाता है। इसलिए उसको एक नये विश्वास, नयी आस्था और नये प्रेम की आवश्यकता है जो उतना ही पुराना है जितनी कबीर की आवाज और उसकी प्रतिध्वनि इस युग की नयी आवाज बनकर सुनायी देती है—

गुलामी में न काम आती हैं शमशेरें न तदबीरें
जो हो जौकै-यक़ी पैदा तो कट जाती हैं जंजीरें
कोई अंदाजा कर सकता है इसके ज़ारे-बाजू का
निगाहे-मर्दे-मोमिन से बदल जाती हैं तक्रदीरें
विलायत, पादशाही, इल्मे-अशया की जहाँगीरी
ये सब क्या हैं फ़क़त इक नुक्तए ईमों की तफ़सीरें
बराहीमी नज़र पैदा मगर मुदक़ल से होती है
हवस छुप-छुपके सीने में बना लेती है तस्वीरें
तमीजे-बंद:-ओ आक्ता फ़सादे-आदमीयत है
हज़र ऐ चीरादस्तों, सख़्त हैं फ़ितरत की ताज़ीरें
हक़ीक़त एक है हर शै की खाकी हो कि नूरी हो

بنگل تک پھیل گیا اور دور مغلیہ میں بڑھتا گیا « (تمدن ہند پر اسلامی اثرات « صفحہ ۲۷۰)

دوسرے صوفیوں اور سنتوں کی تعلیمات کے ساتھ مل کر کبیر کی تعلیمات اور تصورات شمالی ہندستان کی تقریباً تمام زبانوں کے ادب میں سرایت کر گئے ، اُن کے براہ راست اثرات کا سراغ گرو نانک کی تعلیمات میں بھی ملتا ہے اور آج کے عہد میں لیگور کے تصورات میں بھی . کسی شاعر کو اس سے بڑا خراج تحسین اور کیا مل سکتا ہے .

ہمیں آج بھی کبیر کی رہنمائی کی ضرورت ہے . اس روشنی کی ضرورت ہے جو اس سنت صوفی کے دل سے پیدا ہوئی تھی . آج دنیا آزاد ہو رہی ہے سائنس کی بے پناہ ترقی نے انسان کا اقتدار بڑھا دیا ہے ، صنعتوں نے اس کے دست و بازو کی طاقت میں اضافہ کر دیا ہے . انسان ستاروں پر کمندیں پھینک رہا ہے ، پھر بھی حقیر ہے ، مصیبت زدہ ہے ، درد مند ہے ، وہ رنگوں میں بٹا ہوا ہے ، قوموں میں تقسیم ہے ، اس کے درمیان مذاہب کی دیواریں کھڑی ہوئی ہیں . فرقہ وارانہ نفرتیں ہیں ، طبقاتی کشمکش کی تلواریں کھنچی ہوئی ہیں بادشاہوں اور حکمرانوں کی جگہ بیوروکریسی لے رہی ہے ، دلوں کے اندر اندھیرے ہیں . چھوٹی چھوٹی خودغرضیاں اور رعوتیں ہیں جو انسان کو انسان کا دشمن بنا رہی ہے . جب وہ حکومت ، شہنشاہیت اور اقتدار سے آزاد ہوتا ہے تو خود اپنی بدی کا غلام بن جاتا ہے . اس لئے اس کو ایک تھے یقین ، تھے ایمان اور تھی محبت کی ضرورت ہے جو اتنی ہی پرانی ہے جتنی کبیر کی آواز اور اس کی صدائے باز گشت اس عہد کی تھی آواز بن کر سنائی دیتی ہے :

غلامی میں نہ کام آتی ہیں شمشیریں نہ تدبیریں
جو ہو ذوق یقین پیدا تو کٹ جاتی ہیں زنجیریں
کوئی اندازہ کر سکتا ہے اس کے زورِ بازو کا
نگاہِ مرد مومن سے بدل جاتی ہیں تقدیریں
ولایت ، بادشاہی ، علم اشیا کی جہانگیری
بہ سب کیا ہیں ، فقط اک نکتہ ایمان کی تفسیریں

संतोष और धीरज का उपदेश दिया। संतोष का अर्थ वैराग्य नहीं था बल्कि बादशाहों, दरबारियों और अमीरों से विमुख होकर व्यापार और शारीरिक श्रम से रोजी कमाना था जिसका आदर्श कबीर ने पेश किया है। उस युग में व्यापार को राज-सेवा के मुकामले में तुच्छ समझा जाता था। इसलिए व्यापार और शिल्प की आमदनी पर संतोष करना और ईश्वर का उपकार मानते हुए जीवन व्यतीत करना ही सबसे बड़ा संतोष था। (शिवली नौमानी, शेर-उल-अजम)

और यह मध्य-युग से औद्योगिक और व्यापारिक युग की तरफ पहला कदम था। इसलिए तत्कालीन और भक्ति ने सामंती व्यवस्था के वैचारिक आधार को हिला दिया।

कबीर की शिक्षाओं ने आम हिंदुओं और मुसलमानों को मुग्ध कर लिया लेकिन संकीर्ण दृष्टिवाले लोगों की आँखों में वे कँटि की तरह खटकते रहे। इसलिए उन्होंने कबीर के खिलाफ हंगामा खड़ा कर दिया और उस समय के बादशाह सिकंदर लोदी तक उनकी शिकायत पहुँची। यह तो पता नहीं चलता कि सिकंदर लोदी ने कबीर को सजा दी या माफ़ कर दिया लेकिन यह पक्कर हुआ कि कबीर ने कुछ अरसे के लिए बनास छोड़ दिया। इसका नतीजा यह हुआ कि उनकी शिक्षाएँ दूर-दूर तक फैल गयीं।

डाक्टर ताराचंद के शब्दों में “कबीर पहला व्यक्ति है जिसने एक केंद्रीय धर्म, एक मध्य मार्ग का निस्संकोच आगे आकर एलान किया। उसका नारा पूरे हिंदुस्तान में गूँज उठा और सैकड़ों जगहों से उसकी प्रतिध्वनि सुनी गयी। कबीर के धर्मानुयायियों की संख्या उतना महत्व नहीं रखती जितना कि कबीर का वह असर जो पंजाब, गुजरात और बंगाल तक फैल गया और मुगल-काल में बढ़ता गया।” (भारतीय संस्कृति पर इस्लामी प्रभाव, पृष्ठ २७०)

still, Tasavvuf gave self respect to mankind. During the middle ages when man had been reduced to the position of an abject slave by despotism, it was mysticism alone that glorified him as divine in origin and gave him hope and confidence. The greatest service of Tasavvuf was that it was the only tolerant system in a world from which tolerance had been ruthlessly outlawed.”

(“A History of Urdu Literature” by Mohammad Sadiq. Oxford University Press, Page 9)

دنیا نہیں تھا بلکہ بادشاہوں درباریوں اور امیروں سے بے نیاز ہو کر تجارت اور جسمانی محنت سے روزی کمانا تھا ، جس کا نمونہ کبیر نے پیش کیا ہے ، اس زمانے میں تجارت کو شاہی ملازمت کے مقابلے میں حقیر سمجھا جاتا تھا ۔ اس لئے تجارت اور دست کاری کی آمدنی پر قناعت کرنا اور صبر و شکر کی زندگی گزارنا ہی سب سے بڑی قناعت تھی (شبلی نعمانی شعرالمجم)

اور یہ قرون وسطیٰ سے جدید صنعتی اور تجارتی عہد کی طرف پہلا قدم تھا ، اس لئے تصوف اور بھگتی نے جاگیرداری نظام کی فکری بنیادوں کو ہلا دیا ۔

کبیر کی تعلیمات نے عام ہندو اور مسلمانوں کو اپنا گرویدہ بنا لیا لیکن تنگ نظروں کی آنکھوں میں کانٹے کی طرح کھٹکتے رہے ، اس لئے انہوں نے کبیر کے خلاف ہنگامہ برپا کر دیا ۔ اور بادشاہ وقت سکندر لودی تک شکایت پہنچی یہ تو پتہ نہیں چلتا کہ سکندر لودی نے کبیر کو سزا دی یا معاف کر دیا لیکن یہ ضرور ہوا کہ کبیر نے کچھ عرصے کے لئے بنارس چھوڑ دیا ، اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ ان کی تعلیمات دور دور تک پھیل گئیں ۔

ڈاکٹر تارا چند کے الفاظ میں کبیر ” پہلا شخص ہے جس نے ایک مرکزی مذہب ، ایک بیچ کی راہ کا بیباکانہ آگے آ کر اعلان کیا ، اس کا نعرہ پورے ہندوستان میں گونج اٹھا اور سیکڑوں مقامات سے اس کی آواز بازگشت سنی گئی ۔۔۔۔۔ کبیر کے پیرو ان مذہب کی تعداد اتنی اہمیت نہیں رکھتی جتنا کہ کبیر کا وہ اثر جو پنجاب ، گجرات ، اور

e.g. Rumi, Hafiz, Attar and Jami were the masters spirits of their times. The ethical system they preached is the highest we can conceive. They believed that virtue is its own reward, and condemned the calculating goodness of the selfish clergy whose piety and devotion were motivated by the desire of reward in the hereafter. More important still, Tasavvuf gave self respect to mankind. During the middle ages when man had been reduced to the position of an abject slave by despotism, it was mysticism alone that glorified him as divine in origin and gave him hope and confidence. The greatest service of Tasavvuf was that it was the only tolerant system in a world from which tolerance had been ruthlessly outlawed”.

(“A History of Urdu Literature” by Mohammad Sadiq. Oxford University Press, Page 9)

और दिल में रहम पैदा करो और माल-मताज को तुच्छ समझो। बिहिश्त तो तब मिलती है जब साई को अपने पास महसूस करें।” (पद ११८)

“ऐ साधु, ये पौंडे बड़े निपुण क़साई हैं। इनके दिल में ज़रा भी रहम नहीं। स्नान करके और तिलक लगाके बैठते हैं और बड़ी बाकायदगी से देवता की पूजा करते हैं। ये अपनी आत्मा को एक पल में मार देते हैं और खून की नदी बहा देते हैं। ये बहुत पवित्र हैं और ज़ैंचे कुल के हैं। लोगों का पाप काटने के लिए ये कथा सुनाते हैं और काम उनसे बहुत नीच करवाते हैं। मैंने दोनों को एक साथ डूबते देखा है।” (पद ११९)

माला, लक्कड़, ठाकुर पत्थर, तीरथ, सगरे पानी
रामा, कृष्णा मरते देखे, चारों वेद कहानी
कंकर - पत्थर जोड़के मस्जिद खड़ी बनाय
वा चढ़ मुल्ला बोंग दे, का बहिरो गयो खुदाय
और इस सब से कबीर ने एक ही नतीजा निकाला था—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुवा, पंडित भया न कोय
ढाई अच्छर प्रेम के पढ़ै सो पंडित होय

इसमें दिलचस्प नुक्ता यह है कि देवनागरी में जब ‘प्रेम’ लिखा जाता है तो उसमें सिर्फ़ ढाई अक्षर होते हैं।

दिखावटी धर्म से विद्रोह और वास्तविक धर्म के प्रचार का क्रांतिकारी पहलू यह था कि उसने मध्ययुग के मनुष्य को आत्म-प्रतिष्ठा, आत्म-सम्मान और आत्म-विश्वास दिया और मनुष्य को मनुष्य से प्रेम करना सिखाया। संतों और सूफ़ियों के पास इतनी ताकत तो नहीं थी कि वे उस अन्याय और अत्याचार के खिलाफ़ लड़ सकते जिनका केंद्र शाही दरबार और अमीरों के महल थे। इसलिए उन्होंने उनकी तरफ़ से बड़े तिरस्कार के साथ मुँह फेर लिया * और

* “Tasavvuf was one of the strongest forces making for active benevolence and service to mankind in the past. Its leading exponents e.g. Rumi, Hafiz, Attar and Jami were the master spirits of their times. The ethical system they preached is the highest we can conceive. They believed that virtue is its own reward, and condemned the calculating goodness of the selfish clergy whose piety and devotion were motivated by the desire of reward in the hereafter. More important
(continued)

کوئی یہ بات جانے کہ ایک دل میں ستر کنبے ہیں۔ اپنے محبوب کو پہچانو، اور دل میں رحم پیدا کرو اور مال و متاع کو حقیر سمجھو: بہشت تو تب ملتی ہے جب سائیں کو اپنے پاس محسوس کریں: (نظم نمبر ۱۱۸)

»اے سادھو یہ پانڈے بڑے مشاق قصائی ہیں۔۔۔۔۔ ان کے دل میں ذرا بھی رحم نہیں۔ اشنان کر کے اور تلک لگا کر بیٹھتے ہیں اور بڑی باقاعدگی سے دیوتا کی پوجا کرتے ہیں۔ یہ اپنی آنما کو ایک پل میں مار دیتے ہیں اور خون کی ندی بہا دیتے ہیں۔ یہ بہت مقدس ہیں اور اونچے خاندان کے ہیں۔۔۔۔۔ لوگوں کا پاپ کاٹنے کے لئے یہ کھانا سناتے ہیں اور کام اُن سے بہت نیچے کرواتے ہیں۔ میں نے دونوں کو ایک ساتھ ڈوبتے دیکھا ہے«۔ (نظم نمبر ۱۱۲)

مالا، لکڑ، لھا کر، پتھر، تیرتھ، سگرے پانی
راما کرشنا مرتے دیکھے، چاروں وید کہانی

کنکر پتھر جوڑ کے، مسجد لی بنائے
واچڑھ ملا بانگ دے، کا ہرو بھیو کھدائے
اور اس سب سے کبیر نے ایک ہی نتیجہ نکالا تھا:
پونہی پڑھ پڑھ جگ موا، پنڈت بھیا نہ کوئے
ڈھائی اچھتر پریم کے پڑھے سو پنڈت ہوئے
اس میں دلچسپ نکتہ یہ ہے کہ دیوناگری میں جب »پریم« لکھا جاتا ہے تو اس میں صرف ڈھائی حرف ہوتے ہیں۔

ظاہری مذہب سے بغاوت اور باطنی مذہب کی تبلیغ کا انقلابی پہلو یہ تھا کہ اس نے قرون وسطیٰ کے انسان کو خود داری، عزت نفس اور خود اعتمادی عطا کی اور انسانوں کو انسانوں سے محبت کرنا سکھایا* ستوں اور صوفیوں کے پاس اتنی طاقت تو نہیں تھی کہ وہ اس ظلم اور بدکاری کے خلاف لڑ سکتے جن کا مرکز شاہی دربار اور امیروں کے محل تھے۔ اس لئے انہوں نے ان کی طرف سے انتہائی حقارت کے ساتھ منہ پھر لیا۔ اور صبر و قناعت کی تعلیم دی، قناعت کا مقصد ترک

* "Tasavvuf was one of the strongest forces making for active benevolence and service to mankind in the past. Its leading exponents (continued)

इस जगह पर कबीर की आवाज रुमी और दूसरे महान सूफी और संत कवियों की आवाज की तरह सिर्फ वहदानियत (अद्वैत) के भाव से परिपूर्ण है (पद ८१, ८२, ८३, ९४, ९६) और इस परिपूर्णता के वातावरण में किसी जाहिरी रस्म या जाहिरी पूजा-पाठ की गुंजाइश नहीं है।* वह एकत्व में विन्न डालती है। और जिसको इस अवस्था में पूजा-पाठ की विधियाँ सोचने का समय मिल गया वह सही मानों में परिपूर्ण नहीं है। इसलिए वह या तो दिखावे में फँस जाता है, उपासना के अंतर पर और रस्मों के बाहरी रूपों पर लड़ता कगड़ता है जिसकी वजह से ईश्वर के बनाये हुए प्राणियों में मतभेद पैदा होता है और विरोध के दरवाजे खुलते हैं।

“देखो साधु, सारी दुनिया पागल हो गयी है। सच्ची बात कहो तो मारने को दोड़ते हैं, लेकिन झूठ पर सारी दुनिया का ईमान है हिंदू राम का नाम लेता है और मुसलमान रहमान का और दोनों आपस में लड़े-मरते हैं लेकिन सत्य से कोई परिचित नहीं। मुझे धर्म और उसके नियमों को माननेवाले बहुत मिले जो हर सुबह स्नान करते हैं और आत्मा को छोड़कर पत्थर की पूजा करते हैं। उनका ज्ञान झूठा है।.... मैंने पीर और मुरीद बहुत देखे हैं जो किताब और कुरान पढ़ते रहते हैं। वे कब्र दिखाकर लोगों को मुरीद बनाते हैं। जाहिर है कि उन्होंने खुदा को नहीं पहचाना है।” (पद ११७)

“अल्लाह दीन का पहला उसूल है और उसने जबर्दस्ती की हिदायत नहीं दी है।† तुम्हारे पीर और मुशिद कौन हैं और कहाँ से आये हैं। रोखे रखने, नमाज गुजारने और कलमा पढ़ने से जन्नत नहीं मिलती। काश कोई यह बात जाने कि एक दिल में सत्तर काबे हैं। अपने महबूब को पहचानो,

* “Permit me not henceforward to know thee thus imperfectly through these messengers.... Free me henceforward from dependence upon oratories, images and pictures which purport to represent thee, upon the beauties of nature which reveal thee, and even upon words which speak of thee. It is for thee alone, for thyself, that I yearn. Therefore surrender thou thyself now completely.”

(St. John of Cross—by A. Peers, P-48)

Quoted by Bankey Bihari, “Sufis, mystics and yogis of India”

† वे दोनों दुकड़े कुरान की आयतों से लिखे गये हैं।

(ترجمہ : شوق کی کمان میں معرفت کے تیر کو سیدھا کر کے میں نے نشانے پر مار دیا ہے)

اس مقام پر کبیر کی آواز رومی اور دوسرے عظیم صوفی اور سنت شاعروں کی آواز کی طرح صرف وحدانیت کے جذبے سے سرشار ہے (نظم نمبر ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۹۳، ۹۶) اور اس سرشاری کے عالم میں کسی ظاہری رسم یا ظاہری عبادت کی گنجائش نہیں ہے*، وہ وحدت میں خلل ڈالتی ہے۔ اور جن کو اس عالم میں عبادت کے رسوم سوچنے کی فرصت مل گئی وہ صحیح معنوں میں سرشار نہیں ہے، اس لئے وہ یا تو دکھاوے میں مبتلا ہو جاتا ہے یا عبادت کے فرق پر اور رسوم کی ظاہری شکلوں پر لڑتا جھگڑتا ہے جس کی وجہ سے خدا کی غلوق میں اختلاف پیدا ہوتا ہے اور نفاق کے دروازے کھلتے ہیں :

”دیکھو سادھو، ساری دنیا پاگل ہو گئی ہے۔ سچی بات کہو تو مارنے کو دوڑتے ہیں لیکن جھوٹ پر ساری دنیا کا ایمان ہے۔ ہندو رام کا نام لیتا ہے اور مسلمان رحمان کا اور دونوں آپس میں لڑے مرتے ہیں لیکن حقیقت سے کوئی واقف نہیں۔ مجھے دھرم اور اس کے قوانین کے مانتے والے بہت ملے جو ہر صبح اشان کرتے ہیں اور آتما کو چھوڑ کر پتھر کی پوجا کرتے ہیں۔ اُن کا علم اور عرفان جھوٹا ہے..... میں نے پیر اور مرید بہت دیکھے ہیں جو کتاب اور قرآن پڑھتے رہے ہیں۔ وہ قبر دکھا کر لوگوں کو مرید بناتے ہیں۔ ظاہر ہے کہ انہوں نے خدا کو نہیں پہچانا ہے“ (نظم نمبر ۱۱۷)

”اللہ دین کا اول اصول ہے اور اس نے زبردستی کی ہدایت نہیں فرمائی ہے†۔ تمہارے پیر و مرشد کون ہیں اور کہاں سے آئے ہیں۔ روزے رکھنے، نماز گرانے، اور کلمہ پڑھنے سے جنت نہیں ملتی۔ کاش

* دونوں لکڑے تران کی آہوں سے تھے گئے ہیں۔

† “Permit me not henceforward to know thee thus imperfectly through these messengers.... Free me henceforward from dependence upon oratories, images and pictures which purport to represent thee, upon the beauties of nature which reveal thee, and even upon words which speak of thee. It is for thee alone, for thyself, that I yearn. Therefore surrender thou thyself now completely.”

(St. John of Cross by—A Peers, P-48)

Quoted by Bankey Bihari. , “Sufis, mystics and yogis of India”

इसके बाद कबीर की तरह यह भी कहा जा सकता है कि एकत्व के अनेकत्व में बदल जाने और सृष्टि की रचना से पहले, जब विष्णु और शिव का भी अस्तित्व नहीं था, मैं ब्रह्म के प्रेम में लीन था, अर्थात् उसके साथ एक था। (पद २९)

और रूमी की तरह यह भी दावा किया जा सकता है कि सब कुछ मैं हूँ—काबा भी मैं हूँ, काबे के बुतखाने में बैठनेवाला हर बुत भी मैं ही हूँ और इंजील और जुबूर और कुरान भी मैं हूँ। इसलिए कि—

दर इश्क़ न जिस्मम ओ न जानम
चीजे-अजबम न ई न आनम
अफ़्ज़ूँ जे ज़मात ओ दर ज़मानम
बेरूँ जे मकान ओ दर मकानम
हर जा कि रवम ख़राबे-इश्क़म
मन काबःओ बुतक़दःन दानम
हम सायए - आप्रताबे ज़ातम
हम मौजे - मुहीते - बेक़ग़नम

[भावार्थ : इश्क़ में न मैं जिस्म हूँ न जान। न यह हूँ न वह। काल से बड़ा हूँ और काल के पैमाने में समाया हुआ हूँ। देश से ऊपर हूँ और देश में समाया हुआ हूँ। जहाँ भी जाऊँ मैं इश्क़ का ही मतवाला हूँ। मैं काबा और बुतखाना कुछ भी नहीं जानता। मैं अप्रताबे-ज़ात (ब्रह्मा) का नूर हूँ और अनंत सागर की लहर।]

इन आशिकों की एक ही मंजिल है—मंजिले-कित्रिया (ब्रह्मा)। कबीर के शब्दों में “निशाना आसमान की ओट में है। दाहिनी तरफ़ सूरज है, बाँयी तरफ़ चाँद और निशाना बीच में छुपा हुआ है। तन की कमान है और इश्क़ की डोरी और मैंने शब्द का तीर तान लिया है।” (पद १२२)

और रूमी के शब्दों में—

रास्त कर्द : बर निशान अंदाख़तेम
अजब कमाने - शौक़ तीरे - मारिफ़त

[भावार्थ : शौक़ की कमान में मारिफ़त (ब्रह्म-ज्ञान) के तीर को सीधा करके मैंने निशाने पर मार दिया है।]

قریب۔ نہ ہم جہنم جانے ہیں نہ جنت کا راستہ لیتے ہیں۔ سب کام ہم نے کئے ہیں لیکن ہر کام سے بے نیاز ہیں، اس فلسفے کے سمجھنے والے کم ہیں، لیکن جس نے سمجھ لیا وہ مطمئن ہو گیا، کبیر نہ تو کسی مت کا بانی ہے نہ کسی مت کا مٹانے والا۔ (نظم ۷۹)

اس کے بعد کبیر کی طرح یہ بھی کہا جاسکتا ہے کہ وحدت کے کثرت میں تبدیل ہونے اور تخلیق کائنات سے پہلے جب وشنو اور شیو کا بھی وجود نہیں تھا میں ذات مطلق (بِرہْم) کے عشق میں مبتلا تھا یعنی اس کے ساتھ ایک تھا (نظم نمبر ۲۹) اور رومی کی طرح یہ بھی دعویٰ کیا جاسکتا ہے کہ سب کچھ میں ہوں کعبہ بھی میں ہوں، کعبے کے بتکدے میں بیٹھنے والا ہر بت بھی میں ہی ہوں اور انجیل اور زبور اور قرآن بھی میں ہوں* اس لئے کہ:

در عشق نہ جسم و نہ جان	چیز عجب نہ این نہ آن
آفرین ز زمان و در زمان	بیرون ز مکان و در مکان
ہر جا کہ روم خراب عشقم	من کعبہ و بتکدہ نہ دانم
ہم سایہ آفتاب ذاتم	ہم موج محیط بیکرانم

(ترجمہ: عشق میں نہ میں جسم ہوں نہ جان، نہ یہ ہوں نہ وہ۔ وقت سے بڑا ہوں اور وقت کے پیمانے میں سمایا ہوا ہوں۔ مکان (Space) سے بالا ہوں اور مکان میں موجود ہوں۔ جہاں بھی جاؤں میں عشق کا متوالا ہوں۔ میں کعبہ اور بتکدہ کچھ بھی نہیں جانتا۔ میں آفتاب ذات (بِرہْم) کا نور ہوں اور ناپیدا کنار سمندر کی موج)۔

ان عاشقوں کی ایک ہی منزل ہے، منزل کبریا۔ کبیر کے الفاظ میں »نشانہ آسمان کی اوٹ میں ہے۔ داہنی طرف سورج ہے، بائیں طرف چاند اور نشانہ بیچ میں چھپا ہوا ہے۔ تن کی کمان ہے اور عشق کی ڈوری اور میں نے شبد (صوت سرمندی) کا تیر تان لیا ہے«۔ (نظم نمبر ۱۲۲) اور رومی کے الفاظ میں:

از کمانِ شوق تیر معرفت راست کردہ بر نشانِ انداختیم

بلکہ انجیل و زبور و مصحف و قرآن من
کعبہ و سمی و صفا و مذبح و قربان من

* آفتاب گرسین و تدل یا دنیٰ ہر مہ ہم
مری ولات و چلیا، بل و طاموت و صنم

رومی

वक्ता भी दिल की आँखों से देखनेवाले देख सकते हैं कि परदे में वही छुपा हुआ बोल रहा है। रूमी ने कुफ़ की बातें न तो कभी कही हैं और न कहता है। उससे इंकार न करो। जिसने इंकार किया वही काफ़िर काग़र पाया और दोष्मती हो गया।]

अद्वैत सारे विरोधों के अंत का नाम है। रूमी के शब्दों में दूध और शकर मिलकर एक हो जाते हैं। प्रेमी एक दूसरे से मिल जाते हैं। रात और दिन के परदे उठ जाते हैं और चाँद और सूरज गले मिल जाते हैं। आशिकों और माशूकों का रंग सोने और चाँदी के मिश्रण की तरह मिल जाता है और राफ़ज़ी यह देखकर दंग रह जाता है कि अली और उमर एक हैं।*

इस तरह इस मंज़िल पर बंदे और खुदा का विरोध भी मिट जाता है। इसीलिए कबीर अपने कुछ पदों में दोनों के लिए एक जैसी शैली अपनाने हैं—

“आदि में वह अकेला था और उसका अपना अस्तित्व ही उसके लिए काफ़ी था। वह जिसका न रंग है न रूप है। वह जो निर्गुण है। न आदि था, न विकास, न अंत। न अंधेरा था, न धुँधलका, न उजाला। न पृथ्वी थी, न वायु, न आकाश। न आग थी, न पानी। न गंगा, जमुना और सरस्वती की धाराएँ थीं। न समुद्र था, न लहरें, न पाप था, न पुण्य। न वेद-पुराण थे, न कुरान।” (पद ८१)

“न मैं धर्मी हूँ, न अधर्मी। न मैं नियमों का पाबंद हूँ, न वासनाओं का दास। न मैं बोलता हूँ न मैं मुनता हूँ। न मैं उपासक हूँ न उपास्य। न मैं ब्रह्म के आधीन हूँ, न उन्मुक्तता के। न मेरा किसी से संबंध है, न संबंधहीन हूँ। न मैं किसी से दूर हूँ न किसी से पास। न हम नरक में जाते हैं, न स्वर्ग का रास्ता लेते हैं। सब काम हमने किये हैं लेकिन हर काम से उदासीन हैं। इस दर्शन के समझने वाले कम हैं लेकिन जिसने समझ लिया वह संतुष्ट हो गया। कबीर न तो किसी मत का प्रवर्तक है न किसी मत का मिटानेवाला।” (पद ७९)

* शिबली नोमानी की किताब “मौलाना रूमी की जीवनी” से उद्धृत। शिष्यों को राफ़ज़ी कहते हैं जो हज़रत उमर को ख़लीफ़ा नहीं मानते।

ہی تھا جو پر زمانے میں آتا رہا اور جاتا رہا، یہاں تک کہ آخر کار وہ ایک عرب کی شکل میں ظاہر ہوا اور دنیا کا شہنشاہ بن گیا۔ وہی تو تھا جس نے خدا کی آواز میں اناالحق کہا۔ وہ جو دار پر چڑھا منصور نہیں تھا، صرف نادانوں کو غلط فہمی ہوئی۔ اس وقت بھی دل کی آنکھ سے دیکھنے والے دیکھ سکتے ہیں، ہر پردے میں وہی چھپا ہوا بول رہا ہے، رومی نے کفر کی باتیں نہ تو کبھی کہی ہیں اور نہ کہتا ہے، اس سے انکار نہ کرو۔ جس نے انکار کیا وہی کافر قرار پایا اور دوزخی ہو گیا۔

وحدت تمام تضادوں کے خاتمے کا نام ہے۔ رومی کے الفاظ میں دودھ اور شکر مل کر ایک ہو جاتے ہیں، عاشق ایک دوسرے سے مل جاتے ہیں۔ رات اور دن کے پردے الٹ جاتے ہیں اور چاند اور سورج ہم آغوش ہو جاتے ہیں۔ عاشقوں اور معشوقوں کا رنگ سونے اور چاندی کی آمیزش کی طرح مل جاتا ہے اور رافضی یہ دیکھ کر انگشت بداندان رہ جاتا ہے کہ علی اور عمر ایک ہیں*۔

چنانچہ اس منزل پر بندے اور خدا کا تضاد بھی ختم ہو جاتا ہے۔ اسی لئے کبیر اپنی بعض نظموں میں دونوں کے لئے ایک سا انداز بیان اختیار کرتے ہیں۔

”ازل میں وہ اکیلا تھا، اور اس کا اپنا وجود ہی اس کے لئے کافی تھا، وہ جس کا نہ رنگ ہے نہ روپ ہے۔ وہ جو بے صفات ہے۔ نہ تو ابتدا تھی، نہ ارتقا نہ انتہا، نہ اندھیرا تھا، نہ دھندلکا، نہ اجالا نہ زمین تھی نہ ہوا تھی، نہ آسمان۔ نہ آگ تھی نہ پانی۔ نہ گنگا جمنا اور سرسوتی کے دھارے تھے، نہ سمندر تھا نہ موجیں۔ نہ گناہ تھا نہ ثواب، نہ وید پُران تھے نہ قرآن۔“ (نظم ۸۱)

”نہ میں دھرمی ہوں نہ ادھرمی، نہ میں قانون کا بندہ ہوں نہ خواہشوں کا غلام۔ نہ میں بولتا ہوں نہ سنتا ہوں۔ نہ میں عابد ہوں نہ معبود۔ نہ میں جبر کے قبضے میں ہوں نہ اختیار کے۔ نہ میرا کسی سے تعلق ہے، نہ بے تعلق ہوں نہ میں کسی سے دور ہوں نہ کسی سے

* اقتباس از اشعار ”مثنوی معنوی“ بحوالہ ”سوانح مولانا روم“ شبیل نعمانی (مطبوعہ مجلس ترقی ادب۔ لاہور) صفحہ ۶۸، شیعوں کو رافضی کہتے ہیں جو حضرت عہد کی خلافت کو تسلیم نہیں کرتے، آخر میں اس حقیقت کی طرف اشارہ ہے۔

गये हैं जिन तक पहुँचने की हिम्मत उनसे कम दर्ज के सुफ़ी और शायर नहीं कर सकते थे। इसलिए एक राजल में वह बहुत से पैगंबरों के नाम लेते हैं और फिर इशारे में रसूल-अल्लाह का जिक्र करके यह कहते हैं कि रूमी ने कोई कुफ़्र की बात नहीं की है। यहाँ सिर्फ़ चंद अशफ़ार काफ़री होंगे—

हर लहजा ब-शकले बुते-अय्यार बरामद	दिल बुर्दे ओ निहाँ शुद
हर दम ब-लिवासे दिगर ओ यार बरामद	गह पीर ओ जवों शुद
खुद कूजःओ खुद कूजःगर ओ खुद गिले-कूजः	खुद रिंदे-सुबूकश
खुद बर-सरे ओ कूजः खरीदार बरामद	बिश्कस्त ओ रवों शुद
बिल्लह कि हम ऊ बूद कि मी आमद ओ मी रफ्त	हर कर्न कि दीदी
ता आकबत ओ शकल अरबवार बरामद	दा रा ए-जहाँ शुद
हक्का कि हम ऊ बूद कि मी गुफ्त अनलहक	दर सौ ते-इलाही
मंसूर न बूद ऊ कि बर ओ दार बरामद	नाटों ब-गुओं शुद
इन दम ब-निहानस्त बेबी गर तू बसीरी	अज दीदए-बातिन
ईनस्त कज् इन हमा गुफ्तार बरामद	दर दीदःबयों शुद
रूमी सुखने कुफ़्र न गुफ्तस्त ओ न गोयद	मुनकिर मश्वेदश
काफ़िर शुदः ओ कस कि ब इंकार बगमद	अज दोख्रियों शुद*

[भावार्थ : इस चालाक महबूब ने तरह-तरह के रूप धारण किये हैं और दिल लेके यायब हो गया। हर बार दूसरा लिबास बदलकर आया। कभी बूढ़ा बना और कभी जवान। वह खुद ही कूजा (मिट्टी का प्याला) है, खुद ही कूजा बनानेवाला और खुद ही कूजे की मिट्टी और खुद ही उसमें शराब पीनेवाला। फिर खुद ही उस कूजे का खरीदार बनकर आया और उसे तोड़कर चलता बना। कसम खुदा की, वह खुद ही था जो हर जमाने में आता रहा और जाता रहा, यहाँ तक कि आखिरकार वह एक अरब की शकल में जाहिर हुआ और दुनिया का शहंशाह बन गया। वही तो था जिसने खुदा की आवाज में अनलहक कहा। वह जो फौसी पर चढ़ा मंसूर नहीं था। सिर्फ़ नादानों को खलतफ़हमी हुई। इस

* इस राजल का दूसरा शेर फ़रोज़ाफ़र के संकलित दीवान शम्स तबरेज़ी (तेहरान संस्करण) में नहीं है। मुझे बचपन से याद है और अफ़ज़ल इक़बाल ने अपनी अंग्रेज़ी किताब *Life and work of Rumi* (लाहौर संस्करण) में भी इस शेर को इसी राजल का हिस्सा करार दिया है। मेरे पृष्ठों पर उन्होंने प्रोफ़ेसर निकल्सन का हवाला दिया।

اپنایا تو فارسی شعروں کو مکمل طور سے اپنے ذہن میں محفوظ نہ رکھ سکے۔ (تارا چند، صفحہ ۲۳۹)

مسلمان صوفیا رسولِ اسلام کا نام لینے کے معاملے میں بہت محتاط ہیں۔ اُن کا یہ اصول ہے کہ «با خدا دیوانہ باش و با محمد ہوشیار» کبیر سے پہلے رومی بعض مقامات پر اُن حدوں سے تجاوز کر گئے ہیں جہاں تک جانے کی ہمت اُن سے کم تر درجے کے صوفی اور شاعر نہیں کر سکتے تھے۔ چنانچہ ایک غزل میں وہ بہت سے پیغمبروں کے نام لیتے ہیں اور پھر اشارے میں رسول اللہ کا ذکر کر کے یہ کہتے ہیں کہ رومی نے کوئی کفر کی بات نہیں کی ہے۔ یہاں صرف چند اشعار کافی ہوں گے:

پر لحظہ بشکلِ بت عیار برآمد	دل بُرد و نہاں شد
پر دم بلباسِ دگر آں یار برآمد	گہ پیر و جوان شد
خود کوزہ و خود کوزہ گرو خود گلِ کوزہ	خود رند سب و کش
خود بر سرِ آن کوزہ خریدار بر آمد	بشکست و رواں شد
باللہ کہ ہم او بود کہ می آمد و می رفت	پر قرن کہ دیدی
تا عاقبت آن شکلِ عرب وار بر آمد	دارائے جہاں شد
حقا کہ ہم او بود کہ می گفت انا الحق	در صوتِ الہی
منصور نہ بود او کہ بر آن دار بر آمد	نادانِ بگماں شد
این دم بہ نہاں است بہ بینِ گر تو بصیری	از دیدہ باطن
این ست کرو این ہمہ گفتار بر آمد	در دیدہ یں شد
رومی سخنِ کفر نہ گفتست و نہ گوید	منکرِ مشویدش
کافر شدہ آن کس کہ بہ انکار بر آمد	از دوزخیان شد *

(ترجمہ :- اس چالاک محبوب نے طرح طرح کی شکلیں اختیار کی ہیں اور دل لے کے غائب ہو گیا۔ ہر بار دوسرا لباس بدل کر آیا۔ کبھی بوڑھا بنا اور کبھی جوان۔ وہ خود ہی کوزہ ہے، خود ہی کوزہ گر اور خود ہی کوزے کی مٹی۔ اور خود ہی رند۔ پھر خود ہی اس کوزے کا خریدار بن کے آیا اور اسے توڑ کر چلتا بنا۔ قسم خدا کی وہ خود

* اس غزل کا دوسرا شعر فروزاغفر کے مرتبہ دیوان شمس تبریزی (تہران ایڈیشن) میں نہیں ہے۔ مجھے بچپن سے یاد ہے اور افضل اقبال نے اپنی انگریزی کتاب Life and work of Rumi (لاہور ایڈیشن) میں بھی اس شعر کو اسی غزل کا حصہ قرار دیا ہے۔ میرے دریافت کرنے پر انھوں نے پروفیسر نکلسن کا حوالہ دیا۔

(विद्रोही) है अर्थ को ग्रहण करना चाहिये। (मसनवी, खंड ९)

यही बात कबीर कहते हैं। मगर वह अनपढ़ होने की वजह से रूमी की तरह विद्वान और विचारक नहीं हैं इसलिए वह पांडित्यपूर्ण उपमाएँ इस्तेमाल नहीं करते, बल्कि जमीन की गिरी-पड़ी उपमाओं से काम लेते हैं और सीधा हमला करते हैं।

“दुनिया के दो मालिक (जगदीश)* कहीं से आये? तुझे इस भ्रम में किसने डाल दिया है। अल्लाह, राम, रहीम अलग-अलग कैसे हो सकते हैं। एक सोने से सब गहने बनाये गये हैं। यह सब एक नमाज, एक पूजा कहने सुनने की बातें हैं। इनको अपने अस्तित्व से दूर कर दे। वही महादेव है, वही मुहम्मद। जो ब्रह्मा है उसीको आदम कहना चाहिये। कोई हिंदू कहलाता है और कोई मुसलमान, लेकिन रहते एक जमीन पर हैं। एक वेद के ग्रंथ पढ़ता है और एक खुत्बा। एक मौलाना कहलाता है और एक पंडित। नाम अलग-अलग रख लिए गये हैं, वैसे बरतन सब एक ही मिट्टी के हैं।” (पद १२६)

रूमी ने अपने अशरार के शीर्षक में लिखा है कि “इस बयान में कि तमाम पैरांबर बर-हक़ (अपनी जगह सच्चे) हैं जैसा कि कुगन की आयत है कि हम उसके पैरांबरों में से किसी में भेदभाव नहीं करते।” लेकिन कबीर ने यह बात लिखे बिना ही इसी विचार को व्यक्त किया है। “अगर उनकी काव्य-रचना में सुक्रियों की शब्दावली से ज्यादा समानता नहीं पायी जाती तो उसकी वजह यह नहीं कि कबीर उन विचारों से कम परिचित थे, बल्कि इसकी वजह यह है कि वह विद्वान नहीं थे। इसलिए जब उन्होंने इन विचारों को अपनाया तो फ़ारसी शेरों की पूरी तरह अपने मस्तिष्क में सुरक्षित न रख सके।” (ताराचंद, पृष्ठ २४९)

मुसलमान सूफ़ी रसूले-इस्लाम का नाम लेने में बहुत सतर्क हैं। उनका उसूल है कि “बा-खुदा दीवाना बाश ओ बा-मुहम्मद होशियार” (खुदा के साथ तो दीवानापन कर सकते हो लेकिन रसूल का नाम लेते वक़्त सावधान रहना चाहिये।) कबीर से पहले रूमी कुछ जगहों पर उन हदों से आगे निकल

* असल अरबी शब्द अल्लाह है। ईरानियों ने इसका अनुवाद खुदा किया। कबीर ने जगदीश और राम कर दिया।

اس مثنوی میں دوسری جگہ رومی نے چراغوں اور پہلوں کی تشبیہ استعمال کی ہے ، اگر ایک مکان میں دس چراغ جمع کر دیے جائیں تو ہر ایک کی شکل دوسرے سے الگ ہوگی ، لیکن جب نور پر نظر جائے گی تو کوئی فرق نہیں معلوم ہوگا۔ اسی طرح اگر سو سبب اور سو بھی کا شمار کیا جائے تو سو نظر آئے گا لیکن نہوڑ دینے کے بعد سب کا رس ایک ہو جائے گا۔ دراصل معنی میں گنتی اور تقسیم ممکن نہیں ہے ، اس لئے یاروں کو یاروں سے مل جانا چاہئے اور صورت کو چھوڑ کر جو سرکش ہے معنی کو اختیار کرنا چاہئے (مثنوی دفتر اول) یہی بات کبیر کہتے ہیں مگر وہ ان پڑھ ہونے کی وجہ سے رومی کی طرح عالم اور مفکر نہیں ہیں اس لئے وہ علامانہ تشبیہیں استعمال نہیں کرتے بلکہ زمین کی گری پڑی تشبیہوں سے کام لیتے ہیں اور براہ راست حملہ کرتے ہیں

» دنیا کے دو مالک (جگدیش) * کہاں سے آئے ، تجھے اس بہرم میں کس نے مبتلا کر دیا ہے ، اللہ ، رام ، رحیم الگ الگ کیسے ہو سکتے ہیں۔ ایک سونے سے سب زیور بنائے گئے ہیں۔ یہ سب ایک نماز ، ایک پوجا ، کہنے مٹنے کی باتیں ہیں ، ان کو اپنے وجود سے دور کر دے ، وہی مہادیو ہے ، وہی محمد ، جو برہما ہے اسی کو آدم کہنا چاہئے۔ کوئی ہندو کہلاتا ہے اور کوئی مسلمان لیکن رہتے ایک زمین پر ہیں۔ ایک وید کی کتابیں پڑھتا ہے اور ایک خطبہ ، ایک مولانا کہلاتا ہے اور ایک پنڈت ، نام الگ الگ رکھ لئے ہیں ویسے برتن سب ایک ہی مٹی کے ہیں « (نظم ۱۲۶)

رومی نے اپنے اشعار کو یہ عنوان دیا ہے کہ » اس یسان میں کہ تمام پیغمبر برحق ہیں جیسا کہ قرآن کی آیت ہے کہ ہم اس کے پیغمبروں میں سے کسی میں تفریق نہیں کرتے « لیکن کبیر نے یہ عبارت لکھے بغیر اسی جذبے کی ترجمانی کی ہے ۔ » اگر ان کے کلام میں صوفیوں کی اصطلاحات سے زیادہ مطابقت نہیں پائی جاتی تو اس کی وجہ یہ نہیں کہ کبیر اُن خیالات سے کم آگاہ تھے بلکہ اس کی وجہ یہ ہے کہ وہ عالم فاضل نہیں تھے ۔ اس لئے جب انہوں نے ان تصورات کو

* اصل عربی لفظ اللہ ہے ، ایرانیوں نے اس کا ترجمہ خدا کیا ، کبیر نے جگدیش اور رام کر دیا ، اگر خدا قابل قبول ہے تو جگدیش بھی قابل قبول ہو سکتا ہے ۔

फ़ारसी उच्चारण है। यह सीधे-सीधे सूफ़ी शायरी की परम्परा का प्रमाण है। फिर “दीदाग की शराब” और “इश्क का नूर” भी मुस्लिम सूफ़ी प्रभावों का नतीजा है। लेकिन इन कल्पनाओं के साथ जब कबीर “शून्य,” “तिरलोच महल,” “चक्र,” “कमल के फूल” “आगती” और “शैब के घंटों” की कल्पनाओं को मिला देते हैं तो वह अपनी हिंदू घरोहर का प्रमाण देते हैं।

चूँकि बहुदानियत (अद्वैत) के अनंत सागर की लहरें अपने अलग-अलग नाम नहीं रख सकती इसलिए कबीर ने हिंदू या मुस्लिम नाम धारण करने से इंकार कर दिया—

हिंदू कहो तो मैं नहीं, मुसलमान भी नाहीं

पोंच तत्त्व का पुतला, गैबी खेले माहीं

अर्थात् मैं न हिंदू हूँ न मुसलमान। मैं तो गैब के खेल के अंदर पोंच तत्त्व का पुतला हूँ।

इसके बाद खुदा, अल्लाह, राम, हरि, गोविंद, साई, साहब सब शब्दों का एक ही अर्थ हो जाता है और इन पर लड़नेवाले मूर्ख मालूम होने लगते हैं।

रूमी ने अपनी मसनवी में एक हिकायत बयान की है। एक आदमी ने चार अलग-अलग भाषाएँ बोलनेवालों को एक दरिद्र दिया। ईरानी ने कहा कि इससे अंगूर खरीदे जायें। अरब ने कहा, नहीं इनच। तुर्क ने अजम का नाम लिया और चौथे ने इस्ताफ़ील का। इस पर चारों लड़ने लगे। उस वक़्त अगर कोई चारों भाषाओं का जाननेवाला मौजूद होता तो वह उन मूर्खों को बताता कि सब एक ही चीज़ माँग रहे हैं। लड़ाई सिर्फ़ शब्दों के अलग-अलग होने पर हो रही है।

इसी मसनवी में दूसरी जगह रूमी ने चिरागों और फलों की उपमा इस्तेमाल की है। अगर एक मकान में दस चिराग जमा कर दिये जायें तो हर एक की शकल दूसरे से अलग होगी। लेकिन जब रोशनी पर नज़र जायेगी तो कोई फर्क नहीं मालूम होगा। इसी तरह अगर सौ सेब और सौ बिही की गिनती की जाये तो सौ दिखायी देंगे लेकिन निचोड़ देने के बाद सब का रस एक हो जायेगा। वास्तव में अर्थ में गिनती और विभाजन संभव नहीं है। इसलिए यारों को यारों से मिल जाना चाहिये और सुरत को छोड़कर जो सरकश

سے تعبیر کیا ہے جو خالص مسلم عقیدہ ہے*۔ لیکن اس نظم میں بھی مسلم اور ہندو فکر کی ایسی آمیزش ہے کہ دونوں کے لئے قابل قبول ہوسکتی ہے۔ »وجود« اور »غیب« جیسے الفاظ کے علاوہ جو اس وقت کی پول چال کے الفاظ نہیں ہو سکتے، کبیر نے گنگا اور جمنا کو »گنگ« اور »جمن« کہا ہے جو خالص فارسی تلفظ ہے، یہ براہ راست صوفی شاعروں کی روایت کی شہادت ہے۔ پھر »دیدار کی شراب« اور »عشق کا نور« بھی مسلم صوفی اثرات کا نتیجہ ہے، لیکن ان تصورات کے ساتھ جب کبیر »شونہ« »ترلوک محل« »کائنات چکر« »کنول کے پھول« »آرتی« اور »غیب کے گھٹنوں« کے تصورات کو ملا دیتے ہیں تو وہ اپنی ہندو وراثت کی نشان دہی کرتے ہیں۔ چونکہ وحدانیت کے نا پیدا کنار سمندر کی لہریں اپنے الگ الگ نام نہیں رکھ سکتیں اس لئے کبیر نے ہندو یا مسلم نام اختیار کرنے سے انکار کر دیا:

ہندو کہو تو میں نہیں، موسلمان بھی نا ہیں

پانچ تتو کا پوتلا، گبی کھیلے ماہیں

(ترجمہ: میں نہ ہندو ہوں نہ مسلمان، میں غیب کے کھیل میں پانچ عناصر کا ایک پتلا ہوں۔)

اس کے بعد خدا، اللہ، رام، ہری، گوبند، سائیں، صاحب، سب الفاظ ہم معنی ہو جاتے ہیں اور ان پر لڑنے والے یوقوف معلوم ہونے لگتے ہیں۔

رومی نے اپنی مثنوی میں ایک حکایت بیان کی ہے، ایک شخص نے چار مختلف زبانیں بولنے والوں کو ایک دم دیا، ایرانی نے کہا کہ اس سے انگور خریدے جائیں۔ عرب نے کہا نہیں عنب، ترک نے ازم کا نام لیا اور چوتھے نے استافیل کا۔ اس پر چاروں لڑنے لگے۔ اس وقت اگر کوئی چاروں زبانوں کا جانتے والا موجود ہوتا تو وہ اُن یوقوفوں کو بتاتا کہ سب ایک ہی چیز مانگ رہے ہیں۔ لڑائی صرف الفاظ

پر ہو رہی ہے۔

* قرآن میں آیا ہے کہ ایک رات رسول اللہ آسمان پر تعریف لے گئے۔ مسلم عالموں کی اکثریت یہ مانتی ہے کہ یہ جسمانی تجربہ تھا۔ لیکن بعض عالموں کا یہ خیال ہے کہ رسول اللہ جسمانی طور سے تعریف نہیں لے گئے تھے بلکہ یہ ایک روحانی تجربہ تھا۔ اس لئے دو اصطلاحیں بن گئی ہیں۔ معراج جسمانی اور معراج روحانی۔

“भवधूत (योगी) नशे में चूर है। ज्ञान और वैराग्य पूरा हो गया है। आती जाती सौस का प्रेम-प्याला इसने पिया है। सारा आकाश संगीत से भरा हुआ है।

“उंगलियों की भिन्नराम के बरौर तारों से संगीत निकल रहा है। सुख-दुख का खेल जारी है। कबीर कहते हैं कि जो कोई अपने जीवन को जीवन-सागर में भिला देता है उसकी आत्मा महा-आनंद में डूब जाती है।

“आठों पहर का मतवालापन है। आठों पहर जाम पर जाम चल रहे हैं। आठों पहर सरमस्ती छापी रहती है। ब्रह्म के शरीर में भक्त जीवित है।

“केवल मादकता ही मादकता है। न दुख है न खींचा-तानी। वहाँ में ने भरपूर आनंद देखा है, वहाँ पलती की कोई गुंजाइश नहीं है। कबीर कहते हैं कि वहाँ केवल एकत्व की छटा दिखायी देती है।

“मैं ने अपने शरीर में सृष्टि का कोलाहल देखा है और मुझे सांसारिक भूलों से मुक्ति मिल गयी है। आंतरिक और बाह्य अस्तित्व से एक आकाश बन गया है। सीमित और असीम मिलकर एक हो गये हैं।

“मैं दर्शन (दीदार) की मदिरा से मस्त हो गया हूँ। तेरी ज्योति भरपूर रूप में प्रकट होती है। ज्ञान की थाली में प्रेम का दिया जल रहा है। शून्य आसन पर साधना का डेरा है। कबीर कहते हैं कि वहाँ पलती का अस्तित्व नहीं और मृत्यु की खींचातानी खत्म हो चुकी है।” (पद १७)

डाक्टर ताराचंद ने इस पद के कुछ हिस्सों को मेराजे-रुहानी* कहा है जो शुद्धतः मुस्लिम विचार है। लेकिन इस पद में मुस्लिम और हिंदू विचारों का ऐसा समन्वय है कि दोनों के लिए स्वीकार्य हो सकता है। “बुजद” और “पैव” जैसे शब्दों के अलावा जो उस वक्ता की बोलचाल के शब्द नहीं हो सकते, कबीर ने गंगा और जमुना को “गंग” और “जमन” कहा है जो शुद्ध

*कुरान में आया है कि एक रात रसूल अल्लाह आस्मान पर तशरीफ ले गये। मुस्लिम आलिमों में अधिकांश यह मानते हैं कि यह शारीरिक अनुभव था। लेकिन कुछ आलिमों का ख्याल है कि रसूल अल्लाह शारीरिक रूप में तशरीफ नहीं ले गये थे बल्कि यह एक रूहानी अनुभव था। इसलिए दो इस्तलाहें बन गयी हैं—मेराजे जिस्मानी और मेराजे रूहानी।

پایا وہی بے غم ہو گیا۔ یہاں عجب آرام ہے، دانش مند وہ ہے جس نے یہ مقام دیکھا ہے۔ دانش مند وہ ہے جس نے اس کا گیت گایا ہے۔
 ”یہ حرف آخر ہے، مگر اس کا مزا کیسے بیان کیا جائے۔
 جس نے مزا چکھا ہے وہی اس لذت کو جانتا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس سے لذت اندوز ہونے کے بعد جاہل دانش مند بن جاتا ہے اور دانش مند خاموش ہو جاتا ہے۔

» اودھوت (جوگی) نشے میں چور ہے۔ گیان (علم) اور ویراگیہ (بے نیازی) کی تکمیل ہو گئی ہے۔ آتی جاتی سانس کا پریم پیالا اس نے پیا ہے سارا آکاش سنگیت سے بھرا ہوا ہے۔

» انگلیوں کی مضراب کے بغیر تاروں سے نغمے نکل رہے ہیں۔
 عیش اور غم کا کھیل جاری ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جو کوئی اپنی زندگی کو زندگی کے سمندر میں ملا دیتا ہے اس کی روح مہا آتند میں ڈوب جاتی ہے۔

» آٹھوں پر کا متوالا پن ہے۔ آٹھوں پر جام پر جام چل رہے ہیں۔ آٹھوں پر سرمستی چھائی رہتی ہے۔ برہم کے جسم میں بھگت زندہ ہے۔

» صرف سرور ہی سرور ہے۔ نہ دکھ ہے نہ کشمکش۔ وہاں میں نے بھر پور آتند دیکھا ہے۔ وہاں غلطی کی کوئی گنجائش نہیں ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ وہاں صرف وحدت کا جلوہ دکھائی دیتا ہے۔

» میں نے اپنے وجود (جسم) میں کائنات کا ہنگامہ دیکھا ہے اور مجھے دنیاوی غلطیوں سے نجات مل گئی ہے۔ خارجی اور داخلی وجود سے ایک آسمان بن گیا ہے۔ محدود اور لامحدود متحد ہو گئے ہیں۔

» میں دیدار کی شراب سے مست ہو گیا ہوں۔ تیرا نور بھر پور شکل میں ظاہر ہوتا ہے۔ گیان کی تھال میں پریم کا دیا جل رہا ہے۔ شونہ کے آسن پر سادھنا کا ڈیرا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ وہاں غلطیوں کا وجود نہیں۔ اور زندگی اور موت کی کشمکش ختم ہو چکی ہے۔ « (نظم نمبر ۱۷)

ڈاکٹر تارا چند نے اس نظم کے بعض حصوں کو معراج روحانی

शानदार संगीत उठ रहा है। वहाँ बिना पानी के कमल खिला हुआ दिखायी देता है और कबीर कहते हैं कि मन का भौंरा उसका रस पी रहा है।

“सृष्टि चक्र के हृदय में कैसा सुंदर कमल खिला हुआ है। इसका आनंद कुछ संत ही ले सकते हैं। शब्द की घटाएँ चारों ओर छापी हुई हैं और हृदय एक अथाह सागर के सुख में डूबा हुआ है। कबीर कहते हैं कि इस सुखसागर में इस तरह डूब जाओ कि जीवन और मृत्यु का भ्रम बाक़ी न रह जाये।

“देखो वहाँ पाँचों स्वादों (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध) की प्यास बुझ गयी है और तीनों दुखों (भौतिक, आदिमक और मानसिक) का बुझार उतर गया है। यह बुद्धि और विवेक से परे का (अगम) खेल है। देखो, तुम्हारे अस्तित्व में रोष की बाँदनी है वहाँ जीवन और मृत्यु की तालियों निरंतर बज रही हैं। आनंद की ज्योति आकाश में फैली हुई है। एक अमर संगीत की मंकार सुनायी दे रही है और त्रिलोक महल के प्रेम बाजे बज रहे हैं।

“जीवन और मृत्यु के बीच कोई अंतर नहीं है। दाहिना ओर बाँया हाथ एक ही है। कबीर कहते हैं कि यहाँ अंतर्ज्ञानी गूँगा हो जाता है। यह वह सत्य है जो वेदों और किताबों में नहीं मिलता (केवल अनुभव किया जा सकता है।)

“मैंने शून्य आसन पर बैठकर साधना के अवर्णनीय रस का प्याला पिया। अब मैं अंतर्ज्ञानी हूँ और एकत्व के मर्म को समझनेवाला। मार्ग के बिना चलकर मैं इस शहर में पहुँच गया हूँ जहाँ कोई दुख नहीं है। जगदेव की कृपा और दया आसानी से प्राप्त हो गयी है। मैंने ध्यान धरकर देखा तो वह बिना बाँखों के दिखायी दे गया जो असीम है, अनंत है, जिसे लोग अगम कहते हैं। यह स्थान दुखों से रहित है। यहाँ पहुँचने का कोई रास्ता नहीं है लेकिन जिसने दुख (यम) पाया वही बे-यम हो गया। यहाँ विचित्र शांति है। ज्ञानी वह है जिसने यह स्थान देखा है। ज्ञानी वह है जिसने इसका गीत गाया है।

“यही शाश्वत सत्य है मगर इसका सुख कैसे वर्णन किया जाये। जिसने यह सुख भोगा है वही इस स्वाद को जानता है। कबीर कहते हैं कि इस स्वाद का सुख पा लेने के बाद अज्ञानी ज्ञानी बन जाता है और ज्ञानी चुप हो जाता है।

» دیکھو وجود میں کیسا آرام ہے ۔ اس کا لطف وہی اٹھاسکتا ہے جو وجود کو محسوس کرسکے ۔ پریم کی ڈوریاں ہیں اور سکھ کے ساگر کا جھولا ہے جو یشگیں لے رہا ہے ۔ لفظ وہاں بادلوں کی طرح گرج رہے ہیں ۔ ایک عظیم الشان نغمہ بلند ہو رہا ہے ۔ وہاں بغیر پانی کے کنول کھلا ہوا دکھائی دیتا ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ من کا بھونرا اس کا رس پی رہا ہے ۔

» کائنات کے چکر کے دل میں کیسا حسین کنول کھلا ہوا ہے ۔ اس کا لطف کچھ سنت ہی اٹھاسکتے ہیں ۔ یہ نغمے (شبد) کی گھٹائیں چاروں طرف چھائی ہوئی ہیں اور دل ایک ییکراں سمندر کی مسرت میں ڈوبا ہوا ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ اس سکھ ساگر میں اس طرح ڈوب جاؤ کہ زندگی اور موت کا بھرم (مغالطہ) باقی نہ رہ جائے ۔

» دیکھو وہاں پانچوں لذتوں (شبد، سپرش، روپ، رس، گندھ) کی پیاس بجھ گئی ہے اور تینوں دکھوں (مادی، روحانی، ذہنی) کا بخار اُتر گیا ہے ۔ یہ عقل و فہم سے بالاتر (اگم) کا کھیل ہے ۔ دیکھو تمہارے وجود میں غیب کی چاندنی ہے ۔ وہاں زندگی اور موت کی تالیاں مسلسل بیچ رہی ہیں ۔ مسرت کی روشنی آسمانوں میں پھیلی ہوئی ہے ۔ ایک ابدی نغمے کی جھنکار سنائی دے رہی ہے اور ترلوک محل (تینوں دنیاؤں کا ایوان) کے پریم باجے بیچ رہے ہیں ۔

» زندگی اور موت کے درمیان کوئی فرق نہیں ہے ۔ داہنہ اور باایاں ہاتھ ایک ہی ہے ۔ کبیر کہتے ہیں کہ یہاں محرم راز گونگا ہو جاتا ہے ۔ یہ وہ صداقت ہے جو ویدوں اور کتابوں میں نہیں ملتی (صرف محسوس کی جاسکتی ہے) ۔

» میں نے شونہ کے (خلاؤں میں معلق) آسن پر بیٹھ کر سادھنا کے ناقابل بیان رس کا پیالا پیا ۔ اب میں اسرار کا محرم ہوں اور وحدت کے راز کا سمجھنے والا ۔ راہ کے بغیر چل کر میں اس شہر میں پہنچ گیا ہوں جہاں کوئی غم نہیں ہے ۔ جگدیو کا رحم اور کرم آسانی سے نصیب ہو گیا ہے ۔ میں نے دھیان دھر گے دیکھا تو وہ بغیر آنکھوں کے نظر آگیا جو لالچ و دھوکہ ہے ۔ مجھے لوگ ناراضائی کی منزل کہتے ہیں ۔ یہ مقام عقموں کے آزاد ہے ۔ یہاں پہنچنے کا کوئی راستہ نہیں ہے لیکن جس نے غم

[भावार्थ : मेरे बहते-जुनूँ (उन्माद के जंगल) में जिब्रिल (एक फ़रिश्ता) एक तुच्छ शिकार है। ऐ हिम्मत-मर्दाना बढ़कर खुद यज्जदों (खुदा) पर कर्मद डाल दे।]

लेकिन कबीर का आम अंदाज यह है—

न शबम, न शब-परस्तम कि हदीसे-ख्वाब गोयम

बू सुलामे-आफ़ताबम हमा आफ़ताब गोयम

[भावार्थ : मैं न तो रात हूँ, न रात का पुजारी कि नींद लानेवाली कहानियाँ सुनाऊँ। मैं तो सूरज का सुलाम हूँ और मेरा हर शब्द सूरज की तरह प्रकाशमान है।]

यह भी मुकामे-बका है और इसकी सबसे अच्छी मिसाल कबीर के उस पद में मिलती है जिसका पूरा कल्पना-चित्र प्रकाश और संगीत के तत्त्वों से बना है—

“सूरज, चाँद और तारों के चिराय जल रहे हैं। प्रेम का राग वैराग्य के ताल और सुर पर गूँज रहा है। शून्य गगन में दिन-रात नौबत बज रही है और कबीर कहते हैं कि मेरा प्रीतम आकाश में बिजली की तरह चमक रहा है।

“वहाँ क्षण भर की और पल भर की आरती कहीं। सारा संसार रात दिन आरती उतारता है और गीत गाता है। तबल और निशान बज रहे हैं। झिलझिल ज्योति की गौबी (रहस्यमयी) झालर जगमगा रही है। गैब के घंटों की आवाज आ रही है।

“कबीर कहते हैं कि वहाँ रात और दिन अपने चिरायों को गर्दिश दे रहे हैं। जगत के सिंहासन पर अगत का स्वामी बैठा हुआ है। सारा संसार कर्म और भ्रम में लीन है। ऐसे प्रेमी जो प्रीतम को पहचानते हों कम हैं। असली प्रेमी वह है जो अपने हृदय में प्रेम और वैराग्य की लहरों को इस तरह मिला लेता है जैसे गंगा और अमुना की धाराएँ मिल जाती हैं। उसके हृदय में यह पवित्र जल हमेशा बहता रहता है तब कहीं जाकर जन्म और मरण का अंत होता है।

“देखो अस्तित्व में क्या सुख है। इसका आनंद वही ले सकता है जो अस्तित्व को अनुभव कर सके। प्रेम की डोरियाँ हैं और सुख के सागर का झूला है जो पेंगें ले रहा है। शब्द वहाँ बादलों की तरह गरज रहे हैं। एक

جو فرشتے اور پیمبر اور خدا کو بھی شکار کر لیتے ہیں) :
 یا اقبال کا یہ شعر جو رومی کی صدائے باز گشت ہے :
 در دشت جنوں من ، جبریل ذبوں صیدے
 یزداں بکمند آور ، اے ہمت مردانہ
 (ترجمہ : میرے دشت جنوں میں جبریل ایک حقیر شکار ہے ۔ اے ہمت
 مردانہ بڑھ کر خود یزداں پر کمند ڈال دے)
 لیکن کبیر کا عام اندازہ یہ ہے :

نہ شبم نہ شب پرستم کہ حدیث خواب گویم
 چو غلام آفتابم ہمہ آفتاب گویم
 (ترجمہ : میں نہ تو رات ہوں نہ رات کا پجاری کہ خواب آور کہانیاں
 سناؤں ۔ میں تو سورج کا غلام ہوں اور میرا ہر حرف سورج کی طرح
 روشن ہے)

یہ بھی مقام بقا ہے اور اس کی سب سے اچھی مثال کبیر کی
 اس نظم میں ملتی ہے جس کی ساری امیجری نور اور نغمے سے بنی ہے ۔
 »سورج، چاند اور تاروں کے چراغ جل رہے ہیں۔ پریم راگ
 بیراگ (بے نیازی) کے نال اور مُسر پر بلند ہو رہا ہے۔ فضاؤں میں رات
 دن نوبت بچ رہی ہے اور کبیر کہتے ہیں کہ میرا پریم (محبوب) آسمانوں
 میں بجلی کی طرح چمک رہا ہے۔
 »وہاں لمحے بھر کی اور پل بھر کی آرئی کہاں، سارا سنسار
 رات دن آرئی اُتارتا ہے اور گیت گاتا ہے۔ طبل اور نشان بچ رہے
 ہیں۔ جھلمل جیوتی کی غیبی جھالرجمگا رہی ہے۔ غیب کے گھٹنوں کی
 آواز آرہی ہے۔

»کبیر کہتے ہیں کہ وہاں رات اور دن اپنے چراغوں کو گردش
 دے رہے ہیں۔ جگت کے تخت پر جگت کا مالک بیٹھا ہوا ہے۔ سارا
 سنسار کرم اور بھرم (کام اور مغالطے) میں مبتلا ہے۔ ایسے پریمی
 جو پریم کو پہچانتے ہوں کم ہیں۔ اصلی عاشق وہ ہے جو اپنے دل
 میں پریم (نیاز) اور بیراگ (بے نیازی) کی لہروں کو اس طرح ملا لیتا
 ہے جیسے گنگا اور جمنا کے دھارے مل جاتے ہیں۔ اس کے دل میں
 یہ مقدس پانی ہمیشہ بہتا رہتا ہے تب کہیں جا کر جنم اور مرن، موت
 اور زندگی کا انت ہوتا ہے۔

को एक-दूसरे से अलग कर दिया था, हमला किया। उनके हमले से न मुसलमान बचे न हिंदू।” (ताराचंद, पृष्ठ १६७)

बशिर् है कि इस जगह पर हिंदू भक्ति और मुस्लिम तसव्वुफ का संगम अनिवार्य था। इसीलिए बाण जगहों पर मंसूर की अनलहक कि गूँज के झलावा, जिसका जिक्र पहले आ चुका है, कबीर की शिक्षाओं पर रूमी के विचारों का असर भी दिखायी देता है, जिसे उन्होंने हिंदू भक्ति के ढंग से पेश किया है। वही प्रताप, वही बेचैनी जो रूमी की गण्यों की विशेषता है, कबीर की कविता की महानता का तत्त्व है। हिंदू भक्ति कबीर को मुकामे-फना की सैर कराती है जहाँ इज्ज-मो-इनकिसार (विनम्रता) खुष्म और खुशुम (विनय) है और मुस्लिम तसव्वुफ मुकामे-बक्का पर पहुँचा देता है जहाँ क़वत (शक्ति), अजमत (महानता), जलाल और जमाल (प्रताप और सौंदर्य), बेबाकी और बुलंद-आहंगी (स्पष्टवादिता और उच्चस्वर) के डंके बज रहे हैं। कबीर के शब्दों में आसमान गरज रहा है। * अगर कबीर के यहाँ यह कल्पना मौजूद है जो भक्ति और तसव्वुफ दोनों जगह समान रूप से है कि बूँद या बुलबुला नदी में विलीन हो जाता है, जीव, व्यक्ति, आत्मा जाकर ब्रह्म में मिल जाती है तो दूसरी तरफ यह कल्पना भी मौजूद है जो रूमी की देन है की बूँद नदी को पी लेती है, आत्मा ब्रह्म को अपने अंदर समो लेती है। लेकिन यह दूसरी बात इतने साफ़ शब्दों में नहीं कही गयी है जिसकी मिसाल रूमी का यह शेर है—

ब जेरे-कुंगुरए-किब्रयाश मर्दानंद

फ़रिश्ता सैद ओ पर्यवर शिकाग ओ यज्दों गीर

[भावार्थ : वामे किब्रियाई (ब्रह्मस्थान) के साथे में ऐसे हिम्मतवाले लोग खड़े हैं जो फ़रिश्ते और पैगंबर और खुदा को भी शिकार कर लेते हैं।]

या इक़बाल का यह शेर जो रूमी की प्रतिध्वनि है—

दर दइते-जुनूने-मन, जिब्रील जबूँ सैदे

यज्दों ब-कमेद आबुर, ऐ हिम्मते-मर्दाना

* तसव्वुफ में सालिक (पथिक) को कई मुकामात (अवस्थाओं) से गुज़रना पड़ता है। उनमें एक मुकामे-बक्का (अविनाश) है और एक मुकामे-फना (विनाश)। दोनों एक-दूसरे के सामने हैं। फ़ारसी में रूमी मुकामे-बक्का के शाबर हैं। जिस तरह दूसरा कोई सूखी शाबर रूमी के करीब नहीं पहुँचता उसी तरह कोई दूसरा संत कबीर के करीब नहीं पहुँच पाता।

نہیں کرسکتا تھا۔ یہ کبیر کے مشن کا تعمیری پہلو تھا۔ لیکن ان کے مشن کا تخریبی پہلو بھی ہے، تھے راستے کی تشکیل اس جھاڑ جھنکاڑ کو دور کئے بغیر، جس نے قدیم پگڈنڈیوں کو مسدود کر دیا تھا، ناممکن تھی۔ یہی وجہ ہے کبیر نے بیباکانہ غیظ و غضب اور پُر زور زبان میں ظواہر مذہب کے تمام ساز و سامان پر، جس نے صداقت کو چھپا دیا تھا، ہا ہندستان کی جماعتوں کو ایک دوسرے سے جدا کر دیا تھا، حملہ کیا۔ اُن کے حملے سے نہ مسلمان بچے نہ ہندو» (تارا چند صفحہ ۲۶۷) ظاہر ہے کہ اس مقام پر ہندو بھگتی اور مسلم تصوف کا سنگم ناگزیر تھا، اسی لئے بعض مقامات پر منصور کی انا الحق کی گونج کے علاوہ جس کا ذکر پہلے آچکا ہے کبیر کی تعلیمات پر رومی کے تصورات کا عکس بھی دکھائی دیتا ہے جسے انہوں نے ہندو بھگتی کے انداز سے پیش کیا ہے۔ وہی جاہ و جلال، وہی یتیمی اور بیکراری جو رومی کی غزلوں کی خصوصیت ہے کبیر کی شاعری کا جز و اعظم ہے، ہندو بھگتی کبیر کو مقام فنا کی سیر کراتی ہے جہاں عجز و انکسار، خضوع اور خشوع ہے اور مسلم تصوف مقام بقا پر پہنچا دیتا ہے جہاں قوت، عظمت، جلال اور جمال، بیباکی اور بلند آہنگی کے ڈنکے بج رہے ہیں، کبیر کے الفاظ میں آسمان گرج رہا ہے* اگر کبیر کے یہاں یہ تصور موجود ہے جو بھگتی اور تصوف دونوں جگہ مشترک ہے کہ قطرہ، یا حباب دریا میں محو ہو جاتا ہے، جیو، فرد، آتما جا کر وجود مطلق (برہمن) میں مل جاتی ہے تو دوسری طرف یہ تصور بھی موجود ہے جو رومی کی دین ہے کہ قطرہ، دریا کو پی لیتا ہے، آتمن برہمن کو جذب کر لیتی ہے۔ لیکن یہ دوسری بات اتنے صاف الفاظ میں نہیں کہی گئی ہے جس کی مثال رومی کا یہ شعر ہے:

بہ زیرِ کنگرہ کبریاںش مردانند

فرشتہ صید و پیمبر شکار ویزداں گیر

(ترجمہ: بام کبریائی کے سائے میں ایسے ہمت والے لوگ کھڑے ہیں)

* تصوف میں سالک کو کئی مقامات سے گزرنا پڑتا ہے۔ انہی میں ایک مقام بقا ہے اور ایک مقام فنا دونوں ایک دوسرے کے مقابل ہیں۔ فارسی میں رومی مقام بقا کے شاعر ہیں۔ جس طرح کوئی دوسرا صوفی شاعر رومی کے قریب نہیں پہنچتا اسی طرح کوئی دوسرا سنی شاعر کبیر کے قریب نہیں پہنچ پاتا۔

तक जान में जान है। दुरमन का सर काटकर उसका काम तमाम कर दो। फिर मालिक के दरबार में आकर अपना सर झुका दो।

“बहादुर लड़ाई के मैदान को देखकर भागते नहीं और भागनेवाले बहादुर नहीं होते। शरीर और प्राणों के रण में क्या घमासान की लड़ाई हो रही है। काम, क्रोध, मद, लोभ मुक्ताबले पर खड़े हुए हैं। संतोष, धीरज और सत्य के राज्य में तलवार का नाम ऊंचा हो रहा है। कबीर कहते हैं कि जब कोई सूरमा लड़ाई के लिए निकलता है तो कायरों की फौज पीठ दिखाकर भाग जाती है।

“सत्य की खोज का संघर्ष बहुत कठिन है। सती और सूरमा के मुक्ताबले में उसका प्रण निभाना ज्यादा कठिन है। सूरमा की लड़ाई दो-चार घंटे चलती है। सती का संघर्ष एक क्षण में समाप्त हो जाता है। लेकिन सत्य की खोज करनेवाला दिन-रात संघर्ष करता है। उसकी लड़ाई जीवन के अंतिम क्षण तक जारी रहती है।” (पद ३७, छंद २, ३, ४)

“मनुष्य के इस आंतरिक संघर्ष का वर्णन इन शब्दों में किया जा सकता है कि ‘जिस हृदय में दया है, जो सदाचारी है, जो संसार में रहकर संसार से उदास रहता है और संसार के हर प्राणी को अपनी तरह जानता है उसको वह अविनाशी (भगवान) मिल जाता है।’” (ताराचंद, पृष्ठ २६१-६२; कबीर का पद ६९।)

डाक्टर ताराचंद ने बहुत-सी मिसालों से कबीर और मुस्लिम दार्शनिकों, विचारकों और सूफ़ी शायरों के विचारों की समानता साबित की है और आखिर में यह नतीजा निकाला है कि:

“इस तरह कबीर ने एक सांसारिक मार्गवाले धर्म की ओर मनुष्य का ध्यान मोड़ दिया। कोई हिंदू या मुसलमान उस धर्म से बच नहीं सकता। यह कबीर के जीवन-ध्येय का रचनात्मक पहलू था। लेकिन उनके ध्येय का ध्वंसात्मक पहलू भी है। नये रास्ते बनाने का काम उस फ़ाड़-फ़ाँड़ाई को दूर किये बग़ैर, जिसने पुरानी पगड़ंडियों को ढक दिया था, असंभव था। यही वजह है कि कबीर ने बेधड़क क्रोध के साथ और जोरदार शब्दों में, धर्म के उस सारे बाहरी आडंबर पर, जिसने सत्य को छुपा दिया था, या हिंदुस्तान के सम्प्रदायों

نصوات سے واقفیت کا ثبوت ہے۔ » فنائے ہستی سے کبیر کا مقصد یہ تھا کہ انسان اپنے حواس اور قویٰ سے مسلسل آمادہٴ پیکار رہے۔ «
(تارا چند صفحہ ۲۶۱)

کبیر نے اس پیکار کو ان شاندار الفاظ میں بیان کیا ہے :-

» شمشیر ہاتھ میں لے کر میدانِ جنگ میں اترو اور اس وقت تک لڑو جب تک جان میں جان ہے۔ دشمن کا سر کاٹ کر اُس کا کام تمام کر دو۔ پھر مالک کے دربار میں آکر اپنا سر جھکا دو۔

» بہادر جنگ کے میدان کو دیکھ کر بھاگتے نہیں اور بھاگتے والے بہادر نہیں ہوتے۔ جسم و جان کے رن میں گھمسان کی لڑائی ہو رہی ہے۔ ہوس، غصہ، غرور اور لالچ مقابلے پر کھڑے ہوئے ہیں۔ صبر، قناعت اور صداقت کی بادشاہت میں شمشیر کا نام بلند ہو رہا ہے۔ کبیر کہتے ہیں کہ جب کوئی سورما لڑائی کے لئے نکلتا ہے تو بزدلوں کی فوج پیٹھ دکھا کر بھاگ جاتی ہے۔

» صداقت کے متلاشی کی جد و جہد بہت کٹھن ہے۔ سنی اور سورما کے مقابلے میں اس کا عہدِ وفا زیادہ دشوار ہے، سورما کی لڑائی دو چار گھنٹے چلتی ہے، سنی کی جد و جہد ایک پل میں ختم ہو جاتی ہے، لیکن صداقت کا متلاشی دن رات جنگ کرنا ہے، اس کی لڑائی زندگی کے آخری لمحے تک جاری رہتی ہے۔

(نظم ۳۷ بند ۲، ۳، ۴)

انسان کی اس باطنی جد و جہد کا انجام ان الفاظ میں بیان کیا گیا ہے کہ » جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے، جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس رہتا ہے اور دنیا کے ہر ذی حیات کو اپنی طرح جانتا ہے اس کو وہ لافانی (بھکوان) مل جاتا ہے، « (تارا چند صفحہ ۲ - ۲۶۱ کبیر نظم ۶۵)

ڈاکٹر تارا چند نے بہت سی مثالوں سے کبیر اور مسلم فلسفیوں مفکروں اور صوفی شاعروں کے خیالات کی مماثلت ثابت کی ہے اور آخر میں یہ نتیجہ نکالا ہے :

» اس طرح کبیر نے ایک آفاقی راہ والے مذہب کی طرف انسان کی توجہ پھیر دی، کوئی ہندو یا مسلمان اس مذہب سے پہلوئیں

किया है, उन्हें ज्ञानियों का सत्संग मिला था। झूठी के शेख तक्ती की सोहबत का बिक्र कबीर ने खुद किया है, चाहे वह उनके शगिर्द बनें हों या उनके साथ सिर्फ उठते-बैठते रहे हों।

डाक्टर ताराचंद अपनी अंग्रेजी किताब “भारत की संस्कृति पर इस्लामी प्रभाव” में लिखते हैं :

“कबीर के उपदेशों की शैली की रचना सूफ़ी औलिया और शायरों ने की। हिंदी जमान में तो उन्हें कोई मार्गदर्शक न मिला इसलिए वह जिन नमूनों की पैरवी कर सकते थे वह मुसलमानों ही से मिल सकते थे, * जैसे फ़रीदुद्दीन अक्षर का “पंद-नामा”। बाबा फ़रीद और कबीर की नज़्मों के विषयों की तुलना करने से यह बात साफ़ दिखायी देती है। कबीर ने दूसरे सूफ़ियों के जलावा जलालुद्दीन रूमी और शेख साद्वी का कलाम भी ज़रूर सुना होगा क्योंकि उनके कलाम में इन सूफ़ी शायरों की प्रतिध्वनि सुनायी देती है।” (पृष्ठ २४७, मजलिस-अदब, लाहौर द्वारा प्रकाशित मुहम्मद मसऊद अहमद के अनुवाद से)

कबीर की कविता में अरबी और फ़ारसी के सैकड़ों शब्द हैं जिनमें से कुछ तो उस समय की हिंदी में प्रचलित हो चुके थे और कुछ सीधे सूफ़ी शायरी से आये हैं। तर्क-दुनिया (संसारत्याग) से इंकार और योग और भोग दोनों को घरेलू जिंदगी का हिस्सा मानना (पद ४०) इस्लामी विचारधारा से परिचित होने का प्रमाण है। “फ़नाए-हस्ती (अस्तित्व का अंत) से कबीर का मक़सद यह था कि इंसान अपने हवास (इंद्रियों) और क़वा (शक्तियों) से निरंतर संघर्ष करता रहे।” (ताराचंद, पृष्ठ २६१)

कबीर ने इस संघर्ष को इन शानदार शब्दों में बयान किया है :

“तलवार हाथ में लेकर रणक्षेत्र में उतरो और उस वक़्त तक लड़ो जब

* कबीर से पहले हिंदी भाषा ने कोई बड़ा कवि पैदा नहीं किया। मलिक मुहम्मद जायसी की जन्मतिथि १४९४ ई० है और ‘पद्मावत’ का रचनाकाल १५४० ई० में शेरशाह सूरी के युग में हुआ जबकि कबीर की मृत्यु १५१८ ई० में हो चुकी थी। इसलिए मुस्लिम सूफ़ियों के ज़रिये से कबीर के पास कई सौ बरस की फ़ारसी परम्परा आयी। सूफ़ी क्षेत्रों में रूमी, ज़ाद्वी, अक्षर और हाफ़िज़ की रचनाएँ आज तौर पर पढ़ी जाती थीं और कबीर की कविता में उनके प्रभाव के प्रमाण मिलते हैं।

کہا جاسکتا ہے کہ وہ اُن گوشیوں میں بھی شریک ہوئے جو 'مسلم صوفیوں اور ہندو سنتوں کے درمیان ہوتی تھیں اور اسرار و رموز بیان کئے جانے تھے۔ ہندو دھرم کے علاوہ تصوف اور اسلام سے اُن کی گہری واقفیت اور رغبت یہ قیاس آرائی کرنے پر مجبور کرتی ہے کہ ان پڑھ ہونے کے باوجود، جس کا انہوں نے خود اعتراف کیا ہے انہیں اچھی علمی صحبت ملی تھی۔ جھوسے کے شیخ تقی کی صحبت کا ذکر کبیر نے خود کیا ہے چاہے وہ اُن کے شاگرد بنے ہوں یا صرف ہم مجلس رہے ہوں۔^{۱۱} ڈاکٹر نارا چند اپنی انگریزی کتاب «تمدن ہند پر اسلامی اثرات» میں لکھتے ہیں :-

«کبیر کی تعلیمات کے اندازِ بیان کی صورت گری صوفی اولیاء اور شعرا نے کی۔ ہندی زبان میں تو انہیں کوئی پیش رو نہ ملا اس لئے وہ جن نمونوں کی پیروی کرسکتے تھے وہ مسلمانوں ہی سے مل سکتے تھے* مثلاً فرید الدین عطار کا پسند نامہ۔ بابا فرید اور کبیر کی نظموں کے عنوانوں کے تقابل سے یہ امر با وضاحت معلوم ہوتا ہے۔ کبیر نے دوسرے صوفیا کے علاوہ جلال الدین رومی اور شیخ سعدی کا کلام بھی یقیناً سنا ہوگا کیونکہ ان کے کلام میں ان صوفی شعرا کی صدائے بازگشت سنائی دیتی ہے» (صفحہ ۲۴۷۔ اردو ترجمہ محمد مسعود احمد۔ مطبوعہ مجلس ادب لاہور)

کبیر کی شاعری میں عربی اور فارسی کے سیکڑوں الفاظ ہیں جن میں سے کچھ تو اس وقت کی ہندی میں رائج ہوچکے تھے اور کچھ براہِ راست صوفیانہ شاعری سے آئے ہیں۔ ترکِ دنیا سے انکار اور یوگ بھوک دونوں کو گھریلو زندگی کا حصہ قرار دینا (نظم ۲۰) اسلامی

* کبیر سے پہلے ہندی زبان نے کوئی بڑا شاعر پیدا نہیں کیا۔ ملک محمد جاسی کی تاریخ پیدائش ۱۳۹۴ھ سے اور پیدائش کی ابتدا ۱۵۳۰ھ میں شہ شہ سوری کے عہد میں ہوئی جبکہ کبیر کا انتقال ۱۵۱۸ھ میں ہوچکا تھا۔ اس لئے مسلم صوفیوں کے ذریعے سے کبیر کے پاس کسی سو برس کی فارسی روایت آئی۔ صوفی حلقوں میں رومی، سعدی، عطار اور حافظ کا کلام عام طور سے پڑھا جاتا تھا اور کبیر کی شاعری میں اُن کے اثرات کی شہادتیں موجود ہیں۔

बनायेंगे या नहीं। कबीर ने दूसरा हल जिस तरह खोजा वह बहुत दिलचस्प है। रामानंद गोष्प सुबह-सबरे गंगा में स्नान करने जाते थे। एक रोज सुबह के वक़्त जब अभी अँधेरा था कबीर गंगा के किनारे सीढ़ियों पर लेट गये। थोड़ी देर में जब स्वामी रामानंद आये तो उनका पैर कबीर के सर पर पड़ गया और अनायास उनके मुँह से 'राम-राम' निकल गया। कबीर खुश हो गये कि मंत्र मिल गया और उस दिन से अपने आपको रामानंद का चेला कहने लगे। हिंदू और मुसलमान दोनों ने शोर मचाया लेकिन कबीर के माथे पर बल नहीं पड़ा क्योंकि वह बचपन से इसके आदी थे। उनके असाम्प्रदायिक गवैये की वजह से हिंदू लड़के उन्हें मुसलमान समझकर और मुसलमान लड़के हिंदू समझकर छेड़ते थे और सताते थे—

आहिदे - तंगनजर ने मुझे काफ़िर जाना
और काफ़िर यह समझता है मुसलमानों हूँ मैं
देख ऐ चश्मे-अद, मुझको हिक्मत से न देख
जिस पे क़ुदरत को भी है नाज़ वह इसी हूँ मैं

(इक़बाल)

बहरहाल, रामानंद ने कबीर को अपने मंडल में ले लिया। कुछ लोगों का मत है कि कबीर उनकी सोहबत में एक अरसे तक रहे लेकिन कुछ लोग यह समझते हैं कि यह सोहबत बहुत कम दिन रही और इसका सबूत इससे भी मिलता है कि कबीर के विचारों पर रामानंद का प्रभाव धीरे-धीरे धुँधला होता चला जाता है। यह मालूम होता है कि रामानंद से मिलने से पहले और बाद भी कबीर इधर-उधर घूमते रहे और संन्यासियों और भक्तों के अलावा मुस्लिम सूफ़ियों की सोहबत में भी वक़्त गुज़ारते रहे। लेकिन यह यक़ीनी बात है कि कबीर का धार्मिक ज्ञान, जो आश्चर्यजनक हद तक व्यापक है, स्वामी रामानंद की गोष्ठियों की भी देन हैं। और यह भी कहा जा सकता है कि उन्होंने उन गोष्ठियों में भी भाग लिया जो सूफ़ियों और संतों के बीच होती थीं और जिनमें मर्मचिंतन और तत्त्व-विवेचन होता था। हिंदू धर्म के अलावा तसव्वुफ़ और इस्लाम के बारे में उनकी गहरी जानकारी और उनसे उनका गहरा लगाव यह अनुमान लगाने पर विवश कर देता है कि अनपढ़ रहने के बावजूद, जिसे उन्होंने स्वयं स्वीकार

ہندوہیں صدی کے بنارس میں راماند کی بڑی شہرت تھی۔
 ویسے تو وہ ہندو سنت تھے لیکن اُن کی مجلس (گوشی) میں ہندو
 اور مسلمان دونوں شریک ہوتے تھے۔ کبیر کا لڑکپن تھا لیکن اُن کی
 نگاہ انتخاب بھی راماند ہی پر پڑی۔ اب مشکل یہ تھی کہ ایک مسلمان
 جولاہے کو وہ اپنی شاگردی میں قبول کریں گے یا نہیں، کبیر نے اس کا حل
 جس طرح تلاش کیا وہ بہت دلچسپ ہے۔ راماند روز صبح سویرے گنگا
 میں اُشان کرنے جاتے تھے، ایک روز صبح کے وقت جب ابھی اندھیرا تھا
 کبیر گنگا کے کنارے سیڑھیوں پر لیٹ گئے۔ تھوڑی دیر میں جب سوامی
 راماند آئے تو اُن کا پیر کبیر کے سر پر پڑ گیا اور یساختہ اُن کے منہ
 سے رام رام نکل گیا۔ کبیر خوش ہو گئے کہ منتر مل گیا اور اس دن سے
 اپنے آپ کو راماند کا چلا کہنے لگے۔ ہندو اور مسلمان دونوں
 نے شور مچایا لیکن کبیر کے ماتھے پر بل نہیں پڑا کیونکہ وہ جپن سے
 اس کے عادی تھے۔ اُن کے غیر متعصب رویے کی وجہ سے ہندو لڑکے
 انہیں مسلمان اور مسلمان لڑکے ہندو سمجھ کر چھیڑتے اور
 ستاتے تھے :

زاہد تنگ نظر نے مجھے کافر جانا
 اور کافر یہ سمجھتا ہے مسلمان ہوں میں
 دیکھ اے چشمِ عدو مجھ کو حقارت سے نہ دیکھ
 جس پہ فطرت کو بھی ہے ناز وہ انسان ہوں میں

(اقبال)

بہر حال راماند نے کبیر کو اپنے حلقے میں لے لیا، بعض لوگوں کا خیال
 ہے کہ کبیر اُن کی صحبت میں ایک عرصے تک رہے لیکن بعض لوگ
 یہ رائے رکھتے ہیں کہ یہ صحبت بہت مختصر تھی اور اس کا ثبوت اس
 سے بھی ملتا ہے کہ کبیر کے تصورات پر راماند کے اثرات آہستہ
 آہستہ دھندلے ہوتے چلے جاتے ہیں، یہ معلوم ہوتا ہے کہ جس طرح راماند
 سے ملنے سے پہلے کبیر ادھر ادھر گھومتے رہے اُسی طرح اُن کی
 شاگردی اختیار کر لینے کے بعد بھی دوسرے سنیاہوں اور بھگتوں کے
 علاوہ مسلم صوفیا کی صحبت میں وقت گزارتے رہے۔ لیکن یہ یقینی بات
 ہے کہ کبیر کی مذہبی معلومات جو حیرت انگیز حد تک وافر ہیں سوامی
 راماند کی گوشیوں (مجلسوں) کی بھی دین ہیں۔ اور یہ بھی

की अस्मरत बाक्ती नहीं रह जाती कि सारी सृष्टि उसकी माफ़ा फेरने में व्यस्त है। इसी तरह जब वह जन साधारण की भाषा में यह कहते हैं कि “निराकार, निरगुन, अविनाशी, फर वाही को संग” (पद २९) तो ऐसा लगता है कि हिंदू परिभाषा में “कुल हू अल्लाह अहद” * की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है। कभी-कभी इस दर्शन के दीवाने “अलमस्त फ़कीर” का गीत इस्लामी चिंतन-धारा की लहरों में बदल जाता है। “या करीम, बलि हिकमत तेरी, खाक एक सूरत बहुतेरी” अर्थात् ऐ करीम (दयानिधि) मैं तेरी हिकमत पर कुरबान जाऊँ, एक खाक से इतनी सारी सूरतें बना डालीं।” और कभी वह इस्लामी आस्थाओं की भूमि से उठकर वेदांत के शून्य आकाश में चले जाते हैं, जहाँ निर्गुण और सगुण से भी-चेतना ऊँची हो जाती है। फिर कभी-कभी वह इस्लामी शब्द इस्तेमाल करते हैं और हिंदू-पद्धति अपना लेते हैं, जैसे “नबी चौखों में मौजूद है, काले और सफ़ेद तिलों के बीच में एक तारा है जिसमें लाखों सूरज उदय होते हैं।” मगर इस हज्जार-रंग अंदाज के अंदर अभीष्ट एक ही है जो एक शब्द ‘प्रेम’ में समा जाता है, बाक्ती बातें उसकी व्याख्या हैं।

यह बात सर्वसम्मति से मानी जाती है और खुद कबीर ने इसे स्वीकार किया है कि वह अनपढ़ थे। लेकिन उनके जन्म और मृत्यु की तरह उनकी शागिर्दी के बारे में भी मतभेद है। मुस्लिम परम्परा उन्हें एक सूफ़ी पीर तत्की का शागिर्द ठहराती है लेकिन अपनी कविता में कबीर ने रामानंद को गुरु मानकर उनका सम्मान किया है।

पंद्रहवीं शताब्दी के बनारस में रामानंद की बड़ी ख्याति थी। वैसे तो वह हिंदू संत थे लेकिन उनकी गोष्ठी में हिंदू और मुसलमान दोनों शरीक होते थे। कबीर का लड़कपन था लेकिन उन्होंने भी रामानंद को ही अपना गुरु चुना। अब मुश्किल यह थी कि एक मुसलमान जुलाहे को वह अपना शिष्य

एलान है। (मसनवी का अंग्रेज़ी अनुवाद-निकल्सन कृत, सातवाँ खंड) लेकिन यह कहने का अधिकार सिर्फ़ अहले-बातिन (अंतर्ज्ञानी) को है, अहले-जाहिर (कर्मकांडी) को नहीं क्योंकि इसकी सज़ा मौत है, जिसे अहले-बातिन फ़रने-उल्सी (बिबाहोत्सव) समझते हैं और अहले-जाहिर सज़ा कहते हैं।

* कुरान की भाषात जिसका अर्थ है कि अल्लाह एक है।

تورا» (نظم نمبر ۲۸) یعنی ذات کے سامنے صفات ناچ رہی ہیں اور انا الحق کا ساز بیج رہا ہے^۱۔ جب وہ یہ کہتے ہیں کہ «اس کے وجود میں ایک دنیا کے بعد دوسری دنیا تسبیح کے دانوں کی طرح چل رہی ہے» (نظم نمبر ۱۲)۔ تو پھر یہ کہنے کی ضرورت باقی نہیں رہ جاتی کہ ساری کائنات اس کی تسبیح میں مشغول ہے اس طرح جب وہ عوام کی زبان میں یہ کہتے ہیں کہ «نراکار، نرگن اپناسی، کر واپی کو سنگ» (نظم نمبر ۲۹) تو یہ محسوس ہوتا ہے کہ ہندو پری بھاشا میں قل ہوالہ احد کی تفسیر اسی طرح بیان کی جاسکتی ہے۔ کبھی کبھی اس درشن کے دیوانے «المست فقیر» کا نغمہ اسلامی فکر کی موجوں میں تبدیل ہو جاتا ہے «یا کریم، بل حکمت تیری کھا ک ایک صورت بُہتری» یعنی «امے کریم میں تیری حکمت پر قرباں جاؤں، ایک خاک سے اتنی ساری صورتیں بنا ڈالیں»۔ اور کبھی وہ اسلامی عقاید کی زمین سے الھ کر ویدانت کے شونہ آکاش میں چلے جاتے ہیں جہاں ذات و صفات سے بھی شعور بلند ہو جاتا ہے، پھر وہ کبھی کبھی اسلامی الفاظ استعمال کرتے ہیں اور ہندو انداز فکر اختیار کر لیتے ہیں مثلاً «نی آنکھوں میں موجود ہے، سیاہ اور سفید تاوں کے بیچ میں ایک تار ہے جس میں لاکھوں سورج طلوع ہوتے ہیں» مگر اس ہزار رنگ انداز کے اندر شیوہ، ایک ہی ہے جو ایک لفظ عشق میں سما جاتا ہے۔ باقی باتیں اس کی تفصیل اور تفسیر ہیں۔

یہ بات متفقہ طور سے مانی جاتی ہے اور خود کبیر نے اس کا اعتراف کیا ہے کہ وہ ان پڑھ تھے۔ لیکن ان کی پیدائش اور موت کی طرح ان کی شاگردی کے متعلق بھی اختلاف رائے ہے۔ مسلم روایت انہیں ایک صوفی پیر تقی کا شاگرد قرار دیتی ہے لیکن اپنی نظموں میں کبیر نے رامانند کو گرو مان کر خراج عقیدت پیش کیا ہے۔

۱ مولانا جلال الدین رومی کے نزدیک انا الحق انگدار کی آخری منزل ہے۔ جس طرح شد میں ڈوبی ہوئی سکھی ہل نہیں سکتی اسی طرح استغراق کے عالم میں کوئی صوفی انا المبد (میں بندہ ہوں) نہیں کہہ سکتا۔ کیونکہ اس میں دوئی ہے، ایک خدا اور ایک بندہ اور یہ غرور کی منزل ہے خدا کے وجود کے سامنے اپنے وجود کا اعلان ہے۔ (مشوہ کا انگریزی ترجمہ، از نکسن، ساتویں جلد) لیکن یہ کہنے کا حق صرف اہل باطن کو ہے۔ اہل ظاہر کو نہیں کیوں کہ اس کی سزا موت ہے جسے اہل باطن جہنم عروسی سمجھتے ہیں اور اہل ظاہر سزا کا نام دیتے ہیں۔

कबीरदास एक मुसलमान सूफ़ी थे जो हिंदू भक्ति की भाषा में बात कर रहे थे। *क्योंकि उन्होंने अपने आपको बार-बार जुलाहा कहा है इसलिए यह यक़ीन के साथ कहा जा सकता है कि उन्होंने इस्लाम का परित्याग नहीं किया था लेकिन उनकी षज हिंदुओं की सी थी। माथे पर तिलक लगाते थे, और शरीर पर जनेऊ पहनते थे और साहस तो इतना था कि ब्राह्मणों पर व्यंग करते थे। “तू बाम्हन मैं कासी का जुलहा, बूझो मोर गियाना” † भारत के पूरे इतिहास में एकता के इतने सुंदर और भावपूर्ण प्रदर्शन का कोई दूसरा उदाहरण नहीं है। उस युग में जब तुर्क शासकों की तलवार भारत के सरपर चमक रही थी इस मुसलमान जुलाहे के हज़े-मुहब्बत (प्रेम-वाणी) में कितना आकर्षण होगा जिसने अपने आपको सर से पोंव तक भारत के रंग में रंग लिया था और यह भी यक़ीन किया जा सकता है कि कबीर से परिचित होने के बाद आम हिंदू आम मुसलमान से नफ़रत नहीं कर सकता था।

कबीर ने मंसूर की तरह अनलहक नहीं कहा लेकिन अनलहक का साग भाव इन पंक्तियों में मौजूद है: “निरगुन आगे सगुन नाचै, बाजै सुहंग तूरा” (पद २८) अर्थात् निर्गुण के आगे सगुण नाच रहा है और अनलहक का साज बज रहा है। ‡ जब वह यह कहते हैं कि “उसके वुजूद में एक दुनिया के बाद दूसरी दुनिया तस्बीह के दीनों की तरह चल रही है” तो फिर यह कहने

* काफ़िरे-इश्क़म मुसलमानी मरा दरकार नीस्त

हर रगे-जौ तार गुहता हाजते - जुबार नीस्त

—खुसरो

[भाषार्थ: मैं वह काफ़िर हूँ जिसने इश्क़ को खुदा माना है। अब मुझे इस्लाम की ज़रूरत नहीं। मेरी एक-एक नस तार बन गयी है, फिर मैं जनेऊ पहनकर क्या करूँगा।]

† विलचस्प बात है कि कबीर का खानदान हिंदू से मुसलमान हुआ था और इक़बाल का खानदान भी। कबीर ने अपने आपको मुसलमान कहकर ब्राह्मण पर व्यंग किया और इक़बाल ने अपने आपको ब्राह्मण कहकर मुसलमानों के सामने गर्व से काम लिया। “बरहमन-जादा रम्ज़-आशाना-ए-रूम-ओ-तम्रेज़ प्रस्त” कबीर ने अपनी कविता में हिंदू उपमाओं और अलंकारों का प्रयोग किया और इक़बाल ने इस्लामी परम्पराओं से अपनी उपमाएँ और अलंकार लिये हालाँकि उनके ‘खुदी’ के फ़लसफ़े पर उपनिषद् और वेदांत का अच्छा-खासा प्रभाव है जिस पर अभी तक कोई शोध-कार्य नहीं किया गया है।

‡ मौलाना अलाउद्दीन रूमी के नज़दीक अनलहक बिनब्रता की आखिरी मंज़िल है। जिस तरह चादर में डूबी हुई मच्छी डिल नहीं सकती उसी तरह इस्तब़ाक़ (तल्लीनता) के आलम में कोई सूफ़ी अनलअब्द (मैं बंदा हूँ) कह नहीं सकता क्योंकि उसमें दुः (द्वैताभास) है — एक खुदा और एक बंदा और यह गुरू की मंज़िल है, खुदा के इज्ज के सामने अपने इज्ज का

اس دوہرے کے الفاظ ممکن ہے کہ حقیقت ہی کی ترجمانی کرتے ہوں لیکن اگر انہیں استعارے کی زبان سمجھا جائے تو ایسا معلوم ہوتا جیسے جنگوں کی گہن گرج میں، قتل و غارت کی بجلیوں میں جہاں خون کی بارش ہو رہی تھی کبیر کی پیدائش (ظہور) سے یکایک منظر پر سکون ہو گیا اور آسمان پر سورج نکل آیا اور تالابوں میں کنول کے پھول کھل گئے۔ قرونِ وسطیٰ کے جنگ آلود ہندوستان کے پس منظر میں کبیر کی یہ شخصیت مبالغہ آمیز نہیں معلوم ہوتی۔

کبیر داس ایک مسلمان صوفی تھے جو ہندو بھگتی کی زبان میں بات کر رہے تھے^۱ چونکہ انہوں نے اپنے آپ کو بار بار جولایا کہا ہے اسلئے یہ یقین کے ساتھ کہا جاسکتا ہے کہ انہوں نے اسلام کو ترک نہیں کیا تھا، لیکن اُن کی دھج ہندوؤں کی سی تھا۔ مانتے پر تالک لگاتے تھے اور جسم پر جزیو پہنتے تھے اور پھر جرات اتنی تھی کہ برہمنوں پر طنز کرتے تھے » تو بہامن میں کاسی کا جولہا، بوجھو مور گیانا^۲۔ ہندوستان کی پوری تاریخ میں اتحاد کے اتنے خوبصورت اور جذباتی مظہر کی مثال نہیں ہے۔ اس عہد میں جب ترک حکمرانوں کی تلوار ہندوستان کے سر پر چمک رہی تھی اس مسلمان جولاہے کے حرفِ محبت میں کتنی کشش ہوگی جس نے اپنے آپ کو سر سے پاؤں تک ہندوؤں کے رنگ میں رنگ لیا تھا اور یہ بھی یقین کیا جاسکتا ہے کہ کبیر سے آشنا ہونے کے بعد عام ہندو عام مسلمان سے نفرت نہیں کر سکتا تھا، کبیر نے منصور کی طرح انا الحق نہیں کہا لیکن انا الحق کا سارا جذبہ ان مصرعوں میں موجود ہے » نرکن آگے سرگن ناچے باجے سوہنگ

۱ کافر عظیم، مسلمان مرا درکار نیست ہر دگ جان تار گشت حاجت زار نیست

(امید خسرو)

(ترجمہ: میں وہ کافر ہوں جس نے عقیق کو خدا مانا ہے، اب مجھے اسلام کی ضرورت نہیں، میری ایک ایک دگ تار بن گئی ہے، پھر میں جزیو پہن کر کیا کروں)۔

۲ یہ دلچسپ بات ہے کہ کبیر کا خاندان ہندو سے مسلمان ہوا تھا اور اقبال کا خاندان بھی۔ کبیر نے اپنے آپ کو مسلمان کہہ کر برہمن پر طنز کیا اور اقبال نے اپنے آپ کو برہمن کہہ کر مسلمانوں کے سامنے فخر و مباہات سے کام لیا۔ برہمن زادہ دمر ایشنا سے دم و تیریز اسے۔۔۔ کبیر نے اپنی شاعری میں ہندو تفسیر اور استعارہ استعمال کیا اور اقبال نے اسلامی روایات سے اپنے تفسیر اور استعارے لئے حالانکہ ان کے فلسفہ خودی پر اپنی شد اول ویدانت کا اچھا خاما اثر ہے جس پر ابھی تک تحقیق کام نہیں کیا گیا ہے۔

इस मही की दुनिया का, जिसके दायित्वों और कर्तव्यों से उन्मूढ होना मुक्ति के लिए जरूरी है, कबीर के यहाँ पूरा आभास मिलता है और शायद कोई दूसरा भक्त कवि इस चेतना और अनुभूति में कबीर के करीब नहीं पहुँचता।

इस्लाम में इन्सान की जिम्मेदारियों को दो हिस्सों में बाँटा गया है। एक खुदा का हक दूसरा बंदों का हक। इबादत (उपासना) खुदा का हक है और सामाजिक जिम्मेदारियों बंदों का हक। खुदा के गुनहगार को, जिसने हक्के-इबादत अदा नहीं किया, खुदा माफ़ कर सकता है। लेकिन बंदों के गुनहगार को जिसने अपने सगे-संबंधियों, पड़ोसी, देशवासियों या इस संसार में रहनेवाले दूसरे इंसानों का हक अदा नहीं किया, उसको खुदा माफ़ नहीं करता। सिर्फ़ बंदे ही उसे माफ़ कर सकते हैं, उसके बाद रहमत के दरवाजे खुलेंगे। इसलिए कबीर ने दोनों हक़ों का जिक्र किया है—

सरगुन की सेवा करो, निरगुन का करो ज्ञान

निरगुन सरगुन के परे, तहाँ हमारा ध्यान

कबीर पंथियों ने कबीर के जन्म का वर्णन इन सुंदर और अलंकारमय शब्दों में किया है—

घन गरजै, दामिनि दमकै, बूँदें बरसैं, झर लाग गये

हर तलाब में कमल खिले, तहाँ मानु परगट भये

[अर्थात् बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, बूँदें पड़ रही थीं, और मेह की झड़ी लगी हुई थी। इस तूफ़ान में जब कबीर सूरज की तरह प्रकट हुए तो हर तालाब में कमल के फूल खिले हुए थे।]

संभव है कि इस दोहे के शब्द वस्तु-स्थिति का चित्रण करते हों, लेकिन अगर उन्हें आलंकारिक भाषा माना जाये तो ऐसा लगता है जैसे युद्धों की घन गरज में, हिंसा और विध्वंस की बिजलियों में जहाँ रक्त की वर्षा हो रही थी, कबीर के जन्म से अचानक सारा वातावरण शांतिमय हो गया और आकाश पर सूर्य निकल आया और तालाबों में कमल के फूल खिल गये। मध्य-युग के युद्ध-मस्त भारत की पृष्ठभूमि में कबीर का यह व्यक्तित्व अतिरंजित नहीं मालूम होता।

(نظم نمبر ۷۰) اور ساری بات کو کبیر نے آخر میں یہ کہہ کر ختم کر دیا ہے کہ دیکھو پانڈے جی فضول بحث مباحثے سے کوئی فائدہ نہیں ہے، سو باتوں کی ایک بات یہ ہے کہ اس جسم کے بغیر شبد، کلمہ، نام، اناہت ناد کچھ ممکن نہیں ہے، انسان اور کائنات سب مٹی ہے اور گووند کی شکتی (مایا) اس کو بناتی بگاڑتی رہتی ہے۔ ہمارا جسم ایک مٹی کا مندر ہے جس میں ہم نے گیان دھیان کا دیپک جلا رکھا ہے اور سانس کا اجالا ہے جس سے سارا جگ دکھائی دیتا ہے (نظم نمبر ۱۱۳)۔

اس مٹی کی دنیا کا، جس کی ذمہ داریوں اور فرائض سے سبکدوش ہونا نجات کے لئے ضروری ہے، کبیر کے یہاں پورا احساس ہے اور غالباً بھگتی کا کوئی دوسرا شاعر اس شعور اور احساس میں کبیر کے قریب نہیں پہنچتا، اسلام میں انسان کی ذمہ داریاں دو حصوں میں تقسیم کی گئی ہیں، ایک حق اللہ ہے اور دوسرا حق العباد، یعنی ایک خدا کا حق اور دوسرا بندوں کا حق۔ عبادت خدا کا حق ہے اور سماجی ذمہ داریاں بندوں کا حق۔ خدا کے گنہگار کو جس نے حق عبادت ادا نہیں کیا، خدا معاف کر سکتا ہے لیکن بندوں کے گنہگار کو جس نے اپنے عزیز و اقارب، پڑوسی، ہم وطن اور اہل دنیا کا حق ادا نہیں کیا، اس کو خدا معاف نہیں کرتا، صرف بندے ہی معاف کر سکتے ہیں، اس کے بعد رحمت کے دروازے کھلیں گے، اس لئے کبیر نے دونوں حقوق کا ذکر کیا ہے :

سرگن کی سیوا کرو، نرگن کا کرو گیان

نرگن سرگن کے پرے، تہیں ہمارا دھیان

کبیر پنتھیوں نے کبیر کی پیدائش کو ان حسین و جمیل لفظوں میں بیان کیا ہے :

گھن گر جیے، دامنی دمکے، بوندیں برسیں، جھرلاگ گئے

لہر تلاب میں کمل کھلے، تہاں بھانو پرگٹ بھنے

(ترجمہ: بادل گرج رہے تھے، بجلی چمک رہی تھی، بوندیں پڑ رہی تھیں، اور مینہ کی جھڑی لگی ہوئی تھی، اس طوفان میں جب کبیر سورج کی طرح ظاہر ہوئے تو لہر تالاب میں کنول کے پھول کھلے ہوئے تھے)۔

कबीर के यहाँ माया-स्याग है लेकिन उसका अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य केवल अपने आप में खोकर रह जाये और अपनी मुक्ति के लिए समाधि लगा ले। वह स्वयं विवाहित थे और उनके संतान भी थी। कपड़े पर खुद कपड़ा बुनते थे और फेरी लगाकर उसे बेचते थे और उसकी आमदनी से अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट पालते थे। उनका भौतिक और शारीरिक श्रम उनके आत्मा-संबंधी गीतों की रचना में बाधक नहीं होता था बल्कि शायद उसमें योग देता था। उनका आग्रह था कि भगवान इसी संसार में मिलता है। मुक्ति का मार्ग यहीं से होकर गुजरता है (पद ४०) और माया, जो महा-ठगनी है, और क्रूर शिकारी है भक्तों की दासी बन सकती है (पद १०९)। माया तजी नहीं जाती, तजी जा नहीं सकती (पद ९)। क्योंकि वह किसी न किसी रूप में बाक़ी रहती है। असल में माया पर विजय प्राप्त की जाती है। जिस तरह पूजा-पाठ, नमाज-रोज़ा, कर्मकांड से केवल अहंकार बढ़ता लेकिन भगवान नहीं मिलता, वैसे ही कपड़े उतार देने से या अपनी पाँचों इंद्रियों का दमन कर देने से भगवान नहीं मिलता। भोग न वह पहाड़ों पर जा बैठने और जंगलों में खो जाने से मिलता है। (माया वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ती।)। हरि (भगवान) उस पर रीक़ते हैं जिसके हृदय में दया है, जो सदाचारी है, जो संसार में रहकर संसार से उदासीन रहता है और हर प्राणी को अपनी तरह जानता है, उसको वह अविनाशी मिलता है (पद ६९)। साईं से इस तरह की लगन लगाना बहुत कठिन है। इसके लिए स्वभाव में विनम्रता और संतोष आवश्यक है और रहन-सहन में पूरा उतरना चाहिये (पद ७०) और सारी बात को कबीर ने अंत में यह कहकर समाप्त कर दिया है कि देखों पांडे, बेकार के वाद-विवाद से कोई फ़ायदा नहीं है। सौ बातों की एक बात यह है कि इस शरीर के बिना शब्द, कलमा, नाम, अनाहत नाद कुछ भी संभव नहीं है। मनुष्य और सृष्टि सब मिट्टी है और गोविंद की शक्ति (माया) उसको बनाती-बिगाड़ती रहती है। हमारा शरीर एक मिट्टी का मंदिर है जिसमें हमने ज्ञान-ध्यान का दीपक अल्ला रखा है और सोंस का उजाला है जिससे सारा जग दिखायी देता है (पद १०४)।

اور مایا کو برحق سے الگ پہچانتے ہیں۔ بعد جیو کو عقیدہ اور مایا کو ہیکار اور ہیکار نہیں سمجھا جاسکتا۔ اس طرح جیو کی اہمیت کا اعتراف کر دینا جیو کی عظمت کا اعتراف ہے اور وہ فرد انمول ہے۔ ہوسکتا ہے اور براہمن بھی اور مسلمان بھی۔ فرقہ کی یہ اہمیت جاناگیر فارانہ سماجی رشتوں پر اثر انداز ہوتی ہے (جس میں عظمت کی بنیاد دولت اور طاقت تھی) اور ایک ہی انسان دوستی کے رشتے قائم کرتی ہے۔ اب مایا کو تہ دینے کا سوال پیدا نہیں ہوتا بلکہ اسے فتح کیا جاتا ہے، پرتا جاتا ہے اور کبیر کے الفاظ میں وہ ہری بھگنوں کی چیری (گنیز) بن جاتی ہے۔ (نظم نمبر ۱۰۵)

کبیر کے یہاں ترک دنیا ہے لیکن اس کا مطلب یہ نہیں ہے کہ آدمی صرف اپنی ذات میں گم ہو جائے اور اپنی نجات کے لئے مراقبہ میں کھوجائے، وہ خود شادی شدہ آدمی تھے اور صاحب اولاد تھے، کرکھے پر خود کپڑا پہنتے تھے اور پھیری لگا کر اُسے بیچتے تھے اور اس کی آمدنی سے اپنا اور اپنے بال بچوں کا پیٹ پالتے تھے۔ ان کی مادی اور جسمانی محنت ان کے روحانی نعموں کی تخلیق میں حائل نہیں ہوتی تھی بلکہ شاید اُس میں مدد دیتی تھی۔ اُن کو اس پر اصرار تھا کہ بھگوان اس دنیا میں ملتا ہے۔ نجات کا راستہ یہیں سے ہو کر گزرتا ہے (نظم ۴۰) اور مایا جو مہا لہگی ہے اور یسود شکاری ہے بھگنوں کی کنیز بن سکتی ہے (نظم نمبر ۱۰۵) مایا تہی نہیں جاتی، تہی جا نہیں سکتی (نظم نمبر ۵) کیونکہ وہ کسی نہ کسی شکل میں باقی رہتی ہے۔ دراصل مایا پر فتح حاصل کی جاتی ہے۔ جس طرح پوجا پاٹ، نماز، روزہ، ظاہری عبادت سے صرف غروہ (اہنگار) بڑھتا ہے لیکن بھگوان نہیں ملتا ویسے کپڑے اتار دینے سے یا اپنے پانچوں حواس کو قتل کر دینے سے بھگوان نہیں ملتا اور نہ وہ پہاڑوں پر جا بیٹھنے اور جنگلوں میں کھوجانے سے ملتا ہے (مایا وہاں بھی پیچھا نہیں چھوڑتی)۔ ہری (بھگوان) اس پر ریختے ہیں جس کے دل میں رحم ہے، جو متقی اور پرہیزگار ہے جو دنیا میں رہ کر دنیا سے اداس (بے نیاز) رہتا ہے اور ہر ذی حیات کو اپنی طرح جانتا ہے اسی کو وہ حی و قیوم ملتا ہے (نظم نمبر ۶۵)۔ ساتیں سے اس قسم کی لگن لگانا بہت مشکل ہے، اس کے لئے طبیعت کا انکسار، اور صبر و قناعت ضروری ہے اور رہن سہن میں پورا اترنا چاہیے

लिए कोई स्थान नहीं है)। लेकिन रामानुज का कहना यह है कि ब्रह्म, आत्मा और माया (संसार) अलग-अलग पहचाने जाते हैं लेकिन वास्तव में अलग-अलग नहीं हैं। क्योंकि आत्मा और माया दोनों ब्रह्म के विशेषण हैं। अर्थात् शंकराचार्य इन गुणों को स्वीकार नहीं करते और रामानुज सगुण को ही मानते हैं। इस दशा में ब्रह्म का एकत्व बाक़ी रहता है लेकिन साथ ही साथ आत्मा (जीव) की वास्तविकता और यथार्थता भी बाक़ी रहती है। इसको विशिष्टाद्वैत कहा गया है।

शंकराचार्य के यहाँ एकत्व में अनेकत्व के सवाल को व्याख्याओं की आवश्यकता पड़ती है और रामानुज के यहाँ वह कविता और गीत के द्वार खोल देता है और निर्गुण के आगे सगुण नाचने लगता है, गुण निर्गुण के द्योतक बन जाते हैं और अनलहक़ का साज बजने लगता है (बाज़े सोहं तूर)। शंकराचार्य के यहाँ ईश्वर अवैयक्तिक है और रामानुज के यहाँ वैयक्तिक। इसलिए एक की भक्ति नीरस और शुष्क है और दूसरे की रसमय और रंगीन। वहाँ शून्य की निस्तब्धता है और यहाँ माया की हलचल जो संत और भक्त कवियों के यहाँ व्याकुलता, व्यग्रता और मादकता का संगीत बन जाती है और उन्हें जलालुद्दीन रूमी और हाफ़िज़ शीराज़ी के निकट ले आती है। शंकराचार्य के यहाँ यैर-हिंदू विचारों का मिश्रण कठिन है और रामानुज की विचारधारा में बहुत-सी धाराएँ मिल सकती हैं। इसलिए कबीर के यहाँ यह स्पष्ट दिखायी देता है। (लेकिन कबीर को सौ फीसदी रामानुज का चला समझना सही नहीं है।)

जीव और माया को ब्रह्म से अलग पहचानने के बाद जीव को तुच्छ और माया को व्यर्थ अथवा अष्टाचारिणी नहीं माना जा सकता। इस प्रकार जीव के महत्व को स्वीकार करना व्यक्ति की महानता को स्वीकार करना है और वह व्यक्ति शूद्र भी हो सकता है और ब्राह्मण भी और मुसलमान भी। व्यक्ति का यह महत्व सामंती समाज के संबंधों पर अपना प्रभाव डालता है (जिसमें श्रेष्ठता का मापदंड धन और शक्ति को माना जाता था) और एक नये मानव प्रेम के संबंध स्थापित करता है। जब माया को तज देने का सवाल पैदा नहीं होता बल्कि उस पर विजय प्राप्त की जाती है, उसे बरता जाता है और कबीर के शब्दों में वह हरि-भक्तों की चैरी (दासी) बन जाती है। (पद १०९)

اختیار کرتے ہیں، ایک کے یہاں خشک فلسفے کی چمکدار تلوار ایک عظیم عالمگیر ذہن کی تیزی کا پتہ دیتی ہے اور دوسرے کے یہاں دل کی دھڑکن ازل اور ابدی حقیقت میں انسانی روح کی حرارت پیدا کر دیتی ہے۔

شکر اچاریہ کا کہنا یہ ہے کہ چونکہ برہمن (ذات مطلق) ہی حقیقت ہے اس لئے مادی دنیا (مایا = سنسار) کی اپنی کوئی حقیقت نہیں۔ وہ صرف وہم و خیال (متہیا) ہے۔ اس کو انہوں نے اُدویت کہا ہے (یعنی وہ وحدت جس میں دونوں کی سمائی نہیں ہے) لیکن رامانج کا کہنا یہ ہے کہ برہمن (ذات مطلق) آتمن (روح = خودی) اور مایا (سنسار) الگ الگ پہچانے جاتے ہیں لیکن حقیقت میں الگ الگ نہیں ہیں۔ کیونکہ آتمن اور مایا دونوں برہمن کے وشیشن (صفات) ہیں۔ گویا شکر اچاریہ صفات سے انکار کرتے ہیں اور رامانج صفات کو عین ذات مانتے ہیں۔ اس صورت میں برہمن (ذات مطلق) کی وحدت باقی رہتی ہے لیکن ساتھ ہی ساتھ آتمن (روح = خودی = فرد = جیو) کی حقیقت اور اصلیت بھی باقی رہتی ہے۔ اس کو وششت اُدویت کہا گیا ہے۔

شکر اچاریہ کے یہاں وحدت میں کثرت کا سوال فلسفیانہ تاویلوں کا محتاج رہتا ہے اور رامانج کے یہاں شاعری اور نغمے کے دروازے کھول دیتا ہے اور نرگن کے آگے سرگن ناچنے لگتا ہے، صفات ذات کا اشارہ بن جاتی ہیں اور انا الحق کا ساز بجنے لگتا ہے۔ شکر اچاریہ کے یہاں خدا غیر ذاتی ہے اور رامانج کے یہاں ذاتی۔ اس لئے ایک کی بھگتی سرد اور خشک ہے اور دوسرے کی بھگتی گرم اور رنگین۔ وہاں شونہ کا سکون ہے اور یہاں مایہ کا ہنگامہ جو سنت اور بھکت شاعروں کے یہاں بیتابی، یقراوی اور سرشاری کا سنگیت بن جاتا ہے اور انہیں جلال الدین رومی اور حافظ شیرازی کے قریب لے آتا ہے۔ شکر اچاریہ کے یہاں غیر ہندو افکار کی آمیزش ذرا مشکل ہے اور رامانج کی دھارا میں بہت سے چشمے مل سکتے ہیں۔ چنانچہ کبیر کے یہاں یہ آمیزش صاف نظر آتی ہے۔ (لیکن کبیر کو سو فیصدی رامانج کا چپلا سمجھنا صحیح نہیں ہے)۔

जुलाहे की है और नाम कबीर है। हमें तो कभी किसी ने पूछा नहीं। तुम वहाँ जाओ जहाँ तख्त बिछे हुए हैं, बाय सजे हुए हैं, अनाज के बोरे भरे हुए हैं, रेशम की भरमार है, अगर और चंदन बिसा जा रहा है। हमारे पास आकर क्या करोगी। हम तो कमीनों की आत से संबंध रखते हैं। * एक और पद (११०) में उन्होंने माया को, जो सत्ताधारी वर्गों की लोलुपता का प्रतीक है, महा-ठगनी कहा है जिसके होंठों पर मीठ बोल है और हाथ में फाँसी का फंदा। एक और पद में माया शिकारी के रूप में प्रकट होती है जो बड़ी निर्ममता के साथ मनुष्य का शिकार खेल रही है। इसके वार से कोई नहीं बच सकता। “ऊधो, माया तजी न जाये” (पद ५) के साथ मिलाकर इस पद को पढ़ने से कबीर का वास्तविक अभिप्राय स्पष्ट होता है।

कबीर के यहाँ माया की कल्पना को समझने के लिए जरूरी है कि शंकराचार्य (८ वीं शताब्दी) के अद्वैतवाद और उनके टीकाकार रामानुज (सन् ११७५ ई० से १२५० ई० तक) के विशिष्टाद्वैतवाद के एक एक आधारभूत सूत्र के सूक्ष्म अंतर को ध्यान में रखना चाहिये।

दोनों उपनिषद की इस शिक्षा को मानते हैं कि सब कुछ ब्रह्म है (सर्व खल्विदं ब्रह्म) और आत्मा और ब्रह्म एक हैं (अयं आत्मा ब्रह्म)। लेकिन इस सूत्र को व्याख्या करते समय दोनों अलग-अलग दिशाएँ अपनाते हैं। एक के यहाँ नीरस दार्शनिक विचारों की चमकदार तलवार महान व्यापक चिंतन की तेजी का पता देती है और दूसरे के यहाँ दिल की धड़कन अनादि और अनंत सत्य में मानव आत्मा की उष्णता पैदा कर देती है।

शंकराचार्य का कहना यह है कि चूँकि ब्रह्म ही सत्य है इसलिए माया (भौतिक जगत) का अपना कोई अस्तित्व नहीं है। वह केवल मिथ्या है इसको उन्होंने अद्वैत कहा है (अर्थात् एक होने का वह भाव जिसमें दो के भाव के

* “जात जुलाहा, नाम कबीर अखँ पती जौ नहीं

तहाँ जाहु जहाँ पाट-पटम्बर, अगर चंदन बिस लीनां

बाय हमारे कहा करौगी, हम तो जात कमीनां”

इन पंक्तियों में ‘पाट-पटम्बर’ का शब्द सबसे महत्वपूर्ण है और इसके वह तमाम अर्थ हैं जो ऊपर दिये हैं।

(A Dictionary of Urdu, Classical Hindi and English by PLATTS.)

کی لال تلوار لیے کر شاعر کے سامنے آتی ہے اور اُسے اپنا بہتر (دولہا یا شوہر) کہہ کر مخاطب کرتی ہے۔ تو شاعر بڑے طنز سے کہتا ہے کہ »ہماری ذات جلاہے کی ہے اور نام کبیر ہے۔ ہمیں تو کبھی کسی نے پوچھا نہیں، تم وہاں جاؤ جہاں تخت بچھے ہوئے ہیں۔ باغ آراستہ ہیں، اناج کے پورے بھرے ہوئے ہیں، ریشم کی بھر مار ہے، اگر اور صندل گھسا جا رہا ہے۔ ہمارے پاس آکر کیا کروگی۔ ہم تو کمینوں کی ذات سے تعلق رکھتے ہیں۔* ایک اور نظم (۱۱۰) میں انہوں نے مایا کو جو صاحب اقتدار طبقوں کے لالچ کی علامت ہے مبالغہ کی کہا ہے جس کے ہونٹوں پر میٹھے بول ہیں اور ہاتھ میں پھانسی کا پھندا۔ ایک اور نظم میں مایا شکاری کے روپ میں ظاہر ہوتی ہے جو نہایت یسردی کے ساتھ انسانوں کا شکار کھیل رہی ہے۔ اس کے وار سے کوئی نہیں بچ سکتا۔ »اودھو مایا تجی نہ جائے« (۵) کے ساتھ ملا کر اس نظم کو پڑھنے سے کبیر کا اصل مفہوم واضح ہوتا ہے۔

کبیر کے یہاں مایا کے تصور کو سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ شکر اچاریہ (آٹھویں صدی) کے ادویت واد اور اُن کے نقاد راما نج (۱۱۷۵ء تا ۱۲۵۰ء) کے وشٹ ادویت واد کے ایک کئے کے باریک فرق کو ذہن نشین کر لیا جائے۔

دونوں اپنی شد کی اس تعلیم کو مانتے ہیں کہ سب کچھ برہمن ہے، (سروم کھل ودم برہمن) اور وہی سب سے بڑی سچائی ہے۔ اور آتمن (روح = خودی) اود برہمن (ذات مطلق) ایک ہیں (آیم آتما برہمن) لیکن اس تعلیم کی تفسیر کے وقت دونوں الگ الگ راہیں

* »جات جلاہا نام کبیرا، اچ ہوں پنچو ناہی

تہاں جاہو جہاں ہات پشیر اگر چندن گھسی لیناں

اٹی ہمارے کیا کروگی، ہم تو جات کیناں»

ان دو مصرعوں میں »ہات پشیر« کا لفظ سب سے زیادہ اہم ہے اور اس کے وہ تمام

معنی ہیں جو اوپر دیے گئے ہیں

(A Dictionary of Urdu, Classical Hindi and English by PLATTS)

संत और भक्त अनुयायी-दस्तकारों के वर्ग से संबंध रखते थे। धर्म के बाह्य रूप के मुस्ला, क्राष्णी, पंडित, पुरोहित आदि बहुत महंगे थे जो धार्मिक कर्मकांड के जाननेवाले थे और शासकों की सत्ता पर खुदा और भगवान की स्वीकृति की मुहर लगाते रहते थे। (उच्च-नीच ईश्वर की देन है। राजा पृथ्वी पर ईश्वर का रूप है) लेकिन धर्म के आंतरिक रूप के नेता या गुरु फ़क्रिर और मिथु थे। उनके शरीर पर गेरुआ वस्त्र होता था या शायद वह भी नहीं होता था। हाथ में भीख के प्याले, दिल में पीड़ा की ज्योति और होंठों पर प्रेम के शब्द। वे विद्वान नहीं थे मर्मज्ञ थे। बुद्धिवाले नहीं थे प्रेमवाले थे। उनके पास न मंदिर थे न मस्जिदें, न बड़ी-बड़ी जायदादें। उनके पास 'किताब' भी नहीं थी सिर्फ़ दिल था। वे हर मनुष्य को यही उपदेश देते रहते थे कि ईश्वर प्रेम है और प्रेम ईश्वर है। मनुष्य का प्रेम ईश्वर का प्रेम है। और यह शिक्षा और उपदेश वे मुफ्त देते थे।

वर्ग-द्वेष के बिना शासक शासन नहीं कर सकते थे लेकिन भक्तों और सूफ़ियों ने इस वर्ग-द्वेष के मुकाबले पर इन्सानी बिरादरी, और मुहब्बत का लक्ष्य सामने रखा। शासकों के लिए सांसारिक समृद्धि ही सामाजिक प्रतिष्ठा की कसौटी थी। भक्तों और सूफ़ियों के लिए मनुष्य के उच्च स्थान का मापदंड भक्ति, प्रेम और इश्क-इक़ीकी (पारलौकिक प्रेम) इश्क-मज्जाबि (लौकिक प्रेम) था। धन दौलत का मोह और सम्पत्ति के बंधन इस प्रेम में कमी कर सकते थे इसलिए इन महापुरुषों ने माया-त्याग को अपनी शिक्षा का आधारभूत तत्व बनाया। इसलिए मौलाना जलालुद्दीन रूमी ने दौलत की उपमा उस कुलाह से दी है जो गंजे के सर को छुपाती है; खूबसूरत ज़ुल्फ़ोंवाले नंगे-सर ही अच्छे लगते हैं। बाज़ार में बिकनेवाले गुलामों के शारीरिक सौंदर्य को प्रत्यक्ष देखने के लिए उनको नंगा कर दिया जाता है। उनको खरीदने-बेचनेवाले अमीर अपने बीमार जित्नों को अतलस और रेशम की क़ाबाओं में छुपाये रखते हैं।

कबीर ने अपनी इस वर्ग-स्थिति को कभी नहीं भुलाया। इसलिए एक पद (पद १०९) में जब माया सोलह सिंगार करके और अपनी मस्त आँखों की लाल तलवार लेकर कवि के सामने आती है और उसे अपना भतार (पति) कहकर संबोधित करती है तो कवि बड़े व्यंग से कहता है कि "हमारी ज्ञात

مذہب یعنی تصوف اور بھگتی نے عوام کا ساتھ دیا جو مطلق اور
 جنبہ کش تھے۔ (یہ بات دہلوی سے جالی نہیں ہے کہ زیادہ تر صوفی
 اور بھگت دستکاریوں کے طبقے سے تعلق رکھتے تھے)۔ ظاہری مذہب
 کے ملا، قاضی، محاسب، پلٹ، پرویت وغیرہ جہت منہ کرتے تھے جو مذہبی
 رسوم کے جاننے والے تھے اور حکمرانوں کے اقتدار پر خدا اور بھگوان
 کی مرضی کی مہر لگاتے رہتے تھے۔ (اونچ نیچ خدا کی دین ہے پر بادشاہ
 زمین پر خدا کا سایہ ہے)۔ لیکن باطنی مذہب کے رہنما یا گرو فقیر اور
 بھکشو تھے۔ اُن کے جسم پر گدوا لباس ہوتا تھا یا شاید وہ بھی نہیں
 ہوتا تھا، ہاتھ میں بھیک کے پیالے، دل میں غم کی قندیل اور ہونٹوں
 پر حرفِ محبت۔ وہ صاحبِ علم نہیں تھے صاحبِ اسرار تھے۔ عقل والے
 نہیں تھے، عشق والے تھے۔ اُن کے پاس نہ مندر تھے نہ مسجدیں، نہ
 اوقاف نہ جائدادیں۔ اُن کے پاس کتاب بھی نہیں تھی صرف دل تھا۔ وہ
 ہر انسان کو یہی بشارت دیتے تھے کہ خدا محبت ہے اور محبت
 خدا ہے۔ انسان کا عشق خدا کا عشق ہے۔ اور یہ تبلیغ و تلقین
 مفت تھی۔

طبقاتی نفرت کے بغیر حکمران حکومت نہیں کر سکتے تھے۔ لیکن
 بھگتوں اور صوفیوں نے اس طبقاتی نفرت کے مقابلے پر انسانی برادری
 اور محبت کا نصب العین رکھا۔ حکمرانوں کے لئے سفاجی حیثیت کا
 معیار دنیاوی دولت تھی۔ بھگتوں اور صوفیوں کے لئے انسان کے اعلیٰ
 درجے کا معیار بھگت پریم اور عشقِ حقیقی اور عشقِ مجازی تھا۔ مائی
 اور دولت کی محبت اور جائدادوں کی بندشیں اس عشق میں کمی کر سکتی
 تھیں اس لئے ان بزرگوں نے ترکِ دنیا کو اپنی تعلیمات کا بنیادی
 جز بنایا۔ چنانچہ مولانا جلال الدین رومی نے دولت کو اس کلاہ سے
 تشبیہ دی ہے جو گنجے کے سر کو چھاتی ہے۔ خوبصورت زلفوں
 والے تنگے سر پہ اچھے لگتے ہیں۔ بازار میں بکنے والے غلاموں کے
 جسمانی حسن کو ظاہر کرنے کے لئے انہیں تگا کر دیا جاتا ہے۔ اُن
 کی خرید و فروخت کرنے والے امیر اپنے سمار جسموں کو اظہار اور
 ریشم کی قبائوں میں چھپاتے رکھتے ہیں۔
 کبیر نے اپنی اس طبقاتی حیثیت کو کبھی فراموش نہیں کیا۔ چنانچہ
 ایک نظم (۲۰۹) میں جب مایا سولہ سنگار گر گئے اور اپنی مست آنکھوں

सिम्बत की ओर भाग गये। (बौद्ध धर्म वहाँ पहले पहुँच चुका था।) बौद्ध धर्म के इस शोचनीय पराभव के बाद भारत के नीची ज़मत के अङ्गुलियों के लिए इस्लाम की ही शरण रह गयी थी। इसलिए इस युग में पूर्वी बंगाल के गाँव के गाँव अपना बौद्ध धर्म छोड़कर मुसलमान हो गये। लेकिन तुर्क शासकों ने, जो मुसलमान से बढ़कर विजेता और शासक थे और अपने वर्ग-हितों को धर्म की तुलना में प्रधानता देते थे, इस्लाम पर ईमान ले आनेवाले शास्त्रियों को बराबरी का दर्जा नहीं दिया। * वे अब भी कोरी से जुलाहे हो जाने के बाद कमीने ही समझे जाते थे। इसलिए उनके आखिरी आश्रय भक्ति और तसब्बुफ़ की प्रेम-नगरियाँ बन गयीं और इन दोनों ईश्वर-परायण और मानव-प्रेमी आंदोलनों का बहुत ही सुंदर समन्वय कबीरदास और उनकी कविता के रूप में प्रकट हुआ।

निर्वनता तो उनका जन्मसिद्ध अधिकार और अपने बाप-दादा से मिला हुआ उत्तराधिकार था, मगर भक्तों और सूफ़ियों ने उसे माया-त्याग का दार्शनिक रूप देकर क्रांतिकारी बना दिया। बाह्य धर्म शासकों के पक्ष में था जो सारी सम्पदा के स्वामी थे, (वे कभी उत्तर-पूर्वी सीमा के पहाड़ों को पार करके आते थे और कभी स्थानीय क्रिलों से अपनी फ़ौजें लेकर निकलते थे) और मार्मिक धर्म अर्थात् सूफ़ी-मत और भक्ति ने जनता का साथ दिया जो निर्वन और श्रमजीवी थी। (यह बात दिलचस्पी से खाली नहीं है कि ज़्यादातर सूफ़ी,

* वह जिसे इस्लामी लोकतंत्र कहते हैं उस पर आरंभ में अरब के क़ायली लोकतंत्र के प्रभाव थे। इस्लाम के पैगंबर के देहांत के तीस साल के अंदर अरब समाजने जब क़ायली अवस्था से निकलकर सामंती युग में प्रवेश किया और जागीरदारी राजतंत्र उसी और अम्बालासी खलीफ़ाओं की सल्तनत की शक्त में आहिरे हुई तो धार्मिक लोकतंत्र, जो ख़ुदा के सामने मद्दमूद और अम्याज़ को एक ही पाँत में खड़ा कर देता है, आर्थिक लोकतंत्र का पर्याय जनने की क्षमता को चुका था। यों तो शासक और शासित दोनों ही मुसलमान थे लेकिन इस्लाम के नाम पर एक वर्ग-व्यवस्था शासन कर रही थी। जब शासक शासितों को उनके लोकतांत्रिक अधिकार नहीं देते थे तो शासित नये सम्प्रदायों के रूप में संगठित होते थे और ये सम्प्रदाय धार्मिक रूप में प्रकट होते थे। इस्लाम की प्रारंभिक शताब्दियों में यह प्रक्रिया बहुत बड़े पैमाने पर पहले ईरान और फिर पूरे मध्य-पूर्व में दिखायी देती है और सूफ़ी आंदोलन को समझने में मदद देती है। भारत में जो मुसलमान विजेता आये थे भी अपने साथ इस्लामी लोकतंत्र की कल्पना लेकर नहीं आये थे। उनके पास एक जागीरदारी राजतंत्र का विचार था जिसमें शासक और शासित का अंतर प्रत्यक्ष था, परिवार, हुकुमी और सराफ़त पर जोर था। हाँ, वे भाषणात्मक उद्देश्यों के लिए ज़रूर इस्लाम का नाम इस्तेमाल करते थे।

نہیں واپس ہو گیا * اور نالندہ کے بجائے کھجور بکھشو نیپال اور تبت کی طرف بھاگ گئے۔ (بودھ مذہب وہاں پہلے پہنچ چکا تھا) بودھ دھرم کے افسوسناک زوال کے بعد ہندوستان کے نیچے ذات کے اچھوتوں کے لئے اسلام ہی ایک پناہ گاہ رہ گیا تھا (چنانچہ اس عہد میں مشرقی بنگال کے گاؤں کے گاؤں اپنا بودھ دھرم چھوڑ کر مسلمان ہو گئے) ترک حکمرانوں نے، جو مسلمان سے بڑھ کر فاتح اور حکمران تھے، اور اپنے طبقاتی مفاد کو مذہب پر ترجیح دیتے تھے، اسلام پر ایمان لے آنے والے محکموں کو برابری کا درجہ نہیں دیا *۔ وہ اب بھی کوری سے جلاپے ہو جانے کے بعد کمینے ہی سمجھے جاتے تھے اس لئے ان کی آخری پناہ گاہیں بھگتی اور تصوف کی پریم نگریاں بن گئیں اور ان دونوں خدا پرست اور انسان دوست تحریکوں کا حسین امتزاج کبیر داس اور ان کی شاعری کی شکل میں ظاہر ہوا۔

مفسر تو ان کا پیدائشی حق اور باپ دادا کی میراث تھی مگر بھگتوں اور صوفیوں نے اسے ترک دنیا کے فلسفے کی شکل دے کر انقلابی بنا دیا۔ ظاہری مذہب حکمرانوں کے ساتھ تھا جو مال دولت کے مالک تھے (وہ کبھی شمال مشرقی سرحد کے پہاڑوں کو عبور کر کے آنے تھے اور کبھی مقامی قلعوں سے اپنی فوجیں لے کر نکلتے تھے) اور باطنی

* آٹھویں صدی شکر اچاریہ کی صدی ہے اس پر اختلاف رائے ہے کہ بودھ دھرم کے زوال میں اور اسباب کے علاوہ شکر اچاریہ کا بھی کچھ حصہ ہے یا نہیں۔

* وہ جسے اسلامی جمہوریت کہتے ہیں اس پر ابتدا میں عرب کی قبائلی جمہوریت کے اثرات تھے۔ پیغمبر اسلام کی وفات کے تیس سال کے اندر عرب سماج جب قبائلی منزل سے نکل کر جاگیرداری عہد میں داخل ہو گیا اور جاگیرداری شہنشاہیت اموی اور عباسی خلفاء کی سلطنت کی شکل میں ظاہر ہوئی تو مذہبی جمہوریت جو خدا کے سامنے محمود اور ایاز کو ایک ہی صف میں کھڑا کر دیتی ہے معاشی جمہوریت کے ہم معنی بنتے کی صلاحیت کھو چکی تھی۔ یوں تو حاکم اور محکوم دونوں مسلمان تھے، لیکن اسلام کے نام پر ایک طبقاتی نظام حکومت کر رہا تھا۔ جب حاکم اپنے محکموں کو ان کا جمہوری حق نہیں دیتے تھے تو محکوم تھے فرلوں کی شکل میں اپنی تنظیم کرتے تھے اور یہ فرقے مذہبی لباس پہن کر ظاہر ہوتے تھے، اسلام کی ابتدائی صدیوں میں یہ حمل بہت بڑے پیمانے پر پہلے ایران اور پھر پورے مشرق وسطیٰ میں نظر آتا ہے اور صوفی تحریک کے سمجھنے میں مدد دیتا ہے۔ ہندوستان میں جو مسلمان فاتح آئے وہ بھی اپنے ساتھ اسلامی جمہوریت کا تصور لے کر نہیں آئے تھے، ان کے پاس ایک جاگیرداری شہنشاہیت کا تصور تھا جس میں حاکم اور محکوم کا فرق نمایاں تھا، خاندان بزرگی اور شرافت پر زور تھا۔ ہاں وہ جذباتی مقاصد کے لئے ضرور اسلام کا نام استعمال کرتے تھے۔

सार वह शुद्ध मानव प्रेम है जो धर्म के भेदभाव और जात-पात के झगड़ों से मुक्त है। कहा जाता है कि उनके मरने के बाद उनके शव पर हिंदुओं और मुसलमानों ने ललबाएँ खींच लीं। हिंदू उनका शव जलाना चाहते थे और मुसलमान दफन करना चाहते थे। लेकिन इस झगड़े का फ़ैसला इस तरह हुआ कि कबीर का मृत शरीर फूलों का एक ढेर बन गया जिसे दोनों पक्षों ने बराबर-बराबर बांट लिया। इस तरह हिंदुओं का संस्कार भी पूरा हो गया और मुसलमानों की रस्म भी और आपस का मतभेद मिट गया। अब मगहर में इमली के एक पेड़ के नीचे कबीर की समाधि है बनारस में मठ है जो कबीर चौरा के नाम से मशहूर है।

अपनी जात के बारे में कबीर ने ज्यादातर जुलाहे के शब्द का प्रयोग किया है और कभी-कभी कोरी और कमीना भी कहा है। उत्तरी भारत में अब भी हिंदू बुनकर कोरी कहलाते हैं और नीच समझे जाने की वजह से उन्हें कमीन या कमीने की संज्ञा दी जाती है। (मुस्लिम जुलाहों ने अपने लिए मोमिन का शब्द चुन लिया है जिसका कबीर के युग में पता नहीं चलता।) इससे ऐसा लगता है कि कबीर के जीवनकाल के पास-पास ही कोरियों के एक बहुत बड़े वर्ग ने इस्लाम धर्म अंगीकार किया था।

कोरियों और जुलाहों की बस्तियाँ पंजाब से बंगाल तक के इलाके में फैली हुई हैं। पूरे-पूरे क़स्बे उनसे आबाद हैं। उत्तरी भारत में बिहार और बंगाल तक तुर्कों का शासन बारहवीं शताब्दी के अंत में पृथ्वीराज की हार (सन् ११९२ ई०) के साथ पड़ुँचा। ११९९ ई० में कुतुबुद्दीन ऐबक ने बनारस पर विजय प्राप्त की और उसके फ़ौरन ही बाद मुहम्मद बख़्तियार ने बिहार को अपने आधीन किया और नालंदा के विश्वविख्यात विश्वविद्यालय की तहस-नहस कर दिया, बौद्ध भिक्षुओं को क़त्ल कर दिया और किताबों को जगमगा दी। इस तरह बौद्ध धर्म जिसका हास बहुत पहले से आरंभ हो गया था और आठवीं शताब्दी तक यह हास पूरा हो चुका था, बारहवीं शताब्दी के अंत में लगभग बिल्कुल मिट गया। * और नालंदा के बचे-बूचे भिक्षु नेपाल और

* आठवीं शताब्दी तक शंकराचार्य की शताब्दी है। इस पर मतभेद है कि बौद्ध धर्म के हास में और कारणों के अतिरिक्त शंकराचार्य का भी कुछ हाथ है या नहीं।

ان کی موت کے گرد ان کے چاہنے والوں نے جس افسانے کی تخلیق کی ہے وہ کبیر کے لئے عوام کا سب سے بڑا خراج عقیدت ہے۔ ان کے تعلیم کا نہوڑ وہ خالص انسانی محبت ہے جو مذہب کی تفریق اور ذات پات کے جھگڑوں سے پاک ہے۔ کہا جاتا ہے کہ ان کے مرنے کے بعد ان کی لاش پر ہندوؤں اور مسلمانوں نے تلواریں کھینچ لیں۔ ہندو ان کی لاش کو جلانا چاہتے تھے اور مسلمان دفن کرنا چاہتے تھے، لیکن اس جھگڑے کا فیصلہ اس طرح ہوا کہ کبیر کی لاش پھولوں کے ایک ڈھیر میں تبدیل ہو گئی جسے دونوں فریقین نے برابر برابر بانٹ لیا۔ اس طرح ہندو رسم بھی ادا ہو گئی اور مسلمان رسم بھی اور باپمی اختلاف ختم ہو گیا۔ اب مگر میں املی کے ایک درخت کے نیچے کبیر کا مزار ہے اور بنارس میں ایک مٹھ ہے جو کبیر چورے کے نام سے مشہور ہے۔

اپنی ذات کے لئے کبیر نے زیادہ تر جولاہے کا لفظ استعمال کیا ہے اور کبھی کبھی کوری اور کمینہ بھی کہا ہے۔ شمالی ہندوستان میں اب بھی ہندو بُنکر کوری کہلاتے ہیں اور نیچ سمجھے جانے کی وجہ سے انہیں کمین یا کمینہ کے لفظ سے یاد کیا جاتا ہے۔ (مسلم جولاہوں نے اپنے لئے مومن کے لفظ کا انتخاب کر لیا ہے جس کا کبیر کے عہد میں پتہ نہیں چلتا) اس سے یہ گمان ہوتا ہے کہ کبیر کے عہد کے آس پاس ہی کوریوں کی ذات کے ایک بہت بڑے حصے نے اسلام قبول کیا تھا۔

کوریوں اور جولاہوں کی بستیاں پنجاب سے بنگال تک کے علاقے میں پھیلی ہوئی ہیں۔ پورے پورے قصبے ان سے آباد ہیں۔ شمالی ہندوستان میں بہار اور بنگال تک ترکوں کی حکمرانی بارہویں صدی کے آخر میں پرتھوی راج کی شکست (۱۱۹۲ء) کے ساتھ پہونچی۔ ۱۱۹۹ء میں قطب الدین ایبک نے بنارس فتح کیا اور اس کے فوراً ہی بعد محمد بختیار نے بہار کو تہ تیغ کیا اور نالندہ کی مشہور عالم یونیورسٹی کو خاک میں ملا دیا، بودھ بھکشوؤں کو قتل کر دیا اور کتابوں کو آگ لگا دی۔ اس طرح بودھ دھرم جس کا زوال بہت پہلے سے شروع ہو گیا تھا اور آٹھویں صدی تک مکمل ہو چکا تھا، بارہویں صدی کے خاتمے پر تقریباً

सार कबीर की जन्म-तिथि संवत् १४९९ के अंत में जेठ की पूर्णिमा को सोमवार के दिन निकलती है। इस आधार पर १३९८ ई० उनके जन्म का वर्ष माना गया है। (कुछ लोग उनका जन्म १४४० ई० में मानते हैं। देखिये एलविन अंबरहिल की भूमिका, कबीर के पदों का ठेगौर कृत अंग्रेजी अनुवाद)। उनकी मृत्यु का वर्ष १९१८ ई० भी कबीर पंथियों के एक प्रसिद्ध दोहे के आधार पर मान लिया गया है।

कबीरदास का अपना बयान है कि वह बनारस में पैदा हुए और मगहर (जिला गोरखपुर) में उनकी मृत्यु हुई। “सकल जनम शिवपुरी गँवाया, मरती बेर मगहर उठ धाया।” इसमें महत्व की बात यह है कि मरते समय भी कबीर ने अपना क्रांतिकारी स्वभाव नहीं छोड़ा। जिस तरह वह मनुष्यों के बीच ऊँच-नीच को नहीं मानते थे उसी तरह वह शहरों की ऊँच-नीच को भी पसंद नहीं करते थे। आम हिंदुओं का विश्वास है कि काशी में मरनेवाले को मुक्ति मिल जाती है और इसके विपरीत मगहर में मरनेवाला दोबारा गढ़े का जन्म लेता है। लेकिन कबीर, जिनको अपनी भक्ति पर पूरा विश्वास था, इस बात को कब मान सकते थे। इसलिए जब वे अपने जीवन की उस अवस्था में पहुँचे जब मृत्यु निकट मालूम हुई तो वह अपनी जन्मभूमि बनारस छोड़ कर मगहर चले गये। देश के कोने-कोने से लोग मृत्यु की खोज में बनारस आते हैं और कबीर बनारस से यह कहते हुए चल दिये—

क्या काशी क्या ऊसर मगहर, राम हृदय बस मोरा

जो कासी तन तजै कबीरा, रामे कोन निहोरा

अर्थात् काशी हो या उजाड़ मगहर, मेरे लिए दोनों बराबर हैं क्योंकि मेरे हृदय में राम (भगवान) बसा हुआ है। अगर कबीर की आत्मा काशी में इस तन को तजकर मुक्ति प्राप्त कर ले तो इस में राम का कौन-सा एहसान है। इसलिए कबीर जो जन्म भर काशी निवासी रहे थे और बादशाहों की ताकत और संकीर्ण विचारों वाले लोगों की नफ़रत भी उनको वहाँ से बाहर न निकाल सकी मरने के बाद अपनी इच्छा से मगहर-वासी हो गये।

उनकी मृत्यु के बारे में उनके प्रशंसकों ने जो कहानी बनायी है वह कबीर के लिए जन-साधारण की सबसे बड़ी श्रद्धांजलि है। उनकी शिक्षा का

کبیر کی صدی ہے۔ اُن کی عمر کا اندازہ ایک سو بیس سال کیا جاتا ہے۔ اُن کے ایک چیلے دھرم داس سے ایک دوہا منسوب ہے جس کے اعتبار سے سموت ۱۴۵۵ کے اختتام پر کبیر کی پیدائش کی تاریخ جیٹھ کی پورنیمہ کو سوموار کے دن نکلتی ہے۔ اس بنیاد پر ۱۳۹۸ء سال پیدائش قرار پاتا ہے (بعض لوگوں کے نزدیک سال پیدائش ۱۴۳۰ء ہے۔ دیکھیے ایلون انڈرل کا دیباچہ، کبیر کی نظموں کا انگریزی ترجمہ از لیگور) انتقال کا سال ۱۵۱۸ء بھی کبیر پنتھیوں کے ایک مشہور دوہے کی بنیاد پر تسلیم کیا گیا ہے۔

کبیر داس کا اپنا بیان ہے کہ وہ بنارس میں پیدا ہوئے اور مکھڑ (ضلع گوردکھپور) میں وفات پائی »سکل جنم شیو پوری گنوا یا، مرتی میر مکھڑ اُٹھ دھایا« — یعنی سارا جنم بنارس میں بیٹا اور مرتے وقت مکھڑ چلا گیا) اس میں اہم نکتہ یہ ہے کہ مرتے وقت بھی کبیر نے اپنی انقلابی ادا نہیں چھوڑی۔ جس طرح وہ انسانوں کی اونچ نیچ کے قائل نہیں تھے اُسی طرح وہ شہروں کی اونچ نیچ کو بھی پسند نہیں کرتے تھے۔ عام ہندو عقیدہ یہ ہے کہ کاشی میں مرتے والے کی مکتی ہو جاتی ہے اور اس کے برعکس مکھڑ میں مرتے والا دوبارہ گدھے کا جنم لیتا ہے۔ لیکن کبیر جن کو اپنی بھگتی پر پورا اعتماد تھا اس بات کو کب مان سکے تھے۔ اس لئے جب عمر کی اس منزل میں پہنچے جہاں موت قریب معلوم ہوئی تو وہ بنارس سے ترک وطن کر کے مکھڑ چلے گئے۔ ملک کے کونے کونے سے لوگ موت کی تلاش میں بنارس آتے ہیں اور کبیر مرتے کے لئے بنارس سے یہ کہتے ہوئے چل دئے:

کیا کاشی، کیا اُوسر مکھڑ، رام پردے بس مورا

جو کاشی تن تجھے کبیرا، رامے کون ہنورا

(ترجمہ: کاشی ہو یا اجاڑ مکھڑ، میرے لئے دونوں برابر ہیں کیونکہ میرے دل میں بھگوان بسا ہوا ہے۔ اگر کبیر کی روح کاشی میں اس تن کو تھج کر نجات حاصل کرے تو اس میں رام کا کونسا احسان ہے) اس لئے کبیر جو زندگی بھر کاشی کے باشندے تھے اور بادشاہوں کی طاقت اور تنگ نظر لوگوں کی نفرت بھی ان کو وہاں سے باہر نہ نکال سکی مرتے کے بعد اپنی مرضی سے مکھڑ کے باسی ہو گئے۔

महत्व इस बात का नहीं है कि कबीरदास जुलाहे के बेटे थे या किसी ब्राह्मणी के पेट से पैदा हुए थे और जुलाहे के घर में उनका लालन-पालन हुआ था। * महत्व इस बात का है कि रामानुज (बारहवीं शताब्दी) की विचार-धारा और रामानंद (चौदहवीं और पंद्रहवीं शताब्दी) के विचारों से जो उत्थी क्रम की एक कड़ी थे, कबीर के विचारों का क्या संबंध है। भक्ति के अंतर्धान का तत्त्वबुद्धि के 'विज्ञान' से क्या संबंध है। ईरान के सुफ़ी शाहों अत्तार, रूमी और हाफ़िज के विचारों ने हिंदुस्तान की विचारधारा को किस हद तक प्रभावित किया है। उनके मूल्यों में कितनी समानता है और इन प्रवाहों की बहती हुई गंगा जमुना का कबीर की कविता में कितना सुंदर संगम होता है। केवल इसी तरह भेद-भाव और घृणा की वे दीवारें गिरायी जा सकती हैं जिन्हें कबीर ने ढा दिया था लेकिन उनके बाद की पीढ़ियों ने फिर ऊँचा उठा दिया। इस पर लड़ने मरनेवाले कि कबीर लुंगी पहनते थे या धोती बांधते थे, यह भूल जाते हैं कि वास्तविकता वस्तु में नहीं नग्नता में है। जिसने अर्थ के शरीर से शब्दों के परदे हटा दिये हों और रहीम को एक कर दिखाया हो उसको सूत और कपास के वस्त्र पहनाने की कोशिश और उस वस्त्र की भिन्नता पर मतभेद और घृणा फैलाना कितना हास्यास्पद मालूम होता है।

कबीरदास के जन्म और मृत्यु की तिथियों के बारे में विश्वास के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। बस इतनी बात निश्चित है कि पंद्रहवीं शताब्दी कबीर की शताब्दी है। उनकी आयु का अनुमान एक सौ बीस साल का लगाया जाता है। उनके एक चेले कबीरदास का एक दोहा बताया जाता है जिसके अनु-

* कहा जाता है कि स्वामी रामानंद का भक्त एक ब्राह्मण उनसे मिलने आया तो उसके साथ उसकी विधवा बेटी भी थी। लड़की के प्रणाम के उत्तर में रामानंद ने उसे बेटा पैदा होने का आशीर्वाद दिया। यह सुनकर ब्राह्मण खबराया लेकिन रामानंदजी ने कहा कि मेरा बचन खाली नहीं जा सकता। इसलिए उस विधवा ब्राह्मणी के पेट से कबीर पैदा हुए। माँ ने बदनामी के डर से बच्चे को एक तालाब के किनारे फेंक दिया। संयोग से काशी का एक मुसलमान जुलाहा अपनी बीबी नईमा के साथ उधर से गुज़रा। वे दोनों उस बच्चे को उठा लाये और उसका पालन-पोषण अपने बेटे की तरह किया। जब काज़ी से नाम रखने को कहा तो कबीर नाम निकला। इस घटना के सच होने के बारे में कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं दिया जा सकता लेकिन मेरा विचार है कि कबीर की मृत्यु से संबंधित कृतार्त की तरह (जिसका उल्लेख आगे आयेगा) यह किस्सा भी उनकी हिंदू-मुस्लिम एकता की शिक्षा पर जोर देता है।

کی اذان آسمانوں کے سنائے میں کم ہو جاتی ہے اور کبیر کا حرف محبت دھرتی کے سینے میں دھڑکنا رہتا ہے ۔

یہ بات اہم نہیں ہے کہ کبیر داس جلاہے کے بیٹے تھے یا کسی برہمنی کے پیٹ سے پیدا ہوئے تھے اور جلاہے کے گھر میں پرورش پائی تھی * اہم یہ ہے کہ رامائج (بارہویں صدی) اور اُن کے سلسلۂ فکر کی ایک معنوی اولاد رامانند (چودہویں اور پندرہویں صدی) کے خیال سے کبیر کے خیال کا کیا رشتہ ہے ، بھگتی کے انتر گیان کا تصوف کے وجدان سے کیا تعلق ہے ۔ ابران کے صوفی شعرا عطار ، رومی اور حافظ کی فکر نے ہندوستان کی فکر کو کس حد تک متاثر کیا ہے ، اُن کے درمیان کتنی مشترک قدریں ہیں اور اثرات کی یہ بقی ہوئی گنگا جمنا کبیر کی شاعری میں کتنا حسین سنگم حاصل کرتی ہے ۔ صرف اس طرح تفریق اور نفرت کی وہ دیواریں گرائی جاسکتی ہیں جنہیں کبیر نے ڈھا دیا تھا لیکن اُن کے بعد کی نسلوں نے پھر اونچا اُٹھا دیا ۔ اس پر لڑنے مرنے والے کہ کبیر لنگی پتے تھے یا دھوتی باندھتے تھے یہ بھول جانے ہیں کہ اصلیت لباس میں نہیں برہمنگی میں ہے ۔ جس نے معنی کے جسم سے لفظوں کے پردے اٹھا دیئے ہوں اور رام اور رحیم کو ایک کر دکھایا ہو اس کو سوت اور کپاس کا لباس پہنانے کی کوشش اور اس لباس کی تفریق پر منافقت اور نفرت انگیزی کتنی مضحکہ خیز معلوم ہوتی ہے ۔

کبیر داس کی پیدائش اور موت کی تاریخوں کے بارے میں کچھ وثوق سے نہیں کہا جاسکتا ۔ بس اتنی بات یقینی ہے کہ پندرہویں صدی

* کہا جاتا ہے کہ سوامی رامانند کا معتقد ایک برہمن اُن سے ملنے آیا تو اس کے ساتھ اس کی بیوہ بی بی بھی تھی ۔ لڑکی کے سلام کے جواب میں رامانند نے بیٹا پیدا ہونے کی دعا دی ۔ یہ سن کر برہمن گھبرا گیا لیکن رامانند جی نے کہا کہ میرے القاط خیال نہیں جاسکتے ۔ چنانچہ اس بیوہ برہمنی کے پیٹ سے کبیر پیدا ہوئے ۔ ماں نے بد نامی کے ڈر سے بچے کو ایک تالاب کے کنارے پھینک دیا ۔ اتفاق سے بنارس کا ایک مسلمان چولاہا اپنی بیوی نیسہ کے ساتھ ادھر سے گزرا ۔ وہ دونوں اس بچے کو اٹھا لائے اور اس کی پرورش اپنے بیٹے کی طرح کی جب قاضی سے نام رکھنے کی فرمائش کی تو مال میں کبیر کا لفظ نکلا ۔ اس واقع کی صحت کے متعلق کوئی تاریخی شہادت پیش نہیں کی جاسکتی لیکن میرا خیال ہے کہ کبیر کی موت کے افسانے کی طرح (جس کا ذکر آگے آئے گا) یہ افسانہ بھی ان کے ہندو مسلم اتحاد کی تعلیم پر زور دیتا ہے ۔

भूमिका

महान कविता की यह अनोखी विशेषता है कि बहुधा वह अपने रचयिता से असम्बद्ध हो जाती है। फिर उसके अस्तित्व से कवि का अस्तित्व पहचाना जाता है क्योंकि उसके जीवन के हास्योत्सवों के बीच समय के धुँधलके में खो जाते हैं और घटनाएँ कहानियों का रूप धारण कर लेती हैं।

पुरानी इतिहास लिखने की कला चैक बादशाहों, पुरोहितों और खुरमाओं के निर्दोष धूमिल थी और उन्होंने कौ गथाओं को अपनी रूढ़ि समझती थी इसलिए उसने हमेशा बिद्रोहियों, कवियों और कलाकारों की उपेक्षा की और सिर्फ दंड और पुरस्कार के क्रिस्से बाँकी रह गये (किसका मुँह मोतियों से भरा गया और किसकी गुस्ताख जवान मुड़ी से खींच ली गयी) लेकिन समय का प्रतिशोध बढ़ा क्रूर होता है। बादशाहों के कारनामे इतिहास की किताबों में बंद हैं और कवियों के कारनामे दिलों के अंदर पीड़ा और उल्लास की लहरें बनकर उतर गये हैं। लक्ष्मी और सरस्वती की प्रतिद्वंद्विता में जीत सरस्वती की हुई और गुण लक्ष्मी के गाये गये।

यह बात शायद पुराने इतिहासकारों को नहीं मालूम थी कि इतिहास केवल घटनाओं का वर्णन नहीं बल्कि सामाजिक और आर्थिक संबंधों के परिवर्तन की कहानी भी है और विचार और चेतना की प्रगति भी। इस वातावरण में आते जाते पात्र परछाइयों की तरह घूमते रहते हैं और अगर परछाइयों का नाम लोग भूल भी जायें तो कोई फर्क नहीं पड़ता। विचार और चेतना की प्रगति जारी रहती है। यही कारण है कि परिस्थितियों और घटनाओं का कबीर, सन् और तारीख का कबीर जिंदा नहीं है लेकिन विचार और चेतना का कबीर, भावनाओं और अनुभूतियों का कबीर, कविता और गीत का कबीर जिंदा है। हर दोहा उसका अस्तित्व है, हर पद उसका व्यक्तित्व, हर विचार उसकी जवान। और जब हम उसके बोले हुए शब्दोंको दोहराते हैं तो कबीर का साज बजने लगता है। शाही फरमान और डकों की आवाजें गूँगी हो जाती हैं और कबीर के दिल से निकलनेवाले जनाहत नाद से आत्मा मस्त हो जाती है। पण्डित का मंत्र और मुल्ला की अज्ञान आसमानों के सन्नाटे में गुम हो जाती है और कबीर की प्रेम-वाणी धरती के सीने में धड़कती रहती है।

دیشا

بڑی شاعری کی یہ عجیب و غریب خصوصیت ہے کہ وہ اکثر و بیشتر اپنے خالق سے بے نیاز ہو جاتی ہے۔ پھر اس کے وجود سے شاعر کا وجود پہچانا جاتا ہے کیونکہ اس کی زندگی کے حالات گزرے ہوئے زمانے کے ہندلکے کے میں گھو جاتے ہیں اور واقعات افسانے کا لباس پہن لیتے ہیں۔

پرانی تاریخ نگاری چونکہ بادشاہوں، پروہتوں اور سوراڑوں کے گرد گھومتی تھی اور انہیں کی داستان کو اپنا سرمایہ سمجھتی تھی اس لئے اس نے ہمیشہ باغیوں، شاعروں اور فنکاروں کو نظر انداز کیا اور صرف سزا و جزا کے افسانے باقی رہ گئے (کسی کا منہ موتیوں سے بھرا گیا اور کسی کی گستاخ زبان گدی سے کھینچ لی گئی) لیکن وقت کا انتقام بڑا سخت ہے۔ بادشاہوں کے کارنامے تاریخ کی کتابوں میں بند ہیں اور شاعروں کے کارنامے دلوں کے اندر درد اور حسرت کی لہریں بن کر اتر گئے ہیں۔ لکشمی اور سرسوتی کی باہمی رقابت میں جیت سرسوتی کی ہوئی اور گن لکشمی کے گائے گئے۔

یہ بات شاید پرانے تاریخ نگاروں کو نہیں معلوم تھی کہ تاریخ محض واقعہ نگاری نہیں بلکہ سماجی اور معاشی رشتوں کی تبدیلی کی داستان بھی ہے اور فکر و شعور کا سفر بھی۔ اس فضا میں آنے جاتے کردار پرچھائیوں کی طرح گھومتے رہتے ہیں اور اگر پرچھائیوں کا نام فراموش ہو جائے تو بھی کوئی فرق نہیں پڑتا۔ فکر و شعور کا سفر جاری رہتا ہے۔ یہی وجہ ہے کہ حالات و واقعات کا کبیر، سن اور تاریخ کا کبیر زندہ نہیں ہے لیکن فکر اور شعور کا کبیر، جذبے اور احساس کا کبیر، شعر اور نغمے کا کبیر زندہ ہے، ہر دوہا اُس کی ہستی ہے، ہر پند (نظم) اس کی ذات، ہر خیال اُس کی زبان، اور جب ہم اس کے بولے ہوئے لفظوں کو دہراتے ہیں تو کبیر کا ساز بجنے لگتا ہے، شاہی فرمان اور ڈنکوں کی آوازیں گونگی ہو جاتی ہیں اور کبیر کے دل سے نکلنے والی صوتِ سرمدی سے روح سرشار ہو جاتی ہے۔ پنڈت کا منتر اور مُلا

بیرائی

ایک سو الہائیس منتخب نظمیں

مرتبہ
سیردار جعفری

ہندستانِ بک مرستی

۳۰ کھیتان بھون، جے۔ لالا روڈ، بمبئی ۱

नामः कबीर

जन्मः बनारस, सन् १३९८ ई० या सन् १३५० ई०

मृत्युः मगहर, सन् १५१८ ई०



नामः कबीर

पیدائش : बनारस से १३९८ ० या से १३५० ० ०

انتقال : मगहर से १५१८ ०

कबीर बाबी

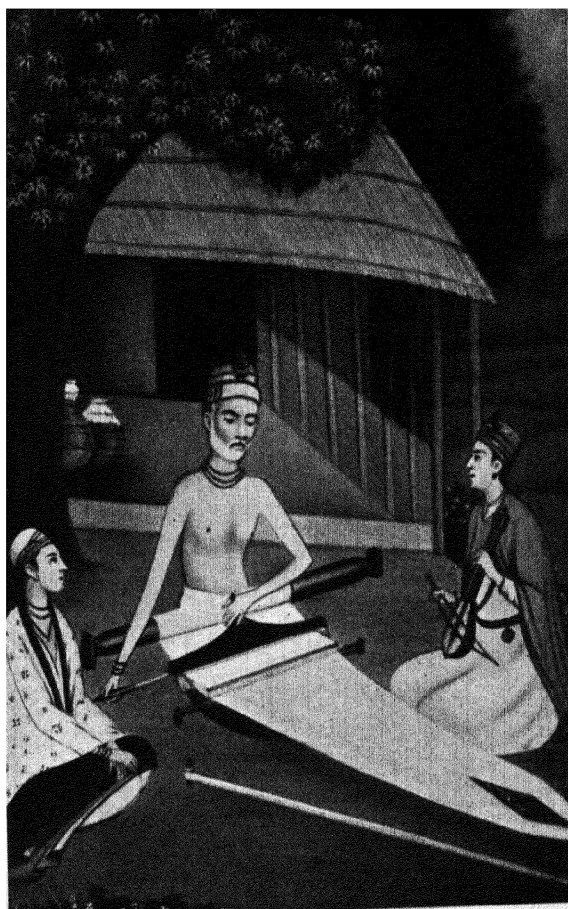
(एक सौ अठ्ठाइस पदों का संकलन)

सम्पादन और अनुवाद

सरदार जाफरी

हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट

सेवान भवन, जे० टाटा रोड बम्बई नं० १



हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट (बम्बई) एक साहित्यिक संस्था है जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं है और जिसके सब खर्चे निजी आनुदान से पूरे किये जाते हैं। उसके सत्वाधान में हिन्दी, उर्दू और फ़ारसी के उच्चकोटि के कवियों का काव्य उर्दू और देवनागरी लिपि में एक साथ प्रकाशित किया जाता है। आधुनिक साहित्य भी इस संस्था का एक आवश्यक विभाग है। हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करना और छपाई के स्तर को ऊँचा करना हिन्दुस्तानी बुक ट्रस्ट के उद्देश्यों में शामिल है।

ट्रस्टी

विद्या शंकर

लाला योधराज

सैयद शाहबुद्दीन दसनवी

एडिटर

डा. मुल्कराज आनन्द

सरदार जाफ़री

ہندوستانی بک ٹرسٹ (بمبئی) علم و ادب کا
ایک غیر تجارتی ادارہ ہے جس کے اخراجات ذاتی عطیات
سے پورے ہوتے ہیں۔ اس کے زیر اہتمام ہندی، اردو اور
فارسی کے برگزیدہ شعرا کا کلام یک وقت اردو اور
دیوناگری رسم خط میں شائع کیا جاتا ہے۔ جدید ادب
بھی اس ادارے کا ایک ضروری شعبہ ہے۔ ہندی اور اردو
بولنے اور پڑھنے والوں کے درمیان ہم آہنگی پیدا کرنا اور
طباعت کے معیار کو بلند کرنا ہندوستانی بک ٹرسٹ کے
اہم ترین مقاصد میں شامل ہے۔

ٹرسٹی
ودیا شنکر
لالہ یودھراج
سید شہاب الدین دسنوی

ایڈیٹر
ڈاکٹر ملک راج آئند
سردار جعفری

ہندوستانی بک ڈسٹریکٹ پبلیکیشن ہاؤس—۱

مطبوعات ہندوستانی بک ڈسٹریکٹ ، سلسلہ نمبر - ۱

غلط نامہ (اردو)

صفحہ	سطر	غلط	صحیح
۲۰	۱۷	نہایت	لغایت
۲۸	۲	معلوم ہوتا	معلوم ہوتا ہے
۲۸	۱۱	کی سی تھا	کی سی تھی
۲۸	۱۳	بہامن	بامہن
۲۸	۲۱	نرکن	نرگن
۳۰	۱۶	نار	تارا
۵۶	اردو نوٹ	*	†
۵۶	انگریزی عبارت	†	*
۷۶	۱۷	سدن	سبدن
۷۸	۴	سکھیں	سکھین
۱۶۲	۱۲	سریا	سراپا
۱۶۶	۲۸	ابدیت کا	ابدیت کی
۱۶۸	۲۶	بچن ہمار	بچن ہمار
۱۷۰	۱۵	ہمارا بچن	ہمارا بچن
۲۰۲	نظم ۱۰۶ کے آخر میں ایک مصرعے کا اضافہ	» کہیں کبیر دھرتی من مانا، گونگے کا گڑ گونگے کا جانا «	
۲۴۹	۲۳	امت احمد مرسل	قوت بازوئے مسلم
۲۵۱	۹	بہتیجی	بہن
۲۷۷	۵	اک دل بہتر	اک دل بہتر

نوٹ :- 'برہمن' (یے ساکن، رے متحرک، ہے اور میم دونوں ساکن) اس کے معنی ہیں ذات مطلق۔ لیکن 'برہما' (یے ساکن، رے متحرک، ہے ساکن، اور میم مشدد) اس کے معنی ہیں وہ فرد جو ایک دیوتا ہے۔ پہلے لفظ سے براہمن بنا ہے جو خالص سنسکرت تلفظ ہے اور برہم کا ہم معنی ہے لیکن براہمن ذات ہے۔ اور براہمن اُن کتابوں کا بھی نام ہے جو ویدوں کی تفسیر میں لکھی گئی ہیں۔ کبیر نے بعض مقامات پر «کہاں» کا لفظ بغیر الف کے استعمال کیا ہے اور «نہیں» کا لفظ بغیر یے کے۔ اس وجہ سے ان الفاظ کی شکلیں اردو میں نامانوس ہو گئی ہیں۔

अशुद्धि पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११	१४	और रहीम	और राम और रहीम
२१	१४	रखना चाहिये	रख लिया जाये
२५	अंतिम	१०४	११३
२९	३१	आलम में अनल अबद	आलम में कोई सुफी अनल अबद
४३	१६	शून्य आसन	शून्य के आसन
८९	९	उठा सतका है	उठा सकता है
१०७	१४	आकोर	ओकोर
१४५	१६	से भर रखा है	से क्यों भर रखा है
१४३	१९	काम कासना	काम वासना
१६७	१५	लिला	लीला
		व अपार	वहाँ अपार
	१७	इसी में	इसीसे
	१६	फुलवारीयों	फुलवारियों
	२०	किड़ा	कीड़ा
१८१	२०	अलग होता जा	अलग होजाता
	२३	बैठी है	बैठी हूँ
१८५	२४	सब जाओ	बस जाओ
१९१	११	सखियों	सखियों
२७९	१७	हरीम खाना : खिलवत खाना, रूह	हरीमे जां = खिलवतखाना-ए-रूह
२८०	३	अन्दर कने की	अन्दर भांकने की
	१६	सिलनेवाला	सीनेवाला
२८४	१४	अधो	ऊधो
२८६	३	ब्रह्म की गुरु	ब्रह्म की तरफ गुरु
२८७	२४	हाइनिश	हाइनरिश
२८८	३१	उम्मते अहमदे मुर्सल	कूवते बाजुए मुस्लिम
	३३-३४	उम्मते अहमदे मुर्सल = रसूलकी	कूवते बाजुए मुस्लिम = मुसलमान
		उम्मत यानी मुसलमान	का बाहुबल
२९०	५	अत्याचारीका	अत्याचारी शासन का
२९९	८	इस्वात	इस्बात
	९	हंगामे खुबेदी	हंगामे बे खुबेदी
३०२	३२	गुप्तद ई	गुप्त : अंद ई

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. ۱۹۱۵۳۱۱

Accession No. ۱۸۷۳۷

Author

Title

بیربای مرتبه چهارم دار فغری
This book should be returned on or before the date last marked below.

